A Descriptive Catalogue of Manuscripts

IN THE

attarkiya Granth Bhandar NAGAUR

By:

Dr. P. C. Jain

Centre for Jain Studies
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR
1981

Published by:
Director,
Centre for Jain Studies
University of Rajasthan

Copies can be had direct from the Centre for Jain Studies
University of Rajasthan, Jaipur-4 [India]

Price Rs. 45'30

Printed at :

Kapoor Art Printers, Jaipur-3

Foreword

Dr. P. C. Jain is already known to the Jain scholars through the publication of his first Volume of the Five-volume project on the Descriptive Catalogue of the Manuscripts collected in the Bhattarakiya Granth Bhandar, Nagaur. This collection is rich numerically as well as qualitatively. It contains 30,000 manuscripts in Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Rajasthani, Hindi, Marathi and Gujarati languages. Some of these manuscripts belong to the 12th Century A. D. Others not so old belong to the succeeding centuries including the 19th. History of Indian literature will not be complete without taking notice of innumerable manuscripts which are still uncatalogued and hidden from the scholars' view. Rajasthan is specially rich in Jain manuscripts as this state has always been a citadel of Jainism for the long past. The manuscripts of Nagaur Bhandar relate to various subjects including the Agamas, Ayurveda, Subhasitas, tales, poems, dictionarries, Carlta-literature, rhetorics, prosody, astrology, astronomy, logic, drama, music, Puranas, Tantra, Yoga, grammar, vratas, Stotras, Mahatmya etc. Some of these manuscripts are illustrated with beautiful paintings. In fact, the vast literature produced in medieval India reveals the nature and form of intellectual and creative activity and spiritual movement of the Indians. Much of what is contained in the statras, viatas, Mahatmyas and the kindred literature manifests the living religion and culture of India gleaned through these works. This Bhandara has old manuscripts of known and published works. Such as the Samayasara of Acharya Kundakunda and more importantly it has some manuscripts, say about 150, which are not known to the scholarly world. In my trips abroad in recent years I found a growing interest in the rich treasure of the manuscripts which India possesses and which are still lying uncared for in the different Bhandaras. Jainas did not have a sectarian outlook in developing collections of the manuscripts. The catholic outlook of this community and its Saints has been mainly responsible in organising a broad-based collection of the manuscripts. While Jainism in its origin patronised the Prakrit, it

remains an historical fact that it extended full support to Sanskrit considered by some to be the language of the Brahmins and the Brahmanical or Vedic culture. Some of the great works were not only written in Sanskrit by the Jainas, many others were preserved and commented upon by them. Mallinatha who commented upon the works of Kalidasa and Bharavi is the shining example of this catholic tradition and patronage of the Sanskrit language and literature by the Jainas.

I need not commend this volume to the scholars, I should however be permitted to state very briefly some facts. This volume contains entries of 2,000 manuscripts. Each manuscript is serially numbered and is followed by the necessary details of the title, author, commentator, if any, number of folios, script, language, probable date, beginning and end of the work and remarks wherever necessary. Various appendices will be found useful by the researchers, more particularly the appendix giving the list of rare manuscripts.

After publication of the five volumes of this project, the Centre would premote cataloguing of the manuscripts in other Bhandaras in Rajasthan. The complete project is quite ambitious as it also aims at the publication of important manuscripts found in the Jain Bhandaras in Rajasthan. How long will it take for us is a matter of guess for me too. But I believe and trust the words of Bhavabhuti. "कालो हार्य निरविध":

Dated 14-6-81

R. C. Dwivedi

Dean, faculty of Arts & Director, Centre for Jain Studies, University of Rajasthan, Jaipur

विषय-सूची

प्रस्ताबना :----

I-xxx

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री का उपयोग, पुस्तकों के प्रकार, उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री— लिप्यासन, ताड़पत्र, कागज, कागज के पन्ने काटना, घुटाई, कपड़ा, काब्ठ पट्टिका, लेखनी, प्रकार, मोलिया, स्याही तथा उसके प्रकार—काली स्याही, एवं रूपहली स्याही, लाख स्याही, लेखक, लेखक के गुरा, ग्रन्थों का रख रखाव, राजस्थान के प्रमुख ग्रन्थ—भण्डार, ग्रन्थ-सूचियों की श्रनुसधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ-भण्डार की स्थापना एवं विकास, मट्टारक परम्परा, ग्रन्थ के सम्बन्ध में, ग्राभार धादि।

श्र घ्यात्म, श्रागम, सिद्धान्त एव चर्चा	१-२=
धा युर्वेद	\$ \$-3\$
उपदेण एव सभाविताव ही	₹४₹
कथा —	३७–५२
का ध्य —	४३–६७
कोश	€ ==−७ ₹
चरित्र	७२–६२
चित्रित ग्रन्थ	e 3-8 5
छन्द एव भ्रतानर	88-803
च्योतिष	१०३−११ ६
न्याय शास्त्र	399-099
नाटक एव संगीत	१२०-१२१
नीतिषास्त्र	१२ २–१ २३
पुराग्ग	१२४- १३०
पूजा एवं स्तोत्र	१३१-१६२
मन्त्र एवं यन्त्र	१६३—१६६
योग	१६ ७१ ६ ६
व्याकरण	309-009

व्रत-	–विधान	१ ५० —१५३
स्रोव	त्रिक्षान	\$= %- \$ = \$
প্রা ৰ	काचार धीर	१=६-१६७
ग्रव	क्रिष्ट लाहि रय	१६ =-२०३
परितिष्ट—		
(i)	ग्रज्ञात एवं धप्रकाशित ग्रन्थों की नामावली	१€= − २० =
(ii)	प्रन्यानुकमित्तका	२०१-२४६
(i/i)	प न्य कारानुक्रमस्मिका	२४७-२६६

प्रस्तावना

ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास

प्राचीन काल में लेखनकला का प्रचलन नहीं था। लोगों की स्मृति इतनी तीव्र थी कि उन्हें कभी इसकी ग्रावश्यकता ही नहीं पड़ी। सिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से ही दी जाती थी। सिक्षा की यह परम्परा केवल जैनों तक ही सीमित नहीं थी ग्रापितु जैनेतर समाज में भी यही परम्परा प्रचलित थी।

यही कारता है कि समस्त बैदिक बाङ्मय प्रारम्भ से ही मौिखक रूप से ही चला ग्रा रहा था। विद्यार्थियों की स्मरगाशक्ति इतनी तीत्र थी कि वे उच्चारण तक में बिना अगुद्धि किये पूरी बैदिक ऋचाग्रों को स्मरगा कर लेते थे। इसी परम्परा के कारण बेदों को श्रुति भी कहा गया है।

जैन मान्यता है कि तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित उपदेश मौखिक रूप से ही दिये गये थे। यद्यपि प्रथम तीर्थंकर ग्रादिनाथ ने हजारों लाखों वर्ष पूर्व बाह्मी लिपि का ग्राविष्कार कर दिया था। नेकिन महाबीर तक मौखिक परम्परा ही चलती रही।

भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् जब समूचे श्रागम साहित्य को मोखिक रूप से स्मरण नहीं किया जा सका तो श्रागम साहित्य को लिपिबढ़ करके सुरक्षित रक्षने के लिये विभिन्न नगरों में मभायें श्रायोजित की जाती रहीं। दिगम्बर सम्प्रदाय के श्रनुसार भूतवली पुष्पदन्त ने श्रविशिष्ट श्रागम साहित्य को लिपिबढ़ किया। जब कि श्वेताम्बर परम्परा के श्रनुसार श्रितम वाचना देविद्धाणि क्षमाक्षमण की श्रध्यक्षना में वीर निर्वाण सम्वत् ६८० में बल्लभी में समस्त श्रागमों को लिपिबढ़ किया गया। उसके बाद प्रन्थों को लिपिबढ़ करने की परम्परा में श्रविकाधिक विकास हुशा। इसके पूर्व भी कथंचित् श्रागम लिखाने का उल्लेख सम्राट् खारवेल के उल्लेख में पाया जाता है। श्रनुयोग-द्वार सूत्र में पुस्तक पत्रारूढ़ श्रुत को द्रव्य-श्रुत माना है। १

बल्लभी वाचना के पश्चात् तो मौग्निक ज्ञान को लिपिबद्ध करने की होड़ सी लग गयी। यही नहीं, नये-नये ग्रम्थों का निर्माण किया जाने लगा। ग्रम्थों को लिखने, लिखवाने पढ़ने एवं सुनने में महान् पुण्य की प्राप्ति मानी जाने लगी।

श्रुतज्ञान की श्रिषवृद्धि में जैनाचार्यों, भट्टारकों, मुनियो एवं श्रावकों ने सिंबशेष योगदान दिया । हरिभद्र सूरि ने "योग-दिष्ट समुख्यय" में , "लेखना पूजना दानं" क्षारा पुस्तक, लेखन को योगभूमिका का श्रंग बतलाया है। "बद्धमान कहा" में पुस्तकलेखन के महत्त्व को इस प्रकार बतलाया है—

१ — "से कि तं जागायसरीर-मबीयसरीरवइरिलं ? दब्बसुयं पत्तयपोत्थयलिहि । पत्र-३४-१

एहु सत्यु जो लिहइ लिहाबइ, पढ़इ पढ़ावइ कहइ कहावइ । जो राह रागिर एहुं मरिए भावइ, युरुह श्रहिउ पुण्यफल व पावइ।।

इसी तरह "उपदेश-तरंगिस्वी" में भ्रन्थों के लिखने, लिखवाने, सुनने एवं रक्षा करने को निर्वाण का कारण बतलाया है—

ये लेखयन्ति जिनशासनं पुस्तकानि, व्याख्यानयन्ति च पठन्ति च पाठयन्ति । श्रवणन्ति रक्षणविषो च समाद्रयन्ते, ते देव मर्स्यक्षिवशर्म नरा लभन्ते ।।

कुछ समय पश्चात् तो ग्रन्थों के भ्रन्त में लिखी हुई प्रशस्तियों में पुस्तक-लेखन के महत्त्व का वर्गान किया जाने लगा---

ये लेखयन्ति सकलं सुधियोऽनुयोगं शब्दानुशासनमशेषमलंकृतीस्व । छन्दांनि शास्त्रमपरं च परोपकारसम्पादनैकनिपुराः पुरुषोत्तमास्ते । ६४॥ कि कि तैर्न न कि विविषतं दान-प्रदत्तं न कि । के वाऽपन्ननिवारिता तनुमतां मोहारांवे मज्जताम् ॥ ६४॥ नो पुण्यं किमुपाजितं किमु यशस्तारं न विस्तारितं । सत्कल्याराकलापकाररामिदं यैः शासनं लेखितम ।।

इस प्रकार हस्तिलित ग्रन्थों की पुष्पिकाशों तथा कुमारपाल प्रवन्ध, वस्तुपाल परित्र, प्रभावक चरित्र, सुकृतमागर महाकाव्य, उपदेश तरंगिएगी, कर्मचन्द ग्रादि श्रनेकों रास एवं ऐतिहासिक चरित्रों में समृद्ध श्रावको द्वारा लाखों करोड़ों के सद्व्यय से ज्ञान—कोण लिखवाने तथा प्रचारित करने के विशुद्ध उल्लेख पाये जाते हैं। शिलालेखों की भांति ही ग्रन्थ-लेखन-पुष्पिकाशों का बड़ा भारी ऐतिहासिक महत्त्व है। जैन राजाशों, मन्त्रियों एवं धनाद्य श्रावकों के सत्कार्यों की विश्वदावली में लिखी हुई प्रशस्तियां भी किसी खण्ड काव्य से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। गुर्जरेश्वर सिद्धराज, जयसिंह भौर कुमारपालदेव ने बहुत बड़े परिमाण में शास्त्रों की ताइपत्रीय प्रतियां स्वर्णाक्षरी व सिचत्रादि तक लिखवायों थी। यह परम्परा न केवल जैन नरपति श्रावक—वर्ग में ही थी ग्रापितु श्री जिनचन्द्र सूरि का प्रकबर द्वारा "युग-प्रधान" पद देने पर बीकानेर के महाराजा रायसिंह, कुंवर दलपतिंसह ग्रादि द्वारा भी संख्याबद्ध प्रतियां लिखवाकर भेंट करने के उल्लेख मिलते है। एशं इन ग्रन्थों की प्रशस्तियों में बीकानेर, खम्भात श्रादि के ज्ञान-भण्डारों में ग्रन्थ स्थापित करने के विश्वद वर्णन पाये जाते हैं।

जैन श्रावकों ने ग्रपने गुरुओं के उपदेश से बड़े-बड़े शास्त्र-भण्डार स्थापित किये हैं। भगवती सूत्र श्रवण करने समय गौलम-स्वामी के ३६ हजार प्रश्नों पर स्वर्ण मुद्रायें चढ़ाने का पेथडसाह, सोनी संग्रामिसह भ्रादि का एवं ३६ हजार मोती चढ़ाने का वर्णन मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के चरित्र में भी पाया जाता है। उन मोतियों के बने हुए चार-चार सी वर्ष प्राचीन चन्दवा पुठिया श्रादि श्राज भी वीकानेर के बड़े उपाश्रय में विद्यमान हैं। जिनचन्द्र सूरि के उपदेश से जैसनमेर, पाटण, खम्भात, जालौर, नागौर श्रादि स्थानों में शास्त्र-भण्डार स्थापित होने का वर्णन उपाध्याय समयसुन्दर गिण कृत "कत्पलता" ग्रन्थ में भी पाया जाता है। शरहान

शाह सण्डम, धनराज ग्रीर पेथडशाह, पर्वत कान्हा, यारुबाव आदि ने ज्ञान-भण्डार स्थापित करने में अपनी-अपनी लक्ष्मी को मुक्त हस्त से व्यय किया था। यारुबाह का अध्यार माज भी जैसलमेर में विद्यमान है। जैन ज्ञान-भण्डारों में बिना किसी धार्मिक भेद-भाव के ग्रन्थ संग्रहीत किये जाने लगे। यही कारख है कि कितने ही जैनेतर ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां तो केवल जैन-ग्रन्थागरों में ही उपलब्ध होती हैं।

राजस्थान के जैन मन्दिरों में उपलब्ध एवं प्रतिष्ठापित ग्रन्थ संग्रहालय भारतीय संस्कृति एवं विशेषतः जैन-साहित्य एवं संस्कृति के प्रमुख केन्द्र है। राजस्थान में ऐसे मन्य भण्डारों की संख्या मैकड़ों में हैं भीर उनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की सख्या तो लाखों में है। राजस्थान के इन भण्डारों में पांच लाख से भी भ्राधिक ग्रन्थों का संग्रह उपलब्ध होता है। ये शास्त्र भण्डार प्रत्येक गांव एवं नगर में जहाँ भी मन्दिर हैं, स्थापित हैं, श्रीर भारतीय बाङ्मय को सुरक्षित रखने का दायित्व लिये हए हैं। ऐसे स्थानों में जयपूर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, बुन्दी, भरतपुर, ग्रजमेर ग्रादि नगरों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। वास्तव में इन ज्ञान-भण्डारों ने साहित्य की सैकडों ग्रामल्य निधियों को नष्ट होने से बचा लिया। श्रकेले जैसलमेर के ज्ञान-भण्डार को देखकर कर्नल टॉड, डा० व्यहलर, डा० जैकोबी जैसे पाण्चात्य विद्वान् एव भण्डारकर, दलाल जैसे भारतीय विद्वान् ग्राष्ट्रचर्य चिकत रह गये थे, श्रीर उन्हें ऐसा धनभव होने लगा था कि मानों उनकी वर्षों की साधना पूरी हो गयी हो। मेरा मानना है कि यदि उक्त विद्वानों को उस समय नागौर, श्रजमेर एवं जवपुर के प्रन्थ-भण्डारों को भी देखने का सौभाग्य मिल जाता तो सम्भवतः उनकी साहित्यिक घरोहर को देखकर नाँच उठने ग्रीर फिर न जाने जैनाचार्यों की साहित्यिक सेवाग्रों पर कितनी श्रद्धां-जिल्यां ग्रापित करते । स्वयं लेखक को राजस्थान के पचासी ग्रन्थ-भण्डारी की देखने का प्रवसर प्राप्त हुआ है। वास्तव में मुस्लिम युग में धर्मान्ध शासको द्वारा इन शास्त्र-भण्डारो का विनाश नहीं किया होता श्रथवा हमारी स्वय की लापरवाही से सैकडो, हजारों ग्रन्थ चुहों, दीमको एवं सीलन में नष्ट नहीं हुए होते तो पता नहीं भ्राज कितनी भ्राधिक सन्या में इन भण्डारो में पाण्डुलिपियां होती । फिर भी जो कुछ झाज अविशिष्ट है वही हमारे अतीत पर पर्याप्त प्रकाश दालती हैं, और उसी पर हम गई कर सकते है।

लेखन सामग्री का उपयोग

प्राचीनकाल में पुस्तके किस प्रकार लिखी जाती थी ? ग्रौर लिखने के लिए किन-किन साधनों का उपयोग होता था ? इन्हीं सब बातों पर विचार करने में पूर्व, ग्रन्थ किस-किस प्रकार के होते थे ? यह जानकारी देना ग्राधिक उपयुक्त होगा।

जैसे भाजकल पुस्तकों के बारे में रॉयल, सुपर रॉयल, डेमी, काउन भादि मंग्रेजी मब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसी तरह प्राचीनकाल मे अभुक भाकार और प्रकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों के लिए कुछ विधिष्ट मब्द प्रयुक्त होते थे। इस बारे में जैन-भाष्यकार, वृश्किकार और टीकाकार जो जानकारी देते हैं वह जानने योग्य है—

श्राचीनकाल में विविध माकार-प्रकार की पुस्तकों होने के उल्लेख दसवैकालिक सूत्र की हरिषदीय टीका⁹, निशीष चूरिए⁹, वृहत्कल्प सूत्र वृक्ति मादि में पाये जाते हैं। इनके अनुसार पुस्तकों के पौच प्रकार ये — भ

गण्डी, कच्छपी, सुष्टि, संपुट तथा छेदपाटी । इनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

- १. गण्डी पुस्तक जो पुस्तक चौड़ाई घीर मोटाई में समान हो किन्तु विविध लम्बाई वाली ताइपत्रीय पुस्तक को गण्डी पुस्तक कहते हैं। गण्डी शब्द का ध्रमं कतली होता है, ध्रवांत् जो पुस्तक गण्डिका ध्रमांत् कतली जैसी हो, गण्डी-पुस्तक कही जाती है। श्राजकल जो छोटी-मोटी ताइपत्रीय पुस्तक मिलती है उसको, एवं इसी पद्धति में लिखे कागज के प्रन्थों को भी गण्डी-पुस्तक कहा जाता है।
- २. कच्छापी पुस्तक जो पुस्तक दोनों तरफ के छोरों में पतली हो तथा मध्य में कछुए की भांति मोटी हो, उसे कच्छापी पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार की पुस्तकें इस समय देखने में नहीं ब्रारही हैं।
 - १ "गण्डी कच्छवि मुट्ठि, संपुडफलए तहा छिवाडी य । एय पुरथयपण्यं, वक्काणिमणं भवे तस्स ॥ बाहल्ल-पुहत्ते हिं, गण्डीपुत्थो उ तुल्लगो दीहो । कच्छिव अंते तणुश्रो, मज्के पिहुलो मुर्णयव्यो ॥

चउरंगुलदीहो वा, बट्टागिइ मुट्ठिपुत्थगो झहवा चउरंगुलदीहो च्चिय, चउरसो होइ विन्ने ग्रो ॥

संपुडगो दुगमाई, फलगा बोच्छं खिवाड़िमेत्ताहे। तग्गुपत्तूसियम्बो, होइ छिवाड़ी बुहा बेंति।।

दीहो वा हस्सी वा, जो पिहुलो होइ झप्पबाहल्लो। तं मुिणयसमयसारा छिवाङ्गित्यं भग्तिह ॥''

--- दशकालिक हरिभद्रीय टीका, पत्र २५।

२ ---पोत्थगपर्णगं--दीहो बाहल्लपुह्नोरा तुल्ला चउरंसो गंडीपोत्थगो । ग्रंतेसु तरगुग्रो मज्के पिहुलो ग्रप्पबाहल्लो कच्छभी । चउरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृति मुट्ठिपोत्थगो, ग्रहवा चउरंगुलदीहो चउरंसो मुट्ठिपोत्थगो । दुमादिफलगा संपुडगं । दीहो हस्सो वा पिहुलो भ्रप्पबाहल्लो खिवाड़ी, ग्रहवा तरगुपलोहि उस्सितो खिवाड़ी ।

-- निशीयचूर्णी।

३ - गंडी कच्छवि मुद्ठि, खिवाडी संपुड्ण पोत्थमा पंच।

४---गण्डीपुस्तकः कच्छपी पुस्तकः मुष्टिपुस्तकः सम्पुटफलकः छेदपाटी पुस्तकश्चेति पंच पुस्तकाः।

- ३. श्रुव्धि पुस्तक जो पुस्तक चार प्रंगुल लम्बी हो भीर गोल हो उसको मुख्टि पुस्तक कहते हैं। प्रथमा जो चार प्रंगुल की चारों तरफ से चोखण्ड हो, तो भी मुख्टि पुस्तक कही खाती है। छोटी-मोटी टिप्पशकाकार में लिखी जाने वाली पुस्तकों का इसमें समावेश होता है। दूसरे प्रकार में वर्तमान की छोटी-मोटी डायरियों का या हाथ पोषी जैसी लिखित गुटकाओं का समावेश होता है।
- ४. संयुक्तस्वक—लकड़ी की पट्टियों पर लिखी हुई पुस्तकों का नाम संपुट-फलक होता है। यन्त्र, जम्बू-द्वीप, भ्रदाई-द्वीप, लोकनालिका, समबभारण भ्रादि की चित्रावली जो लकड़ी की पट्टिकाओं पर लिखी हों तो संपुट-फलक में समाविष्ट होती हैं। भ्रथवा लकड़ी की पाट्टी पर लिखी पुस्तक को सम्पुट-पुस्तक कहते हैं।
- ५. खेवपाटी कम पन्नों वाली पुस्तक को छेदपाटी पुस्तक कहते हैं, जो लम्बाई में कितनी ही हो किन्तु मोटाई में थोड़ी हो तो छेदपाटी कहलाती हैं।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पुस्तकें सातबीं शती तक के लिखित प्रमाणों के श्राधार पर बताई गयी हैं। इस प्रकार की पुस्तकें श्राज एक भी उपलब्ध नहीं हैं।

उपलब्ध एक हजार वर्ष के ग्रन्थों में प्रयुक्त लेखन सामग्री

पुस्तक लेखन के प्रारम्भकाल के बाद का लेखनकत्ता का वास्तविक इतिहास मंधेरे में डुबा हुमा होने से प्राचीन उल्लेखों के ग्राधार पर उसके ऊपर जितना प्रकाश डाला जा सकता है उतना प्रयस्न किया गया है। ग्रब उसके बाद बतंमान में उपलब्ध विक्रम की ११वीं शती से २०वीं शती तक की लेखन-कला के साधन भीर उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश यहाँ डाला जा रहा है—

विष्यासन--राजप्रश्नीय सूत्र में "लिप्यासन"-लिपि + धासन=लिप्यासन का धर्य मधीकाजन रूप में लिया है। पर हम यहाँ लिपि के आसन शक्या पात्र, तरीके के साधन में, ताड़पत्र, वस्त्र, कागज, लकड़ी की पट्टिया, भोजपत्र, ताझपत्र, रोप्यपत्र, सुवर्शपत्र, पत्थर धावि का समावेश कर सकते हैं।

मुजरात, मारवाइ, मेवाइ, कच्छ दक्षिए। मादि प्रान्तों में वर्तमान में जो जैन-ज्ञान मण्डार हैं उन सबको देखने से स्पष्ट समभ्या जा सकता है कि पुस्तकों मुख्य रूप से विकम की तैरहवीं सदी के पहले ताइपत्र और कपड़े दोनों पर ही लिखी जाती थीं। लेकिन इन दोनों में भी ताइपत्र का विशेष प्रचार था। लेकिन बाद में कागज का आविष्कार हो जाने से कागज पर ही मन्य लिखे जाने लगे, और इस प्रकार धीरे-धीरे ताइपत्र का युग कमझः लूप्त होता गया।

कपड़े पर पुस्तकें स्वचित् पत्राकार के रूप में लिखी जाती थी। इसका उपयोग टिप्पणी के लिखने के लिये तथा चित्र, पट, मन्त्र, यन्त्र, लिखने के लिए ही विशेष प्रमाण में हुआ करता था। कपड़े पर लिखे ग्रन्थों में धर्म-विधि-प्रकरण वृत्ति, कच्छूलीरास ग्रीर त्रिषण्ट-शलाका-पुरुष चरित्र की प्रतियां पत्राकार के रूप में पायी जाती हैं। जो २४''×४'' की लम्बाई धीर चौड़ाई की हैं। परन्तु लोकनालिका, ग्रवाईद्वीप, जम्बूदीप, नवपद, हींकार, घण्टाकर्ण, पंचतीर्थीपट धादि के चित्रवस्त्र पट पर प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। पन्दहवीं शताब्दी तक के प्राचीन कई पंचतीर्थीपट भी पाए गये हैं।

भोजपत्र का उपयोग बौद्ध एवं वैदिक लोगों ने ही पुस्तकें लिखने में किया है। अधाविध एक भी जैन प्रस्य प्राचीन भोजपत्र पर लिखा हुआ नहीं मिला है। सिर्फ १५वीं एवं १६वीं सदी से ही यतियों ने मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के लिखने में इसका उपयोग किया है। किन्तु वह भी थोड़े परिमाण में।

मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र ग्रादि के लेखन के लिए कांस्यपत्र, वाम्रपत्र, रौप्यपत्र, स्वर्ण-

देखिये-भारतीय जैन श्रमण संस्कृति श्रने लेखन कला पृष्ठ-२७ वसुदेवहिण्डी प्रथम खंडमा ताझपत्र उपर पुस्तक लखवानो उल्लेख छे: इयरेण तंबपरोसु तम्मृगेसु रायलक्खमां रएऊम्मृ तिझ्श्लोस्सेम्मृ तिझ्केस्या तंबभायम् पोत्थमो पिक्खतो, निक्खितो नयरबाहि दुव्यावेदसङ्की। पत्र १८६

१. (क) "एकदा प्रातगुँ छन् सर्वसाधू प्रच विन्दित्व। लेखकशालाविलोकनाय गतः । लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टाः । ततः गुरुपाप्रवा पृष्ठछा । गुरुपिरचे श्री चौलुक्यदेव ! सम्प्रति श्रीताङ्गत्रागां त्रृटिरस्ति ज्ञानकोशे, ग्रतः कागदपत्रेषु ग्रन्थलेखनमिति ॥" क्मारपाल प्रवन्ध पृष्ट ६६ ।

⁽म) श्री वस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमधीमयाद्वरा एकासिद्धान्त प्रतिलेखिता । अपरास्तु श्रीताडकागदपत्रेषु मधीवर्णाञ्चिताः ६ प्रतयः । एवं सप्तकोटिद्रव्य-व्ययेन सप्त सरस्वतीकोगाः लेखिताः ॥" उ० त० पृष्ठ १४२

२. संवत् १४०० वर्षे चीबाग्रामे श्री नरचन्द्रसूरीग्गां क्रिप्येग्ग श्री रत्नप्रभसूरीग्गां बांघवेन पंडित गुग्गमद्रीग्ग कच्छ्ली श्रीपार्यनाथगोदिक सीबामार्या गौकी तत्पुत्र श्रावक जसा ह्रंगर तद्भागनी श्राविका वीभीतिल्ही प्रभृत्येषां साहाय्येन प्रभुश्री श्री प्रभसूरिविरचितं धर्म विधिप्रकरण् श्री उदयसिहसूरि विरचितां वृत्ति श्रीधर्मविधेग्रन्थस्य कार्तिक-विदिश्ममी दिने गुरुवारे दिवसपाण्चात्यचिकाद्वये स्विपतृमात्रोः श्रीयसे श्रीधर्मविधि ग्रन्थमिलिखत् ।। उदकाननचौरेप्यो मूषकेष्यस्तर्थंव च । कप्टेन लिखितं ग्रास्त्र यत्नेन परिपालयेत् ।। अत्रात्त्राः

३. कांस्यपत्र, ताञ्चपत्र, रौप्यपत्र, भने मुदर्शपत्रमां तेमना केटलीकबार पंचधातुना मिश्रितपत्रमां लखाग्रेना ऋषिमण्डल, धण्टाकर्श घोसहियो यत्र, बीसो यंत्र वगेरे मत्र-यंत्रादि जनमन्दिरोमां घर्यो ठेकार्यो होय छ । जैन पुस्तको लखवा माटे.... ... १

पत्र, पंचातु आदि का अधिकांक उपयोग मन्त्र धीर यन्त्र लेखन में हुआ है। लेकिन जैन-पुस्तकों के लेखन में प्रयोग किया हो ऐसा देखने में नहीं भाया है। राजाओं के दानपत्र सम्भपत्रों पर लिखे जाते थे। जैन शैली में नवपद यन्त्र, विश्वतिस्थानक यन्त्र, घण्टाकर्ए, ऋषिमण्डल आदि विविध प्रकार के यन्त्र, भाज भी ताम्रपत्र पर लिखे जाते हैं और वे मन्दिरों में पाए जाते है। ताम्रपत्र पर लेखन का उल्लेख बसुदेवहिण्डी जैसे प्राचीन ग्रन्थों में भी पाया जाता है।

बीदों ने हाथी दांत, तथा उसके दांतों से बने हुए पन्नों का ग्रम्थ लेखन में उपयोग किया है। पर जैनों ने पुस्तकों के साधन जैसे आकंडी, कांबी, ग्रन्थी, दावडा, कुदड़ी आदि के वास्ते हाथी दांत का उपयोग किया है पर ग्रन्थलेखन में नहीं। इंसी प्रकार रेशमी कपड़ा तथा चमड़ा की पाटली ग्रथवा पट्टी चढ़ाए हों ग्रीर उसके ऊपर ग्रन्थों के नाम वगैरह लिखे हों, पर स्वतन्त्र रूप से ग्रंथ लेखन में उसका उपयोग नहीं किया है। बृक्षों की खाल धादि का उपयोग जैनेतर ग्रथों मे हुआ है। ग्रगुरुखाल पर मंबत् १७७० मे लिखी हुई ब्रह्मगैवर्तपुरागा की प्रति बड़ौदा के ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में उपलब्ध हुई है। जैन ग्रथों मे ऐसे उपादानों का उपयोग नहीं हुआ है। उपर्युक्त सभी साधनों पर संक्षित्त में ग्रागे प्रकाश डाला जा रहा है।

ताइ पत्र — ये ताड़ वृक्ष के पनी हैं। इस पेड़ का संस्कृत नाम तल प्रथवा ताल है, ग्रीर गुजराती में इसको ताड़ कहते हैं ताड़ वृक्ष दो प्रकार के होते हैं— (१) खरताड़ भीर (२) श्रीताड़। गुजरात की भूमि पर जो ताड़ देखने में श्राता है वह खरताड़ है। इसके पत्र मोटे, लम्बे ग्रीर चौड़ाई में छोटे होते हैं। ये पत्र भटका लगते ही दूट जाते हैं। ग्रतः इनका उपयोग ग्रंथ लेखन में नहीं होता है। श्रीताड़ के पेड़ मद्रास, ब्रह्मादिदेशों में विशेष प्रमागा में पाए जाते हैं। उनके पत्र मुलायम, ३७ "×३" से भी ज्यादा सम्बे, मोटे तथा कोमल होते हैं। इनके सडने का, ग्रीर नमाने में भी एकाएक दूटने का भय नहीं रहता है। पुस्तक लिखने में इन्हीं ताड़पत्रों का प्रयोग किया खाता था।

कागज — कागज के लिए प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में कागद या कद्गल भ्रथ्द का प्रयोग हुआ है। जैसे धाजकल धलग-ग्रलग प्रान्तों में खोटा-मोटा फाड़ा-पतला, श्रच्छा-बुरा धाद अनेक जाति के कागज बनते हैं। उसी तरह पुराने जमाने से लेकर धाज तक देण के प्रत्येक विभाग में काश्मीर, दिल्ली, पटना, सांगानेर, कानपुर, लम्भात, घहमदाबाद, कागजीपुरा (दौलताबाद के पास) धादि धनेक स्थानों में ध्रपनी क्यत भीर धादश्यकतानुसार कागज तैयार होता था। विविध जाति के कागजों में विशेषता काशमीर का काश्मीरी कागज, कानपुर का कानपुरी कागज, धहमदाबाद का धहमदाबादी और सांगानेर का सांगानेरी कागज सर्वोत्तम होते थे। प्राचीन ज्ञान-भण्डारों में प्राप्त कागज खाज के कागज के धनुसार ही लगते हैं। ध्राजकल तैयार होने वाला मिल का कागज तो प्राचीन कागज की तुलना में कम टिकाऊ है।

कागज के वन्ने काटना---कागज बड़े-बड़े भ्राकार के तैयार होते थे । उसमें से अपनी भावश्यकता के साप का पन्ना काटने के लिए उस समय भ्राज की भांति पेपर-कटर मशीन नहीं

१. भारतीय जैन श्रमण सस्कृति ग्रने लेखन कला पृष्ठ-२८।

थी। उस समय कागज को बांसों की चीपों या लोहे की चीपों के कीचे दवाकर हाथों से सावधानी पूर्वक काटा जाता था। तथा इसके लिये एक होशियार व्यक्ति की आवश्यकता होती थी।

खुटाई — पुस्तक लिखने के लिए सभी देशी कागजों की घुटाई की जाती थी। जिससे उनके ऊपर स्थाही नहीं फूटती थी। कागज के बहुत दिनों तक पड़े रहने से अथवा बरसात व सर्वी के प्रभाव से उसका घूंट कम हो जाता था जिससे उसकी विकनाहट कम हो जाती थी या हट जाली थी। विकनाहट कम होने से अक्षर फूट जाया करते थे। इसके लिए उन पर पुन: पालिक चढ़ाना होता था। पालिक चढ़ाने के लिए कागजों अथवा पन्नों को फिटकड़ी के पानी में डुबोकर सुखाने के बाद, कुछ सूखा जैसा हो जाय तब उसको अकीक अथवा कसीटी अथवा किसी जाति के घूंटा से अथवा कोड़ा से घुटाई की जाती थी। जिससे अक्षर नहीं फूटते थे।

कपड़ा—पुस्तक लिखने के लिए धयवा चित्र गंत्र ग्रादि के लेखन के लिए कपड़ें पर गेहूँ या चावंल की कहप लगाई जाती थी। कड़प लगाकर मुखा लेने के बाद उसकों कसौटी ग्रादि से घौट देने से कपड़ा चिकना लिखने लायक बन जाता था। पाटण के बखतजी के ''केसरी जैन-भण्डार''में खादी के कपड़ें के ऊपर लिखी हुई पुस्तक है। पाण्डेंनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में भी कपड़ें का एक १६वीं बताब्दी में लिखा हुआ ग्रंथ मिलता है।

काष्ठ पहिका — लेखन के साधन के रूप में काष्ठ पहिकाएं (लकड़ी की सादी अथवा रंगीन) भी उपयोग में आती थीं। पुराने जमाने में व्यापारी लोग ग्रपते रोजीन्दा, कच्ची बड्डी वगैरह को पट्टी पर लिख रखते थे। उसी प्रकार ग्रंथ की रचना करते समय ग्रंथ का कच्चा खड्डा लकड़ी की पाट्टी के ऊपर करते थे भीर निश्चित हुए बाद ही पाट्टी के ऊपर से पक्की नक्कल किया करते थे। लकड़ी की पट्टियों का स्थाई चित्रपट ग्रथवा यंत्र, मंत्र चित्रित करने के लिए भी उपयोग होता था। उत्तराष्ययन वृत्ति (सं० ११२६) को नेमिचन्द्राचार्य ने पट्टिका पर लिखा था जिसे सर्वदेव गिए। ने पुस्तकारूढ़ किया था।

लेखनी — जैसे प्राजकल लिखने में पैन भीर डॉटपैन का उपयोग होता है गैसे पहिले हो:डर (कलम) पैन्यिल प्रादि का उपयोग होता था। उससे पूर्व बास बेंत श्रादि के अण्ट से लिखा जाता था। श्राजकल उसका प्रबलन धरपधिक ग्रन्थमात्रा में रह गया है। पर हस्तिलिखित ग्रंथों को लिखने में भाज भी कलम का उपयोग होता है।

कर्नाटक, सिहल, उत्कल, ब्रह्म ग्रादि देशों में जहीं ताडपत्र पर कोटकर पुस्तक लिखी जाती है वहाँ लिखने के लिए नौकदार सुदया की जरूरत होती है। कागजों पर

 पष्टिकातोऽलिखच्चेमां, सर्वदेवाभिधो गिताः । ग्रात्मकर्मक्षयायाय, परोपक्रति हेतवे ।। मन्त्र व लाइने बनाने के लिए जुजवल का प्रयोग किया जाता था। जो लोहे के चिमटे के माकार की होती थी। माजकल के होत्बर की नीब इसी का विकसित रूप प्रतीत होती है। कलमों के विस जाने पर उसे चाकू से छील कर पतला कर लिया जाता था, तथा बीच में से एक खड़ा चीरा कर दिया जाता था। जिससे मावश्यकतानुसार स्याही नीचे उत्तरती रहती थी।

लेखनियों के शुभाशुभ, कई प्रकार के गुएए-दोशों को बताने वाले अनेक श्लोक पाए जाते हैं। जिसमें उनकी लम्बाई रंग, गांठ आदि से ब्राह्माएगदि वर्ग, आयु, धन, सन्तान हानि, वृद्धि आदि के फलाफल लिखे हैं। उनकी परीक्षा पद्धति ताइपशीय युग की पुस्तकों से चली आ रही है। रत्न परीक्षा में रत्नों के श्वेत, पीत, लाल और काले रंग ब्राह्माएं, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की भांति लेखनी के भी वर्ण समक्तना चाहिए। इसका किस प्रकार उपयोग करना, इसका पुराना विधान तत्कालीन विश्वास व प्रथाओं पर प्रकाश डालता है।

प्रकार — चित्रपट, यन्त्र ध्रादि में गोल श्राकृतियाँ करने के लिए एक लोहे का प्रकार होता था। यह प्रकार जिस प्रकार की छोटी-मोटी गोल भाकृति बनानी हो उस प्रमारा में छोटा-बड़ा बनाया जाता था। भ्राज भी यह मारवाड़ वगैरह में बनाया जाता है। भ्राजकल इसके स्थान में कम्पास भी काम में लाया जाता है।

श्रोतिया, उसकी बनावट श्रीर उत्पत्ति—प्राचीन हस्तलिखित पुन्तकों को एकधार सीधी लाइन में लिखे हुए देखने से मन में यह प्रश्न उठता है, कि यह लेख सीधी पंक्ति में किस प्रकार लिखा गया होगा? इस शका का उत्तर यह श्रोतिया देती है। श्रोतिया को मारवाड़ी में लहीश्रावी फाटीऊ के नाम से जानते हैं। लेकिन इसका वास्तविक उत्पत्ति या श्रर्थ क्या है? यह समक्ष में नहीं आता है। इसका प्राचीन नाम श्रोतियुं मिलता है। श्रोतियुं शब्द संस्कृत श्राति

1. ब्राह्मणी श्वेतवर्णाच, रक्तवर्णाच क्षत्रिणी। वैश्यवी पीतवर्णा च, धसुरीश्यामलेखिनी ॥१॥ प्वेते सूखं विजानीयात्, रक्ते दरिद्रता <mark>भवे</mark>त्। पीते च पुष्कला लिक्मी:, प्रसुरी क्षयकारिग्री ॥२॥ हरते पुत्रमधोमुखी हरते वामे च हरते विद्यां, दक्षिग्गालेखिनी लिखेन् ॥३॥ श्रग्रग्रन्थः हरेदायुर्मध्यग्रन्थिहरद्भनम् । उच्ठप्रन्थिहरेत्, सर्वं, निग्नंन्थिलें जिनी लिखेत् ॥४॥ नवांगुलमिता श्रेष्ठा, श्रष्टी वा यदि वाऽधिका। लेखयेन्नित्यं, धनधान्यसमागमः भ्रष्टांगुलप्रमार्गेन, लेखिनी सुबदायिनी। हीनाय हीनकमं स्यादिधकस्याधिकं फलम् ॥१॥ माचप्रनिथर्तरेदायुर्मेच्यप्रनिथर्हरेद्धनम् । मन्त्यप्रन्यिहंरेत् सीक्ष्यं, निग्नंन्यिलं विनी शुना ॥१॥

भीर प्राकृत भोलि और गुजराती भील गव्द से बना है। एकड़ी के फलक था गरो के मजबूत पुठे पर छेद कर मजबूत सीधी डोरी छोटे-बड़े ग्रक्षरों के बौड़े-सकड़े ग्रन्तरालानुसार दोनों भोर कसकर बांध दी जाती है भीर उस पर रंग-रोगन लगाकर तैयार किये फाटिये पर कागज को रख कर श्रमुलियों द्वारा तान कर लकीर चिल्लित कर ली जाती है। तथा ताड़पत्रीय पुस्तकों पर छोटी सी बिन्दु सीधी लकीर ग्राने के लिए कर दी जाती थी।

स्याही पुस्तक लेखन में प्रनेक प्रकार की स्याहियों का प्रयोग रिष्टिगत होता है। परन्तु सामान्य रूप से लेखन के लिए काली स्याही ही सार्वितिक रूप में काम में लाई गई है। सोने—चांदी की स्याही से भी पुस्तकों लिखी जाती थीं, पर सोना-चांदी के महार्घ्यता के कारण उमका उपयोग ब्रत्यल्प परिमास्त में ही विशिष्ट शास्त्र लेखन में श्रीमन्तों द्वारा होता था। लाल रंग का प्रयोग बीन-त्रीच मे प्रकरण समाप्ति व हांसिए की रेखा मे तथा चित्रादि के आलेखन में प्रयोग होता था।

भारत में हस्तलेकों की स्याही का रंग बहुत पक्का बनाया जाता था। यही कारण है कि बैसी पक्की स्याही से लिखे ग्रयों के लेखन में चमक ग्रब तक बनी हुई है। विविध प्रकार की स्याही बनाने के नुस्के विविध ग्रंथों में दिये हुए है। भारतीय जैन श्रमण संस्कृति श्रने लेखन कला में जो नुस्खे दिये हुए है वे इस प्रकार हैं—

भयम प्रकार ---

''सहवर-भृग-तिफलाः, कामीस लोहमेव नीली व समक्रजल-बोलयुता, भवति मणी ताड्रपत्रासाम् ॥

श्याख्या—"महवरेति काटांमेहरीश्रो (धमासो) भृगेति भांगुरश्रो । विफला प्रसिद्धंव । कामीसमिति कसीसम्, येन काष्ठादि रज्यते । लोहमिति लोहचूग्रंम् । नीलीति गलीनिष्पादको वृक्षः तद्रसाः । रसं विना सर्वेषामुत्कस्य क्वाथः क्रियते, स च रसोऽपि । समर्वितिकंज्जल—बोलयोर्मध्ये निक्षिप्यते, ततस्ताइपत्रमधी भवतीति ॥"

धर्यात्—धमासा, जलभांगरा का रस, त्रिफला, कमीस, लोहचूर्ए को उबाल कर, क्वाय बनाकर इमके बराबर परिमारा में गली के रस को मिलाकर, काजल व बीजाबोल मिलाने से स्याही बन जाती है। इसका उपयोग ताडपत्र पर लिखने के लिए होता है।

दूसरा प्रकार---

कज्जल पा (पो) इगा बोलं, भूमिलया पारदस्स लेसं च। उसिएगजलेरा विघसिया, विडिया काऊरा कुट्टिज्जा ।।१।। तत्तजलेरा व पुराभो घोलिज्जंती दंढ मसी होई। तेरा विलिहिया पत्ता, वच्चह रयसाई दिवसु व्व ॥२॥

व्यर्थात्—काजल, पोयएा, बीजाबोल, भूमितला, जलभांगरा धीर पारे को जबलते हुए पानी मे मिलाकर, ताम्बे की कड़ाई मे सात दिन तक घोटकर एक रस करलें। फिर खसकी कडियां सकालें भीर उम्हें कूट कर पर्खें भीर फिर जब अववश्यक हो उसे गरम पानी में खूब मसल लें स्याही तैयार हो जाती है। ¹

तीसरा प्रकार ---

"कोरङ्ए वि ससवे, श्रंगुलिया कीरडिंग्ग कज्जलए।
महह सरावसमां, आर्थ विय वि (क्क) गं मुग्रह।।३।।
पिचुमंदगुंदलेसं, खायरगुंदं व बीयजलिमस्सं।
भिज्जवि तोएगा दढं, महह जा त जलं सुसई।।४।।
इति ताङ्गममस्याम्नायः।

बर्थात् — नयं काजल को मिट्टी के कोरे सिकोरे में श्रंगुली से इतना मर्ले कि उसका चिकनापन छूट जाये। फिर उसे नीम या खेर के गोंद के साथ बीधाजल के मिश्रग्ण में भिगोकर खूब घोटे जब तक कि पानी सूख न जावे, फिर बडिया बनालें।

चौथा प्रकार —

निर्यासात् पिचुमन्दजाद् द्विगुिशातो बोलस्ततः कज्जलं, संजान तिलनैलतो हुतवहे तीन्नातपे मर्दितम् । पात्रे शून्वमये तथा शन (?) जलैलिक्षारसैर्भावितः। मद्भल्लातक-भृगराजरसयुक् सम्यग् रसोऽय मधी ॥१॥

भ्रथात् — नीम का गोंद, उससे दूगना बीजाबोल, उससे दूगने काजल को गोमूत्र के साथ घोटकर ताम्रपात्र में गरम करें। सूखने पर थोड़ा-थोडा पानी देते रहें, फिर इसमें शोधा हुन्ना भिलावा तथा भांगरे का रस डालें, उत्तम स्याही बन जावेगी।

पांचवा प्रकार---

ब्रह्मदेश, कर्नाटक म्रादि देशों में ताड़पत्र पर लोहे की सूई से कोर कर लिखा जाता है। उन म्रक्षरों में काला २ग लाने के लिए नारियल की टोपसी या बादाम के छिलकों को जला-कर, तेल में मिलाकर, कुरेदे हुए भ्रक्षरों पर काले चूर्ण को पोतकर, कपड़े से साफ कर देते हैं। इससे चूर्ण भ्रक्षरों में भरा रह जाता है, भीर मक्षर स्पष्ट पढ़ने मे भ्रा जाते हैं। उपर्युंक्त सभी भ्रकार, वाड़पत्र पर लिखने की स्याही के हैं।

१. प्रलोक में तो यह नहीं बताया गया है कि उक्त मिश्रगा को कितनी देर बॉटना चाहिये। परन्तु जयपुर में कुछ परिवार स्याही वाले ही कहलाते हैं । त्रिपोलिया के बाहर उनकी 'प्रसिद्ध दूकान थी। वहाँ एक कारखाने के रूप में स्याही बनाने का कार्य चलता था। महाराजा के पोथीखाने में भी 'सरबराकार'' स्याही तैयार किया करते थे। इन लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्याही की चुटाई कम से कम आठ यहर होनी चाहिए। मात्रा अधिक होने पर अधिक समय तक थींटना चाहिए।

⁻⁻गोपालनारायण बहुरा

इसी प्रकार कागज ग्रीर कथड़े पर लिखने की स्वाही के बनाने की भी कई विभियां हैं:—

पहली विधि--

जितना काजल उतना बोल, तेबी दूला गुंद सकोल । जो रस भागरा नो पड़े, तो श्रक्षरे-शक्षरे दीवा बले ॥

दूसरी विधि--

मध्यर्षे क्षिप सद्गुन्दं गुन्दार्थे बोलमेव च, लाक्षाबीयारसेनोच्चेमंदंयेत् ताम्रभाजने ॥१॥

भर्थात् — काजल से भ्राभा गोंद, गोंद से भ्राभा बीजाबील, लाक्षारस तथा बीभारस के साथ ताम्रपात्र में रगडने से काली स्याही तैयार होती है।

तीसरी विधि ---

बीम्रा बोल मनइल लक्खा रस, कज्जल वज्जल (?) नइ म्रंबारस ।
"भोजराज" मिसी नियाद, पान म्रो फाटई मसी बनि जाई॥

चौधी विवि ---

लाख टांक बीस मेल, स्वाग टांक पांच मेल ।
नीर टांक दो सौ लेई हांडी में चढाइये।।
ज्यों सों धान दीजे त्यों लों धौर खार सब लीजे।
लोदर खार बाल-बाल पीस के रखाइये।।
मीठा तेल दीय जल, काजल सो ले उतार।
नीकी विधि पिछानी के ऐसे ही बनाइए।।
चाइक चतुर नर लिखके धनूप ग्रन्थ।
बांच बांच वांच रीक्स-रीक्स मौज पाइए।।

पांचवीं विधि ---

स्याही पक्की करने की विधि:—लाख चौखी श्रववा चौपड़ी ६ पैसे भर लेकर तीन सेर पानी में डालें, २ पैसा भर सुवागा डालें, ३ पैसा भर लोध डालें, फिर उसको गरम करें श्रौर जब पानी तीन पाव रह जावे तब उतार लें। बाद में काजल १ पैसा भर डाल कर घोंट-घोंट कर सुखा लें। श्रावश्यकतानुसार इसमें से लेकर शीतल जल में भिगो दें। तो पक्की स्याही तैयार हो जाती है।

सठी विभि ---

काजल ६ टांक, बीजाबोल १२ टांक, बैर का गोंद ३६ टांक, धफीम १/२ टांक, धलता पोषी ३ टांक, फिटकड़ी कण्ची १/२ टांक, नीम के खोंटे से दाम्बे के बस्तन में साल दिन तक घोंटे। उपर्युक्त नुस्ते मुनि श्री पुष्यविजय की ने वहाँ वहाँ है । तेकर विये हैं। उनका अभिमत है कि पहली विधि से बनी स्वाही सर्वश्रेष्ठ है। अन्य स्थाही पक्ती तो है पर कागज-कपड़े को क्षति पहुँ वाती है। लकड़ी की यही पर लिखने के लिए सब ठीक हैं। १

सुनहरी एवं कपहली स्थाही---

सोना और चाँदी की स्याही बनाने के लिए वर्क को खरल में डालकर घोक के पूंद के स्वच्छ जल के साथ खूब घोंटते जाना चाहिए। बारीक हो जाने पर मिश्री का पानी डालकर हिलाना चाहिए। स्वर्ण चूर्ण नीचे बैठ काने पर पानी को घीरे-धीरे निकाल देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार धुलाई पर गूंद निकल जायेगा और सुनहरी या रूपहली स्याही तैयार हो जावेगी।

लाल स्याही---

हिंगुल को खरल में मिश्री के पानी के साथ खूब घोंटकर ऊपर आते हुए पीलास लिए हुए पानी को निकाल दें। इस तरह दस पन्त्रह बार करने से पीलास बाहर निकल जावेगा और शुद्ध लाल रंग रह जावेगा। फिर उमे मिश्री और गूंद के पानी के साथ घोंट-कर एक रस कर लें, फिर सुखा कर, बड़ीयां बना लें और आवश्यकतानुसार पानी में घोल कर स्याही बनालें।

लेखक ---

"लेखक" शब्द लेखन-किया के कर्ता के लिए प्रयुक्त होता है! लेखक के पर्याय-वाची शब्द जो भारतीय परम्परा में मिलते है वे हैं — लिपिकार या लिबिकार या दिपिकार। इस शब्द का प्रयोग चतुर्थ शती ई०पू० से हुआ मिलता है। अशोक के अभिलेखों में भी इसका कई बार उल्लेख हुआ है। इनमें यह दो अर्थों में भाया है — प्रथम तो लेखक, दूसरा शिलाओं पर लेख उत्कीर्ए करने वाला व्यक्ति। संस्कृत कोषों में इसे लेखक का ही पर्यायवाची माना गया है। जैसे अमरकोश में —

> "मिषिकारोऽक्षरचराो.क्षरऽचु-चृश्च लेखके" । मत्स्यपुरारा में लेखक के निम्न गुरा बताये गये हैं---

लेखक के गुरा ---

सर्वदेशाक्षरभिजः सर्वशास्त्रविशारदः । लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकररोषु वै ॥

- १. इसी बात को स्पष्ट करते हुए मुनि जी ने बताया है कि जिस स्याही में लाख, कत्था और लोघ पड़ा हो तो वह स्याही कपड़े धीर कागज पर लिखने के काम की नहीं होती है। इससे कपड़े एवं कागज तम्बाकू के पत्ते जैसे हो जाते हैं।
 - —भारतीय जैन श्रमण संस्कृति धने लेखन कथा, पृष्ठ ४२
- २. पाण्डे, आर० बी॰, इण्डियन पालायोग्राफी पृष्ठ ६०।

तीवंपितान् सुसंपूर्णान् श्रुभवेस्यानकान् समान् ॥ श्रवारान् वै लिकेशस्तु लेखकः स वरः स्मृतः ॥ उपायवावयकुक्षलः सर्वकारविकारदः । बह्वयंवक्ता चाल्पेन लेखकः स्थान्नृपोत्तम ॥ बाचामित्रायः तत्वको देशकालविचायवित् । श्रनाहार्यो नृपे भक्तो लेखकः स्थान्नृपोत्तम ॥

ग्रध्याय. १८६

गरुड़-पुरागा में लेखक के निम्न गुगा बताये गये हैं— मेघावी वाक्पटुः प्राज्ञः सत्यवादी जितेन्द्रियः । सर्वेशास्त्रसमालोकी हार्षे साधु सः लेखकः ॥

ऊपर के क्लोकों में लेखक के जिन मुखों का उल्लेख किया गया है, उनमें सबसे महस्वपूर्ण है "सर्वदेशक्षराभिज्ञः"—समस्त देशों के प्रक्षरों का ज्ञान लेखक की अवश्य होना चाहिये। साथ ही "सर्वभास्त्रसमालोकी"—समस्त कास्त्रों में लेखक की समान गति होनी चाहिए।

ऊपर उद्धृत भीर। गिक श्लोकों में जिस लेखक की गुगावली प्रस्तुत की गई है, वह बस्तुत: राज-लेखक की है। उसका स्थान भीर महत्त्व लिखिया या लिपिकार के जैमा माना जा सकता है। हिन्दी में लेखक मूल रचनाकार को भी कहते है। लिपिकार को भी विशेषार्थंक रूप में लेखक कहते हैं।

मन्दिरों, स्रस्वती तथा जान-भण्डारों में लेखक-शालाशों के उस्लेख मिलते हैं। "कुमारपाल प्रबन्ध" में इसका उल्लेख इस प्रकार श्राया है—"एकदा प्रातर्गु रून् सर्वसाधू श्च विन्दित्वा लेखकशाला विलोकनाय गतः। लेखकाः कागदपत्राणि लिखन्दी ब्व्टाः।" जैनधर्म में पुस्तक लेखन को महत्त्वपूर्ण और पवित्र कार्य माना है। ग्राव्याय हरिभद्वसूरि ने "योग-दिष्टि-समुच्चय" में लेखना पूजना दान" में श्रावक के नित्य कुत्यों में पुस्तक लेखन का भी विधान किया है। जैन ग्रन्थों से यह भी विदित होता है कि ग्रन्थ रचना के लिए विद्वान लेखक को बिद्वान शिष्य और श्रमण विविध सूचनायें देने में सहायता किया करते थे। देशी भी प्रवा थी कि ग्रन्थ

- १. कुमारपाल प्रबन्ध गुष्ठ ६६।
- २. (क) ''अएाहिल्लवाडयपुरे, रइयं सिज्जममामिगाो चरिय । साहज्जेएां पंडियाजिएा चन्द्रगुगिस्म सीमस्स ॥''
 - भगवति वृत्ति अभवदेवीयाः
 - (स. साहेग्णं सन्वेहिं कर्यः " " समित्थ गंविमा । क्यकितिबुहेणं पृत्ता, विसेसको सोहलाईहि ।"

-- शस्टिनेमिकरित्र रत्नप्रभीय

रचनाकार प्रपने विश्वय के मान्य शास्त्रवेसा और प्राचार्य के पास अपनी रचना संझोधनार्य भेता करते थे। उनसे पुष्टि पाने के बाद ही रचनाकों की प्रतियां कराई जाती थीं। प्रन्थ लेखन या लेखक का कार्य पहले बाह्यएों के हाथों में रहा, बाद में "कायस्यों" के हाथों में चला गया। "कायस्य" लेखकों का व्यवसायी दर्ग था। विज्ञानेश्वर ने याज्ञवल्क्य स्मृति (१/३३६) की टीका में मूल पाठ में प्राये कायस्य शब्द का प्रयं लेखक ही किया है—"कायस्थ्य एका लेखकाश्च"। इसमें सम्बेह नहीं कि कायस्थ वर्ग व्यवसायिक लेखकों का वर्ग होता था। यही धागे चलकर जाति के रूप में परिरात हो गया। कायस्थों का लेखन बहुत सुन्दर होता था। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने निम्न दस प्रकार के लिपिकार बताये है:—

- (१, जैन/श्रावक या मुनि
- (२) साधु
- (३) गृहस्थ
- (४) पढ़ाने वाला (चाहे कोई हो)
- (५) कामदार (राजघराने के लिपिक)
- (६) दफ्तरी
- (७) व्यक्ति विशेष के लिए लिली गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।
- (८) ग्रवसर विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।
- (६) संग्रह के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।
- (१०) धर्म विशेष के लिए लिखी गई प्रति का लिपिक कोई भी हो सकता है।

लेखक की साधन सामग्री-

लेखक को लेखन कार्य के लिए अनेक प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती थी। एक क्लोक में "क" अक्षर वाली १७ वस्तुओं की सूची मिलती है — (१) कुंपी (दवात), (२) काजल (स्याही), (३) केश सिंह के बाल या रेशम), (४) कुण (दर्भ), (४) कम्बल, ६) कांबी, (७) कलम, (८) कुपासिका । खुरी), (६) कतरनी (कैंची), (१०) कांक्ट पट्टिका, (११) कांगज, (१२) कीकी (आंखे), (१३) कोठड़ी (कमरा), (१४) कलमदान, (१४) कमस्प-पैर, (१६) कटिकमर और (१७) कंकड़।

लेखक की निर्दोचता--

जिस प्रकार ग्रन्थकार भ्रपनी रचना में हुई स्वलना के लिए क्षमाप्रार्थी बनता है बैसे ही लेखक भ्रपनी परिस्थिति भीर निर्दोषता प्रकट करने वाले ग्लोक निस्तता है—

१. भारतीय जैन श्रमण संस्कृति धने लेखन कला, - पृष्ठ ४४

श्रदस्टदोषाः मतिविभ्रमाद्वा, श्रदर्यहीनं लिखितं मयाऽत्र । तत् सर्वमार्थेः परिशोधनीयं, कोपं न कुर्यात् खलु लेखकस्य ।।

यादशं पुस्तके दृष्टं, तादशं सिखितं ममा ।
यदि शद्धमशुद्धं ना, मम दोषो न दीयते ।।
भगनपृष्टिकिटिग्रीना, वकदृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ।।
बद्धमुष्टिकिटिग्रीना, मंद दृष्टिरघोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं ग्रास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत ॥
लघु दीर्घ पदहीगा. गंजगाहीगा लखागां हुई ।
श्रजागापगाइ मृदप्राह्म एंडत हुई ते सुषकरी भगाज्या ॥ इत्यादि ।

ग्रन्थसुरक्षा के लिए शास्त्रमण्डारों की स्थापना --

ग्रन्थों की सुरक्षा के सम्बन्ध में श्रोभाजी ने यह टिप्यगी दी है कि ताड़पत्र, भोजपत्र या कागज या ऐसे ही श्रन्य लिप्यासन यदि बहुत नीचे या बहुत भीतर दाब कर रखे जाएं तो दीर्घ-जीवी हो सकते हैं। पर यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसे दबे हुए ग्रन्थ भी ई० सन् की पहली दूमरी शताब्दी से पूर्व के प्राप्त नहीं होते।

इसका एक कारण तो भारत पर विदेशी आक्रमणों का चक्र हो सकता है। ऐसे कितने ही आक्रमणकारी भारत में आये जिन्होंने मन्दिरों, मठों, विहारों, पुस्तकालयों, नगरों, बाजारों को नष्ट और ध्वस्त किया। अपने यहाँ भी कुछ राजे महाराजे ऐसे हुए हैं जिन्होंने ऐसे ही कृत्य किए। अजयपाल के सम्बन्ध में टॉड ने लिखा है कि—इसके शासन में सबसे पहला कार्य यह हुआ कि उसने अपने राज्य के सब मन्दिरों को, वे आस्तिकों के हों या नास्तिकों के, जैशें के हों या बाह्मणों के नष्ट करवा दिया। इसी में आगे लिखा है कि समध-मानुयायियों के मतभेदों और वैमनस्यों के कारण भी लाखों ग्रन्थों की क्षति पहुँची है। उदाहर-णार्थ तपाण्च्छ और खसरणच्छ के जैन धर्म के भेदों के आपसी कनह के कारण ही पुराने ग्रन्थों का नाश अधिक हुआ है और मुसलमानों द्वारा कम। 3

श्रतः इन परिस्थितियों के कारण शास्त्रों की सुरक्षा के लिए श्रन्थागारों या पोथी-खानों या शास्त्र भण्डारों को भी ऐसे रूप में बनाने की समस्या श्राई, कि किसी श्राक्रमणकारी को आक्रमण करने का लालच ही न हो पाए। इसलिए ये भण्डार तहस्त्रानों में रखे गये।

- १. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृष्ठ १४४-४५
- २. टॉड, जेम्स-पश्चिम भारत की यात्रा, पृष्ठ २०२
- ३. वही, पृष्ठ २६ ⊏
- ४. वही, पृष्ठ २४६

हा. कासलीवाल ने बताया कि अत्यक्ति असुरक्षा के कारसा अन्य मण्डारों को सामान्य पहुँच से बाहर के स्वानों पर स्थापित किया गया । जैसलमेर में प्रसिद्ध जैन भण्डार इसलिए बनाया गया कि उधर रेगिस्तान में झाक्रमसा की कम सम्भावना थी। साथ ही मन्दिर में मू-गर्भस्थ कक्ष बनाए बाते थे, और आक्रमसा के समय अन्यों को इन तहलानों में पहुँचा दिया जाता था। सांगानेर, आमेर, नागौर, मौजमाबाद, अजमेर, फतेहपुर, दूनी मालपुरा तथा कितने ही अन्य मन्दिरों में आज भी भू-गभित कक्ष हैं। जिनमें सम्थ ही नहीं मूर्तियां भी रखी जाती हैं।

इन उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थों की रक्षा की दृष्टि से ही पुस्तकालयों के स्थान चुने जाते थे। ग्रौर उन स्थानों में सुरक्षित कक्ष भी उनके लिए बनवाये जाते थे। साथ ही उनका उपर का रूप भी ऐसा बनाया जाता था कि ग्राक्रमएकारी का ध्यान उस पर न जा पाये।

प्रन्यों का रख रखाव---

ग्रन्थों की सृरक्षा, के एवं सग्रह की दिल्ट से जैन समाज ने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने प्रत्येक पाण्डुलिपि के दोनों ग्रोर कलात्मक पुट्ठे लगाये। कभी-कभी ऐसे पुट्ठों की संख्या एक से श्रिषक भी होती थी। ये पुट्ठे कागज के ही नहीं किंतु लकड़ी के भी होते थे। ग्रंथ की दोनों पुट्ठों के बीच में रखने के पश्चात् ग्रन्थ को वेष्टन में बांधा जाता था। ''रक्षेत् श्रिष्मलबंधनात्'' का मन्त्र इन्हें खूब याद था। वेष्टन में लपेटने के पश्चात् उस पर डोरी (फीता) से कसकर बांधा जाता था। जिससे हवा, सीलन एवं दीमक से उसे सुरक्षित रखा जा सके। ग्राज से २०० वर्ष पूर्व तक ऐसे वेष्टनों को मोटे कपड़े के बोरों में रख दिया जाता था ग्रीर उसको डोरी से बाँघ दिया जाता था। ग्रामेर मास्त्र भण्डार में पहिले सारे ग्रन्थ इसी तरह रखे जाते थे। इससे ग्रन्थों को सुरक्षित रखने में पर्याप्त सहायता मिली। ताइपत्र श्रयवा कागज पर लिखे हुए ग्रन्थों के बीच में एक घागा पिरोया हुमा होता था, जिसे ग्रन्थ कहा जाता था। कालान्तर में ग्रन्थ से बांधने के कारण ही मास्त्रों को ग्रन्थ के नाम से जाना जाने लगा। इसके पश्चात् ग्रन्थों को तलघर में रखा जाता था तथा चूहों, दीमकों एवं सीलन से उनकी पूर्ण सुरक्षा की जाती थी।

सचित्र प्रत्थों की सुरक्षा के विशेष उपाय किये जाते थे। प्रत्येक चित्र के ऊपर एक बारीक लाल कपड़ा रखा जाता था। जिससे कि चित्र का रग खराब न हो सके। साथ ही प्रत्थ के शेष भाग पर भी चित्र का कोई ग्रसर नहीं हो। प्रत्थों की सुरक्षा के लिए निम्न पद्य प्रत्थों के प्रत्य में लिखा रहता था—

> "जलाद् रक्षेत् स्थलाद् रक्षेत्, रक्षेत् जिथिलबन्धनात् मूर्वेहस्ते न दातव्या, एवं वदति पुस्तिका"

"अग्ने रक्षेत्, जलाद् रक्षेत् मूचकेश्यो विशेषतः।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिषालयेत्।।
उदकानिलचौरेश्यो, मूचकेश्यो हुताशनात्।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिषालयेत्॥"

स्याही का भी पूरा ध्यान रखा जाता था। इसलिए ग्रन्थों के लिए स्याही को पूरी तरह से तैयार किया जाता था। जिससे न तो वह स्याही फैल सके ग्रीर न एक पत्र दूसरे पत्र मे चिपक सके।

प्रत्यों के लिए कागज भी विशेष प्रकार का बना हुआ होता था। प्राचीन काल में सांगानेर में इस प्रकार के कागज के बनाने की व्यवस्था थी। जयपुर के झास्त्र भण्डारों में १४वीं सताब्दी तक के लिखे हुए ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। उनकी न तो स्याही ही बिगड़ी है भीर न कागज में ही कोई विशेष ग्रसर श्राया है।

इस प्रकार ग्रन्थों के लिखने एवं उनके रख रखाव में पूर्ण सतर्कता के कारण सैकड़ों वर्ष पुरानी पाण्डुलिपियाँ ग्राज भी दर्णनीय बनी हुई हैं। ग्रोर उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा है।

राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार-

सम्पूर्ण देश में ग्रन्थों का श्रपूर्ण संग्रह मिलता है। उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम नक सभी प्रान्तों में हस्तिलिखत ग्रन्थों के भण्डार स्थापित हैं। इनमें सरकारी क्षत्रों में पूना का भण्डारकर-श्रीरियंटल इन्स्टीट्यूट, तंजीर की सरस्वती महल लायबेरी, मद्राम विश्वविद्यालय की श्रीरियंटल मैनस्कपट्स लायबेरी, कलकत्ता की बंगाल एशियाटिक सोसायटी श्रादि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सामाजिक क्षेत्र में ग्रहमदाबाद का एल० डी० इन्स्टीट्यूट, जैन सिद्धान्त भवन-आरा, पन्नालाल ऐलक दि० जैन सरस्वती भवन उज्जैन, भालरापाटन; जैन शास्त्र भण्डार कारंजा, लिम्बीडी-सूरत, ग्रागरा, दिल्ली ग्रादि के नाम भी लिये जा सकते हैं। इस प्रकार सारे देश में इन शास्त्र भण्डारों की स्थापना की हुई हैं।

हस्तिलिलत ग्रन्थों के संग्रह की दिष्ट से राजस्थान का स्थान सर्वोपिर है।
मुस्लिम शासनकाल में यहाँ के राजा महाराजाओं ने ग्रपने-ग्रपने निजी संग्रहालयों में हजारों
ग्रन्थों का सग्रह किया, और उन्हें मुलसमानों के ग्राक्रमण से ग्रथवा दीमक एवं सीलन से नष्ट
होने से बचाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजम्थान सरकार ने जोधपुर में जिस
प्राच्यिवद्या शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की है, उथमें एक लाख से ग्रधिक ग्रन्थों का संग्रह हो
चुका है। जो एक ग्रत्यिक सराहनीय कार्य है। इसी तरह जयपुर, बीकानेर, ग्रलवर जैसे
कुछ भूतपूर्व शासकों के निजी संग्रहों में भी हस्तिलिखित ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें
संस्कृत ग्रन्थों की सर्वाधिक संख्या है। लेकिन इन सबके ग्रतिरिक्त राजस्थान में जन ग्रन्थ
भण्डारों की संग्या सर्वाधिक है। डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जिन्होंने राजस्थान के ग्रन्थ

भण्डारों की सूचीकरण का कार्य किया है, के प्रनुसार उनमें संग्रहित ग्रन्थों की संख्या चार लाख से कम महीं है।

राजस्थान में जैन समाज पूर्ण शान्तिप्रिय एवं प्रभावक समाज रहा है। इस प्रदेश की ग्रधिकांश रियासतों — जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, ढूंगरपुर, ग्रलवर, भरतपुर, भालावाड, सिरोही ग्रादि में जैनों की घनी ग्राबादी रही है। यही नहीं शताब्दियों तक जैनों का इन स्टेट्स की शासन व्यवस्था में पूर्ण प्रभुत्व रहा है तथा वे शासन के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित रहे हैं। इसी कारण साहित्य संग्रह के ग्रतिरिक्त उन्होंने हजारों जैन मन्दिर भी बनवाये। जिनमें ग्राबू, जैसलमेर, जयपुर, सांगानेर, भरतपुर, बीकानेर, सोजल, रराकपुर, मोजमाबाद, केशोरायपाटन, कोटा, बून्दी, लाडनूं ग्रादि के मन्दिर ग्राज भी पुरातस्व एवं कला की दृष्ट से उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से राजस्थान के जैनाचार्यों, मुनियों, यतियों, सन्तों एवं विद्वानों का प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने अपनी कृतियों द्वारा जनता में देश-मक्ति, नैतिकता, एवं सांस्कृतिक जागरूकता का प्रचार एवं प्रसार किया। उन्होंने नागीर. बीकानेर, भजमेर, जैसलमेर, जयपुर भादि कितने ही नगरों में ग्रंथ-भण्डारों के रूप में साहित्यिक दुर्ग स्थापित किये। जहां भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की सूरक्षा एवं उसके विकास के उपाय सोचे गये तथा सारे प्रदेश में ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवाने, उनके पठन-पाठन का प्रचार करने का कार्य व्यवस्थित रूप से किया गया, भौर राजनैतिक उथल-पूथल एवं सामाजिक भगडों से इन शास्त्र भण्डारों को दूर रखा गया । इन शास्त्र भण्डारों ने राजस्थान के इतिहास के वितने ही महत्त्वपूर्ण तथ्यों को नंजीया भीर उन्हें सदा ही नष्ट होने से बचाया। ये ग्रथ मग्रहालय छोटे-छोटे गांवो से लेकर बड़े -बड़े नगरों तक में स्थापित किये हए हैं। जयपुर. नागौर, बीकानेर, अअमेर, जैसलमेर, बून्दी जैसे नगरों में एक से अधिक ग्रथ संग्रहालय हैं। धकेले जयपूर नगर में ऐसे ३० ग्रंथ-भण्डार हैं। जिन सभी में हस्तलिखित पाण्डलिपियों का ग्रन्छा संग्रह है। इनमें सस्कृत, प्राकृत, भागभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी भाषा के हजारों ग्रंथों की पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। यहाँ किसी एक विषय पर प्रथवा एक ही भाषा की पाण्डलिपियां सप्रहित नहीं है अपित धर्म, दर्शन, प्राएा, कथा, काव्य एवं चरित के प्रतिरिक्त इतिहास ज्योतिष, गिरात, मायूर्वेद, समीत जैसे लीकिक विषयों पर भी मन्छी से मन्छी कृतियों की पाण्डलिपियाँ उपलब्ध होती हैं। इसलिये ये प्राचीन साहित्य, इतिहास, एवं संस्कृति के श्रध्ययन करने के लिए प्रामास्मिक केन्द्र हैं।

राजस्थान के इन प्रथ-भण्डारों में ताउपत्र की पाण्डुलिपियों की दिन्द से जैसलमेर का बृहद् ज्ञान-भण्डार अस्यधिक महत्वपूर्ण है किन्तु कागज पर लिखी पाण्डुलिपियों की दिन्द से नागीर, बीकानेर, जयपुर एवं अजमेर के शास्त्र-भण्डार उल्लेखनीय हैं। अकेले नागीर के भट्टारकीय सास्त्र भण्डार में १५००० हस्तलिखित ग्रंथ एवं २००० गुटकों का संग्रह है। गुटकों में संग्रहित ग्रंथो की सहया वी जाने तो यह भी १०,००० से कम नहीं होगी। इसी तरह जयपुर में २० से भी प्रविक संग्रहालय हैं जिनमें मामेर शास्त्र मण्डार, दिवस्थर जैन बड़ा मन्दिर ग्रंथ भण्डार, तेरहपन्थियों का शास्त्र भण्डार, पाटोदियों के मन्दिर का झास्त्र भण्डार प्रादि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन भण्डारों में अपभ्रंश एवं हिन्दी के अंथों की पाण्डुलिपियों का मच्छा संग्रह है। इन शास्त्र भण्डारों में जैन विद्वानों द्वारा खिखित अंथों के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा निषद ग्रंथों की भी प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है।

ग्रंथ भण्डारों में संग्रहित पाण्डुलिपियों के ग्रन्त में प्रशस्तियां दी हुई हैं। जो इतिहास की दिष्ट से भत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। ये प्रशस्तियां ११वीं सताब्दी से लेकर १६वीं शताब्दी तक की हैं। गैसे प्रवास्तियां दो प्रकार की होती हैं—एक स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई लोती हैं। ये बोनों ही प्रामाणिक होती हैं भीर इनकी प्रामाणिकता में कभी शका नहीं की जा सकती। मुभे ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रथकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास का महत्त्व बहुत पहले ही समक्ष लिया था इसलिए ग्रंथ लिखनाने बाले श्रावकों का, उनकी गुरु परम्पराश्रो तथा तत्कालीन सम्राट् ग्रथवा शासक के नामोल्लेख के साथ—साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया करते थे। राजस्थान के इन जैन भण्डारों में संग्रहित प्रतियों के मुख्य केन्द्र हैं—प्रजमेर, जैसलमेर, नागौर, चम्पावती, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तीड़, उदयपुर, आमेर, बून्दी, बीकानेर आदि। इसलिए इनके कासकों एवं राजस्थान के नगरों के नाम खूब मिलते हैं, जिनके भ्राधार पर यहाँ के ग्राम और नगरों के इति-हास पर भी भच्छा प्रकाश डाला जा सकता है।

धभी तक जैसलमेर भण्डार के ग्रलाबा श्रन्य किसी भी भण्डार का विस्तृत ग्रध्ययन नहीं किया गया है। जिन्होंने ग्रभी तक सर्वेक्षण किया है उनमें विदेशियों में व्यूहलर, पीटसेन, तथा भारतीय विद्वानों में श्रीधर, भण्डारकर, हीरासास, हंसराज, हंसविजय, सीव्डी० दलाल ग्रादि ने केवल जैसलमेर भण्डार का ही सर्वेक्षण का कार्य किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान साहित्यानुसंधान के कार्य में काफी ग्रागे बड़ा है। राजश्यान सरकार ने जीयपुर में ''राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान'' के नाम से एक भोध केन्द्र स्थापित किया है। इसकी मुख्य प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण प्राचीन हश्ति कित ग्रंथों को संग्रहित व प्रकाशित करने की है। इस केन्द्र की बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, चित्तीड़गढ़ ग्रादि स्थानों पर शाक्षां भी हैं। इसके प्रतिरिक्त राज्य सरकार से श्रनुदान प्राप्त संस्थान्त्रों में साहित्य संस्थान उदयपुर, भारतीय विद्या मन्दिर क्षोध प्रतिष्ठान बीकानेर, राजस्थानी ग्रीध संस्थान चौपासनी ग्रादि मुख्य हैं। स्वतन्त्र रूप से हन्तिलिश्वत ग्रंथों के संरक्षण का कार्य करने वाली संस्थाधों में महावीर भवन जयपुर, ग्रभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, विनय चन्द्र ज्ञान-भण्डार-लान भवन, जयपुर, खतर गच्छीय ज्ञान भण्डार-जयपुर ग्रादि के नाम विदीब उत्लेखनीय हैं।

रावस्यान के प्रन्य भण्डारों के सूची-पत्रों के प्रकाशन की विशा में भी कोड़ा बहुत कार्य भवस्य हुमा है, पर वह पर्याप्त नहीं है। बीकानेर की भनूप संस्कृत कायनेरी व सर्यपुर के सरस्वती संबन के हस्ति जित प्रत्यों के स्वी-पत्र प्रकाशित हुए हैं। साहित्य संस्थान उदयपुर की धोर से इस्ति जित प्रत्यों के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोशपुर व जयपुर के इस्ति जित प्रत्यों के भी ७ भाग प्रकाशित हुए हैं। राजस्थान बौपासनी के इस्ति जित प्रत्यों के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। या सम्बान वौपासनी के इस्ति जित प्रत्यों के भी कुछ भाग प्रकाशित हुए हैं। वहां शे शा क कस्तूरचन्द कासली वाल एवं प० अनूपचन्दजी न्यायती यं के तैयार किए हुए राजस्थान के जैन मास्त्र भण्डाशों की ग्रन्थ सूचियों के पांच भाग प्रकाशित हो चुके हैं। विनयचन्द्र मान भाण्डार में उपलब्ध इस्ति जित ग्रन्थों के एकभाग का प्रकाशन हुआ है। प्रस्तुन ग्रन्थ द्वारा भट्टारकी य ग्रन्थ भण्डार नागौर के इस्ति जित ग्रन्थों का प्रथम भाग सामने भा रहा है। यदि राजस्थान के सभी भण्डारों की व्यवस्थित मूचियां प्रकाणित होकर सामने भा जाये तो साहित्य-अगत् एव शोध न ती भों के लिए बड़ी हित कारी सिद्ध हो सकती हैं।

प्रन्य सूचियों की झनुसंघान एवं इतिहास लेबन में उपयोगिता

साहित्यक, दार्शनिक, ऐतिहासिक प्रमुसंधानों में प्राथ सूचियों का विशेष महत्व होता है। एक प्रकार से ये प्रथ सूचियों शोध कार्य में प्राथार-भिक्ति का कार्य करती हैं। भारतीय साहित्य की परम्परा बड़ी समृद्ध और वैविध्यपूर्ण रही है। छ। पेखाने के प्रविष्कार के पूर्व यहां का साहित्य कंट-परम्परा से लेखन परम्परा में प्रवतितित होकर सुरक्षित रहा। विवेशी प्राक्रमण्कारियों ने यहां की सांस्कृतिक परम्पराभों को नष्ट करने के लक्ष्य से साहित्य और कला को भी प्रपना लक्ष्य बनाया। राजधरानों में संरक्षित बहुतसा साहित्य नष्ट कर दिया गया। राजधरानों में निवर्तमान साहित्य उस विशाल साहित्य का प्रत्पाण ही है। व्यक्तिगत सप्रहालय किसी न किसी रूप में थोड़े बहुत सुरक्षित प्रवश्य रहे हैं, पर उनके महत्त्व को ठीक प्रकार से न समभने के कारण बहुत सी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियां देश से बाहर चली गई है। स्वतन्त्रता के बाद भी यह कम जारी है। इस सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा का प्रकन राष्ट्रीय स्तर पर हल किया जाना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित प्रन्थों की दिष्ट से राजम्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रदेश है। रेगिस्तानी इलाका होने के कारण विदेशी भाकमग्राकारियों से यह थोड़ा बहुत बचा रहा। इस प्रदेश में जैनों की संख्या प्रधिक होने के कारण भी भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा भाग जैन मन्दिरों और उपाश्रयों के माध्यम से सुरक्षित रहा। जैन श्रावकों में शास्त्र-वाचन भीर स्वाध्याय की विशेष परम्परा होने के कारण उन्होंने महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की प्रतिनिपियाँ करवा कर उनकी प्रतियाँ मन्दिरों, उपाश्रयों एवं व्यक्तिगत सग्रहालयों में सुरिश्त रखीं। ग्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह की दिष्ट से जैनाचायों, साधुभ्रों, यितयों एवं श्रावकों का प्रधास विशेष उल्लेखनीय है। प्राचीन ग्रंथों की सुरक्षा एवं नये ग्रंथों के संग्रह में जितना ध्यान जैन समाज ने दिया है उतना श्रन्य समाज नहीं दे सका। ग्रंथों की सुरक्षा में उन्होंने भ्रयना पूर्ण

बीवन लगा विया और किसी भी विषत्ति श्रथवा संकट के सम्रय ग्रंथों की पुरक्षा, को प्रमुख स्थान दिया ।

यहाँ एक बात भीर विशेष ध्यान देने की है धीर वह यह है कि जैनाचार्यों एवं श्रावकों ने धयने मास्त्र-भण्डारों में प्रंथों की सुरक्षा एवं संग्रह करने में जरा भी भेदभाव नहीं रखा। जिस प्रकार उन्होंने जैन-प्रन्थों की सुरक्षा एवं उनका संकलन किया उसी प्रकार जैनेतर ग्रन्थों की सुरक्षा एवं संकलन पर भी विशेष जोर दिया।

राजस्थान के इन जैन-भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों का ग्रंभी तक मूल्यांकन नहीं हो सका है। विद्या के एवं शोध के अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इन भण्डारों में सग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर कार्य किया जा सकता है। आयुर्वेद, छन्द, ज्योतिष, भलंकार, नाटक, भूगोल, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, न्याय व्यवस्था, यात्रा, व्यापार तथा प्राकृतिक सम्पदा आदि विभिन्न विषयों पर इन भण्डारों में सग्रहीत ग्रन्थों के आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है। जिससे कितने ही नये तथ्यों की जानकारी मिल सकती है। भाषा-विज्ञान, अयंशास्त्र एवं समीका ग्रन्थों पर कार्य करने के लिए भी इनमें प्रचुर सामग्री सग्रहीत है। देश में विभिन्न बाद-शाहों एवं राजाओं के शासन काल में विभिन्न वस्तुओं की क्या-क्या कीमतें थीं? तथा भुखमरी, भकाल जैसे आर्थिक रोचक विषयों पर भी इनमें पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती हैं। ऐसे कितने ही पत्रों का सग्रह मिलेगा जिनमें मां बाप ने भुखमरी के कारण श्रपने लड़कों को बहुत कम मूल्य में बेच दिया था। इन सब के अतिरिक्त भण्डारों में संग्रहीत ग्रन्थों में एवं उनकी प्रशस्तियों के आधार पर देश के सैंकड़ों हजारों नगरों एवं ग्रामों के इतिहास पर, उनमें सम्पन्न विभिन्न समारोहों पर, वहाँ के निवासियों पर प्रचुर सामग्री का संकलन किया जा सकता है।

नागौर का ऐतिहासिक परिचय , ग्रन्थ मण्डार की स्थापना एवं विकास

बर्तमान में नागीर राजस्थान प्रदेश का एक प्रान्त है जो इसके मध्य में स्थित है। पहिले यह जोधपुर राज्य का प्रमुख भाग था। नागीर जिले का प्रमुख नगर है तथा यहाँ की भूमि ग्रद्ध रेगिस्तानी है।

रामायए। कालोन धनुश्रु ति के श्रनुसार पहिले यहाँ पर समुद्र था। लेकिन राम धन्द्रजी ने श्रानिवः ए। चलाकर उस समुद्र को सुखा दिया। महाभारत के श्रनुसार इस प्रदेश का नाम कुक-जांगल था। मीर्यं कंग का ना सन भी इस क्षेत्र पर रहा। विक्रम की दूमरी शता व्ही से पाँच को शती तक नागीर का श्रिधकांश क्षेत्र नागवंशी राजा श्रों के श्रधीन रहा। उसी समय से नागौं, नाग पट्टन, श्रहिपुर, भुजंगपुर श्रहिछत्रपुर श्रादि विभिन्न नामों से समय-समय पर जाना जाता रहा। बाद में कुछ समय के लिए इस प्रदेश पर गौड़ राजपूतों का शासन रहा। बाद में गौड़ राजपूत कुचामन, नांवा, मारोठ की बोर चले गये, इसलिए यह पूरा प्रदेश गौड़ काटी के नाम से बाना जाने लगा।

विकम की ७वीं जतान्दी में यहां पर कीहानों का कासन हुमा। बीहानों की

राजकानी शाकस्मरी (साम्भर) थी। इनके शासन काल में यह क्षेत्र सपादलक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही कारख है कि प्राण भी स्थानीय जोग इसे सवालक्ष कहते हैं।

इसी बीच कुछ समय के खिये यह नगर प्रतिहारों के अधीन था गया। वयसिंह सूरि के वर्मोपदेश की प्रकस्ति में मिहिरभोज प्रतिहार का उल्लेख मिनता है। जयसिंह सूरि ने नागौर में ६१५ वि. सं में इस ग्रम्थ की रचना की थी।

प्रगाहिलपुर पाटन (गुत्ररात) के सासक सिद्धराज जयसिंह ने १२वीं सदाव्दी में इस क्षेत्र पर प्रपना ग्रिक्षकार कर लिया। जो भीमदेव के समय तक बना रहा। महाराजा कुमारपाल के गुरु प्रसिद्ध जैनाचार्य कविकाल सर्वज श्री हेमचन्द्र सूरि का पट्टाभिषेक सवत् ११६६ की वैशास सुदी ३ की यहीं पर हुआ था।

इसके बाद यह नगर तथा क्षेत्र वापिस चौहानों के प्रधिकार में चला गया। प्राचीन समय से ही यहाँ पर छोटा गढ बना हुआ था जिसके खण्डहर ग्राज भी उपलब्ध होते हैं। चौहानो ने ग्रपने मध्य मे होने के कारण तथा लाहौर से अजमेर जाने के रास्ते में पड़ने के कारण यहाँ पर दूर्ग बनाना ग्रावश्यक समका क्यों कि उस समय तक महुमूद गजनवी के कई वार ग्राक्रमण हो चुके थे। इसलिए नगर में विशाल दुर्ग का निर्माण वि० सं० १२११ में पृथ्वीराज नृतीय के पिता सोमेश्वर के शासनकाल में प्रारम्भ हुगा। जिसका शिलालेख दरवाजे पर ग्राज भी सुरक्षित है।

सन् १२६३ में पृथ्वीराज घोहान (तृतीय) की हार के बाद यहाँ पर दिल्ली के सुन्तानों का प्रधिकार हो गया। उसी समय यहाँ पर प्रसिद्ध मुस्लिम संत तारकीन हुन्ना जो प्रजमेर वाले स्वाजा मोइनुहीन चिश्ती का शिष्य था। इसकी दरगाह परकोट के बाहर गिनाशी-तालाब के पीछे की तरफ बनी हुई है। इनके लिए उसे के प्रवसर पर प्रजमेर के मोइनुहीन चिश्ती की दरगाह से चादर कब पर ग्रोढाने के लिए झाती है। इसी समय से नागीर मुस्लिम धर्म का भी केन्द्र बन गया।

एक शिलालेख के अनुसार सन् १३६३ में इस क्षेत्र पर देहुली के शासक फीरोज-शाह तुगलक का शासन था। फिरोजशाह के शासन में ही दिगम्बर जैन भट्टारक सम्प्रदाय के द्वारा संवत् १३६० पौष सुदी १४ को दिल्ली में वस्त्र घारण करने की प्रथा का श्रीगरोश हुआ। उनके पूर्व वे सब नग्न रहते थे। इन भट्टारकों का मुस्लिम शासकों (बादशाहों) पर घच्छा प्रभाव था। इसलिये उन्हें बिहार एवं घमं प्रचार की पूरी सुविधा थी। यही नहीं मुस्लिम बादशाहों ने इनकी सुरक्षा के लिए समय-समय पर किठने ही फरमान निकाले थे। उमी समय से दिल्ली गादी के भट्टारक नागौर आते रहे शीर सम्वत् १४७२ में नागौर में एक स्वतन्त्रक्ष्य में भट्टारक गादी की स्थापना की।

सन् १४०० ई के बाद नागौर की स्वनन्त्र रियासत स्थापित हुई। जिसका फिरोजसान प्रथम मुस्तान था। जो गुजरात के राजवश³ से सम्बन्धिन था। जिसका प्रथम

^{2.} Jainism in Rajasthan by Dr. K.C. Jain Page, 153.

^{2.} History of Gujarat, page 68.

^{3.} Epigraphika Indomuslimica 1923-24 and 26.

शिलालेख १४१ म A.D. का मिसवा है। सुरुतान फिरोजझान के समय मेवाइ के महाराजा मौकल ने नागौर पर आक्रमण किया तथा बीडवाना तक के प्रवेश पर अपना अधिकार कर निया। मोकल के लौटने पर सम्सखां के पुत्र मुजाहिदखां ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। शम्सखां ने शम्स तालाब कनारे अपने गुरु की दरगाह तथा मस्जिद बनवाद। शम्स तालाब के किनारे अपने गुरु की दरगाह तथा मस्जिद बनवाई। इसी दरगाह के प्रांगण में ही सम्सखां तथा उनके बंकजों की कहें बनी हुई हैं। इस तालाब के वारों घोर परकोटा बना हुआ है।

महाराजा कुम्भा ने भी एक बार नागौर पर भ्राक्रमण किया था। जिसका किलालेख गीठ मांगलीद के माताजी के मन्दिर में लगा हुआ है । महाराजा कुम्भा ने राज्य की
बापस पुराने सुस्तान को ही सींप दिया। इसी वंध में मुजाहिद खां, किरोज कां, जफरखां,
नागौरीखां आदि सुस्तान हुए। ये सुस्तान मुस्लिम होते हुये भी हिन्दू तथा जैनधमं के विरोधी
नहीं थे। इनके राज्यकाल में दिगम्बर जैन भट्टारक तथा साधुओं का विहार निर्वाध गति के
साथ होता था। उस समय जैनधमं के बहुत से भ्रन्थों की रचनाएं एवं लिपि करने का कार्य
सम्बन्न हुआ। तस्कालीन प्रसिद्ध भट्टारक जिनचन्द्र संवत् १५०७ से १५७१ का भी यहां आगमन हुआ था। जिनके द्वारा संवत् १५४० में प्रतिष्ठित सैंकड़ों मूर्तियां सम्पूर्ण देश के बड़े-बड़े
जैन मन्दिरों में उपलब्ध होती हैं। पंज मेथावी ने नागौर में ही रहकर सबत् १५४१ में धमंगृह
श्राबकाचार की रचना की की। इसमें फिरोजखान की न्यायप्रियता, वीरता और उदारता की
प्रशंसा की है। ने मेधावी भट्टारक जिनचन्द्र के शिष्य थे। इस अन्य की प्रतियां भारत के सभी
जैन ग्रन्थ भण्डारों में प्रायः पाई जाती हैं। इसी वंध के नवाब नागौरीखों के दीवान परवतमाह
पाटनी हुए थे। जिनका शिलालेख श्री दिगम्बर जैन बीस पन्थी मन्दिर में लगा हुआ है। इन
परवतशाह पाटनी ने एक वेदी बनवाई तथा उस की प्रतिष्ठा बड़ी धूम-धान से कराई थी। ऐसा
शिलालेख में किखा है। चने की पुताई हो जाने से पूरा लेख पढ़ने में नहीं ग्राता है।

सुस्तानों के शासन के पतन के पश्चात् नागौर पर मुगल सम्राट् श्रकबर का स्रिधकार हो गया। स्वयं श्रकबर भी नागौर श्राया था। उसने गिनाणी तालाब के किनारे दो मीनारों वाली मस्जिद बनवाई। को श्राज भी श्रकबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें श्रकबर के समय का फारसी भाषा का शिलालेख लगा हुशा है।

जोषपुर नरेश महाराजा गजिसह के दो पुत्र थे-बड़े ग्रमरिसह तथा छोटे कसवन्त सिंह। ग्रमरिसह बड़े ग्रक्लड़, निर्भीक ग्रीर बीर बे। जोषपुर के सरदार ग्रमरिसह से नाराज हो गये। शाहजहाँ ने इनकी वीरता पर खुश होकर नागौर का प्रदेश इनको जागीर में दे विका।

१. राजस्थान के ग्रन्थ भण्डारों की सूची, भाग प्रथम, एष्ठ ७६

२ सपादलक्षे विषयेति सुन्दरे, श्रियापुरं नागपुरं समस्तितस् । फैरोजलानो नृपतिः प्रयासि यन्नायेन भौगेँस् रिवृन्निहन्ति व ॥

कारण सम्मानिक के पक्तित् साह्यहाँ ने इन्दर्शिष्ट को जागीर का पूजा बज़ा दिया। इन्दर्शिष्ट ने शहर में अपने रहने के लिए एक, सुनदर महल बनवाबा। जिसका उल्लेख महल के दरवाजे पर लेख में मिलता है।

सैकड़ों वर्षों तक मुस्लिम शासन में रहने के कारए कई धर्मान्य शासकों नै यहाँ के हिन्दू एवं जैन मन्दिरों को खूब ध्वरत किया । मन्दिरों को मस्जिदों में परिवर्तित किया गया । फिर भी न।गौर जैन सस्कृति का एक प्रमुख नगर माना जाता रहा । सिद्धसेनमूरि (१२वीं शताब्दी) ने इसका प्रमुख तीथं के रूप में उल्लेख किया है । जैना क्यं हैमचन्द्रसूरि के पट्टामिषेक के समय यहाँ के धनद नाम के खेष्ठि वे अपनी स्वार सम्पत्ति का उपयोग किया था । १३वीं शताब्दी में पेथड़शाह ने यहाँ एक जैन मन्दिर का निर्माण कराया था । तपागच्छ की एक शाखा नागपुरीय का उद्गम भी इसी नगर से माना जाता है । १४वीं १६वीं शताब्दी में यहाँ कितनी ही स्वेताम्बर मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई । उपदेशगच्छ के कक्कमूरि ने ही यहाँ शीतलनाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा कराई थी ।

शास्त्र भण्डार की स्थापना एव विकास-

सम्बत् १४८१, श्रावरा गुनला पंचमी को भट्टारक रतकीति ने यहाँ भट्टार-कीय गादी के साथ ही एक वृहद् ज्ञान भण्डार की स्थापना की । जिल्लाइ के शिष्य भट्टारक रत्नकीति के पश्चान् यहाँ एक के बाद दूसरे भट्टास्क होते रहे । इन भट्टास्कों के कारए ही नागीर में जैनधर्म एव साहित्य का अच्छा प्रचार प्रसार होता रहा। नागीर का यह प्रन्थ भण्डार सारे राजस्थान में विशाल एवं समृद्ध है। पाण्डुलिपियों का ऐसा विशाल सग्रह र जस्थान में कहीं नहीं मिलता। यहाँ कर ब १५ हजार पाण्डुलिरियो का संग्रह है जिनमें कीब दो हजार से भ्रधिक गुटके हैं। यद गुटकों में संग्रहींत ग्रन्थों की संख्या की जावे तो इनकी सख्या भी १०,००० से कम नहीं होगी। भण्डार में मुख्यतः प्राकृत, ग्रपभ्रंश संस्कृत, हिन्दी एव राजस्थानी भ'षा में निबद्ध कृतियाँ सर्वाधिक सन्धा में है। प्रधिकाश पाण्डलिपियां १४वीं शताब्दी से १६वी शताब्दी तक की है। जिनसे पता चलता है कि गत १५० वर्षी से यहाँ ग्रन्थ सग्रह् की ग्रोर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इससे पूर्व यहाँ ग्रन्थ लेखन का कार्य पूर्ण वेग से होता था। सम्पूर्ण भारत वर्ष के महत्र गारों में सैकड़ो ऐसे ग्रन्थ हैं जिनकी पाण्डुलिपियों नागीर में हुई थीं। प्राकृत भाषा के प्रथो में श्राचार्य कुन्दकृत्द के समयसार की यहाँ सन् १३०३ की पाण्डुलिपि है, इसी तरह मूलाचार की १३३८ की पाण्डु-लिपि उपलब्ध होती है। कुछ ग्रन्थेतर अनुपलब्ध ग्रन्थों में वरांग-चरित (तेजपास) वसुधर चरिउ (श्री भूषरा), सम्यन्त्व कौमुदी (हरिसिंह), ग्रोमिगाह चरिउ (दामोदर), जगहपदिलास

Dr. P. C. Jain, JAIN GRANTH BHANDARS IN JAIPUR AND NAGAUR P, 118.

(जगरूप कवि), कृपण पञ्चीसी (कल्ह), सरस्वती-लक्ष्मी संवाद (श्री भूषरा), फियाकोश (सुलदेव) भादि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मट्टारक परम्परा---

नागीर की परम्परा में निम्न भट्टारक हुए ---

- (१) भट्टारक रत्नकीर्त —संवत् १५८१
- (२) भट्टारक मुवनकीर्ति संवत् १४८६
- (३) भट्टारक वर्मकीर्ति संवत् १५६०
- (४) भट्टारक विशालकीर्त-सवत् १६०१
- (५) भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र—संवत् १६११
- (६ भट्टारक सहस्त्रकीर्ति संवत् १६३१
- (७) भट्टारक नेमिचन्द्र-सवत् १६५०
- (=) भट्टारक यशःकीति—संवत् १६७२
- (६) भट्टारक भानुकीति संवत् १६६०
- (१०) भट्टारक श्रीभूषरा संवत् १७०५
- (११) भट्टारक धर्मचन्द्र -- संवत् १७१२
- (१२) भट्टारक देवेन्द्रकीति प्रथम संवत् १७२७
- (१३) भट्टारक सुरेन्द्रकीति सवत् १७३८
- (१४) भट्टारक रत्नकीत दितीय
- (१४) भट्टारक ज्ञानभूषण
- (१६) भट्टारक चन्द्रकीर्तिः
- (१७) भट्टारक पद्मनन्दि
- (१८) भट्टारक सकलभूषग्
- (१६) भट्टारक सहस्त्रकीति
- (२०) भट्टारक अनन्तकीर्ति
- (२१) भट्टारक हर्षकीति

१. (क) नागौर ग्रन्थ भण्डार में उपलब्ध भट्टारक पट्टावली के साधार पर।

⁽ल) डॉ॰ जोहरापुरकर-भट्टारक सम्प्रदाय पृष्ठ-१२४-२५

कां का सलीवाल ने अपनी पुस्तक शाकम्मरी प्रदेश के सांस्कृतिक विकास में जैनन्
पर्म का बीगदान में "मुवनकीर्ति" नाम दिखा है।

- (२२) महारक विद्याभूषस्
- (२३) मट्टारक हेमकीति
- (२४) भट्टारक क्षेमेरदर्क ति
- (२४) महारक मुनीन्द्रकीर्ति
- (२६) महारक करककीर्ति
- (२७) भट्टाएक देवेन्द्रकीति

षट्टारक देवेन्द्रकीर्ति नागीर गादी के श्रान्तिम भट्टारक हुए हैं । नागीर गादी का नागपुर, प्रमरावती, श्रजमेर धादि नगरों से भी सम्बन्ध रहा है। भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् नागीर प्रन्थ भच्छार बन्द पड़ा रहा। धनेक वर्षों के बाद पं० सक्तीश्वचन्द्र तथा यतीन्द्र कुमार शास्त्री ने श्रन्थ सूची निर्माण एवं प्रकाशन का कार्य अपने हार्षों में लिया था परन्तु किन्हीं कारणों से वे इसे पूरा नहीं कर पाये।

ग्रन्थ सूचीको ग्राधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए ग्रन्त में तीन परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रयम में कतिपय मजात एवं मप्रकाशित महत्त्वपूर्ण रखनाओं की नामावली दी गई है। ये रचनार्वे काव्य, पुरागा, चरित, नाटक, रास एवं सलंकार, अधैशास्त्र इतिहास भावि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। उनमें से बहुत सी रचनायें तो ऐसी हैं जो संभवतः सर्व प्रथम विद्वानों के समक खायीं होंगी। इतमें से अपन्नं म भाषा के प्रत्यों में जिनपूजा पुरत्यर विधान (अमरकीर्ति), नायकुमार चरित्र (पुष्पदन्त), नारायरा पृथ्छा जयमास, बाहुबसी पाथड़ी, भविष्यदस चरित्र (पं॰ वनपास), प्राकृत के प्रन्थों में जयति उलाए। (अभग्रदेव सूरि), चौबीस दण्डक (गजसार), वनस्पति सत्तरी (मृतिचन्द्र सुरि), संस्कृत के ग्रन्थों में - श्राश्यानुशासत (पार्थनाग), श्राराधना कथा कीश (सिंहनन्दि), ग्रासाप पद्धति (कवि विष्णु) ग्राशाधराष्टक (सुभचन्द्र सूरि), कुमारसम्भव सटीक (टीकाकार प० नाल्लू), मूलस प्रागिश (रत्नकीर्ति), योग शतक (विदग्ध वैद्ध), रत्न परीक्षा (चण्डेम्बर सेठ), बाक्य प्रकाश सूत्र सटीक (दामोदर), सम्बक्तव कीमुदी (कवि यशः सेन), सुगन्य दशमी कथा (ब्रह्म जिनदास), हेमकथा (रक्षामिए), तथा हिस्दी के प्रम्थों में इन्द्रवधुनित हुलास बारती (रुचीरन), खुदीप भाषा (मूबानीदास), त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई (पं जिनमति), प्रथम बचारा, रत्नपूड्रास (यशः कीर्ति), रामाज्ञा (तुलसीवास), बाद पच्चीसी (बहा गलास), हरिश्चन्द्र चीपई (बहा बेश्गिदास), आदि के नाम उल्लेख-बीय हैं।

ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में----

प्रत्य मूचियों के निर्माण में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक पाण्डुलिपि को सावधानी के साथ पढ़कर, ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-धंवत्, लिपि-संवत्, रचना स्थल, लिपि
स्थल, विषयादि कई बातों का पता लगाना होता है। कंभी कंभी एक ही पन्ते में एकाधिक
रचनाएं भी मिलती हैं। थोड़ी सी भी प्रमाद की स्थिति, लिपि की ग्रस्पटतंत व लिपि-पड़ने
की लापरवाही से भ्रनेक भ्रान्तियों व मशुद्धियों की परम्परा कंभ पड़ती है। कभी लिपिकार
को रचनाकार भीर कभी रचनाकार को लिपिकार समभ लिया जाता है। इसी सरह कभी लिपिसंवत् को रचना-संवत् समभ लिया जाता है।

रचना के अन्त में दी गई प्रशस्तियों का ऐतिहासिक दिन्ह से बड़ा महत्त्व होता है। ये प्रशस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं—पहली स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई तथा दूसरी लिपिकारों द्वारा लिखी हुई। ये दोनों ही प्रामाणिक होती हैं, और इनकी प्रामाणिकता में कभी शंका भी नहीं की जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि इन ग्रन्थकारों एवं लिपिकारों ने इतिहास के महत्त्व को बहुत पहले ही समभ लिया था, शायद इसलिए ही ग्रन्थ लिखवाने वाले श्रावकों का, उनकी गुरु-परस्रा तथा तत्कालीन सम्राट् अथवा शासक के नाम्मोल्लेख के साथ-साथ उनके नगर का भी उल्लेख किया जाता था। इनमें ग्रन्थ, ग्रन्थकार, रचना-संबत्, लिपि-संबत्, लिपिकार, लिपिस्थल ग्रादि की भी बहुमूल्य सूचनाएं मिलती हैं। साहित्य के इतिहास लेखन में इन सूचनाग्री का बड़ा महत्त्व होता है।

प्रत्येक रचना से सम्बन्धित उपर लिखित जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद समग्र रचनाग्रों को वर्गीकृत करना पड़ता है। वर्गीकरण का यह कार्य जिल्ला सरल दिखाई देता है, वह उतना ही दूरह भी है। कई विषय भीर काव्य—रूप धन्य विषयों और काव्य—रूपों से इस तरह मिले दिखाई देंते हैं कि उनकी धलग-भलग वर्गों में बाँटना वड़ा मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि जैन-साहित्यकारों ने काव्य-रूपों के क्षेत्र में नानाविध नये-नये प्रयोग किये। एक ही चरित्र व कथा को भिन्न-भिन्न रूपों में विणात किया। उन्होंने प्रचलित सामान्य काव्य-रूपों को हुवहु स्वीकार न कर उनमें व्यापकता, लौकिकता और सहजता का रंग भरा। संगीत को शास्त्रीयता से मुक्त कर विभिन्न प्रकार को लोकदेशियों को प्रपनाया। भाषायों द्वारा प्रतिपादित प्रवन्ध-मुक्तक की चली धाली हुई काव्य परम्परा के बीच काव्य रूपों के कई नये नये स्तर निर्मत किये। साथ ही काव्य विषय की दृष्ट से भी उन्हें नयी भाव-भूमि और मौलिक भ्रष्यता दी। उदाहरण के लिए वेलि, बारहमासा, विवाहलो, रासो, चौपई संज्ञक विभिन्न काव्यों व रूपों का परिक्रश किया जा सकता है।

इस प्रत्य-सूची में समाविष्ट हस्तिलिखित प्रत्यों को २२ विषयों में विभाजित किया गया है। ये विषय कमशः इस प्रकार हैं—(१) भध्यात्म, भागम, सिद्धान्त एवं चर्चा, (२) श्राधुर्वेद (३) उपदेश एवं सुभाषितावली, (४) कथा, (६) काक्य, (६) कोश, (७) चरित्र (८) सचित्र यन्थ, (६) छन्द एवं सर्वकृत्र, (१०) ज्योतिषः (११) न्यामशास्त्र (१२) नाटक एवं संगीत, (१६) मीतिकास्त्र, (१४) पुरांसा, (१४) यूना एवं स्तीक, (१६) वाकाश्यक वर्षः, (१७) योग, (१८) व्याकरस्त्र, (१६) कत विधान, (२०) कोक विकाल, (२१) वाक्कावर, (२२) वाक्कावरः साहित्य ।

इस प्रकार इस ग्रन्थ-सूची में कुल मिलाकर १८६८ हस्तिलिखित ग्रन्थों का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थों का परिचय प्रस्तुत करते समय मैंने प्रत्येक ग्रन्थ के सम्बन्ध में निम्न ग्रद्वारह प्रकार की जानकारी देने का प्रयस्न किया है—

(१) कमांका (२) ग्रन्थ नाम (३) ग्रस्थकार (रक्किता) (४) टीकाकार या भाषाकार (१) लिप्यासन का स्वरूप (६) पत्र संख्या (७) प्राक्षार (८) ग्रन्थ की दशा (६) पूर्ख यह अपूर्ण (१०) भाषा (११) लिपि (१२) विषय (१३) ग्रन्थ संख्या (१४) रचनाकाल (१५) लिपि-काल (१६) ग्रन्थ का काविभाग (१७) ग्रन्स भाग ग्रीर ग्रन्त में (१८) विकेष।

'कमांक' सूची में समाविष्ट ग्रन्थों का कम सूचित करते हैं। 'ग्रन्थनाम' में रचना का नाम, 'ग्रन्थकार' में ग्रन्थ के रचिता का नाम तथा 'टीकाकार' मा 'भाषाकार' में टीका करने या भाषा (भ्रनुवाद) के करने वाला का नाम दिया गया है। ''लिप्पासन के स्वरूप' में जिस पर ग्रन्थ लिखा गया है बताया गया है, उदाहरता के लिये कागज, ताड़पत्र, भोजपत्र या वस्त्र ग्रादि पर। 'पत्र संस्था' में प्रन्थ के लिखित पत्रों की संख्या बताई गयी है। 'ग्राकार' में प्रन्थ की लम्बाई व चौड़ाई के बारे में जानकारी दी गई है। 'दशा' में ग्रन्थ की हालत के बारे में बताया गया है। पूर्ण या प्रपूर्ण शब्द ग्रन्थ की पूर्ण ता या प्रपूर्ण को छोतित करते हैं। 'भाषा' से तात्पर्य ग्रन्थ के लिए प्रयुक्त की गई भाषा से है ग्र्यात् किस भाषा में ग्रन्थ लिखा गया है। 'लिपि' में भाषा के लिए कौतसी लिपि का प्रयोग किया गया है। 'विषय' में ग्रन्थ किस विषय का है बताया गया है। 'प्रन्थ सख्या' से ग्रन्थ विशेष के उस कम का बोध होता है जो भण्डार की सामान्य सूचीपत्र में ग्रन्थ विशेष के लिए ग्राकित है। रचनाकाल एवं लिपिकाल में ग्रन्थ की रचना तथा लिपि के समय की जानकारी दी गई है। ग्रन्थ के महत्त्वपूर्ण होने तथा अप्रकाशित भादि की जानकारी देने के लिए उसका भादि एवं ग्रन्तभाग तथा 'विशेष' दिया गया है।

ग्रन्थ-मूची को ग्रधिकाधिक उपयोगी बनाने की दिन्द से इसकी विस्तृत प्रस्तावना लिखी गई है। इसमें ग्रन्थों के लिखने की परम्परा का विकास, लेखन सामग्री तथा उसका उपयोग, ग्रन्थ सुरक्षा के लिए शास्त्र भण्डारों की स्थापना, राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डार, ग्रन्थ सृचियों की श्रनुसंधान एवं इतिहास लेखन में उपयोगिता, नागौर का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थ भण्डार की स्थापना, सुरक्षा एवं विकास श्रादि विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई है।

प्रन्य के धन्त में तीन परिक्षिष्ट भी दिये क्ये हैं। प्रथम परिक्षिष्ट में ब्रक्कात एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की शकारादि कम से नःभावन्ति दी गुई है। इससे अनेक प्रन्य जो साहित्य के इतिहास में भ्रम तक ब्रज्ञात रहे हैं वे इस ग्रन्थ द्वारा पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं। दूसरे परिक्षिष्ट में भ्रमारादि कम से ग्रन्थानुकमिश्यका दी गई है। तीसरे परिक्षिष्ट में भी भ्रकारादि कम से ही ग्रन्थकारानुकमिश्यका दी गई है। प्रस्मक्षुची के इस आव में करीब को हजार प्रत्यों का विषएए। स्मृत परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें बिद कोई कमी रह गयी हो समया लेखक का ग्राम, लिपिकस्स, रचनाकाल बादि के देने में कोई प्रमुद्धि रह गयी हो तो पाठक विद्वान हमें सूचित करने का कष्ट करें वें, जिससे अविष्य के लिए उस पर ध्यान रक्षा जा सके। नागौर का परिचय जब मैं प्रथम बार प्रत्य प्रण्डार देखने के लिए गया या तब श्री मदनलालजी जैन के साथ पूरे नागौर का भ्रमण किया था, तब उन्हीं जैन सा० के माध्यम से तथा वहाँ प्रचलित कियदन्तियों लेखों तथा जिलान लेखों के प्राथार पर ही दिया है। इस सूची के प्राथार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही नए क्ष्य उद्यादित हो सकेयें तथा पायस्थान के कितने ही विद्वानों, श्रावकों, शासकों एवं नगरों के सम्बन्ध में नदीन जानकारी मिल सकेगी।

बागार--

में सर्वप्रथम जैन अनुशीसन केन्द्र के निदेशक प्रो० रामचन्द्र दिनेदी का आभारी हूँ जिन्होंने प्रन्य-सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। जैन अनुशीसन केन्द्र द्वारा साहित्य-सोध, साहित्य-प्रकाशन एवं हस्तिसिखत प्रन्थों के सूची-करणा के क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, व किया जा रहा है वह ध्रत्यधिक प्रशंसनीय एवं क्लाचनीय है। भाषा है भविष्य में साहित्य प्रकाशन के कार्य को भीर भी प्राथमिकता मिलेगी।

ग्रम्थ-सूची के इस भाग के स्वरूप एवं रूपरेक्षा आदि के निकारने में जिन विद्वानों का परामर्थ एवं प्रोस्साहन मिला है उनमें प्रमुख हैं—-प्रो० रामचन्द्र द्विवेदी (जयपुर) प्रो० गोपी-नाथ सर्मा (उदयपुर), प्रो० सुधीरकुमार गुप्त (जयपुर), प्रो० के० सी० जैन (उज्जैन), डॉ० कस्तुरचन्द्र कासलीवाल एवं पं० ग्रुपचन्द्र न्यायतीय (जयपुर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं ग्राभारी हुँ भीर कृतक हुँ।

भट्टारकीय दिगम्बर जैन प्रत्य भण्डार नागौर के उन सभी व्यवस्थापकों का माभारी हूँ जिन्होंने भपने यहाँ स्थित शास्त्र-भण्डार की प्रत्य-सूची बनाने में मुक्के पूर्ण सहशोग दिया । बास्तव में यदि उनका सहयोग नहीं मिलता तो मैं इस कार्य में प्रगति नहीं कर सकता था। ऐसे व्यवस्थापक महानुभावों में श्री पन्नालाल जी चान्दवाड़, श्री डुंगरमलजी जैन, श्री जीवराज जी जैन, श्री शिखरीलाल जी जैन एवं श्री मदनलाल की जैन मादि (सज्जनों के नाम विशेषतः उस्लेखमीय हैं, इन सबका मैं हृदय से माभारी हुँ।

प्रेस कापी बनाने, अनुक्रमिण्का वैयार करने व प्रूफ आदि में सहचिमिणी स्नेहमयी बन्द्रकला जैन बी० ए० एखएल० बी० ने जो सहयोग दिया उसके लिए धन्यबाद देकर मैं उनके गौरव को कम नहीं करना चाहता।

अन्त में पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था शादि में केन्द्र के सिक्ष्य निदेशक प्रो० दिवेदी एवं क्यूर शार्ट प्रिन्टर्स वयपुर के प्रवन्यकों का को सहवोग मिसा है उसके लिए मैं इन सबका हुदय से शाभारी हूँ।

वर्षे श्रेमकास वीम २१६३ हैपरी भवन, मस्तिकृत्विकृत रारता, जयपुर-३

वि० १४-६--१

भट्टारकीय प्रन्थ भग्डार नागौर में संकलित प्रन्यों की सूची

विषय-अध्यातम, आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

- १. श्रमक वर्गन $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-१। श्राकार $-\epsilon'' \times v_{S''}^{2}$ । दशा-जीर्ग्ग। श्राषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या---२५७२। रखना काल--- \times । लिपिकाल--- \times ।
- २ प्रष्टोत्तरी ज्ञतक—पं० मगवतीवास । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । धाकार—१०" \times ६" । दशा-सामान्य । पूर्णं । भाषा-हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय-सिद्धान्त । प्रन्थ संख्या २२६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३. धागम \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । धाकार-१०" $\frac{3}{5} \times 5 \frac{3}{7}$ " । दशा- जीर्गा । पूर्गा । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-धध्यात्म । ग्रम्थ संख्या-१३७४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ सुदी १ मगलयार, सं० १६५६ ।
- ४. माठ कर्म प्रकृति विकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३१। माकार—११ $\frac{3}{6}$ " \times ६ $\frac{3}{6}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६३६। रचना काल— \times ः। लिपिकाल— \times ।
- ४. शारम मीनांसा वचितका-समन्तमद्र । वचितकाकार-जयबन्द छावका । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । श्राकार-१०" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ग । भाषा-हिन्दी एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । रचनाकाल- \times । वचितका रचनाकाल-चैत्र कृष्णा १४ सं० ६६६ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला २, सं० १६३३ ।
- ६. झात्म सम्बोध काव्य-रवधू । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । झाकार-११ $'' \times \chi_{\gamma}^{\mu''}$ । देशा-जीर्गं । पूर्गं । भाषा-झपश्रं श । लिपि-नागरी । विषय-झध्यात्म । सन्ध संख्या \times । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था–२४ । प्राकार–११ $\frac{9}{5}$ " । दशा–जीर्ग । पूर्व । ग्रन्थ संस्था–१०२४ । रचनाकाल– \times । निपिकाल $-\times$ ।
- ५. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-२७ । स्नाकार-१०६ $"\times$ ४६" । दशा-जीर्गः । पूर्गः । प्रत्य सख्या-१०२७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन सुदी १० बुधवार, सं० १६२६ ।
- ६. सास्मानुजासन—पुरासद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । स्राकार— ${0\frac{3}{7}}'' \vee {8}^{9}''$ । दक्षा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-प्रध्यारम । प्रत्य संख्या-११३८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक सुक्ला १४ सोमवार, सं० १६१२ ।

- १०. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था २७ । आकार $-११ \times "४ \frac{3}{7}"$ । दशा जीर्सं । प्रसं । प्रत्य संस्था १४०६ । रचनालाल \times । लिपिकाल $\frac{3}{7}$ जुक्ला १२ सोमवार, सं० १७४२ ।
- ११. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था-४६ । भाकार-१०३ँ ×४३ँ । दक्षा-जीर्ग । पूर्ण । भ्रम्य संस्था-१३७६ । रचनाकाल- \times) लिपिकाल-फ्रास्तुन शुक्ला १० शनिवार, सं० १६२८ ।
- १२ प्रति संस्था ४ । पत्र संस्था-३८ । माकार-११" \times ४५ । दशा-प्रतिजीसाँ । पूर्य । प्रत्य संस्था-११८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, मंत्रलवार, सं०१६०४ ।

विशेष--- जिपिकार ने पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

- १३. प्रति संस्था—१ । पत्र संस्था—२७ । आकार—१०३ \times ४ \S । दशा—जीर्ग । पूर्ण । प्रत्य संस्था—२७०६ । रचनाकास— \times । लिपिकास ।
- १४. श्रात्मानुशासन सटोक—गुरामद्राचार्य । टीकाकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— \times 0 श्राकार—११ $\frac{3}{7}$ " । दशा—जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय— श्रम्थारम । ग्रन्थ संख्या—२५३२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१५. प्रति सस्मा** २ । पत्र संख्या-७५ । झाकार-१० $\frac{2}{5}$ " ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-झितजीर्ण । पूर्ग । प्रस्थ संख्या-१४०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्सा १०, सं० १६१८ ।
- १६. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था-६ । प्राकार-११" \times ७ है" । दशा-प्रच्छी । पूर्ण ! प्रस्थ संस्था-२३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद सुक्ला १४ सुकवार, सं० १८५३ ।
- १७. झाल्यानुझासन सटीक--गुरामद्वाचार्य । टीकाकार-टोडरमल । देशीकागज । पत्र संस्था-१३६ । झाकार-१२३ ×६३ । दशा-सामान्य । पूर्ण । माथा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-ग्रध्यास्म । ग्रन्थ संस्था-११२७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-माधाढ कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८६८ ।
- १८. स्रात्मानुशासन ठोका—पं प्रश्नास्त्रास्त्रां । देशी कागज । पत्र संस्था—२६ । स्राकार ११ $\frac{3}{6}$ " \times 6" । दशा—सामान्य । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रत्य सस्या—१८०५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माथ शुक्ला ४, सं ० १८५६ ।

भादि भाग:---

वीरं प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोप मुद्योतिताऽसिस पदार्थमनस्पपुण्यम् ।
निर्वाणमार्गमनवस्त्रगुणप्रवन्त्रमारमानुशासनमहं प्रवरं प्रवस्ये ।।
मृहद्र्वर्षभित्रापुरलोकसेनस्य विश्वयव्यामुम्य बुद्धेः संबोधन व्याजेन सर्वोपकारकं सन्मार्गमुप्यशिवतुकामो गुरूभद्व देवो निविध्नतः सास्त्र परिसमाप्त्यादिकं फलमिलयस्त्रिध्दः देवताविशेष नमस्कुर्वाणो सक्मीत्याद्याह

श्रम्तमाम :---

मोक्षोपायमनन्यपुष्यममनन्त्रानौदयं निर्मलस् । प्रक्यार्थं परमं प्रभेन्दुकृतिना व्यक्तैः प्रसन्नैः पर्देः ॥ व्याख्यानं वरमात्शासनमिदं व्यामोहनिच्छेदतः । सुक्तार्थेषु कृतादरैरहुरहुश्चेतस्यतं चिन्त्यताम् ॥

इति श्री झास्मानुशासनितसकं प्रभाचन्त्राचार्यं विरचितं सम्पूर्णंम्

- १६. श्रात्मानुशासन पार्श्वनाग । देशी कायज । पत्र संख्या-२१ । श्राकार १० $\frac{5}{6}$ " \times ४ $\frac{5}{6}$ " । दशा-जीर्ग् । पूर्ण् । भाषा-संस्कृत । सिपि-नागरी । विवय-भध्यास्म । ग्रन्थ संख्या-२०६० । रचनाकाल-भाद्रपद १५ बुधवार सं० १०४० । लिपिकाल- \times ।
- २०. श्राराधना सार सित्र सागर । देशी कागज । पत्र सख्या—४ । श्राकार——१०" × ४" । दशा—जीर्रा । पूर्ण । भाषा—प्राकृत, संस्कृत एवं हिन्दी । क्रिपि—नागरी । विषय——श्रध्यात्म । ग्रन्थ संस्था—१५२६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।
- २१. भ्राराधना सार पंश्राकाषर । देशी कागज । पत्र संग्या-४ । भ्राकार--१२" × "४ । दशा-ग्रातिजीर्ग् । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ग्रध्यात्म । ग्रन्थ
 संख्या-२०६४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।
- २२. धाराधना सार देवसेन । देशी कागण । पत्र संल्या—१ । धाकार—११ $'' \times 8''$ । दशा—जीर्गा । पूर्गा । धाषा—प्राष्ट्रत । लिपि—नागरी । विषय—धष्यास्म । प्रन्य संल्या—१६१७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—२६ । द्याकार—११" \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—प्रतिजीर्ग्ग । प्रत्य संख्या—२६=० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २४. **बालाय पद्धति कवि विष्णु** । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । **बाका**र ११" $\times Y_{\overline{g}}^{3}$ " । दशा—ब्रितजीर्ग् । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—ब्रध्यात्म । ग्रन्थ सस्या—२०४५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पोष कृष्णा १५, सं० १६८५ ।
- २५. शालोचना पाठ—कोहरीलाल । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । धाकार— $१२" \times y = 1$ । दक्षा—धितिजीर्गा । पूर्ता । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—प्रध्यास्म । ग्रन्थ संस्था—१५३५ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।
- २६. भालोकमा सटीक—मोहरीलाल । टीकाकार— \times । देशी कांगज । पत्र संख्या—६ । भाकार—१२ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—प्राकृत एव संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—प्रभ्यात्य । ग्रन्थ संख्या—१८०६ । रचनाकास— \times । लिपिकाल— \times ।
- २७. इच्छोपदेश--गौतम स्थामी । देशी कायज । पत्र संख्या १ । घाकार-१० र्रै" ×४" । दशा--बीर्गा । पूर्वा । घाषा--संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-प्रध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१३६७ । रचनाकाल--माच कृष्या ६ सोमवार, सं० १४२४ ।

- २८. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-८ । प्राकार-६ है" \times ३ है" . दक्का-कामाय । पूर्ण । ग्रम्थ संस्था-१८५५ । रचनाकाल- \times । लिविकाल- \times ।
- २६. इच्टोपर्वेश पूज्यपाव स्वामी । देंशी कार्यज । पण संख्या—७ । धाकार—६ $\frac{1}{9} \times 8\frac{1}{9}$ । दशा—जीर्ग । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—धच्यारमं । ग्रन्थ संख्या—२०४२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३०. प्रति संस्था २। पत्र संस्था-६। श्रोकार-११" 🗙 ४ है"। दशा-जीर्रो। पूर्या। ग्रम्थ संस्था-२०३१। रवनाकाल- 🗙 । लिपिकाल-कार्तिक कृष्मा २, बुधवार, सं० १६४६।
- ३१. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-६ । ग्राकार-६ $\frac{3}{8}$ " × ४ $\frac{5}{8}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२०२८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।
- ३२. इष्टोपदेश टीका—गोतम स्वामी । टीकाकार पं० द्याशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । द्याकार–१० हुँ″ ४ ६ । दणा—जीर्सं । पूर्सं । भाषा—सस्कृत । लिपि–नागरी । विषय— द्यादम । ग्रन्थ संख्या—२४७४ । रचनाकाल— ४ । लिपिकाल—श्रावसा सुबला १४, सं० १४६२ ।
- ३३ प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१८ । भाकार-१०६ै" \times प्र" दशा । दशा-भितिजीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८८३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३४. प्रति संस्था ३। पत्र संस्था-३७। घाकार-१० $\frac{5}{5}$ " \times ४" । दशा-प्रतिजीर्ग। पूर्ण। ग्रन्थ संस्था-१४६६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३५. उत्तराध्ययम $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-६४। भाकार-६३ $^{\circ}$ × ४३ $^{\circ}$ । दशा-भातिजीर्गां। पूर्गां। भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१७५२। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मात्र कृष्णा ५, सं० १७४६ ।
- ३६. उदय उदीरण त्रिभंगी—सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्त्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । म्राकार-१०६ \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा-म्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । सन्य संख्या-१४१८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३७. उपासकाध्ययन सपुनंदी। देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । झाकार-१०हुँ" × ४हुँ" । दशा-सामान्य । पूर्ण् । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या-१६२३ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-स० १४२१ ।
- ३८. प्रति संस्था २ । पत्र संख्या-१३ । श्राकार-११"×४" । दशा-श्रति जीर्ग । पूर्ण । ग्रम्थ संख्या-१६६७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १४२१ ।
- ३६. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या-१३। भाकार-११ $\frac{3}{2}$ " × ६ $\frac{5}{2}$ "। दशा-भितजीर्ग्। पूर्ण्। ग्रम्य संख्या-१४७०। रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।
- ४०. एक लावरणी- \times । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । प्राकार-६२ $"\times$ ५५" । दशाजीर्ग् । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । सिपि-नागरी । विषय-प्रध्यास्म । ग्रन्थ संस्था-१६६२ । रचना
 काल- \times । लिपिकास- \times ।

दक्षा-सण्डी । पूर्वं । भाषा-हिन्दी । किपि-नागरीः । विषय-सिद्धान्त । मण्य संस्था-२७०७ । रचनाकास-× । लिपिकास-× ।

- ४३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-११है" \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्ग । पूर्ण । प्रत्य संख्या-२४५२ । रजनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४ । धाकार-१०६ $''\times$ ५'' । दशा-खीर्ग् । पूर्ग् । ग्रन्थ संख्या-२०७५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४४. प्रति संस्था ४ । पत्र संस्था-४ । भाकार-१२ $"\times$ ५" । दशः-भ्रतिजीर्गः । पूर्णः । गन्थ संस्था-२०३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ३, सं० १७६७ ।
- ४६. **घंक प्रमास** $-\times$ । देशी कामज । पत्र संस्था-३ । ज्ञाकार-१०" \times ४२ । दशा-जी मुं क्षीण । पूर्ता । भाषा-प्राकृत घीर हिम्बी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । प्रन्थ संख्या-१६३१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ४७. कर्मकाण्ड सदीक-× । दीकाकार-पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । झाकार-१० है"× ४ है" । दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । टीका हिन्दी में । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ सङ्या-१३४९ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ग्रश्विन शुक्ला ४, सं०१८४८ ।
- ४८. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—३१ । भ्राकार—१०५''' \times ६''' । दशा—जीग्रां । पूर्ग् । यन्य सख्या—१६४४ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।
- ४६. प्रति सङ्या ३ । पत्र सङ्या-४४ । श्राकार-१२ $\frac{9}{4}$ " \times ५ $\frac{9}{4}$ " । दशा-श्रञ्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सङ्या-२५८५ । रचनाकाल- \times । टीकाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, स० १७६४ ।
- ४०. कर्म प्रकृति—सि० **ष० नेनिचन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । ग्राकार—१०५ँ″ \times ४५ँ $^{\prime\prime}$ । दशा-धितजीर्गं क्षीण । पूर्गं । भाषा-प्राकृत । सिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या—१०२८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- x१. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था–१६ । श्वाकार–११" $/ x_\xi^{\mu}$ " । दशा–द्यतिजीर्ग । पूर्ण । प्रत्थ संस्था–१६७७ । रचनाकाल–x । तिपिकाल–x ।
- ४२. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-६ । याकार-११है" × ६" । वहा-सामान्य । पूर्व । यान्य सम्या-१८३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माध कृष्णा ४, सं० १८२२ ।
- ५३. प्रति संस्था ४ । पत्र संस्था-२० । आकार--१०६ 2 ' \times ४ 2 '' । दशा--धतिजीसाँ । पूर्स । प्रन्थ संस्था--१५७४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- ५४. प्रति संस्था ४ । यत्र संस्था-२० । आकार-१०३ \times ४-१ ३ दत्रा-शतिजीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ सस्था-१२८८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४४. प्रति संस्था ६। पत्र संस्था-१७। बाकार-११है" x ४"। दशा-जीर्ग । पूर्ण। ग्रन्थ संस्था-२०६६। रचनाकाल-x । लिपिकाल-भ्राश्विन ग्रुक्ला १३, सं० १६४६।

विशेष-यह जीवनेर में लिखा गया है।

- **४६. प्रति संस्था ७ । पत्र** संस्था-१६ । श्राकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्स । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-२०६८ । रचनाकाल- \times । सिपिकास-स० १६१४ ।
- ४७. प्रति संख्या = । पत्र संख्या—१० । भ्राकार—१०" \times ४ \S " । दशा—भ्रच्छी । पूर्ण । प्रत्य संख्या—२२४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४८. कमं प्रकृति सार्थ—सि० घ० नेमिचन्द्र । अर्थकार—४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । भ्राकार—११″ × ४३ँ″ । दशा—जीर्गा । पूर्णा । माषा—प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३६४ । रचनाकाल— ४ । लिपिकाल ।
- ४६. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-४० । म्राकार-१० $\frac{9}{4}$ " \times ५" । दशा-म्रितजीर्ग । पूर्ग । ग्रन्थ संस्था-२५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६०. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था–११ । ग्राकार–१२हें $"\times$ ५हें" । दशा–ग्रतिजीर्ग । पूर्ग । ग्रम्थ संस्था–२०६३ । रचनाकास– \times । लिपिकास–चैत्र कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७६३ ।
- **६१. प्रति संस्था ४**। पत्र संस्था-२३। म्राकार-११ $\frac{9}{5}$ " ४४ $\frac{3}{5}$ "। दशा-म्रतिजीर्ग । पूर्ण । ग्रम्थ संस्था-२५१६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मगशीर्ष शुक्ला ३, सं० १८२२ ।

विशेष—सं० १७२७ मंगशीर्ष घुनला १४, मंगलवार को महाराष्ट्र में श्री महाराज रधनाथिसह के राज्य में प्रति का सशोधन किया गया।

- ६२. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-२४ । धाकार-११ $\frac{9}{5}$ " । दशा-जीर्ग । पूर्ग । यन्य संख्या-२३४७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६३. प्रति संख्या ६ । पत्र सख्या-१६ । धाकार-१२ $\frac{3}{8}$ " \times ५ $\frac{3}{8}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६५८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६४. प्रति संस्था ७ । पत्र संस्था-१२ । आकार-१०३ \times ४५ । दशा-अतिजीसां । पूर्सा । ग्रन्थ संस्था-१४६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६४. कर्म प्रकृति सूच मावा $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या -७१ । अग्वार-६ $\frac{3}{6}$ " \times ६ $\frac{1}{6}$ " । दशा-सामान्य । पूर्श । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६०१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १, संग्लवार, सं० १८२८ ।
- ६६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१५६ । झाकार-१० $\frac{2}{3}$ " \times ४ $\frac{2}{3}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्य । ग्रन्य संख्या--२८०१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-संगशीर्ष शुक्ला २, शुक्रवार, स०१६६१ ।

विशेष-प्या संख्या ३६०० है।

- ६७. कातिकेयानुप्रकाः कातिकेय । देशी कागजः पत्र संख्या-२६ । माकार--- ११ $\frac{9}{5}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दन्ना-प्राचीतः । पूर्णः । मत्या-प्राकृतः । सिपि-नागरीः । विषय-सिद्धान्तः । प्रत्य संख्या-२७०० । रचनाकाल- \times । सिपिकाल-प्रस्थित शुक्लाः १०, रविवार सं० १६०४ ।
- ६८. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-२८ । ग्राकार-१०३'' \times ४ \S'' । दशा-जीर्गं । पूर्णं । सन्थ संस्था-२४७६ । रचनाकाल । लिपिकाल- \times ।
- ६६. काव्य दिप्पर्ग $-\times$ । देशी कागज । पत्र सख्या- \times । श्राकार-१० $''\times$ \times ξ''' । दक्षा-सामान्य । पूर्ग् । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्स । श्रन्थ संख्या -२०६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७०. किया कलाय टीका- । दीकाकार-प्रमाचन्द्र । देशी कागत्र । पत्र संख्या-६५ । बाकार-१२" ४ ४" । दशा-ब्रातिजीर्ण् क्षीरा । पूर्ण् । भाषा-संस्कृतः । लिपि-नागरी । विषय---प्रध्यात्म । ग्रन्थ मरुया-२६४५ । रचनाकाल-- ४ । लिपिकाल-- ४ ।
- ७१. किया कोव-- किशनसिंह । देशी कागज । पत्र सख्या--६१ । म्राकार--१०" × ४"। दशा--ग्रन्छी । पूर्ण । भ्राषा-हिन्दी । लिपि--नागरी । विषय-ग्रष्यात्म । ग्रन्थ संख्या--२३६६ । रचनाकाल-भ्राद्वपद शुक्ला १५, रविवार, स० १७६४ । लिपिकाल-श्रादण शुक्ला २, स० १६३७ ।
- ७२. गुर्स स्थान कथा—काङ्गा छाबङ्ग । देशी कागज । पत्र सख्या-१६ से २६ । आकार- $\varepsilon'' > 3 \frac{3}{5}''$ । दशा-ग्रन्छी । श्रपूर्स । भाषा-िहन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । प्रन्थ संख्या २८५७ । रचनाकाल-ग्राषाढ शुक्ला १५, सोमबार, सं० १७१३ । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १४, ज़हस्यतिवार, सं० १८३६ ।
- ७३. गुर्गस्थान धर्मा $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१। प्राकार-१० $''\times$ ४ $\frac{1}{9}''$ । दशा-प्रच्छी। पूर्गं। भाषा-प्राकृत एवं हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ सख्या-२१४४। रश्वनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ७४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१ । प्राकार--२२ ξ'' \times १४'' । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । प्रन्य संख्या-२२३द । एजनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ता २, सं० १७८७ ।
- ७५. गुरुस्थान चर्चा साथं—रत्न शेक्षर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । माकार-१० $'' \times ४ \frac{3}{7}''$ । दशा-जीर्र्ण । पूर्त । माथा-संस्कृत । लिपि-नायरी । विषय-सिद्धांत । प्रत्थ संख्या-१८२६ । रचनाकाल- \times । निपिकाल- \times ।
- ७६. गुरास्थान वंश (ध्युच्छति प्रकर्श) $-\times$ । वेशी कागण । पत्र संस्था-१ । धाकार-१०" \times ४ 2_7 "। दशा-छीश् । पूर्ण । धाका-संस्कृत । निप-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१६४० । रचनाकास $-\times$ । निपिकाल $-\times$ ।
- ७७. योग्यटस्तर—सि० व० वेशिवन्तः । देशी कागज । पत्र संस्था—२५ । झाकार— ${\{\xi_{g}^{h''} \times \chi'' : दक्ता-धितकीर्ण : पूर्ण : भाषा—प्राकृद : लिपि—नामरी । विषय—सिक्कान्त । ग्रन्थ संस्था—२६१६ । रचनाकाल<math>-\times$ । लिपिकाल-वैशाक्त कृष्णा १३, सं० १६०० ।

७८. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-१४ । झाकार-१६" ×६" । वसा-झतिजीखं कीख । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था--२६०६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-फाल्युन चुक्ला ११, सं० १६३६ ।

सोट— ग्रन्थ के पत्र धापस में चिपके हुए हैं। इसकी कालाडेरा जयपुर में लिपि की गई। ७६. प्रति संख्या ३। पत्र संख्या-१६। धाकार-११" × ५"। दशा-जीर्गा। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२४६०। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।

- द०. गोम्मटसार सटोक—िस० **घ० नेमिचन्द्र । टीकाकार**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । ग्राकार—११ $"\times$ ४ $^3_7"$ । दशा—ग्रज्छी । पूर्ग । भाषा—प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि— नागरी । विषय—सिद्धान्न । ग्रन्थ सल्या—२५३५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- दश्. गोम्मट सार (जीवकाण्ड मात्र)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या- ७१ । झाकार-११ n \times ४ n 2 । दशा-मञ्जी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १० सोम- बार, सं० १५१८ ।
- =२. गोम्मटसार सटीक—सि० च० नेमिचन्त्र । टीका-सज्ञात । देशीकागज । पत्र संस्था—२६० । म्राकार—१२ $'' \times x_0^2''$ । दशा—मच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भीर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—१५७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाषाढ़ कृष्णा २ बृहस्पतिवार, सं० १६५६ ।
- दशे. गोम्मटसार माबा-सि० च० नेमिचन्त्र । भाषाकार-महापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र संख्या-१०२६ । झाकार-१४३ $"\times$ =5" । दशा-स्रच्छी । पूर्ण । भाषा-राजस्थानी (द्वंढारी) । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६२२ । रचनाकाल- \times । लिपि-काल- \times ।

विशेष—नागौर गादी के घट्टारक १०८ श्री मुनीन्द्रकीर्तिजी ने "निसरावल" मूल्य देकर इम ग्रन्थ को स० १६१६ माघ शुक्ला ५ को लिया है। भाषाकार ने लिखा है कि जीव तस्व प्रदीपिका संस्कृत टीका के अनुसार भाषा की गई है। टीका का नाम "सम्यज्ञान चन्द्रिका टीका" है। बच्चिनकाकार श्री पंठ टोडरमलजी जयपुर निवासी ने अन्त में लिखा है कि लब्धिसार ग्रीर क्षपणसार शास्त्रों का व्याव्यान भी आवश्यकतानुसार मिला दिया गया है। अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं।

- द्रथः सतुर्वश गुरास्थान चर्चा—सि० च० नेमिसन्तः । देवी कागज । पत्र संस्था—१४ । ग्राकार—द″ × ४३ँ″ । दशा—ग्रच्छी । पूर्णे । माषा—प्राकृत एवं संस्कृतः । सिपि—नागरी । विषय— सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—१७६२ । रचनाकाण— × । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, सं० १६४३ ।
- दश्य अनुवंश गुरास्थान व्याख्यान—× । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ब्राकार— १०३" ×४" । दशा-प्राचीन । पूर्गो । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त ।

ग्रम्य संस्था-२५६७। रचनाकास $-\times$ । सिपिकास $-\times$ ।

- ५७. चतुर्वित्रति स्थानक चर्चा—सि॰ ष॰ नैमिष्यतः । देशी कागज । पण संस्था-२० । स्थान्य-१२ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-भण्छी । पूर्ण । भाषा-प्राष्ट्रतः । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । सन्य संस्था-१२४३ । रषशाकाल- \times । लिपिकाल-धाषाढ् शुक्सा ११, सं० १६०० ।
- पनः **चतुर्विज्ञ**ति स्थानक—सि० **थ० नैतियन्तः । देशी कागवः । पत्र संस्था**—२६ । धाकार-१०३ × ४ । दशा—प्रच्छी । पूर्णे । भावा-प्राकृतः । लिपि-नागरी । विवय-सिद्धान्तः । सन्य संस्था-२३४४ । रथवाकाक-× । लिपिकस्थ-मंगशीर्थं कृष्ट्याः २, सं० १८७८ ।
- प्रदेश प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-४२ । प्राकार-११ $'' \times \chi_{\xi}^{0}''$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । प्रन्य संस्था-१०८० । रचनाकास- \times । सिपिकाल-प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला १, स० १८७७ ।
- ६०. चतुस्त्रिप्तांब भावना—मुनि पद्मनिष्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । भ्राकार— $११\frac{3}{5}'' \times 8\frac{3}{5}''$ । दक्मा—शिर्ग् । पूर्वा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या—१४२२ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ξ . चरचा यत्र— एंकलित । देशी कागज । पत्र संस्था—३ । झाकार—११ $'' \times \vee_{\xi}^{y}''$ । दशा—जीग्र्गं । पूर्ग्ं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—२१३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६२. घरचा घत्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । द्यामार-६ $\frac{3}{9}$ " \times ४" । दशा-धच्छी । पूर्ण । घाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२१३४ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६३. वरचा पत्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या -४३ । श्राकार-१२ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा-श्रच्छी । पूर्य । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२७५७ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६४. चर्चायें— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— \times ६ । म्राकार—११३ $''\times$ ५१'' । दशा— भ्रच्छी । पूर्ण । भ्राया—प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—चर्चा । ग्रम्य संख्या—१२७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६५. चर्चा तथा सील की नवपाटी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। प्राकार—१२ $''\times$ ५ $^{9}''$ । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रन्य संख्या—१६६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६. चरका शतक (सटीक)—यं॰ सानतराय । टीकाकार—हरकीमस । देशी कागज । पत्र संस्था-५२ । शाकार—१२ $\frac{3}{4}$ " × न्हें" । दक्षा—सच्छी । पूर्ण । माया—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रत्य संस्था—२५०१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा २, दुवबार, सं० १६२६ ।
- **१७. प्रति संस्था २ । पत्र** संस्था-द२ । प्राकार-१३" \times द 2 " । वता-सन्धी । पूर्ण । 47 य संस्था-१५७६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशास इष्णा ७, मंगलवार, सं० १६१० ।

- १८. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-४७ । प्राकार-१३ $\S'' \times = \S''$ । दक्षा-धच्छी । पूर्ण । प्रस्थ संख्या-१४७७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **६६. चरचा शास्य**— \times । देशी कायज । पत्र संख्या—४५ । धाकार—११'' \times ५ $\frac{1}{2}''$ । देशा—प्रच्छी । पूर्ण । धाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६४१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पोष शुक्ला १, सं० १८६६ ।
- १००. चरचा सनावान—पं० भूषरवास । देशी कागज । पत्र संख्या—३ से १२६ । माकार—६ $\frac{1}{6}$ " \times ४"। दशा—बहुत ग्रन्छी । अपूर्ण । माषा—प्राकृत ग्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—चर्चा एवं सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१२७७ । रचनाकाल—माथ शुक्ला ४, सं० १८०६ । लिपिकाल— \times ।
- **१०१. प्रति संस्था २ ।** पत्र संस्था—७७ । द्याकार—१२ $'' \times 2\frac{1}{6}'''$ । दशा—द्यच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१२=१ । रचनाकाल—माघ शुक्ला ५, सं० १८०६ । लिपिकाल—माघाढ़ शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १८३० ।
- **१०२. प्रति संस्था ३ ।** पत्र संस्था-४८ । भ्राकार-१२ $\frac{9}{8}$ " ४ दशा-ध्रच्छी । पूर्गे । ग्रन्थ संस्था-१२८० । रचनाकाल-सं० १८०६ । लिपिकाल-खेण्ठ कृष्णा १२, सं० १८८१ ।
- १०३. **चौबीस ठारता चौपई माषा**—पं० **लोहर** । देशी कागज । पत्र संस्था—३५ । **धा**कार—१२ $_{7}^{3}$ " \times ५ $_{7}^{3}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । निपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—१७६६ । रचनाकाल—मंगसिर सुदी ५, सं० १७३६ । लिपिकाल—सं० १८५२ ।
 - हिप्परा चौबीस ठाणा के मूलकर्ता सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य हैं। उस ग्रन्थ के भाषार पर ही हिन्दी रूप में प० लोहर ने रचना की है।
- १०४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-५६ । श्राकार-१२ $\S'' \times \chi''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ग् । ग्रन्थ संख्या-१५७० । रचनाकाल-मंगसिर सुदी ४, सं०१७३६ । लिपिकाल-श्राप्यत कृष्णा १, सं०१७६० ।
- १०५. चौबीस ठाएग पिठीका $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-ः । भाकार-ः ११ $\frac{7}{5}$ " \times ५ $\frac{7}{5}$ "। दशा-जीएं। पूर्णे। भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१७७०। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १०६. चौबीस ठाएग पिठीका तथा बंध व्युच्छति प्रकरस्य—सि० च० नेभिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । ग्राकार—११ $^{o}_{o}$ " \times ४ $^{o}_{o}$ " । दशा—जीएं । पूर्ण । भाषा—प्राकृत व संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२४२ । रनवाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०७. चौबीस ठात्वा सार्चे—सि० च० नेविचन्त्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । क्षाकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times प्र"। दशा-जीर्गं । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ सस्या-२४५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०६. चौबोस वण्डक--गजसार । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । धाकार-१० $\frac{3}{6}$ " \times ४६ँ" । दशा-धातिजीर्गं । पूर्णं । भाषा-प्राफृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२७२० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड- श्वेताम्बर ग्राम्नावानुसार वर्रान किया गया है।

- १०१. जीवीस वण्डक सार्थ—यजसार । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । धाकार— * १० * ×४ * १ । दसा—प्रक्ती । पूर्ण । भाषा—प्राकृत, हिन्दी तथा गुजराती । लिपि—नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५६५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।
- **११०. सौबीस वण्डक गति विकरण** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार— १०३ $'''\times$ ४ $^{3}_{7}''$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—ग्रध्यात्म । ग्रन्थ संख्या—१६३८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १११. जन्मान्तर गाया— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । घाकार-१० $\frac{9}{5}$ " \times ४ $\frac{9}{5}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सध्यात्म । सन्य संख्या—१४२४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ११२. जीव सत्य प्रदीय-केशवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-११३ । धाकार-१०" \times ७" । दशा-ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं,संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रम्थ सस्या-२४१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ११३. जीव प्ररूपरा —गुरू रवरा भूवला । देशी कागज । पत्र परुषा-२६ । प्राकार— १० $\S'' \times Y = 1$ । प्राप् । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय–सिद्धान्त । प्रत्य संख्या—३७७/ग्र । रचनाकाल— \times । लिपिकान—चैत्र सुदी २, स० १४११ ।
- ११४. जीव विचार प्रकररा— \times । देशी कागज। पत्र संस्था—द। आकार १० $\frac{3}{5}'' \times Y_{5}'''$ । दशा—जीर्ग्ग । पूर्त्ग । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । जिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त ग्रन्थ सन्या—१६६२ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ता १, न० १७०५ ।
- ११५. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१२ प्राकार- $=\frac{3}{5}'' \times 8\frac{3}{5}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२५०६ । रचनाकाल -- \times । लिपिकाल-फाल्युन कृष्णा १२, सं० १६४५ ।
- ११६. जीव विचार सूत्र सटीक—शान्ति सूरि। देशी कागज । पत्र सस्या-३१ । धाकार-१०" \times ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ग ।पूर्ण । भाषा-प्राकृत भौर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१३०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **११७. प्रति संख्या २**। पत्र संख्या—१। ग्राकार—१०" \times ४ $\frac{1}{9}$ "। दशा—जीर्ग्ग। पूर्ग्ग। ग्रन्थ संख्या—२७११। रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।
- ११ म. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था—६ । स्नाकार—१०६ $^{"}\times$ ४ $^{"}_{2}$ " । दशा—जीर्ग । पूर्ग । सन्थ संस्था—२७१७ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—पोष कृष्णा १३, स० १७६७ ।

विशेष-मन्तिम पत्र पर २२ मभक्ष पदार्थी के नाम दिये हुए हैं।

११८. जैन शतक — भूषरवास क्रष्येनवाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । झाकार-११" × ५२" । दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । निपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । श्रन्य संख्या-२३०८ । रचनाकाल-पोष कृष्णा १३, सं० १७८१ । निपिकाल-चैत्र शुक्ता १, बुधवार म० १६४८ ।

- १२०. डाडसी मृति नाषा-मृति डाडसी । देशी कामज । पत्र संस्था-१ । झाकार---१० है" × ४ है" । दशा--अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । प्रत्थ संस्था-२५६५ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला २, स० १७६८ ।
- १२१. तर्क परिमाणा—केशव मिश्रा। देशी कागज। पत्र संख्या—१६। झाकार—११ $\frac{1}{3}$ " \times ५"। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—तर्क शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१६५६। रचनाकाल— \times । लिपिकाश्व-प्रश्विन शुक्ता ४, सं० १६६६।
- १२२. तस्व धर्मामृत चन्द्रकीर्ति । देशी कागज । पत्र सख्या—३३ । म्राकार—- ११ $\frac{1}{6}$ " \times ५ $\frac{1}{6}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—भ्रागम । ग्रन्थ सख्या—३८२/ग्र । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१२३. प्रति संख्या २ ।** पत्र संख्या—३३ । म्राकार—१०हुँ" \times ४हुँ" । दशा—जीर्ग् । पूर्ण । ग्रस्थ पंख्या—१०६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद बुदी ६, सं० १५६७ ।
- १२४. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-३२ । भाकार-१२" × ५" । दशा-जीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०३२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-प्रियन शुक्ला ४, स० १४६७ ।
 - टिप्परणी—आमेर सास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची में इसके कर्ता का नाम चन्द्रकीति जिल्लिखित है। प्रारम्भ का एक श्लोक दोनों ग्रन्थों का एक ही है किन्तु ग्रन्तिम श्लोक भिन्न-भिन्न हैं। ग्रामेर के ग्रन्थ में श्लोक संख्या ४७७ हैं जबकि यहाँ इस ग्रन्थ में ४०० श्लोक हैं। यहाँ इस ग्रन्थ के रचियता का नाम ग्रन्थ में मुक्ते शब्दगत नहीं हुआ। ग्रतः मैंने इसे उसकी रचना ही मानी है।
- १२५. सस्वकोष प्रकरण $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-२१ । धाकार $-१२''\times \chi_{\Sigma}^{9''}$ । देशी कागज । पत्र्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था<math>-१७५५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १२६. तस्य सार--वेबसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । धाकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४" । दशा-जीर्ग् । पूर्ग् । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१५०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १२७. तस्वत्रय प्रकाशिनी ब्रह्म खृतसागर । देशी कागज । पत्र संख्या ७ । ब्राकार १० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ । दसा ब्रब्धि । पूर्य । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २४४२ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।

नोट--टीका का नाम तस्य जय प्रकाशिनी है।

- १२६. तत्वज्ञान तर्रागिसी—भ० ज्ञानसूबस्य । देशी कागज । पत्र सरुमा—१६ । भ्राकार—१० $\frac{3}{4}$ " \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्स । भ्राया—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रथ्य सम्या—२८५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - १२६. तत्वज्ञान तर्रगिएरी सडीक---भ० ज्ञानभूवर्ग । टीकाकार-- । देखी कामव ।

पत्र संस्था-मध् । बाक्तर-२१" × ७२ू" । यशा-मण्डी । पूर्व । धाया-संस्कृत कौर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धारत । प्रत्य संख्या-२२६७ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-फाल्युव शुक्ता ६, सं० १६८६ ।

१३०. तत्वार्ष रस्न प्रमाकर—प्रमाचन्त्र वेव । देशी कागज । पत्र संख्या-२ से ७४ । प्राकार-११ $\frac{9}{7}$ \times \times $^{\prime}$ । दशा-भ्रष्ट्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विवय-सिद्धान्त । प्रत्य संख्या-२५४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट--प्रथम पत्र नही है।

- **१३१. प्रति संस्था २ ।** पत्र संस्था—६२ । धाकार—१२" \times χ " । दशा—जीगं क्षीमा । पूर्यं । भाषा—संस्कृत । क्षिप—नागरी । दिश्वय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—२३४२ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला ४, सं० १४६६ । लिपिकाल—श्रावरा शुक्ला १३, शुक्रवार, स० १४५० ।
- १३२. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था–१६६ । प्राकार \times ११ $\frac{3}{9}$ " \times ३ $\frac{3}{9}$ " । दशा–प्राचीत । पूर्वा । प्रस्थ संख्या–१२६२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपकाल $-\times$ ।
- १३३. तत्वार्थ सूत्र उमा स्थामी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार—१० $\frac{3}{8}\times 4\frac{9}{8}$ "। दशा—जीर्ण् । पूर्ण् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रम्थ संख्या—१७६२ । रचना काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १३४. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—२२ । म्राकार—११हुँ $"\times$ प्रहुँ" । दशा—जीएाँ कीरण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५२० । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—ज्येश्व शुक्ला २, रविवार, सं०१६२० ।
- १३५. तत्वार्षं पूत्र सटीक उमास्वामि । टीकाकार श्रृ तसागर । देशी कागज । पत्र संख्या २० । श्राकार १० $'' \times 8^{9''}_{7}$ । दशा श्रच्छी । श्रपूर्णं । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या २०६२ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १३६. तत्वार्च सुत्र सार्ष $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-२७। झाकार $-१० \frac{2}{5}"\times ४ \frac{2}{5}"$ । दशा-जीएं। पूर्एं। भाषा-संस्कृत व हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। प्रन्थ संख्या-१३४६। रवनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १३७. तत्वायं सूत्र सटीक—सवासुख । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । प्राकार—१२ $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत धीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६४ । रचनाकाल—काल्गुन कृष्णा १०, सं० १६१० । लिपिकाल—अयेष्ठ कृष्णा ३, सं० १६६३ ।
- १३८. तत्त्वार्षं सूत्र माथा-कनककीति । देशीकागज । पत्र संख्या-४६ । झाकार-- ११५ $^{\prime\prime}$ ×५ $^{\prime\prime}$ । दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । यथ्य संख्या-१३५० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्युन शुक्ला ६, सं० १८७२ ।
- १३६. तस्वार्थ सूत्र वयविका-पं॰ व्यववंद । देशी कावज । पव संस्था-४७६ । याकार-१० $\frac{3}{7}$ ×५ $\frac{3}{7}$ । दशा-सामाम्ब । पूर्य । भाषा-संस्कृत एवं हिन्दी । विधि-नावरी ।

विषय-सिद्धान्त । प्रश्य संस्था-१८०१ । रवनाकाल-चैत्र शुक्ला ५, सं० १८३६ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १६०४ ।

विशेष--- ग्रन्त में वचनिकाकार ने स्वयं का तथा श्रन्य अनेक पण्डितों का परिचय दिया है।

१४०. तेरह पंच कण्डन—पं० वस्तालाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । धाकार— १२ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा-जीत्मं कीता । पूर्त्य । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-वर्षा । ग्रन्थ संख्या-२२७३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

विशेष -- दिगम्बर सम्प्रदाय के तेरह पंथ के सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है।

१४१. दण्डक चौपई-पं० दौकतराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । झाकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times χ^{9}_{5} " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या---१६६३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४२. वण्डक सूत्र – गजसार सुनि । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । प्राकार—१०६ 9 " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत ग्रौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रम्थ संख्या—१७३२ । रवनाकाल— \times । लिपिकाल—पौष धुक्ला १०, सं० १७५४ ।

१४३. दश बछेरा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— κ । माकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{3\prime\prime}_{5}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्रपन्न श धौर हिन्दी । लिपि—नागरी , विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मगसिर शुक्ला ५ सं० १७६६ ।

१४४. वर्शनसार सटीक देवसेनावार्य । टीका-शिवजीलात । देशी कागज । पत्र संख्या—१२० । माकार—१२३ 2 × ५ 2 । दशा—सामान्य । पूर्य । भाषा—प्राकृत ग्रीर संस्कृत । निपि—नागरी । विषय—मिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१५६६ । टीकाकाल—माथ शुक्ला १०, सं० १६२३ । निपिकाल— × ।

१४४. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-६४ । धाकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times ७ $\frac{2}{5}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२३६६ । रचनाकाल-माध शुक्ता १०, सं०६६० । लिपिकाल-प्रिय्वन शुक्ता ८, शनिवार, सं०१६२८ ।

विशेष—वि० सं० ६६० माघ घुक्ला १०, को मूल रचना घारा नगरी के श्री पार्श्वनाथ चैरयालय मे की गई। भीर हिन्दी टीका १६२३ माघ घुक्ला १० को हुई है

१४६. दर्शन सार— म॰ देवसन । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । द्याकार—११ $\frac{9}{2}$ " \times ५" । वशा—जीर्ण कीर्ण । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६५४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४७. ब्रब्स संग्रह—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । माकार— ६ $\frac{1}{9}$ " \times ४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्स संख्या—२४१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ८, सं० १६६६ ।

१४८. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-१६ । भाकार-६३ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्गुक्षीरा । पूर्ण । प्रत्य संस्था-२६१८ । एवनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४२. व्रति संस्था ३ । पत्र संस्था-४ । व्यक्तार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-कीर्ण कीण । पूर्ण । प्रश्न संस्था-२१६२ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।

११०. प्रति संस्था ४ । पत्र संस्था-६ । स्राकार-११" ४४है" । दशा-प्रतिजीर्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१३२१ । रचनाकाल- × । निपिकाल- × ।

१५१. इच्य संग्रह सटीक — प्रमाचन्त्राकार्य । देशी कार्यक । पत्र संख्या-३२ । ग्राकार— ६३ 2 2 2 3 2 3 2 3 $^$

मादिमाग---

नत्या जिनाकर्मेपहस्तितसर्वदीषं, लोकत्रवाधिपति संस्तुत पादपश्चम् । ज्ञान प्रभा प्रकटिताब्लिबस्तुसार्चं, पडद्रस्यनिस्तृयमहं प्रकट प्रवस्ये ॥१॥

प्रन्तभाग---

इति श्री परमागमिक भट्टारक-श्री नेमिचन्द्रविरचित-वड्द्रव्यसंग्रहे श्रीप्रभाचन्द्रदेवकृत संक्षेप टिप्पर्णक समाप्तम् ॥

१४२. ब्रम्य संग्रह सटीक--पर्वत वर्मार्थी । देशी कागम । पत्र संस्था-५४ । ब्राकार--१०३ × ४ । दक्ता-सामान्य । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्य संख्या-१३५४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ब्राखाद कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८२८ ।

११३. द्वस्य संग्रह सटीक — बहादेव । देशी कागन । पत्र संस्था — ६६ । ग्राकार — ११३ \times ४५ । देशा – जीएँ कीएा । पूर्ण । भाषा – प्राकृत ग्रीर संस्कृत । निष्-मागरी । विषय – सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था – २४१२ । रचनाकाल – \times । निषिकाल – कार्तिक शुक्ला १०, रिववार, स० १४६६ ।

१४४. प्रति संस्था २ । पत्र सस्था-७२ । घाकार १२ $\frac{\pi}{2}$ " \times ४ $\frac{\pi}{3}$ " । दशा-वीर्छा । पूर्छ । प्रन्य संस्था-२६८१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १५२६ ।

१४५. ब्रष्य संग्रह सार्थ- \times । देशी कागव । पत्र संस्था-= । झाकार- \in " \times ४ $\frac{2}{7}$ " । देशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत ग्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था- २५७६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४६. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-७ । झाकार-१२ $\frac{9}{2}$ " \times ५ $\frac{9}{6}$ " । दशा-सन्धी । पूर्ण । यन्थ संस्था-२३८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४७. ब्रब्य संग्रह टिप्परा—प्रमाचन्त्रदेश । देशी कामज । पत्र संस्था—३२ । क्षाकार—११"×४" । दशा प्राचीन । पूर्श । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नामरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था—२७६६ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—प्रक्रित क्रूच्छा १०, रविवार, सं० १६१७ ।

१४८. बोहा पाहुइ---कुम्बकुन्दावार्व । देशी काथव । ५७ संस्था-१६ । झाकार---

- १०" \times ४ $\frac{1}{2}$ "। वज्ञा-मतिजीर्गं । पूर्णं । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । मन्य संख्या-२२६१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-स्रक्षित घुक्ला १०, सं०१५६२ ।
- १४६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१६ । द्याकार-१० $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{6}$ " । प्रत्य संख्या--१४४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रंगसिर शुक्ला ४, सं० १४५८ ।
- १६०. द्वावश मावना— श्रुत सागर। देशी कागज। पत्र संस्था—३ /। श्राकार— १०५ $"\times$ ४ $\frac{1}{2}"$ । दशा—श्रीग्रां। पूर्या। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—श्रध्यास्म। ग्रन्थ संस्था—१६३५। रचनाकाल— \times । विपिकाल— \times ।
- १६१. धर्म परीक्षा-हरिवेशा । देशीकागज । पत्र संख्या-७३ । झाकार-१०हैं" \times ४हें" । दशा-झितजीर्ग्य । पूर्ण । भाषा-झपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-ग्रव्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१७७४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १२, रविवार, सं० १५६५ ।
- १६२. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था–१३३ । ज्ञाकार–६ $\frac{5}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दमा–जीर्गुकीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था–२७६६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल–कार्तिक कृष्णा १३, गुक्रवार, सं० १६०६ ।

बिशेष-- लिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखी है।

- १६३. **धर्म परीक्षा रास—सुमित कीर्ति सूरि ।** देशी कागज । पत्र संख्या-२३५ । धाकार-६ $\frac{3}{3}$ " \times ४ $\frac{5}{3}$ "। दशा-सामान्य । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-श्रष्ट्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१०१२ । रचनाकाल-मंगसिर सुदी २, सं० १६२५ । लिपिकाल- \times ।
- १६४. वर्गं प्रश्नोत्तर—स० सकलकीति । देशी कागत्र । पत्र संख्या-५३ । ग्राकार—१० $"\times$ ४ g " । दशा-सामान्य । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ग्रध्यास्म । ग्रन्थ संख्या-११४४ । रचनाकाल \times । विपिकाल- \times ।
- १६४. **धर्म रसायरा —पद्मनंदि पुनि** । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । झाकार ११″ × ४″ । दशा—झतिजीर्रा । पूर्या । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—झध्यात्म । ग्रन्थ संख्या-१६२४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र गुक्ला ३, उं० १६४४ ।
- १६६ प्रति संख्या २। पत्र संख्या—१३। द्याकार—११ $'' \times \forall \frac{3}{7}''$ । दशा—झितजीर्गुं क्षीरा। पूर्णे। ग्रन्थ संख्या—२३८३। रचनाकाल— \times । जिपिकाल— \times ।
- १६७ प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या-१० । द्वाकार-११३ \times ५ $\S^{''}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६८ असं संबाद $--\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-११। झाकार-१०३ $''\times$ ४ $\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्एंकीरए। पूर्एं। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्तः। सन्य संख्या-२४७७। एक्नाकास $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १६६ ध्यानं बसीसी--बनारसीबास । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । धाकार---१०हे"×४"। दशा-अञ्ची । पूर्यो । भाषा-हिन्दी । लिपि-नानरी । विवय-सिद्धान्त । ग्रन्थ मंस्या-२४४३ । रचनाकास-× । जिपिकास-× ।

- १७०. बन्दी सूच $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२१। ध्राकार $-१०९^{9}''\times \forall 7''$ । दश्रा-बीर्ग । पूर्य । भाषा-ध्रपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १७१. नयसकः विस्तेन । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । प्राकार-१३३ ४५ १ । वशा-धितजीएां क्षीएा । पूर्ण । प्रावा-संस्कृत एवं आकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । सन्य संख्या-२३२४ । रवनाकाल- × । लिपिकाल-धिक्षित कृष्णा ११, रविवार, सं० १४४२ ।
- १७२ सयसक बालावजीय—सदानन्तः देशी कागज । पत्र सस्या-१०। भाकार-१०३ 9 8 \times ४ 9 7 । दशा-जीर्ग् कीण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विधय-सिद्धान्त । भ्रन्य संस्था-२८२७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १७३. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-११ । धाकार-१०" \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-जीर्ग्ग । पूर्ण । धन्य संख्या-१६१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १७४. नयचक मावा—पं हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । माकार—५ $\frac{1}{9}$ " \times ४" । दशा—सामान्य । पूर्ण । भाषा—िहन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६४६ । रचनाकाल— फाल्गुन शुक्ला १०, स० १७२६ । लिपिकाल— \times ।
- १७५. नवतस्व टीका \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ध्राकार—११ $''\times$ ५'' । दशा—प्राचीन । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६११ । रचनाकाल \times । लिपिकाल— \times ।
- १७६. म्ब्रतस्य वर्गान—श्रमवदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार—१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—श्रच्छी । पूर्ग । भाषा—प्राकृत व हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । अन्य संख्या २७१२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १७६४ ।
- १७७ प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-१३। झाकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्राचीत । पूर्णा प्रन्थ संस्था-२७२३ । रचनाकाक्ष- \times । लिपिकाल-पौष धुक्ला १२, बृहस्पतिबार, सं०१७४७ ।
- १७८. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था-६ । धाकार-१० $\S'' \times Y = 1$ । दशा-धन्धी । पूर्ण । धन्य संस्था-१४०३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १७६. नवरत्न— \times । देशी कारज । पत्र संस्था-१ । झाकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-धन्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१५३४ । रचताकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १८०. नास्तिकवाद प्रकरण— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । प्राकार— ६५ $'''\times$ ४''' । दशा—जीर्ग्गं । पूर्गं । काथा—संस्कृत । क्षिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । अन्य संख्या— १६७२ । रचनाकाल— \times । क्षिपिकाल— \times ।
- १६९. नित्य किया कान्त \times । देशी कायज । पत्र संस्था-१-३६ । धाकार-१९३ $''\times$ ५ $^{''}$ । दशा-भन्दी । धपूर्णं । भाषा-भाकृत, संस्कृत और हिन्दी । निपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२५४६ । रचनाकाल- \times । विषिकाल- \times ।

- १८२ प्रति संस्था २ । पत्र संस्था–१-१७ । ग्राकार–११३ $"\times$ ५"। दशा–ग्रच्छी । श्रप्ता । ग्रन्य संस्था–२८५१ । रचनाकास– \times । लिपिकास– \times ।
- १८३. परमात्म छसीसी पं० मगवतीदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार-११" \times १२ $^{\circ}$ " । दक्षा-जीखं । पूर्शं । माघा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-धागम । ग्रन्थ संख्या-१६५८ । रचनाकः ल-सं० १७५० । लिपिकाल- \times ।
- १८४. परमात्म प्रकाश— योगिन्द्र वेखः । देशी कागजः । पत्र संन्या—२१ । आकार—११ $''\times$ \vee $\frac{3}{7}''$ । दशा—प्रतिजीर्ग् । पूर्णे । भाषा—अपभ्रंशः । लिपि—नागरीः । विषय—प्रध्यात्मः । प्रत्य सस्या—१३४४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०४. परमात्म प्रकाश टीका बहादेव । देशी कागज । पत्र संख्या —१०६ । धाकार १० ४४ है । देशा भण्डी । पूर्ण । माषा अपभ्रं श, टीका संस्कृत में । लिपि नगरी । विषय अध्यात्म । ग्रन्थ संख्या —१८४६ । रचनाकाल × । लिपिकाल अधेष्ठ शुक्ला ६, मगलवार, १०१८६।
- १८६ पुष्प बलीसी समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या –१ । भाकार १० $" \times 8^{-7}_{0}$ " । दशा श्रातजीर्ग् । पूर्ण् । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । विषय सिद्धान्त । ग्रन्थ । स्वया १३१२ । रचनाकाल स० १६६६ । लिपिकाल मात्र कृष्णा ७, सं० १७८६ ।
- १८७. पुरुषार्थं सिद्धुपाय अमृतस्त्रः सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । आकार— ११ $\frac{1}{6}$ " \times \times " । दशा—जीर्णं क्षीरण । पूर्णं । भाषा—मंस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थं संस्था—२१२४ । रचनाकास्र— \times । लिपिकाल—स० १८४८ ।

विशेष-- इसकी लिपि इन्दौर में की गई।

- १८६. पंचसंग्रह \times । देणी कागज । पत्र संख्या-७७ । ग्राकार-११ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । तथा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२५३१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-स० १५३४ ।
- १८९. पंचप्रकाशसार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३। ध्राकार—१० $''\times$ १''। दशा—जीर्गं क्षीरा । पूर्यं । भाषा—प्राकृत घौर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२४६८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६०. पंचास्तिकाव समयसार सद्दोक— ब्रमृतवस्त्र सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था— ४८ । स्राकार—१२ $\frac{1}{3}$ " \times ५" । दशा—धण्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत सौर संस्कृत । स्रिपि—नागरी । विषय—ग्रागम । प्रन्य संस्था—२३८१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—क्येष्ठ शुक्ला ४, सं०१७०६ ।
- १६१. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-३४ । श्वाकार-१२ $^{\prime\prime}$ \times ६ $^{\prime\prime}$ । दश-सामान्य । पूर्गं । ग्रन्य संस्था-११६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६२. पंचास्तिकाव व समयासार टीका पं० हेमराख । देशी कागज । पत्र संस्था-८४ । ब्राकार-१०"×४" । दशा-वीर्ता । पूर्ण । भाषा-प्राकृत भौर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-भागम । प्रन्य संस्था-१६०२ । रचनाकास- × । लिपिकाल-सं० १८८५ ।

- १६३. प्रतिक्रमस्य सार्य × । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । धाकार-१० है"×४ है" । दमा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२७३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-धश्चिम कृष्णा ६, सं. १७६० ।
- १९४८ **अस्तिमा वहोत्तरी पं० सामतराय** । देशी कागज । पत्र संन्या-२ । झाकार-११[™]×४०० । दशा-झच्छी । पूर्ण । साधा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-झागम । प्रन्थ संख्या--२५३३ । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७८१ । लिपिकाल- × ।

विशेष-इस प्रत्थ की रचना विहली में की गई।

- १६५. प्रथम बलास्य $--\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-१३। भ्राकार-१० $''\times$ ४-------१ दशा-प्राचीन । पूर्स्स । भ्राषा -हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । यन्य संस्था-२७३६ । रचनाकाल- $-\times$ । लिपिकाल-अश्विन शुक्ला १०, सं० १८०२ ।
- १६६. प्रसेयरत्नमासा वचनिका—पं० माणिक्य निन्दः । वचनिका —पं० जयवन्दः । देशी कागजः । पत्र संस्या—१४६ । प्राकार—११'' \times \times '' । दशा—प्रज्छीः । पूर्णः । माषा—संस्कृतः ग्रौर हिन्दी । लिपि—नागरीः । ग्रन्थ संस्था—१८६४ । रचनाकाल—ग्रायादः शुक्लाः ४, बृषवार, सं० १८६३ । लिपिकाल— \times ।
- १६७. प्रसय प्रमास्य- \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-६ $\S'' \times \S'''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ग । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४६= । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

टिप्पामी-त्रिलोकसार के अनुसार प्रलय के प्रमाण का वर्णन किया गया है।

- १६८. प्रवचनसार वृत्ति— \times । देशी कागज । पत्र संस्था–१३६ । प्राकार–१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा–जीर्गं । पूर्गं । भाषा–प्राकृत ग्रौर संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय– श्रध्यात्म । ग्रन्थ सस्या–१२१७ । रचनाकास– \times । लिपिकाल \times ।
- १६६. प्रवचनसार वृत्ति अमृतचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था-१४१ । आकार-११ $\frac{3}{2}$ " \times प्र" । दशा-प्रतिजीर्या । पूर्या । भाषा-प्राकृत, टीका संस्कृत में । लिपि- नागरी । विषय-प्रध्यात्म । ग्रन्थ पंच्या-१२६० । रचनाकाल- \times । निपिकाल- \times ।

टिप्पर्गी-टीका का नाम तत्वदीपिका है।

- २००. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या द । ध्राकार ११ $'' \times x''$ । दशा जीएाँ क्षीरा । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या २७३१ । रचनाकाक्ष \times । विपिकाल विकस सं० १६२० ।
- २०१. प्रति संस्था ३ । पत्र संस्था-३४ । प्राकार $-१०\frac{3}{6}"\times ५<math>\frac{3}{5}"$ । दश-प्राचीन । पूर्गं । ग्रन्थ संस्था-२४४० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-विकम म० १६२१ ।
- २०२. प्रवचनसार सटीक \times । देशी कागज । पत्र संस्था-५८ । भाकार-१०'' \times ५''। दशा-सामान्य । पूर्त्य । भाषा-प्राकृत, संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-भध्यात्म । ग्रन्थ संस्था-१८६७ । रचनाकास \times । लिपिकास- \times ।

हिन्यानी-इस ग्रन्थ का हिन्दी पद्मानुवाद ग्रमृतवन्द्राचार्य की टीकानुसार किया गया है। ग्रन्थ में हिन्दी श्रनुवाद के कर्ता का नामोल्लेख घड़ीं है।

२०३. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—म० सकलकीति । देशी कागज । पत्र संख्यां—१५१ । माकार-१० $\frac{2}{7}$ \times ५ $\frac{7}{7}$ । दशा—जीरां क्षीरा । पूरां । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । मन्य संख्या—२४६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माघ कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १६२६ ।

विशेष—ग्रक्यर के राज्यकाल में लिपि की गई है। १७१७ भाद्रपद शुक्ला १३, शुक्रवार, शक संवत् १५६२ में दान दी गई।

२०४. प्रश्नोशार रत्नवाला— राजा ध्रमोधहर्ष । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । ध्राकार— ६३ $^{\prime\prime}$ \times ४३ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्गो । पूर्गो । भाषा—संस्कृत । लिपि—देवनागरी । विषय—ध्रध्यात्म । यन्थ्य संस्था—१३१३ । रचनाकाल— > । लिपिकाल—माध शुक्ला १५, मं० १६७३ ।

२०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । द्याकार—१०'' \times ४ $\frac{2}{5}''$ । दशा—जीर्गा । पर्गा । ग्रन्थ सख्या—१३३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

२०६. **बंधस्वामित्व (बंधतत्व)**—देवेग्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । माकार—१० $\frac{9}{8}$ " \times ४ $\frac{5}{4}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रम्थ सख्या—२७१० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावश कृष्णा १२, सं० १७१३ ।

२०७. प्रति संख्या २ । पत्र सस्यान्य । प्राकार-१० $\frac{1}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४८५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावण कृष्णा ११, सं० १७१३ ।

विशेष-श्री बहाहेमा ने नागपुर में लिपि की है।

२०८. बन्धोदयदीर**णसत्ता विचार—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी** कागज । पत्र संख्या— ५ । ग्राकार-१२६" imes५"१ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । दिवय— मिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२६३१ । रचनाकाल- imes । लिपिकाल- imes ।

२०६. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-१ । ध्राकार-६ $\frac{2}{3}$ " \times ४" । दशा-श्रक्छी । पूर्त । ग्रन्थ संस्था-२६५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

२१०. बन्धोदयदोरएसत्ता स्वामित्व सार्थ— \times । देणी कागज । पत्र संख्या—६ । भ्राकार—११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । वक्षा—प्रतिजीएं। पूर्ण । भाषा—त्राकृत भीर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रम्थ संख्या—२०५३ । रचनाकाल— \times । लिपिकास—माध्य कृष्णा १२, स०१७१६ ।

२१२. मध्य मार्थसा— \times । देशी कागव । पत्र संस्था—४ । घाकार१२" \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दक्षा—श्रन्थः। पूर्तः। माथा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्तः। मन्य संस्था—२३८८ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

२१४. मावनासार संग्रह—महाराजा चामुण्डराय । देशी कागज । पत्र संस्था-६१ । चाकार-११ $\frac{1}{2}$ "×४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-श्रांतजीसं । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । स्निप-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१७३२ । रचनाक।स-× । सिपिकाल-× ।

साविभाग- ।।ॐ।। स्वस्ति ।। ॐ नमा वीतरागाय ।।
अरिहननरजो हननरहस्यहरप्रजनाईमईत ।।
सिद्धान सिद्धाष्ट गुणान् रतनत्रयसायकान् सुवैसायन ।।

श्चन्तमाय — इति सकलागम संयम सम्पन्न श्रीमद् जिनसेन भट्टारक श्री पादपद्म प्रसादा सादिन चनु रनु योगपाराबार पारण घम्मं विजयते श्री चामुण्डमहाराज विरचिते भावनासार संग्रहे चारित्र सारे श्रनागार धम्मं. समाप्तः ।।छ।।

टिप्पर्गी--- प्रनथ के दीमक लग गई है, फिर भी अक्षरों को विशेष अति नहीं हुई है।

२१६. भावसंग्रह—बेबसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—४४ । झाकार-११ $\frac{9}{9}$ "×४ $\frac{9}{9}$ " । दशा—जीर्ग क्षीमा । पूर्म । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२५०० । रचनाकाल— × । लिपिकाल—फाल्गुन ग्रुक्ला १३, सं० १५६४ ।

२१७. मावसंग्रह—वेबसेन युनि । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । माकार—१०" × ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा—जीर्श्य । भाषा-प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१०५३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ५, सं० १५२६ ।

२१८. मावसंग्रह—शृतपुनि । देशी कागण । पत्र सस्या-४० । झाकार-१३ $''\times$ χ $^2_7''$ । दशा-त्रीर्ग । पूर्ग । पापा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१०३१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

बादिमाग---

स्रविदशण बाइकम्मे घरहंते सुविदितस्य - सिवहेय । सिद्धट्ठ गुरो सिद्धे रयसात्तय साहगे थुवे साहू ॥१॥ इदि वंदियं - पंचगुरु सक्वसिद्धत्य भविय बोहस्यं। सुत्तुत्तं मूलुत्तर - भावसव्यं पवक्लामि ॥२॥ सन्तमाग--

णाद-णिखिलस्य-सत्वो सगम-शारिदेहि वृजिन्नो विमन्तो । जिला-मना-गमणा-सूरोजयस्य चिरं चार्कितिसुणी ॥२२॥ बर सारत्तव-विज्ञा सुद्धं परभो विरहिय - परभामो । भविषाणां परिवोहरणपरी पहाचंद - साममुली ॥२३॥

- २१६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-४२। प्राकार-१० $\frac{3}{2}$ " \times ५"। दशा-जीर्गं । पूर्ण। प्रत्य संख्या-१००७। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २२०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४० । प्रशंकार-११ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{9}{5}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १०, बृहस्मतिवार, सं० १७२२ ।
- २२१. माक्संग्रह—पं० वामवेव । देशी कागज । पत्र संख्या—३७ । भाकार—११ $''\times$ १'' । दक्षा—बहुत भन्छी । पृगं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रन्थ संख्या—१६६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाषाढ कृष्णा ३, सं० १६० κ ।
- २२२. **भावसंग्रह सटीक** \times । देशी कागज । पत्र संख्या–२५ । ग्राकार– १० $\frac{\pi}{2}$ \times \times \times । दशा–जीर्ग क्षीरा। पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । विषय–सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या–२०६७ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- २२३. भाष त्रिमंगी (सटीक)—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । धाकार—११ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{6}$ " । दशा—ध्रतिजीशों क्षीएा । पूर्णे । भाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रन्य संख्या—१३७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रथम श्रावरण भूक्ला १, सं० १७३३ ।
- २२४. महावीर जिन नय विधार— यशः विकास । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । आकार—१२" \times ६" । दशा—प्रच्छी । पूर्या । भाषा—प्राकृत भौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । अन्य संख्या १७०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्राषाढ़ कृष्या ७, सं० १८६७ ।
- २२५. मोक्समार्ग प्रकाशक वचितका—सहापण्डित टोडरमल । देशी कागज । पत्र संख्या—२०६ । झाकार—१६" \times ६ $\frac{3}{9}$ " । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार. स० १६३४ ।
- २२६. मृत्यु महोत्सव वयनिका—पं० सवासुतः। देशी कागज। पत्र संख्या—१८। धाकार—६ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्णः। भाषा—संस्कृत एव हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या—२३६२ । वचनिका रचनाकाल—ग्राषाढ़ शुक्ला ४, सं० १६१८ । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ७, दिववार, स० १६२४ ।
- २२७. राजवातिक श्रकलंकदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—३०६ । श्राकार— १२ $'' \times$ ५'' । दशा—श्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—ग्रागम । प्रव्य संख्या—१६६२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २२८. **लघू तत्वार्थ सूत्र**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । **घा**कार—७ $\frac{3}{6}$ " \times \times $\frac{1}{6}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भीर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या— २२७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- विशेष उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र से संकलन करके ही लघूसूत्र की रचना की गई है।

- २२६. वृहद् ब्रम्यसंबह सदीस—सि॰ प॰ नेनियम्बः । टीकाकार— \times । देशी कागज । पत्र संस्था-१५५ । प्राकार—१०" \times ३ $\frac{3}{5}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भौर टीका संस्कृत में । लिपि—सम्बरी । विषय—सिद्धान्त । प्रस्य संस्था—११७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी १०, बृहस्यतिबार, सं० १४६२ ।
- २३०. व्युष्याति त्रिभंगी—सि० व० नेमिचना । देशी कागज । पत्र संस्था-११। श्राकार-१०३ × ४ । दशा-प्रतिजीसो क्षीसा। पूर्या । भाषा-प्राकृत । सिथ-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१४०७ । रचनाकाल- ४ । सिथिकाल-प्राचाद कृष्णा ४, वृहस्पतिवार, सं० १४६२ ।
- २३१. **याद पण्डनीती—बहा गुलाल** । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । माकार— १६ $'' \times \forall \frac{1}{6}''$ । दक्षा—जीर्ग्य क्षीर्ग्य । पूर्ग्य । माथा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रन्य संख्या—२४४५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २३२ विकार षड् त्रिशंक (क्षीबीस दण्डक सार्च)—गकसार। देशी कागज। पत्र संख्या-२२। झाकार-६ $\frac{3}{5}$ " × ४ $\frac{4}{5}$ "। दशा-प्राचीन। पूर्गं। भाषा-प्राकृत और हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-सिद्धान्त। ग्रन्थ संख्या-२७४१। रचनाकाल-×। लिपिकाल-ग्रम्बिन शुक्सा १२, शनिवार, सं० १७६४।
- २३३. विशेष सत्ता त्रिभंगी नवनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या २ । भाकार १३ $'' \times$ ४'' । दशा जीर्ग् । भाषा प्राकृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १६६२ । रचना काल \times । लिपि काल \times ।
- २३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । ग्राकार-११ $'' \times 3 \frac{3}{5}''$ । दशा-जीर्रा । पूर्य । ग्रन्थ संख्या १६३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २२४. वेद कान्ति \times । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । प्राकार-११ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—जीर्यं क्षीरा । पूर्यं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चर्का । ग्रन्थ संस्था—२२४३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २३६. शोभन भृति—पं० वनपान । दीकाकार—सेमसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—द । माकार-१० $\frac{1}{3}$ " × ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—मितजीर्ग । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१३६४ । रचनाकास— × । लिपिकास—द्वितीय व्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १५२७ ।
- २३७. **यद्कर्मोपदेश राम्माला—श्रमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संस्था**-१०४ । श्राकार-१२" ×४ड्डे" । दशा-श्र**ण्डी । पूर्ल । भाषा-श्र**पञ्च । लिपि-मागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२७६४ । रचनाकाल-विकस सं ० १२७४ । लिपिकाल-मात्र शुक्ता ४, सं० १६०१ ।
- २३८. वद् वर्शन समुज्यय— \times । देशी कागज । पत्र संस्था-x। ग्राकार-१० $\frac{3}'' \times x \frac{3}{5}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२६६८ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।
 - २३६. षट् वर्शन विचार- × । देशी कागव । पत्र संक्या-४ । काकार-१२"×५३ू" ।

दशा-जीर्सं। पूर्णं। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरीः। ग्रम्थः संख्या-१५२४ । रचनाकाक्ष- \times । लिपिकाल- \times ।

२४०. षट् दर्शन समुख्यय टीका — हरिभद्र सूरि । पत्र संख्या — २८ । श्राकार — १० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा — जीर्ण । पूर्ण । भाषा — संस्कृत । लिपि – नागरी । ग्रन्थ संख्या — ११४४ । रचना – व्यास — \times । लिपिकास — \times ।

२४१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-४ । धाकार-११" \times देशी कागज । पत्र संस्था-४ । धाकार-११" \times देशी कागज । पत्र संस्था-१६४१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-बैशाख शुक्ला १४, सं०१६६ ।

२४२. षट् द्रव्यसंप्रह् टिप्पएा—प्रभाषन्त्र देव । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । ग्राकार-११ $'' \times$ ५'' । दशा-जीएां । पूर्एं । भाषा-प्राकृत ग्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सस्या-१६६६ । रननाकाल- \times । लिपिकास- \times ।

२४३. षट् द्रश्य विवरणः — \times । देशी कागज । पत्र संख्या-२। धाकार-१०३ $"\times$ ४ 9 "। दशा-जीर्णः । पूर्णः । धावा हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४६२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल- \times ।

२४४. षट् पाहुड्-- कुःवकुन्दाकार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । ग्राकार-- ११" \times ५" । दशा-म्रातिजीर्गक्षीरा । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-भ्रागम । ग्रन्थ संख्या-२१०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

२४४. षट् पाहुड़ सटीक— कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— ४७ । झाकार—१०६ 3 " \times ४ 3 " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । झाषा—प्राकृत और संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या—११७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ६, रविवार, स० १४८६ ।

हिप्याणी--लिपिकार ने अपनी विस्तृत प्रशस्ति लिखी है।

् २४७. षद् पाहुड़ सदीक $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । भ्राकार-११ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-मितजीर्ग्यो । पूर्यो । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-पौष बुदी १३, सोमवार, सं० १७८६ ।

२४ द्र. प्रति संस्था २ । पत्र संख्या-२७ । धाकार-१०" \times ५ \S " । दशा-जीर्ग । पूर्ग । सन्य संस्था-१६६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकास- \times ।

२४६. षद् त्रिशंति गाया सार्थ — मुनिराज ढाइसी । देशी कागज । पत्र संख्या – ७ । माकार – ६ $\frac{3}{3}$ " \times ४ $\frac{3}{3}$ " । दशा – प्राचीन । पूर्ण । भाषा – प्राकृत भीर संस्कृत । लिपि – नागरी । प्रन्य संख्या – १६६७ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – मात्र कृष्णा १, सं० १६८५ ।

२४०. समयसार नाटक सटीक--अमृतकम् सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था-७४ ।

बाकार-१०" ×४२"। दशा—बच्छी । पूर्णै । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । बन्य संख्या-२७३४ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८०६ ।

२५१. समयसार वृत्ति — प्रमृतवाद पूरि । देशी कागज । पत्र संस्था-२७ । प्राकार-१९" \times ४ $^{9}_{7}$ " । दशा -जीर्गं क्षीरा। पूर्णं । पावा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-२६० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल -धावरा कृष्णा ६, बूधवार, सं० १६२२ ।

विशेष रणयम्भोर गढ़ के राजाधिराज श्री राव सूरजनदेव के राज्य में जोशी चतुर गर्गे गोत्री बुंदी बाले ने लिपि की है।

- २५२. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था–२८ । माकार-१२ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा-मित जीएं । पूर्ण । प्रन्त संस्था-१२६४ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-मा**ष गुक्**ला ५, सं० १७३२ ।
- २५३. प्रति सख्या ३ । पत्र संख्या-३७ । प्राकार-१० $\frac{3}{5}'' \times Y^{9}_{2}''$ । दशा-जीर्ग । पूर्ण । प्रन्य संख्या-१०२० । रचनाकाल- \times । तिपिकाल- \times ।
- २५४. प्रति संख्या ४। पत्र संख्या—६३। प्राकार—१० $"\times$ ५"। दशा—सामान्य। पूर्णः। यस्य मं α यः—१८४८। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—पौष शुक्लः १२, शुक्रवार, सं०१९७८।
- २४४. प्रति संख्या ४ । पत्र संख्या-६० । प्राकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-सामान्य । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-१२३७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २४६. समयतार भाषा —पं हिनराज । पत्र संख्या-१६४ । स्राकार-११ई" \times ५५" । दशा-त्रीर्श । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्म) । लिपि-नागरी । प्रस्थ संख्या-१०६० । रचनाकास-माध शुक्ला ४, स० १७६६ । लिपिकाल- \times ।
- २५७. समयसार नाटक भाषा पं० बनारसीबास । देशी कागज । पत्र संख्या ४० । धाकार $-\epsilon_3^{3''} \times \kappa_3^{3''}$ । दशा धतिजी र्तां । पूर्णः । भाषा हिन्दी (पद्यः) । लिपि नागरी । प्रण्यः संख्या ११६८ । रचनाकाल \times । लिपिकास सं० १७२३ ।
- २४८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । भ्राकार—१०'' \times ४ $^3_6''$ । दशा—पामान्य । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—१२३८ । रचताकास—श्रवित शुक्सा १३, रिविवार, सं० १६६३ । लिपिकाल— \times ।
- २५६. प्रति संस्था ३ । देशी कागन । पत्र संस्था–२२ । प्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४" । दशा-जीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१०५६ । रचनाकाल \times । लिपिकास- \times ।
- २६०. समाधिशतक —पूज्यपाय स्थामी । देशी कायज । पत्र संस्था—१ । घाकार—११ $'' \times \forall \frac{3}{7}''$ । देशा –जीर्र्ण क्षीरा । पूर्ण । भाशा—संस्कृत । निपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । प्रस्थ संस्था—२३६७ । रचनाकास $-\times$ । विषिकास—कार्तिक कृष्णा ६, सं० १७०० ।
- २६१ सत्ता त्रिमंगी सि० थ० नेमियम् । देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । ग्राकार-१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । माषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१५११ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माथ कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १५२४ ।

- २६२. स्याद्वादरस्वाकर—वेवावार्य । देशी कागज । पत्र संस्था—७ । झाकार—१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—वीर्षा । पूर्ण । माषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१६७२ । रचन।काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २६३. स्वामी कार्तिकेयानुपेक्षा —स्वामी कार्तिकेय। देशी कागज । पत्र संख्या –२७ । श्राकार –११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{3}_{2}$ $^{\prime\prime}$ । दशा –प्राचीन । पूर्ण । भाषा –प्राकृत । लिपि –नागरी । ग्रन्थ संख्या ११२८ । रचनाकाल \times । लिपिकाल –ग्रम्बिन कृष्णा ११, सं० १५६८ ।
- २६४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । धाकार—११ $'' \times \chi''$ । दशा—जीर्गा । पूर्गे । ग्रन्थ संख्या—११४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक धुक्ला ४, सं०१६७७ ।
- २६४. **सागार धर्मामृत —पं० आशाघर** । देशी कागज । पत्र संख्या—१२२ । आकार—११ $'' \times \vee_{7}^{9}''$ । दशा—प्रतिजी**र्ण** श्रीण । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२३२६ । रचनाकाल—विकम सं० १३०० । लिपिकाल— \times ।

विशेष - ग्रन्थकर्ता पं० भाशाधर की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है।

- २६६. सामायिकपाठ सटीक —पाण्डे जयवन्त । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । धाकार—६ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२२६२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६०२ ।
- २६७ सिद्ध दण्डिका वेवेन्द्र सूरि । देशी कागत्र । पत्र संस्था-४ । स्राकार—१० $\frac{2}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा—प्रतिजीर्गं क्षीर्ग् । पूर्णं । भाषा—प्राकृत स्रीर संस्कृत । लिपि—तागरी । सन्ध्य संस्था—१४८० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २६८. सिद्धान्तसार जिनसन्त्रदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । स्राकार— $\varepsilon'' \times s''$ । दशा—जीर्ग् । पूर्ण । पाषा—प्राकृत । किपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३२० । रचना-काल— \times । लिपिकाल—ग्रश्विन कृष्णा १०. रिववार, सं० १४२४ ।
- २६६. प्रति संख्या २ । देशी कागव । पत्र संख्या-६ । घाकार-१२" \times ५ 3 " । दशा-जीगौं । पूर्गों । प्रन्थ संख्या-१६०१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २७०. सुभग्नानो चौद्वालियो कवि मानवागर । देगी कागज । पत्र संख्या ६। म्राकार १०३ " × ४३" । दगा नी ग्रंगी ए । पूर्ण । भाषा हिन्दी । लिथि नागरी । विषय म्राक्याल्य । म्राव्य संख्या २५२६ । रचना काज × । लिथि काज प्रश्वित कृष्णा ४, सं० १८४१ ।
- २७१ सुभाषित कोख —हिर । देगी कागज । पत्र मंख्या—१६ । छाकार—११ $'' \times \vee_{\xi}^{y}''$ । दक्षा—जीएौ शीएा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—तागरी । त्रिषय –ग्रन्थात्म । ग्रन्थ संज्ञा—२०५० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २७२. संबोध पंचासिका— \times । देशी कागत्र । पत्र संख्या—२ । ध्राकार-१० $"\times \vee_{\xi}"$ । दक्षा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-तागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२०६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कुष्णा १, सं० १६६४ ।

- २७३. संबोध पंचासिका— कवि बास । देशी कागण । पत्र संस्था-४ । जाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{2}$ "। दशा-धातजीर्ण क्षीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत भौर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संस्था-१६६७ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।
- २७४. संबोध सत्तरी— जयसेकर सूरि। देशी कागजा पत्र संख्या—३। भाकार— १०३ँ" \times ४५ँ"। दशा—भितजीर्गं। पूर्णः। भाषा—प्राकृत भीर संस्कृतः। लिपि—नागरी। विषय— सिद्धान्तः। ग्रन्थ संख्या—१६६७। रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।
- २७४. संबोध ससरो— > । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । छाकार—१०६ 9 " \times ४६ 9 " । दशा—जीर्ग क्षीरा। पूर्ण । भाषा—प्राकृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—२७५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावरा कृष्णा ६, वृहस्पतिवार, सं० १६६७ ।
- २७६ सु**लबोबार्यमासा- पंग्येवसेन ।** देशी कागजा । पत्र संख्या-१० । ग्राकार-१०" ्४ है" । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६ न । रचनाकाल- । लिपिकास-भाद्रपद कृष्णा ६, सं०१ ८ ८ ३ ।
- २७७. **अृतस्काध--वहा हेमचन्द्र । देशी** कागज । पत्र सस्या-१० । आकार-१०' ×४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त ।ग्रन्थ संख्या-१४५२ । रचनाकाल-्र । लिपिकाल-्र ।
- २७८. **शृतरकत्थ— बहा हेम** । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार—१०६" \times ४= " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ सख्या—२७७४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ६, सं० १५३१ ।
- २७६. प्रति संस्था २ । पत्र सस्या–६ । ग्राकार–११६ $" imes v_g^3"$ । दशा–प्राचीन । पूर्गं । ग्रत्थ सस्या–२४०३ । रचनाकाल– imes । सिपिकाल– imes ।
- २५०. प्रति संस्था ३ । पत्र सस्या-७ । भ्राकार-१० $\frac{3}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२०१६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २८१. **घोराक गौतम संवाद** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—६ $\frac{3}{4}$ " \times ५ $\frac{3}{4}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—२६३० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ११, सं० १७५८ ।
- २=२. सपरासार---माधवसन्द्र गरिंग । देशी कागज । पत्र संस्था-१०३ । झाकार-११३" × ५३" । दशा-- भतिजीएं क्षीरा । पूर्ण । भाषा-प्राक्वत ग्रीर सस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-२४४१ । रचनाकाल-सं० १२६० । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ४, स० १६२३ ।
- २६३ विश्वंगी—सि० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संस्था-२३ (प्रन्तिम पत्र नहीं है) । माकार-११६ $"\times$ ५"। दसा-जीर्ग् । भपूर्ग् । भाषा-प्राकृत । सिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । प्रन्थ संस्था-१६६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २८४. चिनंगी टिप्पर्ग $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । प्राकार-१२ $\S''\times$ ५ \S'' । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत ग्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या-

१०**१६ । रचनाकाल-×। लिपिकाल-फारुगुन कृष्णा ४**, सोमबार, सं० १७६३ ।

२०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । झाकार—१२ $'' \times \chi_{\chi''}^2$ । दशा—प्राचीन । पूर्यो । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

२८६. प्रति संख्या ३ । पत्र संख्या—२१ । प्राकार—१४ $"\times$ $=\frac{2}{2}"$ । दशा—धतिजीर्स्स क्षीसा । पूर्ण् । प्रत्य संख्या—२२५ = । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

२८७. त्रिभंगी भाषा — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१४२ । श्राकार—११ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{1}{9}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत श्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१२०८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ७, शनिवार, सं० १८०७ ।

२८८. **ज्ञान वच्चीसी— पं० वनारसीयास** । पत्र संख्या—१ । श्राकार—६ $\frac{9}{5}$ " × ४ $\frac{9}{5}$ " । दशा—जीर्ग् । पूर्ग् । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । ग्रन्थ संख्या—१६६१ । रचना-काल— × । विपिकाल— × ।

विषय-आयुर्वेद

- २८६. **धरियनोकुमार संहिता— धरियनी कुमार** । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । धाकार—११'' imes ४ $\frac{1}{2}''$ । दशा—धच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय— धायुर्वेद । प्रन्थ संख्या—२०३० । रचनाकाल—imes। लिपिकाल—imes।
- २६०. **श्रंजन निवान सटीक— श्राग्नवेश** । देशी कागज । पत्र सख्या—५० । श्राकार— १ १६'' > ४'' । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत कीर हिस्दी । लिपि-नागरी । विषय—श्रायुर्वेद । सन्थ संख्या—११०५ । रचनाका**स** \times । लिपिकाल— \times ।
 - २६१. **श्रायुर्वेद** संप्रहीत ग्रन्थ— \times । देशी कागज। पत्र संस्था-१७५। ग्राकार- ६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्णं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-श्रायुर्वेद । ग्रन्थ संस्था- १०२२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- २६२. **ब्रासव विधि** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ब्राकार—१२ $\frac{2}{5}$ " \times \times $\frac{2}{5}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—ग्रायुर्वेद । ग्रन्थ संख्या—२२७८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २६३. काल शास्त्र—शंभूनाथ । देशी कागज । क्रंत्र संख्या—११ । ध्राकार— १०'' \times ६ $_{v}^{+}$ '' । दणा—प्राचीन । पूर्गा । भाषा—संस्कृत । लिपि—मूर्बारी । विषय—ध्रायुर्वेद । ग्रम्थ संख्या—१४१७ । रचन्।काल्— \times । लिपिकाल— \times ।
- २६४. प्रति ब्रेंट्या २ । देशी कागज । यत्र क्रंट्या—६ । धाकार-११" \times ४२ $^{\circ}$ । दशा-धतिजीर्स । ग्रुख संख्या-१४३६ । रचनाकाल- \times । क्रिंपिकाल- \times ।
- २६५ काल ज्ञान— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । प्राकार—११ $\S'' \times \lor \S''$ । देशी कागज । पत्र संख्या—२४४५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ३, बुधवार, सं० १८१६ । .
- २६६. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था- \S १ । प्राकार- $-5\frac{9}{2}"\times 8"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । चन्च संस्था-२७७२ । रचनाकास- \times । लिपिकाल-माच शुक्ला १४, स० १७३४ ।
- २६७. गुरा रश्मकाला— दायोदर । दिशी कागज । पत्र संख्या-११। झाकार— ११ $\frac{1}{9}$ " \times ५" । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—सरकृत । लिपि—नागरी । विषय—ग्रायुर्वेद । ग्रन्थ संख्या— १६१४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- २६ थ. चन्द्रहासः सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः । प्रत्र सस्या-१। झाकार-१२ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ "। दशा-धन्द्धः । पूर्णः । भाषा-हिन्द्धः । क्रिपि-नागरी । ग्रन्थ सस्या-२७७६ । रथनाकाल- \times । लिपि-काल- \times ।
- २६९. चिन्त चमत्कार सार्थ $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । धाकार-१० $rac{1}{2}$ " \times ४ $rac{3}{2}$ "। दशा-चन्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत धौर हिन्दी । क्रिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-

२७७४ । रचनाकाल- 🔀 । लिपिकाल-माघ कृष्णा २, रविवार, सं० १८५६ ।

- ३००. **उचर पराजय** पं० जयरत्न । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । झाकार— १०" \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा—प्राचीन । पूर्ण । जावा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११७३ । रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला १, सं० १६६६ । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ४, बुधवार, सं० १६६ ।
- ३०१. **नाड़ी परीका**—ः । देशी कागज । पत्र संख्यान् ३ । म्राकार्-प्र^ह्ण ४ ४<mark>५ै</mark>ण । दशा−म्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्यान्१४८४ । रचनाकाल-×। लिपिकाल-सं० १६२१ ।
- ३०२. प्रक्ति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । धाकार—१० $"\times$ ५ \S'' । दशा— प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३०३. प्रति संस्था ३। देशी कागज । पत्र संस्था-२। श्राकार-१० $\frac{3}{8}$ % ७%। दशा-श्रम्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२३७५ । रचनाकाल- \times । लिपिकास-सं० १६४७ ।
- २०४. **नाडो परीक्षा सार्थ** \times । देशी कागज । पत्र संस्था-१ । झाकार-६ $\S^n \times 3$ ्रे n । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत श्रोर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१८४३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३०५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या १ । भ्राकार $-\mathbf{e}_{\xi}^{q_{i}}>$. ५ u । दशा- प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३०६. निघण्टु हेमचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । झाकार-१०५ैं " \times ४५ैं" । दशा-ग्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । निपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या १४३० । रचनाकाल- \times । निपिकाल- \times ।
- ३०७. निष**ण्ट् नाम रत्नाकर— परमामन्द । देशी** कागज । पत्र संख्या— १०५ $''' \times 8$ छ्रै'''। दशा म्रतिजीर्ण झीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १५२७ । रथनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३०८. सिथरहु— सोदश्री । देशी कागळ । पत्र सस्यान४७ । झाकार $-१० \frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—प्रतिजीर्ग क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । सन्य संस्था—१०२१ । रचनाकास— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ बुदी ८, सुषवार, सं० १६६४ ।
- ३०६. निषक्टु--- imes। देशी कागज । पत्र संस्था-५१ । धाकार-११" imes ४ $rac{2}{8}$ " । दशा-धातिजीर्ग् क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११८१ । रचनाकाल-imes । लिपिकाल-imes ।
- ३१० पथ्यापथ्य संग्रह— \times । देशी कागज । क्य संस्था—२६ । ग्राकार—१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ । दशा—बहुत श्रन्थी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था १४७४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्का ४, सं० १८३७ ।
 - ३११. पाकार्यांब- imes 1 देशी कागज । पत्र संख्या- ६६ 1 ग्राकार $= \frac{1}{2}" imes = \frac{1}{2}$ "।

दक्षा-अन्धी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संस्था-१६७६ । रचनाकाल - \times । लिपिकास - \times ।

- ३१२. मनोरमा— \times । देशी कायत्र । पत्र संख्या—११। माकार- ११" \times ५"। दशा-मच्छी । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संख्या—१७२० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३१३. खोग विन्तामित् $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । धाकार-१० $\frac{3}{5}'' \times \times \frac{3}{5}''$ । दशा-प्राचीत । पूर्ण । भाषा-संस्कृत सौर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६५ । रचनाकाल- \times । लिकिल-गौर णुक्ला ५, सं० १८४४ ।
- ३१४. योग सतक —िवदाव वैस पूर्णसेन । देशी कागज । पत्र संस्था— । ध्राकार— १२ $\frac{9}{7}$ " \times ५ $\frac{9}{7}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—पंस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२६०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मागंशीर्थ शुक्ला १०, मंगलदार सं.० १८०० ।
- ३१४. योग शक्क \times । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । प्राकार-५३ \times ६३ \times ६३ । दशा-त्रहुत प्रस्की । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिशि-तागरी । प्रत्य संस्था-१७१६ । रचनाकाल- \times । लिशिकाल-भाद्रपद जुक्ला १, सं० १६१४।
- ३१६. योग शतक टिप्पस्स \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । झाकार-१२ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{5}{6}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-पंस्कृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६० । रवनाकास- \times । जिपिकात- मात्र कृष्णा १, सं० १८५२ ।
- २१७. योग शतक सटीक \times । देशी कागवा पत्र संख्या-२० । ग्राकार-१२" \times \mathcal{E}_{i}^{2} । रका-वितिष्ठी तीय । पूर्ण । भारा-वंका । लिकि-वापरी । ग्रन्थ संख्या २०१८ । रजनाकाल \times । लिकिसल-वीव शुक्ला १३, सं० १७३ ६ ।
- ३१८. योग शतक अन्यन्त । देशी काम अ । पत्र संख्या ४ । आकार ११ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{9}{7}$ " । दशा प्रच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत और हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्य संख्या १४२० । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **३१६ योग शतक सार्थ** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । **धा**कार-१२ $\frac{9}{7}$ \times \times $\frac{9}{7}$ । दशा-प्रच्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत घीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फल्गुन कृष्णा १, सं० १८६० ।
- ३२० रस मंगरी प्रकात । देशी कागत्र । पत्र संख्या २६ । प्राकार १० $^{\prime\prime}$ × ५ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्यी । पूर्णे । भाषा संस्कृत । लिकि तथारी । प्रत्य संख्या ११०३ । रचताकाल × । लिपिकाल × ।
- ३२१ रस रत्नाकर (बातु रत्नवासा) \times । देशी कागव । पत्र संख्या ७ । धाकार १० $rac{3}{7}$ \times ४ $rac{3}{7}$ । दना-प्रतिती ग्री । पूर्ष । भावा प्रं ः हन । सिशि नागरी । प्रत्य संख्या १६६१ । रचनाकास \times । निपिकाल \times ।
- ३२२. रसेन्द्र मंगल—नागार्कुन । देशी कागज । पत्र संस्था-१२ । श्राकार— ६ $\frac{3}{7}$ \times ५ $\frac{3}{7}$ । दशा-भच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । ब्रिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-११०३ । रचनाकाल— \times । जिपिकाल— \times ।

- ३२३. रामिननोद—रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संस्था-६१ । धाकार- $x'' \times x_0^{3''}$ । दक्षा-प्राचीन । पूर्त्त । भाषा-हिन्दी । लिपि-तागरी । यन्य संस्था-११८४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशास शुक्ला ७, मनिवार, सं० १८३६ ।
- ३२४. लोकनाथ रस \times । देशी कागजा। पत्र संख्या –३। ग्राकार –६ $\frac{3}{9}$ " \times ४"। दशा—धन्छी। पूर्णं । भाषा—संस्कृतः । लिपि—नागरीः । ग्रन्थः संख्या –२४६३। रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - ३२५. **लंधन पथ्य निर्णाय बाचक वीपचन्य । दे**शी कागज । पत्र संख्या-१३ । द्याकार-१२ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । निपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६६५ । रचनाकाल-माथ शुक्ला १, सं० १७६६ । निपिकाल-मध्यन कृष्णा ६, सोमबार, सं० १५३१ ।
 - विशेष— श्लोक संख्या ३०४ हैं। श्रन्तिम पत्र पर गर्भ न गिरने का मन्त्र तथा मिरगी रोग की दवा हिन्दी भाषा में लिखी हुई है।
 - ३२६. वनस्पति सत्तरी सार्य —मृनियन्द्रसूरि । देशी कागत्र । पत्र संख्या-२ । श्राकार- १० $\frac{3}{5}$ " । दशा-प्रतित्रीर्या । पूर्ण । भाषा-प्राकृत श्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०६३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

 - ३२८. वैद्य खोवन—पं० खोतिम्मराख कवि । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । धाकार—१० $\frac{1}{8}$ " \times $\frac{1}{8}$ " संख्या—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रश्विन शुक्ला ६, सं० १९०४ ।
 - ३२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४७ । धाकार—११ $\frac{3}{7}$ " \times ५ $\frac{5}{7}$ " । दशा— बहुत धच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३५८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला १५, रिववार, स० १८४५ ।
 - **३३०. वैश्व जीवन सदीक—जो**ल्लिनराज । दीका—रहमहू । देशी कागज । पत्र संख्या-३१ । प्राकार-१२ $\frac{3}{7}$ " \times ६" । दश-प्रकृति । पूर्ण । भाषा-प्रंस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संख्या-२३६१ । रवनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - ३३१. जैस मदतीस्तर—पं० नयनतुत्त वासः । देशी कागत । पत्र सङ्ग्रा–१५ । प्राकार–१० $\frac{3}{7}$ ×४ $\frac{3}{7}$ । दशा–प्रकृति । पूर्णे । भाषा–हिन्दी । निवि–नागरी । प्रन्य संस्था–२७३७ । रचनाकाल–सं० १६४६ । लिपिकाल–× ।
 - ३३२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । धाकार—११ $\frac{2}{3}$ " \times ७" । दक्षा—प्रच्छी । पूर्ती । ग्रन्थ संख्या—१८३६ । रवनाकाल—माच शुक्ता २, वृहस्पतिवार, सं० १६४६ । लिपिकाल्य— \times ।

३३३ वैश्व रस्त्रमाला—सि॰ च॰ नेत्रिवक्ष । देनी काम त्र । पत्र संख्या—४६ । धाकार—१२ $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दसा –ताची त् । पूर्ण । भाषा—हिंग्दी । लिकि—तामरी ्। प्रत्य संख्या—११०० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १८७० ।

३३४. वैश विनोद—शंकर बहु। देशी कान् व । पत्र संस्था—७३। शाकार—१० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ "। दक्षा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—वागरी । ग्रन्थ संस्था—१११५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर बुदी १४, सं० १=३० ।

२३४ वात स्लोक —वैश्वराख जिनस्स सह । देशी कागत । पत्र संख्या—७ । प्राकार—१० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । यन्य संख्या—२७०४ । रचनाकान \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ७, सं० १७६८ ।

३३६ प्रति संख्या २। देशी काग्रय। पत्र संख्या—१२। भाकार—६ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}$ । दशः—प्रच्छी। पूर्णे। ग्रन्थ सहगः—२५१०। रचनाकाल \times । लिभिकाल—काल्गुन शुक्ला ५, स०१७६६।

३३७. सन्निपात कितका (सक्तण) —वैश्व वश्वन्तर । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । ग्राकार— ११ $\frac{3}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सन्ध्या—२४४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १४, रिववर, मं० १८४६ ।

विषय-उपदेश एवं सुभाषित

३३८. **दान शौल तप संवाद सतक—समयसुन्दर गरिए । देशी कागज ।** पत्र संख्या—४ । माकार—१०३'' × ४३''' । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषां—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संख्या—२६८४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

३३६. **भूवण वावनी — द्वारकांदास पाटणी ।** देशी कागज । पत्र संस्था—६ । स्नाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्णे । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभावित । ग्रन्थ संस्था—२००६ । रचनाकास— \times । लिपिकाल \times ।

३४०. भूषण वावनी — भूषण स्वामी । देशी कागज । पत्र संस्था—५ । भ्राकार— ६ $\frac{3}{7}$, \times ४ $\frac{9}{7}$ । दशा- श्रतिजीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सुभाषित । ग्रन्थ संस्था—१३०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

३४१. सिन्दुर प्रकरण —सोमप्रमाचार्य (सोमप्रमसूरि) । देशी कागज । पत्र संस्था- १६ । म्राकार-११ ${}_{3}^{"}$ \times ५ ${}_{3}^{"}$ । देशा -म्रच्छी । पूर्ण । भाषा—सस्कृत । सिपि-नागरी । विषय- सुभाषित । प्रन्थ संस्था-१११२ । रचनाकाल- \times । सिपिकाल-पौष शुक्सा १०, शुक्रवार, सं० १६६० ।

केश्वर प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । भ्राकार-१० $\frac{3}{9}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा-धितजीर्ग् । पूर्ण । भ्रत्य संख्या-१२६५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माध कृष्णा ५, शनिवार, सं० १७७३ ।

३४३ सुक्ति मुक्तावली शास्त्र —सीमप्रमाणार्थं। देशी कागज। पत्र संख्या-१२। धाकार-९ $"\times 8"$ । दशा-धन्छी। पूर्णं। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१६४४। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ३, बुधवार, सं० १८४१।

डिप्पाणी —सिन्दुर प्रकरण वर्णित है।

३४४ प्रति संस्था २।देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । म्राकार-६ $\frac{3}{5}'' \times 5\frac{1}{5}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था-१६५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-म्रश्विन शुक्ला ६, कृहस्पतिवार, सं० १८०६ ।

३४५. प्रति संस्था ३। देशी कागज। पत्र संस्था-६। ध्राकार-१० $^{\prime\prime}$ \times ४ $\S^{\prime\prime}$ । दशा-म्रतिजीर्गां। पूर्यां। ग्रन्थ संस्था-१६४६। रचनाकाल- \times । विपिकाल- \times ।

३४६ प्रति संख्या ४। देशी कागजा। पत्र संख्या—७। धाकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४"। दशा—धब्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—१६३१। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ११, सं०१८६८।

३४७. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-१२ । धाकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{7}$ " । दशा-प्रस्थी । पूर्ण । प्रत्य संस्था-१४६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ६, सं० १६०२ ।

- देशमः असि संख्या ६ । देशीःकासकः । यत्र संख्या--१४० विकासकार--१००० ४५० । दका--धाच्छी । पूर्वा । सम्ब संख्या--२०२० । स्थानाकाल-- × । सिप्तिकाल-- × ।
- ३४६. युक्ति मुक्तायकी सटीक्स \times । देंगी कागळ । यत्र संस्था-२१ । भाकार-११" \times ५"। दक्षा-कुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नश्यरी । ग्रन्थ संस्था-२६२६ । रक्षाकाल- \times । क्षिपिकाल-नैत्र कृष्णा ४, युरुवार, सं-१८६८ ।
- ३५०. सुष्वदोहका \times । वेशी कागज । पत्र संस्था ६ । झाकार ११'' \times ४ $\frac{2}{5}''$ । दशा खितजीखं । पूर्ण । भाषा धत्रश्रं त्र । लिपि नागरी । विषय सुभाषितः । ग्रंथ संस्था १४२५ । रक्ताकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ३५१. सुमाधित काथ्य- म० सकलकीति । देशी कागज । पत्र संस्था-२३ । धाकार १० $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-कितिकीर्गं । ५र्गं । भाषा-सरहत्त । किपि-कागरी । ग्रन्थ सस्या- १४०० । रचनाकाल- \times । किपिकाल-सं० १७०३ ।
- ३४२ सुमाबित रस्म संबोह— समितगित । देशी कागज । पत्र संस्था—६६ । स्राकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times ४"। दशा—मध्की । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि नागरी । यन्य संस्था—२७४८ । रचनाकाल—पौष शुक्ला ४, सं० १३१४ । लिपिकास—सं० १५७४ ।
- ३५३. सुमाधित रत्नावली— म॰ सकलकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । स्राकार-१०३ $^{\circ}$ \times ४३ $^{\circ}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । भ्रन्थ संख्या- $^{\circ}$ ४२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६८७ ।
- ३४४. सुमाषित स्लोक— (संग्रहित)— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । धाकार— $=\frac{9}{2}$ " \times ४" । दशा—धन्छ्यं । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६५० । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।
- ३४४. सुमाणितार्शंब $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । म्राकार-११ $\frac{1}{6}$ " \times ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६० । रखनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ३५६. प्रति संस्था— २। देशी कागज । पत्र संस्था—६५ । द्याकार–११५ $\%\times$ ४%" । दशा—प्रतिजीर्स । पूर्स । प्रत्य संस्था—१२६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माघ शुक्ला १, शृहस्पतिकार, सं० १६६१ ।
- ३४७. प्रति संस्था ३।देशी कागज । पत्र संख्या-६६। ग्राकार-११ $''\times$ χ'' । दशा- मतिजीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२४८ । रचन।काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३५८. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । द्याकार—६ $\frac{2}{3}$ " \times 8" । दशा— प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्य संख्या—१२२२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—साध शुक्ला २, संगलवार, सं० १६८६ ।
- ३५६. प्रति संस्था x । देशी कागज । पत्र संस्था-x । धाकार-x । दशा- बहुत अच्छी । पूर्य । यन्य संस्था-१८४६ । रचनाकाल-x । लिपिकाल-आवाद शुक्ला ७, सं० १६०८ ।

- ३६०. सुवायसम्बद्धी--- व सक्तकार्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । झाकार-- ६३" \times ४ $^{3}_{c}$ " । दशा--- व्यव्ही । पूर्तु । भाषा-संस्कृत । स्विप-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८८६ । रचना-काल-- \times । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ३, रविवार, सं० १८२३ ।
- ३६१. प्रति संस्था २। देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । धाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । प्रत्य संख्या—१००५ । रचनाकाल— \times । किपिकाल—फाल्युन कृष्णा २, सं०१६१३ ।
- ३६२. प्रति संस्था ३। देशी कागज। पत्र संस्था-२६। प्राकार $-१^{\frac{9}{4}''}\times y^{\frac{1}{2}''}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-१२२३। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा y, सं० १६६६।
- ३६३. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संख्या-३१। भ्राकार-११" \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा-प्रतिजीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०१० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ३६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । झाकार-६ $\frac{2}{7}$ \times ४ $\frac{2}{9}$ । दशा-ध्रतिजीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १४, सं० १६१५ ।
- ३६४. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था–१६ । भाकार–१० $\frac{5}{5}'' \times 3\frac{7}{5}''$ । दशा–जीर्गक्षीण । पूर्ण । भ्रन्थ संस्था–२१६२ । रचनाकाल– \times । तिकितल– \times ।

त्रिषय-कथा साहित्य

- ३६६. **प्रमन्तवत कथा—पद्मानिय । दे**शी कागज । पत्र संख्या—४। प्राकार—११ $"\times$ ५"। दशा—जीर्गंकीरा । पूर्णं । भाषा—सस्कृत । तिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या—२६२५ । रचनाकाल— \times । तिपिकाल—भाद्मपद कृष्णा ऽऽ सुक्रवार, सं० १६२६ ।
- ३६७. प्रति संस्था २ । प्राकार $-=\frac{1}{2}"\times8"$ । दशा—श्रन्छी । पूर्ण । गन्थ संस्था—२५१३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ३६ म. धनन्तवत कथा— श्रह्म किनवास । देशी कागज । पत्र संख्या— प्रश्नाकार— १३ $\frac{7}{4}$ प्रदेश प्रश्ना श्रव्या । प्राप्त । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । विषय कथा । ग्रन्थ संख्या २६१४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल श्रव्या कृष्णा ६, रिववार, सं० १६४५ ।

विशेष--ग्रन्थ मे पद्य संख्या १७२ हैं।

- ३६९. **धवन्ति सुकुमाल कथा हस्ती सूरी** । देशी कागज । पत्र संख्या १ । ध्राकार १० '' । दशा जीरगुंक्षीरा । पूर्ग् । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । विषय कथा । ग्रम्थ सख्या १७३१ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ३७०. **ब्रागोक सप्तमी कथा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । ब्राकार— $\xi_{\overline{g}}^{g}/\times \chi_{\overline{g}}^{g}/$ । दशा—ब्रम्ब्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—कथा । ग्रन्थ संख्या— १७८८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३७१. अध्दान्हिका तत कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार— १० $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{1}{5}$ " । दशा—अध्दी । पूर्ग् । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १३, सं० १८६७ ।
- ३७२. **माकार पंचमी दत कथा— बहा जिनदास** । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । माकार-१क् $\frac{1}{2}$ " \times \mathbf{c}_{g}^{g} " । दशा—यन्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या— २५४३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

विशेष-इस ग्रन्थ में पद्यों की संख्या १२० हैं।

३७३. **बालव दशमी दत कथा— इक्ष्म जिनदास** । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । स्नाकार—१३ $\frac{3}{4}$ " \times = $\frac{3}{4}$ " । दशा—बन्धी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६१२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष--प्रनथ में पदों की संख्या १११ हैं।

२७४. **आदित्यवार कया— कवि भानुकीति** । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । ग्राकार—१० $\frac{3}{4}$ " \times ४ $\frac{1}{4}$ " । दशा—ग्रतिजी**णं कीया** । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रम्य संख्या—२००१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष—इस ग्रन्थ की रचना श्री मनूकादास अग्रवाल गर्ग गौत के पुत्र कवि भानु कीर्ति ने की है।

३७५. स्नाविश्ववार क्या--- बहुत रायकस्ता । देखी कागज । पत्र संख्या-४ । आकार-१०"×४० । दशा-प्रतिजीर्ग । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) धौर संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-१४५६ । रचनाकाल-माह्नपद्य शुक्ला २, बुधवार, सं० १६३१ । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १३, सं० १७१० ।

२७६. **आरायना कथा कोश--वहा नेमियत** । देशी कागत । पत्र संस्था-१५६ । आकार-११ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{1}{9}$ " । दशा--ग्रन्थी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संस्था-२७०५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रश्वित कृष्णा १, संर १८०३ ।

३७७. **एक पर**— गुलाबक्षन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार-१०" \times ' ς '' । दशा-बहुत श्रन्थी । पूर्णं । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४४३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

डिप्पर्णी-इसमें मात्मा को सम्बोधित किया गया है।

३७८. **एक पद** — रंगलाला । देशी वागजा । पत्र संस्था —१। द्याकार —६ $\frac{1}{9}$ "> ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा —हिन्दी (पद्य) । लिपि —नागरी । ग्रन्थ संस्था —१४८१ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

३७६. कथा कोश—बहा नेमिदस । देशी कागज । पत्र संख्या—३२३ । ग्राकार—६५ 2 " \times ४ 2 " । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी ।। ग्रन्थ संख्या—१२३१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

३६०. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—१५६ । प्राकार-१२हुँ" \times १ ξ ँ" । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१०७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद बुदी १, सं० १८६० ।

३ वर्शः प्रति संस्थाः ३ । देशी कागजः । पत्र संस्था—१२२ । प्राकार- ६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशाः—शस्थी । पूर्या । प्रत्य संस्था—१२१६ । रजनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

३५२. व्रति संस्था ४। देशी नागज । पत्र संस्था-१०१ । भाकार-१४६ $\frac{9}{5}$ " \times ६ $\frac{9}{5}$ " । दशा-बहुत शब्दी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१७६५ । रक्नाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

३८३. कथा प्रथम्ब-- प्रमाणकः । देशी कागळ । पत्र संख्या-६२ । झाकार-११३" \times ५"। दशा--भतिजीगं क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११४१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल -फास्गुन शुक्ला ७, सं० १५६२ ।

३८४. कथा संग्रह— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—२५ । भ्राकार—१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा—ग्रातिजीएाँ । पूर्ण । भाषा—ग्रपभंश व संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१७७५ । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।

३०४. कवा संबह्— \times । देशी कनका । यक संख्या—२३ । ब्राकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—धतिजीर्श कीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ब्राय संख्या—११४४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

- ३०७. काष्ट्रामरे कथा \times । देवी कायभ । पत्र संस्था—७ । क्याकार—१० हुँ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । कथा—प्रतिजीखीं । पूर्यों । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । भ्रन्य संस्था—१६३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ३, सं० १७१० ।
- रेपक. काष्टार्गर कथा \times । देशी कामग्र । पत्र संस्था —६ । स्राकार —१० $''\times$ ४ $\frac{2}{5}''$ । दमा —प्राचीन । पूर्ण । भावा —हिन्दी । लिपि —नामरी । सन्य संख्या —२२६० । रचनाकाल \times । लिपिकाल प्राचाढ़ शुक्ला ११, सं० १७०६ ।
- २७६ **गौतन ऋषि कुल** \times देशी काशव । पत्र संस्था—२ । श्वाकार-१० $\frac{1}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दक्या—ग्रित जीएाँ क्षीएा । पूर्ण । भाषा—प्राकृत ग्रीर हिन्दी । लिकि —स्थारी । प्रन्य संस्था—१६१७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३६० चतुर्वशी नवड पंचमी कथा—निस्म मिन्न नर्जा हैं। देशी कागज । पत्र संख्या— ७ । भ्राकार $-१३\frac{5}{6}$ " । दशा—मच्छी । भूर्ण । भ्राचा—मराठी । प्रन्य संस्था—२५४१ । रचनाकाल \times । लिपिकाल— \times ।
- ३६१. . चन्वनमक्त्यगिरी वार्ता यवनेन । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । प्राकार ६३ $'' \times 3\frac{1}{2}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । खिपि—नागरी । प्रन्य संख्या—२००४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ३१२. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था- । ग्राकार-१० $\frac{3}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{4}$ " । दसा-प्राचीन । पूर्यो । यन्य संस्था-२४५४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशास कृष्या १२, सं० १६६ ।
- ३१३. चन्वनराज्ञासस्यविरी सौर्यः—िकत्तृषं सूरि । देशी करगज । पत्र संख्या-७ । आकार-१० $\frac{3}{7}$ "×४ $\frac{5}{7}$ " । दक्षा-प्राचीन । पूर्णः । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६० । रचनाकाल-चैत्र गुक्ला १५, सं० १७११ । लिपि काल- × ।
- ३६४. व्योबीस कथा —पं० कालपस्त । देशी काम व । पत्र संख्या—२८ । माकार—११"×४" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । काथा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नावरी । ग्रन्थ सल्या—१२५४ । स्वनाकाल—फारुगुन बुदी ३, सं० १७१२ । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, सं० १७६३ ।
- ३६६, **बस्बृत्वामी कवा--पाण्डे जिन्हास** । देशी कागज । पत्र संस्था-१३ । साकार-१२ॄे″×६३ँ । दका--प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । पत्थ संस्था-२५११ । रचनाकाल-भावपद कृष्णा ४, गुरुवार सं० १६४२ । लिपिकाल-मावाद कृष्णा २, सं० १७६७ ।
 - बिक्रेय-इस ग्रन्थ की क्रुकामण ग्राम में लिपि की गई।
- २१६. विनयस कता—पुरामकात्रकार्य । देशी कावज । यन संस्था—६७। भाकार—११" \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । सिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१४=५ । रक्ताकास= \times । सिपिकाल—पौत्र शुक्ता ५, बुधवार, सं० १६१६ ।

- देश. प्रति संस्था २ । देशी कागत । पत्र संस्था-१६ । भाकार-११ है" ४ १ । दशा-प्रक्की । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१६२४ । रचताकात- ४ । निपिकाल-मंगितिर सुक्ता ३, सुकतार, सं०१-६१।
- ३६८. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-४६ । आकार-११"×४२"। वशा-श्रतिजीर्या । पूर्ण । प्रत्य संस्था-१२४४ । रचनाकाल- × । लिथिकाल-द्वितीय श्रावण शुक्ला १४, शनियार, सं० १७०३।
- ३६६. प्रसि संस्था ४ । देशी कायज । पत्र संस्था—३६ । ग्राकार—११ $^{"}$ ×४ $^{?}$ $^{"}$ । दशा—प्रतिजीर्ग क्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१२४६ । रचनाकाल × । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, सं० १७०३ ।
- ४००. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । ग्राकार-१० $\S'' \times s \S''$ । देशा-प्रतिजीर्ग्य क्षीर्ग्य । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२३२ । रचनाकाल- \times । निपिकाल-श्रावण कृष्ण २, सोमवार, सं० १६२४ ।
- ४०१. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था–५२ । म्राकार ११ $''\times$ ५''। दक्षा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था–१२०३ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- ४०२. जितगुजा पुरन्दर कथा \times । देशी कागत । पत्र संख्या ३ । घाकार ११ $"\times$ ५" । देशा मतिजीएं । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । प्रत्य संख्या १६८० । रचनाकाल \times । लिपि काल \times ।
- ४०३. **जिनरात्रि कथा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । भाकार १० $\frac{3}{7}$ " । दशा जीएाँ क्षीण । पूर्णं । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या २६२० । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ४०४. जिनांतर वर्शन \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । व्याकार—६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । देशा—बच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी भीर घपन्न श । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या—१३६१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४०५. तीर्थ जयमाल सुनित सागर । देशी कागज । पत्र संख्या २ । ध्राकार \mathbf{x}_{i}^{*} \mathbf{x}_{i}^{*} । दशा ध्रज्धी । पूर्ण । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १७६१ । रचनाकाल \mathbf{x} । लिपि काल \mathbf{x} ।
- ४०६. दशलकारा कथा—पं० लोकतेत । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ध्राकार—१२" \times ४" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रस्थ संख्या—२६४२ । रचनाकाल— \times । लिपि काल—कार्तिक शुक्ला ४, सं० १५८८ ।
- ४०७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—५ । घाकार—११" \times \times " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—२६४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रहिवन शुक्ला ११, सं० १६४७ ।
 - ४०८. दशलकारा कथा बहु बिनवास । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । धाकार-

१३३ - ४ - १ विषा-अच्छी । पूर्त । भाषा-हिन्दी । लिपि-नामरी । प्रन्य संस्था--२६१३। रचनाकाल-- × । लिपिकाल-कार्तिक सुक्ला ७, सं० १६४५ ।

- ४०१. दर्शन कथा—पं० सारसस्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । भाकार—१३ $\frac{1}{5}$ " \times = $\frac{2}{5}$ " । दशा—भच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४=० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मात्र कृष्णा ६, सं० १६३६ ।
- ४१०. द्वादसभाकी कथा—बह्य नेमिदत्त । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-११ $''\times$ ५ $^{9}''$ । दशा-भ्रच्छी । पूर्ग । भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६५४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४११. धर्मबृद्धि पापबृद्धि चौपई—विजयराज । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । स्नाकार—११३ $^{"}\times$ ५ $^{"}$ । दशा—प्रच्छी । पूर्णे । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०१७ । रचनाकाल—स० १७४२ । लिपिकाल— \times ।

टिप्परारी-भट्टारक जिनचन्द्र सूरि के तपागच्छ में श्री विजयाराज ने रचना की है।

- ४१२. धर्मबृद्धि पापबृद्धि चौपई— सालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१८। ग्राकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times \times " । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१७६८ । रचनाकाल-स० १७४२ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, बृहस्पतिवार सं० १८२६ ।
- ४१३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । ग्राकार-प्र $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-घच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६७ । रचनाकाल-स० १७४२ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १०, स० १प२३ ।
- ४१४. **यूप दशमी तथा ग्रनस्तदत कथा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । ग्राकार—१२ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{2}$ "। दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४१५. नग्द सप्तमी कथा बहा रायमस्स । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भाकार— १० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पछ) । विपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—१६१२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४१६. नम्बीस्वर कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— \times । झाकार—१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ "। दशा—मतिजीर्गं क्षीरा । पूर्यं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । पत्र संख्या—१५५१। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४१७. प्रति संस्था २ । पत्र संस्था-६ । झाकार-६ \S " \times ४ \S " । दशा-प्राचीन । पूर्तं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२५०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४१ द. शक्कार कथा—श्रीमत्याद । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । प्राकार-१० $\frac{2}{3}$ % \times ४ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रतिजीसँ क्षीस् । पूर्वं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—१६०५ । रभनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - ४१६. नाम्बुकार वंबमी कवा-उमय भावा कवि वक्तवर्ती भी मस्लिवेस सूरि। देशी

कागज । वश्र संस्था-२० । माकार-११" \times ४२" । दका-मतिजीखं कीस्म । पूर्वः । भाषा-संस्कृतः । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१६१० । रचनाकाल- \times । विभिकाण- \times ।

व्याविभाग---

श्री नेमि जिनमानम्य सर्वेसत्वहितप्रदम् । वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहं ॥१॥ कविभिजंयदेवाद्यं गंद्यं पिंद्यं विनिमितम् । यत्तदेवास्ति चेदत्र विषमं मन्दमेषसाम् ॥२॥

प्रत्तभाग---

श्रुत्वा नागकुमार चारुचरितं श्री गौतमेनोदितं: भव्यानां सुखदायकं भवहरं पुष्पास्रवोत्पादकं। नत्वा तं मगधाधिपो गणधरं भक्त्यापुरं प्रागमच्छी-मद्राणगृहं पुरंदर पुराकारं विभूत्या समं।।६।।

इत्युमयभाषाकि चक्रवर्ति—श्री मिल्लिषेणासूरि विरिचितायां श्री नागकुमार पंचमीकथायां नागकुमार—मूनीक्वर—निर्वाणागमनो नाम पंचमः सर्गः।

> जितकषायरिपुर्गुण वारिधिनियत चारु चरित्र तपो निधिः। भूपतिरीटविघट्टित ऋमयुगोऽजितसेन मुनीश्वरः ।।१।। श्रजनि तस्य मुनेर्वरदीक्षिती विगतमानमदी दुरितांतकः। कनकसेन मुनिर्मुनि पुंगवो वर चरित्र महाव्रतपालकः।।२।। गतमदोऽजनि तस्य महामुनेः प्रथितवान् जिनसेनम्नीश्वरः । सकल शिष्यवरो हतमन्मयो भवमहोदधितारतरं कः ॥३॥ तस्याऽनुज श्वारुवरिववृत्तिः प्रख्यातकीतिभुवि पुण्यम्तिः। नरेन्द्रसेनो जितवादिसेनो विज्ञाततत्त्वो जितकामसूत्र ॥४॥ तिच्छप्यो विबुधाग्रसीर्गुसिविः श्री मस्लिवेसाह्नयः, सकलागमेषु निपुणो संजातः वाग्देवतालकृतः। तेर्नेषा कविचक्रिए। विरचिता श्री पंचमीसत्यकथा, भव्यानां दुरितौषनाशनकरी संसार विच्छेदिनी ॥५॥ स्पष्ट श्री कवि चक्रवर्ति गरिएना भव्याव्जयमौग्रुना, ग्रम्थी पंचमती मया विरचिता विद्वज्जनानां प्रिया। ता मक्त्या विक्तिसंति चार वचनै व्यविर्ण्यंस्यादरा, धे शृणवन्ति मुदा सदा सहदमास्ते यांति मुक्तिधियं ।।

> > इति नागकुमार चरित्रं समाप्तम् ॥

४२०. शामधी कथा- बहुत नेमीवस । देशी कागज । एव संस्था-२४ । साकार-

 $\mathbf{E}_{\mathbf{r}}^{\mathbf{r}} \times \mathbf{v}_{\mathbf{r}}^{\mathbf{r}}$ । दशा—प्रतिजीर्स । पूर्व । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१५८७ । रचनस्कास- \times । लिपिकाल— \times ।

४२१. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या-१४ । साकार-११ $''\times$ ४ $^{2}_{7}$ '' । दशा-धतिजीर्ग । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२०१२ । रचनाकाल \to × । लिपिकाल \to × ।

४२२. निर्दोष सप्तमी कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । ग्राकार— ६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{1}{7}$ $^{\circ}$ । दशा—ग्रन्थ संख्या—१७६७ । रचनाकाल— \times । निपिकाल— \times ।

४२३. निर्दोष सप्तमी कथा— बह्य जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । ब्राकार—१३ $\frac{9}{7}$ \times $\frac{9}{7}$ 9 \times । दशा—ब्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रम्थ संख्या-२५४२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ब्राध्वन शुक्ला ४, बुधवार, सं० १९४४ । पद्म संख्या १०६ है ।

४२४. पद्मावती कथा--महोचन्द्र सूरि। देशी कागज। पत्र संख्या-२७ । द्माकार--१०" \times ४ $\frac{3}{5}$ "। दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११६३। रचनाकाल-ग्रश्विन बुदी १३, स० १५२२। लिपिकाल- \times ।

४२५. **एकानन्द पंचिवशंति —पद्मानन्द । देशी कागज** । पत्र संस्था—६६ । स्थानार—११ $'' \times १$ $_{y}^{y}$ । दशा—अतिजीर्गं क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था— १२४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४२६ प्रति सं०२। देशी कागज। पत्र संख्या-१०१। श्राकार-११ $'' \times \chi''$ । दशा-श्रच्छी। पूर्णं। ग्रन्थ संख्या-१२४४। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

४२७. परमहंस खोपई — बहा रायमस्त । देशी कागज । पत्र संख्या —३६ । भ्राकार — १०" \times ५ $\frac{3}{5}$ । दणा —ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा —हिन्दी (पद्य) । लिपि —नागरी । ग्रन्थ संख्या —१११६ । रचनाकाल — \times ।

४२८. पंचपर्व कथा— ब्रह्मचारी वेरणु । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । झाकार— १० $^{\prime\prime}$ × ४ $_{2}^{9}$ । दशा—ध्रतिजीर्स् क्षीण । पूर्स । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७२५ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

४२६ प्रियमेल कथा—बहा वेखीवास । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । श्राकार- १०६ $^{''}$ × ४ $_{5}^{9''}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८४ । रचनाकाल-श्रावरा कृष्णा ११, सं० १७०० ।

विशेष--- प्रत्य की रखना अलिपुर में की गई है।

४३०. पुष्पास्त्रव कथा कोश-मृमुक्षु रामधन्त्र । देशी कागज । पत्र संस्था-१४६ । स्थाकार-६ $\frac{3}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ "। दशा-जीर्गां कीण । पूर्णं माया-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संस्था-२७१३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ३ शुक्रवार, सं० १४८७ ।

४३१. पुष्पास्तव कथा कोस सार्व-- × । देशी कागज । पत्र संस्था-११४ ।

बाकार- ११ $\frac{2}{5}$ " \times ५ $\frac{2}{5}$ "। वशा-ब्राचीन । पूर्णु । भाषा-संस्कृत कौर हिन्दी । लिपि-नागरी । सन्य संस्था-२६४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकान-चैत्र कृष्णा १४, संज १७६७ ।

४३२ पुरुषां कथा — सहा किनवास । देशी कामक । पण संस्था-४ । धाकार-१३ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दणा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-सागरी । बन्ध संस्था-२६११ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ब्राय्वन सुरुषा ११, सोमवार, सं० १६४४ ।

मोठ---पद्म संस्था १६१ हैं।

४३३. पुष्पांक्रलि कथा—मण्डलाचार्य श्रीमूथ्यः । देशी काण्यः । पत्र संस्था-७ । स्थातः $- १ \circ \xi'' \times Y \cdot \xi'''$ । दशा—ग्रतिकीर्यां । पूर्यं भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४५ । रचनाकाल $- \times 1$ लिपिकाल $- \times 1$

४३४. प्रति सं० २। देशी कागज । पत्र संख्या-५ । प्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-प्रतिजीर्ग । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-१५७१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल \times ।

४३४. प्रस्नुम्न कथा— सहा वेशीवास । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ । झाकार— ११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $_{9}^{3}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—झितजीर्गं क्षीरा। पूर्गं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । सम्ब संख्या— २००२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४३६. **बारह वत कथा**— \times । देशी कागजः। पत्र संख्या—३ । ग्राकार—६ $\frac{3}{7}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्णः । भाषा—संस्कृतः । लिपि—नागरी । ग्रन्थः संख्या—१७५५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४३७. **बाहुबली पायड़ी** $--- \times 1$ देशी कागज । पत्र संस्था-३ । ग्राकार- ११'' \times ४ $\frac{3}{7}''$ । दशा-भच्छी । पूर्ग । भाषा-श्रपञ्जंश संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२११८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ग्राध्वन श्रुक्ला ११, मं० १६६७ ।

४३८. बुद्धवर्शन — कविरास सिद्धराज । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । भाकार—६ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{4}$ "। दशा—भच्छी । पूर्ण । भाषा—मंस्कृत । लिपि—नागरी । प्रत्य संख्या—१६२२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४३६. वंकवृत्त कथा—बहा जिनवास । देशी कागज । पत्र संस्था—४ । भ्राकार—१०३ $'' \times ४$ ३'' । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२७२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।

विशेष-प्रलोक संख्या १०६ है।

४४०. प्रस्ति सं॰ २ । देशी कागज । पत्र संस्था—५ । श्राकार— १० $\frac{3}{4}$ " \times ४ $\frac{3}{4}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रम्थ संस्था—२०६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मात्र घुक्सा १४, सं० १७१० ।

- ४४१. मरत बाहुबली वर्शन सीसराकः। पत्र संस्था—६। ब्राकार—१० $\frac{2}{5}$ " \times ५ $\frac{2}{5}$ "। दमा—जैलेंकीर्शः । वूर्णः। प्राचा—हिन्दी । लिपि—नागरीः । प्रम्य संस्था—२३३६ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४४३. मृगीसंबाद श्रीपाई— \times । देशी कागश्च । पत्र संख्या–१४ । भ्राकार–६ $\frac{2}{7}$ " \times ४ $\frac{2}{7}$ " । दशा–शब्धी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या–२४६६ । रश्नाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- ४४४ माववानल कथा—कुंबर हरिराज । देशी कागज । पेत्र संख्या-४२ । माकार-१०" \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-प्राचीत । पूर्ण । माषा-हिन्दी (पण) । लिपि—नागरी । प्रन्थ सख्या-१३५२ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला १३, स० १६१६ । लिपिकाल-पीच शुक्ला \approx शुक्रवार सं० १६५६ ।

विशेष---यह प्रतिलिपि जैसबमेर में लिखि गई।

- ४४४ प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२० । ग्राकार-१०" ×४५" । दशा-श्रतिजीर्गा । पूर्मा । ग्रन्थ संस्था-११२३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १७४३ ।
- ४४६ साथवानल कामकन्दला खैपई—वेबकुमार । देशी कागज । पत्र संस्था—१२ । धाकार— १० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दमा—धातजीखं । पूर्यो । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था १०२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मात्र शुक्का ११, सं० १७१७ ।
- ४४७ मुक्तावलीकथा \times । देशी कागज । एव संख्या —१ । आकार —६ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{5}{5}$ " । देशी कागज । एवं संख्या —१७६६ । रचनाकाल \times । लिपि—नागरी । ग्रम्थ संख्या —१७६६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ४४८. सूलसंख्यक्राक्ती— रत्यकीति । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । झाकार—१२ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{3}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—सन्द्यी । पूर्ण । भाषा—सन्द्यत । लिपि—मागरी । प्रश्य संस्था—२११७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४४९. मेवनस्तावत कथा—बल्लम मृनि । देशी कागम । पत्र संख्या-४ । धाकार— $=\frac{1}{2}^n\times \frac{1}{2}^n$ । दशा—प्राचीन । पूर्ता । धावा—संस्कृत । तियि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३१६ । रचनाकाल— \times । तियिकाल— \times ।
- ४५०. मेथनालावतकथा $-\times$ । देशी कागज। पत्र संस्था-३। जाकार-११ $\frac{9}{7}$ $''\times$ १ $\frac{1}{7}$ "। दशा-सुन्दर। पूर्यो। भाषा-संस्कृत । लिपि-मागरी। ग्रग्थ संस्था-२६५१। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ४५१. यसदत्त कथा— \times । देशी कागम । पत्र संस्था—२ । आकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४५ै" । दशा—शीर्शंकीया । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । सिषि—शागरी । त्रन्य संस्था—२१६५ । रचनाकाल— \times । सिषिकाल— \times ।

बिशेष--- नागपुर में प्रन्य की लिपि की गई।

- ४५२. रत्नन्नयवस्तकथा— बृतसागर । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । झाकार— ६ $\frac{2}{5}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संस्था—२०६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४५३. रत्मन्नयविधानकथा पं० रत्नकीति । देशी कागअ । पत्र संख्या-४ । भ्राकार- १० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-श्रीर्णकीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८०३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४५४. रामावलीवतकथा \times । देशी कागव । पत्र संख्या-१० । श्राकार १० $\%'' \times$ ५'' । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-२४३१ । रचनाकाल \times । लिपिकाल चैत्र कृष्णा २, रविवार, सं० १६६६ ।
- ४४%. रक्षाबन्धनकथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । झाकार-१०'' \times ४'' । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२०३० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ८, बुधवार, स० १८६७ ।
- ४५६. रात्रि मोजन दोष चौपई—श्री मेघराज का पुत्र । पत्र संख्या-१२ । ग्राकार- १० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दशा-ग्रतिजीर्गुं । पूर्गुं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४५७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । भाकार-१०३ $'' \times ४ \sqrt[3]{''}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४४८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । ध्राकार—१०३ $'' imes imes \xi''$ । दशा—जीर्गा क्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२००५ । रचनाकाल— imes । लिपिकाल— imes ।
- ४५६. रात्रि मोजन त्याग कथा— म० सिंहनंबि । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । ब्राकार—११ $\frac{2}{5}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— सं० १६६२ ।
- ४६०. रात्रि मोजन त्याग कथा \times । देशी काग्रज । पत्र संख्या १० । श्राकार १० $\frac{3}{5}'' \times 3$ । दशा प्राचीन । पूर्यो । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या २४४३ । रचनाकाल \times । लिपि काल कार्तिक कृष्णा १०, वृहस्पतिवार सं० १७१७ ।
- ४६१. रोटतीजकथा गुरानंदि । देशों कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार- $-\frac{1}{2}''\times8''$ । दशा-ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४६२. स्विधिवधानवःशकथा—बह्य जिनवासः। पत्र संख्या—४ । धाकार—१३३ $''\times$ =5''। दशा—सुन्दरः। पूर्यः । भाषा—हिन्दीः । लिपि—नागरीः। ग्रन्थ संख्या—२६०६ः। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रश्विन शुक्ला १५, शुक्रवार, सं० १६४५ः।

विशेष-गृत्य में पद्यों की संख्या १६९ हैं।

४६३. वतकथाकोश-शृतसाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । धाकार-१२३ $'' \times ५$ ३''। दशा-भ्रज्छी । पूर्गा । धाका-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३८० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

४६४. विक्रमादित्योत्पत्ति क्यानक— क्यवती । देवी कावव । पत्र संख्या-१ । धाकार— $१ \circ \frac{9}{7} \times 3''$ । दशा—विक्रिक्त । पूर्व । भाषा—संस्कृत । क्रियि—नागरी । प्रन्य संख्या-१४३२ । रक्याकास्त \times । विविक्राय \times ।

४६१: विद्यानवकवालंबह—किन-निग्न कथा के निग्न कर्ता हैं। देशी कागज। वत्र संस्था-४४ । प्राकार-१०" ×४३" । दका-कथ्की । पूर्व । कावा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रम्थ संस्था-१७६४ । रचनाकाल-× । लिपिकाक-× ।

हिष्यस्थी—पृष्ठ १ से ४ तक नक्षत्रमाला विधान, ४ ते ६ तक विमानपंक्ति कथा, ७ से म तक मेर्पिक्तिविधान, ११ तक अतुक्षानकथा, १२ तक सुक्ष सम्पत्ति इतफल कथा, २२ तक जिन्दात्रिकमा, २४ तक दक्मिसि कथा, २७ तक कम्मस्यि कथा, ३३ तक ज्वेष्ठ जिनवर इतीयाक्यान, ३६ तक सप्त परमस्थान विधान कथा, ४२ तक पुरन्दर विधान कथीपाल्यान, ४३ तक आवस्य हादसी कथा, ४६ तक कासस्यंक्तिकथा विधान है।

४६६. वैताल पच्चीसी क्यानक—विश्वदास । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । झाकार-१२ $\frac{9}{8}$ " \times ५ $\frac{3}{8}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-१६१५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १६६२ ।

४६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५० । प्राकार—११ $\frac{3}{5}$ " × ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५८० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १४, सं० १८८६ ।

४६८. शनिश्चर कथा—जीवस्थवास । देशी कागज । पत्र संस्था—५ । झाकार—१२६ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्छी । पूर्यो । भाषा—हिन्दी (पद्म) । जिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था १४४० । रचनाकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ७, सं० १८०४ । लिपिकास—ग्राथाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।

४६६. शुक्त सप्तिति कथा— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—४७ । झाकार—१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१७७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्ग्न शुक्ला १०, सं० १८७६ ।

४७०. सन्तम्यसम कथा—तोवकीति धावार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—८४ । धाकार—१० $\frac{3}{5}$ " \times ४"। दशा—घच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रस्य संख्या—११०६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ५, मंगलवार, सं० १८६७ ।

षाविमाग---

प्रसाय श्रीजिनान् सिक्षान् द्वाचार्यान् पाठकान् यदीन् । सर्वेद्वन्दविनिर्मुक्तान् सर्वेकामार्थदायकान् ॥ १ ॥

सन्तवाग---

नन्दीलटाके विविते हि संबे भी शायसेगस्य पद प्रसादात्। विनिमितो संद्विया ममस्यं विस्तारस्त्रीयो मुनि सामुसर्यः॥ मो वा पठित विभृत्यति चन्योपि भावनायुक्तः ।
लभते स शौक्यमिनकां ग्रन्यं सोमकीर्तिना विर्वतितं ।।
रसनयनसमेते वार्गायुवतिन चन्द्रे १५२६ गतवित सित नूनं विकमस्यैव काले ।
प्रतिपवि धवलायां माधमासस्य सोमे हरिश्रविनमनाक्रे निर्मितो ग्रन्थः एषः ।।
सहस्रद्रयसंख्योऽपं सप्तवष्ठी समन्वितः ।
सप्तैव व्यसनाद्यस्य कथा समुख्ययोत्ततः ।।
यावत् सुदर्शनो मेर्घ्यावच्य सागरा घरा ।
तावननद्रत्वयं लोके ग्रन्थो भव्यजनाश्रितः ।।

इतिश्री इत्यार्थे भट्टारक श्री धर्मसेनाभः श्री भीमसेनदेवशिष्य प्राचार्य सोमकीर्ति विर-चिते सप्तव्यसनकथा समुज्जये परस्रीव्यसनफलवर्शनो नाम सप्तमः सर्गः। इति सप्त-व्यसनचरित्र कथा सपूर्णा।

४७१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१२ । प्राकार-१० $^{\prime\prime} \times 8\frac{9}{2}^{\prime\prime}$ । दशा- बहुत प्रस्थी । पूर्ण । प्रत्य संस्था-१४४६ । रक्नाकाल- \times । लिपकाल- \times ।

टिप्पाली-केवल दो ही सर्ग हैं।

४७२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । आकार-११" \times ५ $\frac{5}{2}$ " । दशा- श्रम्छी । पूर्यो । प्रत्थ संख्या-१६४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

४७३. सम्यक्त्व कौमुदी— जयशेकर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । भ्राकार— १० $\frac{3}{6}$ " \times ८ $\frac{3}{6}$ " । दशा—मञ्जी । पूर्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२१२ । रश्जनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ४, मंगलवार, सं० १६४६ ।

४७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सल्या—३७ । धाकार १२ $\frac{2}{5}$ " \times ५ $\frac{2}{5}$ " । दशा—धितजीर्गा । पूर्ण । प्रन्थ संख्या—१२२४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४७५. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था—३७ । ग्राकार—१६ $'' \times \xi \frac{3}{2}''$ । दशा— बहुत ग्रन्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था—१२७० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४७६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०० । प्राकार- $- \frac{2}{3} \times \frac{2}{3} \times \frac{2}{3} = \frac{1}{3}$ । दशा- बहुत प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६८ । रचनाकाल- \times । निपिकाल-व्येष्ठ कृष्णा ३, सं०१६४६ ।

४७७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—४१ । धाकार—११ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । देशा—प्रतिजीर्गं क्षीण । पूर्णे । ग्रन्थ प्रख्या—११६९ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रक्षित शुक्ला ७, गनिवार, सं० १५७४ ।

टिप्पर्गी--- अन्तिम प्रश्नस्ति पत्र नहीं है। कर्गाकुब्ज नगर में श्री अहमदकान के राज्य काल में श्री पूज्य प्रमसूरि के जिल्य मुनि विकायवैद ने लिपि की है। लिपि-कार ने अपनी प्रशस्ति भी लिखि है---प्रशस्ति का श्रन्तिम पत्र नहीं है। ४७८. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था-६४ । प्राकार-१२ $\frac{1}{3}$ " \times ४" । दशा- प्राचीन । पूर्ख । ग्रथ्य संस्था-११६ । रचनाकाल- \times । सिपिकास- \times ।

४७६. सम्बक्त कीमुबी-पं० खेता । देशी कागज । पत्र संख्या-१३४ । धाकार-११" × ४है"। दशा-प्रक्षी । पूर्गे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५३ । रचनाकाल-×। लिपिकास-स० १८३६ ।

४८०. सम्यक्त्व कौमुदी—किव यशसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । श्राकार—१२" \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । श्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । श्रन्थ संख्या—२५६९ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—श्रक्षित शुक्ला १३, सं० १८५३ ।

४८१. प्रति संख्या २। देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । प्राकार—१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा— जीर्ग्य क्षीरम् । पूर्यो । प्रन्थ संख्या—२५६८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशास कृष्या ६, बृह-स्तितार, सं० १५३५ ।

४८२. सस्यक्त्व कीमुदी-जोघराज गोदीका। देशी कागज। पत्र सख्या-३७। झाकार-१२ $_{d}^{9}$ " > ५ $_{d}^{3}$ "। दशा-भ्रच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२५५३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन गुक्ला १३, शुक्रवार, सं० १७२४।

विशेष--छत्द मख्या ११७८ हैं।

४=३. सम्यक्त्व कौमुदी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । माकार—१०३ $"\times$ ४ $\frac{3}{2}"$ । दशा—जीर्ग्ग क्षीण । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३३७ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

४८५. सिंहल सुत चतृष्पदी—समयसुन्दर । देशी कागज । पत्र संस्था—८ । धाकार—१० $\frac{1}{3}$ " \times ४" । दशा—जीएं क्षीएा । पूर्एं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२०७० । रचनाकाल—सं० १६७२ । लिपिकाल—सं० १७००, मेडता नगर में समाप्त किया ।

४८६.सिंहासन बत्तीसी—सिद्धसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । ग्राकार—११ $^{"}$ × ४ 3 $^{"}$ । दशा—र्मातजीसा । पूर्स । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११०६ । रचनाकाल—प्रियन बुदी २, स० १६३६ । लिपिकाल-बैशास बुदी ४, मगलवार, सं० १७०३ ।

४८८. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र सख्या-१७५ । आकार-११३ $"\times$ ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-हिन्दो । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२५५ । रचनाकाल-प्रश्वित कृष्णा २, सं० १६३२ । लिपिकाल- \times ।

- ४८१. सुसन्य बसमी कथा भन्या—सुद्धालकन्य । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । धाकार—६ $\frac{1}{2}$ " \times ६ $\frac{3}{2}$ " । दशा—धन्छी । पूर्ग । भाषा- हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६५४ । रचनाकाक्य— \times । लिपिकाल—सं० १६४४ ।
- ४६०. सुनन्य दक्षमी कथा—सुत्रीलदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । झाकार—११६ * $^$
- ४६१. सुगन्य बशमी कथा— यहा जिनवास । देशी कागज । पत्र संख्या— ६ । ग्राकार— १३५ $^{\prime\prime}$ ४ $^{\prime\prime}$ ६५ $^{\prime\prime}$ । दणा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६०६ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—प्रश्विन कृष्णा १०, मंगलवार, सं० १६४४ ।
- ४६२. सुगन्य बनामी कथा—सहाज्ञान सागर । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । घ्राकार— ६ $\frac{3}{6}$ " \times ५" । दशा-घच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२३४२ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १, सं० १६०३ ।
- ४६३. शुगन्ध दशमी व पूष्पाठजली कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । स्नाकार-१० $\frac{1}{5}$ " < ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा—मच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४६४. षोडपकारस्य कथा— \times । देशी कागज। पत्र सरूया—१३। स्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_{3}$ । दशा—प्रच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी भीर संस्कृत । लिपि—नागरी। सन्ध संख्या—२६०२। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४६४. श्रावक चूल कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । ग्राकार-१० $'' \times \mathbf{v}_{\tau}^{9}''$ । दशा—जीर्ग क्षीमा । पूर्म । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०५५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध ग्रुक्ला १३, सं० १७१६ ।
- ४६६. श्रीपाल कथा—पं० सेमल । देशी कागज । पत्र संस्या-३५ । श्राकार-११ $^{\prime\prime}$ \times $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रतिजीर्ग क्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्या—१७२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्या १३, सं० १६१० ।
- ४८७. अ**ृतकान कवा**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । धाकार—१० $''\times$ ४ $\frac{5}{7}''$ । दशा—धतिजीर्ग । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५५० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावरा शुक्ला १५, सं० १६८५ ।
- ४६८. हनुमान सथा--बह्य रायमस्स । देशी कागज । पत्र संस्था-५७ । भाकार-६३" × ५" । दशा-धितजीयां । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१२०० । रचनाकाल-बैशाख कृष्णा ६, सं० १६१६ । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्सा ६, रविवार, सं० १६३६ ।
- ४६६. हस्यस्त चौपई (हनुमन्त चौपई)— अह्म रायमस्त । देशी कागज । पत्र संस्था—४२ । भाकार-१२३ " × १३" । दशा-भ्रम्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था—२५६३ । रचनाकाल-वैशास शुक्ता ६, सं० १६५७ । लिपिकाल-वैत्र कृष्णा १३, बृह्स्पतिवार, सं० १६६४ ।

- ५००. हरिस्चन्द्र चौपई—बद्धा वेरिषवास । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । झाकार- ६ $\frac{3}{9}$ " । दशा- श्रन्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या--२०२३ । रचनाकाल-सं० १७७८, श्रास्मन्दपुर मध्ये । लिपिकाल-सं० १८१६ ।
- ४०१. प्रति संस्था २। देशी कागज। पत्र सख्या-११ से ३६। आकार-१२" ×६"। दशा-धाच्छी। अपूर्ण। ग्रन्थ सख्या-२६६२। रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।
- ५०२. हेमकथा—रक्षामिक । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । धाकार —११" \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा —प्रक्षि । पूर्ण । भाषा —संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि —नागरी । ग्रन्थ संख्या —२४२६ । रचना काल — \times । लिपिकाल —पौष शुक्ला ११, स० १६=६ ।
- ५०३. होली कथा—छोत्तर ठोलिया । देशी कागज । पत्र सख्या—५ । धाकार— ६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—न।गरी । ग्रन्थ सख्या—२०६१ । रचना-काल—काल्गुन घुक्ला १५, स० १६६० । लिपिकाल—स० १८३१ ।
- ५०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-द । म्राकार-१० $\frac{3}{5}'' \times \mathbf{1} \times \mathbf{1}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४१२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ५०५. होलीपर्व कथा $-\times$ । देशी कागज । पत्र सख्या-३ । भ्राकार-६ $''\times$ ४ 2_6 '' । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिप-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२६६५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ५०६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र सख्या—४ । धाकार-१० $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\circ\prime}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा— प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२२८७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ११, सं०१७५० ।
- ४०७. **होली पर्व कथा सार्य** \times । देशी कागज । पत्र सख्या—६ । ग्राकार–१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२६६ । रचनाकाल— \times 1 लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा १०,स० १८५२ ।
- ४०६. हंसराज बच्छराज चौपई—माबहर्ष सूरि । देशी कागज । पत्र सख्या—३३। भाकार— $\mathbf{e}_{\mathbf{y}}^{\mathbf{y}''} \times \mathbf{v}_{\mathbf{y}}^{\mathbf{y}''}$ । दशा—भच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४७६ । रचनाकाल— \mathbf{x} । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६४० ।
- ४०६. हंस वत्स कथा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । झाकार—१०३ $^n\times ^3$ । दशा—जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—२३५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४१०. क्षत्र चूडामिल— वाडिमिसिह सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ । आकार— १०" \times ४२"। दशा—ग्रतिजीर्गं क्षीण । पूर्णं । भाषा— संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या— १२६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला १४, सोमवार, सं० १५४४ ।
 - ४११. सुल्तककुमार—सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । म्राकार-१०" $\times x_{\delta}^{p}$ " ।

दशा-जीर्गं क्षीरा । पूर्णं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-२००३ । रजनाकाल-फाल्मुन शुक्ला ४, सं० १६६७ में मूलतान नगर में पूर्णं किया गया । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १०, सं० १८०१ । लिपि भाणन्दपुर नगर में की गई ।

४१२ त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई--पं० जिनमति । देशी कागज । पत्र संस्था-७ । आकार-१२६ × ४६ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२३८४ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७०० । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, स० १८०० ।

विशेष—इसमें त्रेषठ क्लाका पुरुषों का अर्थात् २४ तीर्थंकरो, ६ नारायणों, ६ प्रति-नारायणों, ६ बलभद्रों एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन चरित्र विशास हैं।

विषय—काठ्य

- ११३. सन्यायपदेश शतक मैथिस मधुसूदन । देशी कागज । पत्र संख्या ६ । आकार ६ $" \times v_0^3$ " । दशा स्रतिजीर्शक्षीण । पूर्ण । भाषा संस्कृत । स्निपि नागरी । विषय काव्य । सन्य संख्या १८६६ । रचना काल \times । लिपिकाल ज्येष्ठ कृष्णा ११, सं० १८३८ ।
- ५१४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-द । म्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-भच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था-२५२६ । रचनाकाल- \times । निपिकाल-श्रावरा शुक्सा ६, शनिवार, सं० १८५४ ।
- ५१५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । ध्राकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times ५" । दशा-ग्रन्थः। पूर्णः । प्रत्यं । संख्या-२३११ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४१६. भव्यनायिका सक्षर्ण । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्ग क्षीरण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१३१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ५१७. भ्रनित्य निरूपसा चतुर्विंगति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । भ्राकार—-११ $'' \times \vee_{\overline{\nu}}^{\gamma}''$ । दशा—प्राचीन । । पूर्स्सं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६२३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४१८. धात्म सम्बोधन काव्य $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३०। धाकार-१० $^{\prime\prime}\times$ ४ 3_1 $^{\prime\prime}$ । दशा-ग्रितजीर्ग् क्षीण । पूर्ग् । भाषा-प्रपन्न श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या- १२८४। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ५१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । झाकार-११ $\frac{1}{8}$ " \times ५"। दशा- मृतिजीर्गा क्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१३४८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट---धन्तिम पत्र नहीं है।

- १२०. झात्म सम्बोध पंचासिका— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— \times १ । झाकार—११ $"\times \lor_{g}^{g}"$ । दशा—जीर्ग् । पूर्ण । भाषा—प्रपन्न श । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या— १२१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४२१. आर्थ वसुवारा धारसी नाम महाविद्या बोद्ध श्री मन्यन । देशी कामज । पत्र संख्या-१० । आकार-१०३ ×४५ । दशा-प्राचीन । पूर्स । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । सन्य संख्या-२५६० । रचनाक।ल- × । लिपिकाल-सं० १७४१ ।
- विष्यणी—यह बोद्ध प्रन्थ है। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पाठ कैसे किया जाता है इसमें, कृताया गया है।

५२२. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था ६ । ग्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा- प्राचीन । पूर्ण । श्रन्थ संस्था-२५६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

५२३. ईश्वर कार्तिकेय संवाद, रुद्राक्ष उत्पत्ति घारण मंत्र विधान— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—१० $\frac{1}{2}'' \times \lor \frac{3}{2}''$ । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

५२४. एक गीत - श्रीमती कीर्तिवाचक । देशी कागज । पत्र सख्या-३ । श्राकार— $\mathbb{C}_{\tau}^{9}'' \times \Psi''$ । दशा-जीर्ग । पूर्ग । भाषा-हिन्दी । तिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३५६ । रचनाकाल- \times । तिपिकाल- \times । मेड़ता में तिपि की गई ।

५२५ काठिन्य श्लोक $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । ग्राकार-६ $\frac{3}{9}'' \times 8\frac{5}{9}''$ । दशा-ग्रन्थ संख्या-२२४६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

५२६. क्रिया गुप्त पद्ध $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । ग्रांकार-१० $\frac{1}{9}$ " × ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्गं । पूर्गं । भाषा- संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२२५६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

४२७. किरातार्ज् नीय - भारिव । देशी कागज । पत्र संख्या ५१ । धाकार-११ $\frac{1}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । । ग्रन्थ संख्या-१८१८ रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

५२८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । झाकार-१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीगाँ । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या-१०७६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

५२६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या –६० । धाकार –६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ " । दशा – धण्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या –१०६७ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

नोट -- केवल प्रथम के दस सर्ग ही है।

५३०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-७२ । भाकार-११ $\frac{9}{5}$ " \times ५"। दशा-भाक्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

 χ ३१. प्रति संख्या χ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०७ । धाकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३७१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माध्र शुक्ला २, सोम-वार, मं० १६७५ को भ्रजयमेरु (भ्रजमेर) में लिपि की गई।

५३२. किरातार्ज्य नीय सटीक—मारिब । टीकाकार—कोचल मल्लीनाय सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ से ४८ । आकार-१२" \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—प्रच्छी । अपूर्णं । भाषा-संस्कृत । सिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८१६ । रचनाकास— \times । सिपिकाल-फाल्गुन सुवसा सं०१६६ ।

४३३. किराताणुं नीय सटीक—मारिष । टीकाकार-एकनाथ सट्ट । देशी कागज । पत्र संस्था-२ से ३६ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{2}{3}$ " । दशा-सामान्य । अपूर्ण । शाषा-संस्कृत । लिपि-

नावरी । क्रम्य संस्था-११११। रचनाकास- 🗙 । जिपिकास- 🗴 ।

४३४. कुमार सम्मय—कालिशास । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । धाकार—६ $\frac{\pi}{2}$ ४ $\frac{\pi}{2}$ । दशा—धण्डी । पूर्ख । भाषा—संस्कृत । जिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११३७ । रचना—कास— \times । लिपिकाल— \times ।

५३५. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—६५ । साकार—६" \times ४" । दशा— सहुत भ्रन्छी । पूर्ण । भ्रन्य संस्था—११७८ । रचनाकाल— \times । स्निपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, भंगल- वार, सं० १७१७ ।

नोंट-भाषाढ़ कृष्णा ७, सं॰ १७६४ में श्री चतुरमुज ने द्विज सारंगधर से अअमेर (अजमेर) में लीनी है।

४३६. कुमार सम्मव सटीक—पं० लालु । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । झाकार-१३ $\frac{3}{7}\times \frac{3}{7}$ " । दशा-धितजीर्ण कीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । म्रन्य संख्या-२६०५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

५३७. केशव बावनी—केशवदास । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । ग्राकार–१०३ $^{"}\times$ ४ $^{"}_{9}$ "।दशा–जीर्एं । पूर्णे । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रम्थ संख्या–२५२२ । रचनाकाल–श्रादण शुक्ला ५, सं० १७३६ । लिपिकाल–बैशाख शुक्ला १४, सं० १७५६ ।

४३८. खण्ड प्रशस्ति— \times ।। देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—११३ $"\times$ ४३" । दशा—जीर्ग क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशास शुक्ला ४, सं० १७१४ ।

४३६. प्रति संख्या २ । देशी कागज पत्र संख्या-३ । ग्राकार-१०३ $"\times$ ४३" । दशा- श्रितिजीर्गा क्षीर्गा । पूर्ग । प्रन्थ संख्या-१६१६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

४४०. गीत गोविन्द (सटीक) — जयदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—६४ । धाकार— ६ $\frac{9}{3}$ " \times ५ $\frac{9}{3}$ " । दशा—जीर्ग । पूर्ण । भाषा—हिन्दी भीर संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १८६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पौथ शुक्सा १४, सं० १७६० ।

४४१. गुरावर ढाल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२। श्राकार-५ $''\times$ ४''' । दशा- श्रच्छी । पूर्यां । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-२२६७ । रचनाकाल $-\times$ । लिपि-काल $-\times$ ।

४४२. गौतम पुरुवरी—सिद्धस्वरूप । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । धाकार— $-\frac{2}{3}$ । दशा—भ्रष्ट्वी । पूर्ण । भाषा—हिःदी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७७६ । रचना—काल— \times । लिपिकाल— \times ।

४४३. घटकपंरकाव्य $-\times$ ा देशी कागज । पत्र संख्या-२.। स्नाकार-११ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-त्रीर्ए क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२४० । रचनाकाक्ष $-\times$ । विपिकाक्ष $-\times$ ।

- ५४४- प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । ग्राकार—११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\circ}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—विशंकीरा। पूर्य । प्रत्य संस्था—२३३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १४४. प्रति संस्था ३। देशी कामज। पत्र संस्था-२। झाकार-१० हुँ "४१"। दमा-सुन्दर। पूर्यो। ग्रन्थ संस्था-२७६४। रचनाकाल-४। लिपिकाल-४।
- ५४६ खन्त्रप्रम हाल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-5 $'' \times$ 5'' । दशा-1 शब्धी । पूर्ण । भाषा-8हन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपि-काल $-\times$ ।
- ४४७. खार्नुमास व्याख्यान पद्धति—शिव निधान पाठक । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । माकार—१०३ $"\times$ ४३"। दशा—मञ्द्धी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५५२ । रचनाकास— \times । सिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ६, सं० १८०० ।
- ४४८. चौबोली चतुष्पदी जिनचंद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । झाकार— ६५ $^{\prime\prime}$ ×५ $^{5}_{7}$ । दशा—जीएं । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—२३६० । रचना—काल—सं० १७२४ । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ५, बुधवार, सं० १८२० ।
- ४४६. चौर पंचाशिका~-किव चौर । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । झाकार-६" \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७४५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ४४१. ढाल मंगल की— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—२। आकार—४ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा—प्रच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२२६५। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ४४२. ढाल सुन्नद्वग्री- \times । देशी कागज । पत्र संख्या-३। भ्राकार-प्र $%''\times 8''$ । दशा-भ्रष्ट्वी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२२८२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ५५३. दशल श्री मन्तिरजी $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । ग्राकार-६ $''\times$ ४-3''। दशा-ग्रन्थ संख्या-२३०१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ५५४. **डाल क्षमा को**—मृनि फकीरचग्वजी । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । आकार– $e'' \times s_{g''}^2$ । दशा–श्रन्छी पूर्तो । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२६ = रचनाकाल $=\times$ । लिपिकाल $=\times$ ।
 - ४४४. तीस बोल-- × । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । भ्राकार-७३" x ४"।

दका-श्रम्बी । पूर्यो । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

४५६. वया नर्संसह दाल — वया नर्संसह । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । आकार- ६ $\frac{9}{4}$ " \times \times " । दशा-श्रन्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रय संख्या-२२६४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल- \times ।

४५७. बजा अब्छेरा ढाल — रायचन्त्र । देशी काग । पत्र संख्या — २ । आकार — $= x \times x_0^2$ । दशा — अब्छो । पूर्ण । भाषा — हिन्दी । लिपि — मागरी । अन्य संख्या — २२६० । रचना — काल — सं० १८६५ । लिपिकाल — \times ।

विशेष-मेडता सेर में चौमासा किया तब श्री रायचन्द्रजी ने रचना की।

 $\chi\chi = 1$ दान निर्णय — सूत । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । म्राकार—१२" $\times \chi_{\tau}^{\xi}$ " । दशा—जीएाँ । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । सिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०७६ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।

४४६. द्विसन्वानकाष्य-नेमिचन्द्र । देशी कागज । । पत्र संख्या-२४४ । आकार--११ $\frac{3}{7}$ ×४ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्ग क्षीर्ग । पूर्ग । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १४, शनिव।र, सं० १७०४ ।

नोटः--विस्तृत प्रशस्ति उपलब्ध है।

५६०. द्विसन्धानकाव्य (सटीक)—नेमिजन्द्र । टीकाकार—पं० राधव । देशी कागज । पत्र संख्या—२२० । प्राकार—११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\circ\prime}_{9}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्ग्ग क्षीर्गा । पूर्ण । प्रावा—संस्कृत । लिपि — नागरी । प्रन्थ संख्या—१४०६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १७१७ ।

५६१. वर्म परीक्षा-व्यक्तितगती सूरि । देशी-कागज । पत्र संख्या-११७ । व्याकार----११"×४३ । दशा--जीर्गक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । क्षिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-१२२५ । रचनाकाल-सं० १०७० । लिपिकाल-सं० १७१५ ।

४६२. प्रति संस्था २। देशी कागज। पत्र संस्था-४६। भ्राकार-१४ \S'' \times ६ \S'' । दशा-बहुत घच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१२७३। रचनाकाल-सं० १०७०। लिपिकाल- \times ।

५६३. वर्ष परीक्षा-पं० हरिषेशा। देशी कागज। पत्र संख्या-११७। झाकार— $= \frac{3}{2} \times 3\frac{3}{2}$ । दशा-जीर्ग। पूर्ण। भाषा-झपश्चंश। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-५५= /A। रचनाकाल $= \times$ । लिपिकाल $= \times$ ।

४६४. धर्मशर्मभ्युष्य – हरिस्थन्य कायस्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२११ । धाकार-१० $\frac{3}{5}$ \times ४ $\frac{3}{5}$ $^{\prime\prime}$ । दक्षा-जीसंकीसः । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चंत्र ूंशुक्ला ७, सं० १६६२ ।

४६४. नन्दीस्वर कान्य-मृथेख । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । झाकार-१९"×४३"।

दशा-जीरों क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संख्या-२३४६ । रंचनाकाल- XI लिपिकाल- सं० १७२३ ।

५६६. नलवसयसी खउपई - समयसुन्दर सूरी। देशी कागज । पत्र संख्या-३० । शाकार-१०"×४० । दशा-प्रच्छी। पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पदा)। लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६४। रचनाकाल- सं० १६०३। लिपिकाल-ज्येष्ठ बुदी १, सं० १८२८।

५६७. नलोदय टीका—रामऋषि मिश्रः । टीकाकार-रिवदेषः । देशी कागजः । पत्र संस्था-३० । झाकार-१० $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{1}{9}^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्गः । पूर्णः । भाषा-संस्कृतः । लिपि-नागरी । मन्य संस्था-१८६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

४६८. नसोवय टीकाकार—रिवदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१९ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{g}$ । दशा-जीर्गक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८५० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७१० ।

५६६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३५ । आकार—६ $\frac{9}{5}$ " \times \times "। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११२५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

५७०. प्रति संख्या ३ । देशी कामज । पत्र संख्या—२४ । भ्राकार—१०३ $"\times$ ४ $\rangle^{"}$ । देशी कामज । पत्र संख्या—२५३५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल \sim बैणाख शुक्ला २, सं० १७७० ।

५७१. नवरत्न काच्य $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-२। ग्राकार-१० $\frac{2}{9}"\times$ ५"। दशा-ग्रन्थ संख्या-१७४१। रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल-माध गुक्ला १, सं० १८६७।

५७२. नीतिशतक—मर्नृहरि । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । धाकार-१२ $'' \times 8\frac{1}{2}''$ । दशा—धच्छी । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६३७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

५७३. नेमकी की ढाल— रायखन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । प्राकार— ६ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—प्रच्छो । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । प्रन्य संख्या—२२७७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विश्लोच-पाली में रचना हुई बताई गयी है, परन्तु समय नहीं दिया गया है।

५७४. नेमिदूत काव्य — श्री विकम देव । देशी कागज । पत्र संख्या —१ । श्राकार—१०हुँ" ×४हुँ" । दशा—मन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी १। मन्य संख्या—१६५६ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—उमेष्ठ कृष्णा १२, सं० १८६० ।

५७५. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या—७ । खाकार—१३ $"\times$ ५" * "। दशा—बहुत प्रख्यी। पूर्ण। सन्य संख्या—१६२६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा ६, शुक्र-बार, सं० १८२४।

नोट-इस महाकाव्य में भगवान नेमिनाथ के दूस का राजवति के पिता के यहाँ जाने

का वर्त्तुत है। इस ग्रन्थ में किंद विक्रम ने महाकविं कांसिदास कृतं मेघदूत काव्य के पद्यों के एक एक चरता को क्लोक के ग्रन्त में अपने अर्थ में प्रयोग किया है।

५७६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । म्राकार—१० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ "। दशा—जीर्ग्य । पूर्ग् । प्रन्य संख्या—२०३७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

५७७. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । झाकार-१०'' \times ५'' । दशा- धण्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२०६५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष कृष्णां ७, मंगलबार, सं० १६१६ ।

५७८. नेमिनिर्वाण सहाकाव्य —कवि वाग्महु । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । भ्राकार—११ $'' \times 8 \frac{1}{5}''$ । दशा—जीसां क्षीसा । पूर्ता । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—-११६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल — \times ।

५७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६० । प्राकार—११ $'' \times$ ६'' । दशा—धित जीर्गुं कीरा । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १५६४ ।

४ = ०. प्रतिसंख्या—३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ = । प्राकार—११ $'' \times \lor ^3_7''$ । दशा— जीर्ग्य । पूर्ग् । ग्रन्थ संख्या—२४३५ । रचनाकाल— \times । ,लिपिकाल—चैत्र शुक्ला १, बृहस्पितवार सं० १६६७ ।

४८१. नेवय काव्य-हर्षकीति । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । ग्राकार-६ $\frac{3}{7}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट:-- केवल द्वितीय सर्ग ही है।

५६२. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या $-\epsilon$ ६ । भ्राकार $-१४'' \times 2\frac{1}{2}''$ । दशा-जीर्गं क्षींगा । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-२६०१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-श्रीयन श्रुक्ला ११, बृहस्पतिबार, सं० १४१३ ।

४८३. पण्डानौ गीत $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-१। श्राकार-१० $''\times$ ४ $\frac{2}{5}''$ । दशा-श्रज्छी। पूर्य। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२४७८। रचनाकाल $--\times$ । लिपिकाल $--\times$ ।

४८४. पांच बोल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—६। ग्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४६ $^{\prime\prime}$ । दशा—ग्रन्थ । पूर्य । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल $-\times$ ।

५=६. प्रश्नोत्तर रत्नवाका-विनंत । देशी कांगज । वंत्र संस्था-- २ । प्राकार-

१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीएां सीएाँ । पूराँ । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रत्य संस्था—२५६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८७ प्रायशिकत बोल— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३। प्राकार ७ $\frac{3}{2}$ " \times ४"। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८१ । रचनाकाल— \times । लिपि—काल— \times ।

५८६. पंचमी सप्ताय—कांतिविजय। देशी कागज। पत्र संख्या-१। म्राकार—१० $\frac{3}{3}$ " \times ४ $\frac{3}{3}$ "। दशा-प्रच्छी।पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२७२२। रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

५६०. **बावन दोहा बुद्धि रसायरा – पं० मिहराज ।** देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । धाकार-६ $\frac{3}{5}$ " × ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-जीर्ग क्षीण । पूर्ण । भाषा-ध्रपभ्रंश धौर हिन्दी । लिपि-नागरी । सन्ध सख्या-२५३६ । रचनाकाल- \times । सिपिकास-सं० १७३३ ।

५६१. मस्तामर री ढाल — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । भ्राकार—७ $\frac{9}{7}$ " \times ४" । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

४६३. **मोज प्रबन्ध—किव वल्लाल ।** देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । श्राकार— १०" ×४" । दशा—जीर्गो क्षीर्गो । पूर्गो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६५ । रचनाकान— × । लिपिकाल—फाल्गृन कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १५५८ ।

४६४. मदन पराजय-जिनवेव । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । प्राकार-६ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत (चम्पुकाव्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११२५ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्सा ११, सं० १८३७ ।

 χ ६५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । भ्याकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times χ $\frac{3}{6}$ " । दक्ता-प्रच्छी । पूर्ण । प्रन्थ सख्या- १६४५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रथम ज्येष्ठ कृष्णा १०, सं० १८५८ ।

५६६ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । धाकार-१० $\frac{1}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-जीर्गाक्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११८८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावस सुक्ला २, सं० १५६२ ।

४६७. सदन पराजय—हरिदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । आकार—११५ $^{\circ}$ ४ $^{\circ}$ । दशा—जीर्ग । पूर्ण । भाषा—धपभ्रंश । लिपि—नागरी । प्रस्थ संख्या—१३०० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—धिवन गुक्ला १०, बृह्स्पतिवार, सं० १५७४ ।

- ४६८. मयुराष्टक-कवि मयुर । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । ग्राकार-६३'' \times ४'' । दक्षा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संख्या-२३५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६६. मेचकुमार ढाल मुनि यशनाम । देशी कागज । पत्र सस्या-४ । भाकार ६ $\frac{2}{3}$ " । दशा—जीर्गो । पूर्गो । भाषा—हिन्दी । किपि—नागरी । यन्थ संख्या—२०६६ । रचना-कास- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६००. मेचदूत काव्य--- कालिवास । देशी कागज । पत्र सख्या-७ । ग्राकार-१०" \times ४ $\frac{9}{8}$ " । दशा-जीएां । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सक्या-१३०३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-भाष्रपद ४, सं० १७८३ ।
- ६०१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । प्राकार-१०" \times ४ $\frac{9}{8}$ " । दशा— जीर्ग्ग । पूर्ग्ग । प्रत्य संख्या—-१४३३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—वैशास गुक्ला ३, बृहस्पति- बार, सं० १७४६ ।
- ६०२. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-१४। झाकार-१०" x ४ हु"। दशा-जीर्सा । पूर्ता । प्रत्य संख्या-२१३६। रचनाकाल-x । लिपिकाल-ग्रायिन कृष्णा ८, सं० १६२०।
- विशेष---सं० १६२० प्रश्विन कृष्णा द, सोमवार को पं० खेता ने प्रहिपुर में लिपि की है।
- ६०३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१०। ग्राकार-१० $\frac{3}{5}$ "×४ $\frac{3}{5}$ "। दशा-जीर्गा। पूर्गा। प्रन्य संख्या-२१४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-द्वितीय ग्राषाढ़ कृष्णा १, सं० १६८६ में ग्रहसदाबाद में लिपि की गई।
- ६०४. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । भ्राकार—११ $'' \times$ ५'' । दशा— अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६१ । रचना काल— \times । लिपिकाल-बैशाल कृष्णा ६, सं० १६८६ ।
- ६०५ मेघदूत काव्य सटीक—लक्सी निवास । देशी कागज । पत्र संख्या-३० । भाकार—६ $\frac{3}{3}$ " \times ४ $\frac{3}{8}$ " । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा १, सं० १७४५ ।
- ६०६. मेघदूत काव्य सटीक—विस्तंत वेश ।। देशी कागज । पत्र संख्या—१०। प्राकार—१३ $\frac{9}{7}$ × ५ $\frac{9}{7}$ । दशा—जीएँ। पूर्णं । भाषा—सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३४६ । रचनाकाल—×। लिपिकास—भाद्रपद कृष्णा १२, सोमवार, सं० १४८१ ।
- ६०७. मेचदूत काव्य सटीक-कालियास । टीकाकार-वस्त । देशी कागज । पत्र संख्या-२८ । ग्राकार-१२डुँ"×५डुँ" । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११७१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक गुक्ला ७, रविवार, सं० १८२२ ।
- ६०८. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२० । प्राकार- 5^{9} \times 5^{9} । दशा-जीरांकीरा । पूर्ण । प्रत्य संस्था-१०१८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- ६०१. प्रति गंक्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । श्राकार---१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{2}{3}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१०६३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६१० प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । आकार-१० हुँ" × ५ है" । दशा-अच्छी । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या-१७५६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-माथ शुक्ला १५, सं०१८१ ।
- ६११. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । भ्राकार-१२६ ×६ । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । प्रत्य सख्या-१७५३। रचनाकाल-४ । लिपिकाल-पौष शुक्ला ३, सं० १८५३।
- ६१२ प्रति संख्या ६ । (टीका-मिल्लिनाथ सूरि) देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । धाकार-१०३ $"\times$ ४ \S " । दशा- गीर्ग् । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- माघ कृष्णा १४, सं० १७६३ ।
- ६१३. मंगल कलश चौपई— लक्ष्मी हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । भाकार-१० $\frac{2}{3}$ × "४ $\frac{2}{3}$ " । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६१ । रचना-काल-माघ शुक्ला ११, बृहस्पतिवार सं० १७४६ । लिपिकाल-पोष कृष्णा १२, सं० १८०३ ।
- ६१४. यसक स्तोत्र—िखरन्तनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दणा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३२३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६१५. रघुवंश महाकाव्य—कालिवास । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । ग्राकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दणा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रग्थ संख्या—११३६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल— \times ।
- ६**१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज** । पत्र संख्या—३६ । **धा**कार $-१ \circ \frac{9}{5} " \times 8 \frac{9}{5} "$ । दशा—जीग्रं क्षीण । पूर्य । ग्रन्थ संख्या—२४६६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **६१७. प्रति संख्या ३**। देशी कागज । पत्र संख्या—३५ । द्याकार—१२ $\frac{1}{5}$ " \times ६" । दशा— धन्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—२२६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

बिशेष-नवम् सर्ग पर्यन्त है।

- ६१८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । धाकार-११ $''\times$ ५'' । दशा-जीएां । पूर्ण । प्रत्य सख्या-२५६८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १८०७ ।
- ६१६. रघुवंश वृत्ति—कालीवास । टीका-आनन्द देव । देशी कागज । पत्र संख्या-२ से १४० । झाकार-१०'' \times ४ $^{*}_{g}$ ''। दशा-जीर्ग् क्षींग् । झपूर्ग् । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

मोड---प्रथम पत्र नहीं है।

६२०. राम ग्राजा—-तुलसीवास । देशी कागज । पत्र संस्था—१६ । ग्राकार—-१•" \times ४ $^*_{\sigma}$ "। दशा—जीर्ग् । पूर्ण । ग्राषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२०४३ । रण्नाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

- ६२१. समुस्त्वराज काव्य सदीक लघु पण्डित । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । साकार-६ है" × ४ है" । दशा-जीर्श कीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । सिपि-नागरी । बन्य संस्था-२८३८ । रचनाकास-× । सिपिकाक-स० १६४८ ।
 - ६२२. **सक्यी सरस्वती संवाद**—श्री मूच्छ । देशी कागज । पत्र सस्या—३ । झाकार— १० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीर्ग्यंशीण । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—लागरी । ग्रन्थ संस्था—२११३ । रचनाकास— \times । लिपिकास— \times ।
 - ६२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । यत्र मरूया–३ । श्राकार–११ $'' \times$ प्र'' । दशा–शच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संख्या–२५४४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - ६२४. वर्षमान काष्य जयसित्र हल । देशी कागज । पत्र सख्या-५६ । धाकार १०५ $^{"}$ \times $3_{3}^{"}$ । दशा—धच्छी । पूर्ण । भाषा—धपभ्र श । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—४४३/भ्र । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - ६२४. **वसुधारा धारिरणी नाम महाविद्या**—नन्दन । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । धाकार—१० $'' \times x_g^{g''}$ । दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७६० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
 - विशेष —यह बोद्ध ग्रन्थ है। इसमें लक्ष्मी प्राप्ति के लिए कैसे पाठ किया जाता है, बताया गया है।
 - ६२६. बृन्दावन काश्य किव माना । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । धाकार ११ $\frac{9}{7} \times \frac{1}{2}$ । दशा जीगं क्षीण । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या २३३४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - ६२७. विकमसेन चौपई $-\times$ । देशी कागज । पत्र सख्या—प्र० । झाकार—१० $''\times$ ४ $^{9}''$ । दशा—श्रन्छी । पूर्णं । भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७४२ । रचनाकाल—स० १७२४ लिपिकाल— \times ।
 - ६२५. विदम्बमुक्समण्डल (सटीक)—धर्मदास बोढाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या— २२ । आकार—१० $\frac{2}{5}$ " \times \times $\frac{2}{5}$ " । दशा—जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १०६४ । दशाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - ६२६. विद्वद् सूष्य काष्य—बालकृष्ण मह्द । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । माकार-६" \times ४३" । दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२१२३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १६३० ।
 - ६३०. प्रति संस्था २ । देशी काग्रज । पत्र संस्था-६ । धाकार-१२ $\frac{1}{6}$ " \times प्र $\frac{1}{6}$ " । दशा-धन्छी । पूर्या । प्रत्य संस्था-२१४२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
 - ६३१. चिद्वद् भूषस्य सठीक-वालकुष्या सट्द । टीकाकार-मथुसूदन सट्द । पत्र संस्था-७७ । ब्राकार-९ $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_{7}$ । दशा-बहुत ब्रच्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नग्नगरी । ब्रन्थ संस्था-१५६५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- ६३२. विशेष महाकाव्य सटीक (ऋतु संहार)—कालिशास । टीकाकार—प्रमरकीति । देशी कागज । पत्र सस्या—२४ । धाकार—१०३''' ×५ $^{*}_{9}$ '' । दशा—जीगां । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लि1—नागरी । प्रथ्य संस्था—१६२४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—पीष शुक्ला १०, सं० १८४७ ।
- ६३३. वैराग्यमाला सहल । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । प्राकार १२" × ४६" । दशा प्रच्छी । पूर्ण । भाषा सस्कृत । लिपि नागरी । प्रन्थ संख्या २१०५ । रचनाकाल × । लिपिकाल प्रथम श्रावण कृष्णा ४, सं० १८२५ ।
- ६२४. वैराग्यशतक मतृंहरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । ग्राकार-११ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६१२ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६३५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । ग्राकार—१० $\frac{5}{5}'' \times 8\frac{5}{5}''$ । दशा— जीर्गा । ग्रपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६३६. वैराग्य शतक सटीक $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । भ्राकार-१० $\frac{1}{5}''\times$ ४ $\frac{1}{5}''$ । दशा-भ्राच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत भ्रीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७४५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ११, सं० १८५१ ।
- ६३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । भाकार——१० $\frac{9}{5}'' \times 8\frac{9}{5}''$ । दशा—धन्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावण धुक्ता ४, सं०१=४० ।
- ६३८. वैराग्यशतक सार्थ $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-८ । प्राकार-६ $\frac{9}{7}"\times$ ५"। दक्षा-जीर्ग क्षीर्ग । पूर्ण । भाषा-प्राकृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२०८६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १३, मंगलवार, सं० १८३१ ।
- ६३६. शत्रृंजय तीर्थद्वार नयमुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या ७ । ग्राकार १० $'' \times \vee_{\overline{\partial}}'''$ । दशा ग्रन्छी । पूर्गो । भाषा हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या २७६१ । रवनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ६४०. शिशुपालवध नह।कवि नाघ । पत्र संख्या—७३। झाकार—११ $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा—धन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२० । रचनाकाल \times । लिपिकाल कार्तिक कृष्णा ६, बुधवार, सं० १६५६ ।
- ६४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । प्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा- प्रतिजीर्श क्षीसा । प्रपूर्ग । प्रत्य संख्या-१४५८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६४२. शिशुपालवध सटीक \times । देशी कागज । पत्र संख्या—११८ । श्राकार—६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्एंझीस्म । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३७० । रवनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - ६४३. शिशुपालवथ सटीक-माध । टीकाकार ग्रामन्यदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-

८७। ग्राकार-१२हे" \times ५हे"। दक्ता-ग्रन्छी। प्रपूर्णं। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरी। ग्रन्य संस्था-१८२१। रचनाकास $-\times$ । लिपिकास $-\times$ ।

नोट—टीका का नाम 'सन्देह विषेविष' है। स्थारहवें सर्ग की टीका भी पूर्ण नहीं की नई है। प्रस्थ प्रपूर्ण है।

६४४. शीलरथ गाथा — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—१० $\frac{9}{5}$ " । दशा—जीर्गं क्षीए। पूर्णं । भाषा—प्राकृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—२५१७ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

६४४. शील विनती-कुमुदचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । झाकार-११ $'' \times x - 3$ ं । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी ग्रीर गुजराती मिश्रित । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४८३ । रचनाकाल $- \times$ । लिपिकाल $- \times$ ।

६४६. शीलोपारी चितासन पद्मावती कवानक $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । श्राकार $-१ \circ \frac{1}{6}$ " \times ४" । दशा-जीर्ग्य क्षींख्या । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या—२३२० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

६४७. सङ्क्रन चित्तवल्लम—मित्स्वियेग् । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१० $\frac{3}{4}$ " \times \times $\frac{1}{4}$ " । दशा—जीर्ग् । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । जिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६१३ । रचनाकाल— \times । जिपिकाल—वैशाख ुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४६ ।

६४ च. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भाकार—११कुँ $^{\prime\prime}$ \times ५कुँ $^{\prime\prime}$ । दशा— भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६७ व । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राचाढ़ कृष्णा २, शनिवार, सं० १८१७ ।

६४६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । ध्राकार-११'' \times x $\xi^{''}$ । दशा— भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सक्या-२४६१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ऽऽ रविवार, सं०१६८६ ।

विशेष---१६८६ पौष कृष्णा ७ शुक्रवार को बह्मचारी वेस्पीवास ने संशोधन किया है। इलोक संस्था २४ हैं।

६५०. प्रति संख्या ४। वेशी कागज । पत्र संख्या—५ । धाकार—६ $\frac{1}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा— भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५७७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—धाषाढ़ शुक्ला ११, मंगल- बार, सं०१८४४ ।

६५१. सन्तस्थ्यस्य समुख्यय-पं० भीमसेन । देशी कागज । पत्र संख्या--७१ । झाकार--११३ $''' \times ५३ ''$ । दशा-जीर्ण कीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि--नागरी । प्रन्थ संख्या--२२७४ । रचनाकाल-मात्र शुक्ला १, सं० १५२६ । लिपिक।ल-मंगसिर शुक्ला ३, सं० १६७६ ।

६५२. समगत बोल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-३ । धाकार-६ $\frac{1}{2}"\times8"$ । दशा-धन्छी । पूर्गं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२२=३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-सं० १६२७ ।

विश्रेष-सम्यवस्त्र का क्षेत्राम्बर प्राम्तास के प्रमुसार वर्सन किया गया है।

६४३. सम्यक्तवरास—बह्य जिनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । धानकार-६३ ×६३ । दक्का-जीर्स् । पूर्य । भाषा-दिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३१० । रचना-काल-× । लिपिकाल-पौष कृष्णा ३, सं० १८०० मालपुरा मध्ये ।

६१४. सिन्दुर प्रकरण — सोमप्रसाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या — ६। धाकार — १९ $\frac{1}{8}$ \times ४ $\frac{2}{9}$ । दशा — सीर्ण । भ्रपूर्ण । भाषा — संस्कृत । तिपि — नागरी । प्रन्थ संख्या — १३२४ । रचना काल — \times । तिपिकाल — \times ।

नोट-इस ग्रन्थ में केवल ७५ श्लोक ही उपलब्ध होते हैं। जबकि आचार्य की आन्य प्रतियों में १०० श्लोक उपलब्ध होते हैं।

६५५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । क्त्र संख्या-१२ । प्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-श्रतिजीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

६५६. प्रति संस्था ३। देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । झाकार-११ $\frac{1}{9}$ " \times \times $\frac{1}{9}$ " \downarrow दशा-ध्रतिजीर्श कीरा। पूर्श । प्रन्थ संस्था-२४२०। । रचनाकाल- \times । निपिकाल- \times ।

६५७. सिन्दुर प्रकरणसार्थ— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । झाकार—१०३ $^{\prime\prime}\times$ $\checkmark^{\prime\prime}$ । देशी-श्रांच्या—शिवार्ण श्रीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०४६ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

६४ म. सीता पश्चीसी — श्री वृद्धिचन्द । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । ग्राकार— १२" × ४ है" । दशा-जीर्ग क्षीरा । पूर्य । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१४३६ । रचनाकाल-सं० १६०० । लिपिकाल-माघ शुक्ला १२, सं० १६३६ ।

६५६. सीता सती जयमाला— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{3}_{0}$ । दशा—त्रीर्ग शीण । पूर्ण । शाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५०५ । रचनाकाल - \times । लिपिकाल— \times ।

६६०. सुभाषित रत्न संबोह — श्रमितगित । देशी कागज । पत्र संख्या—६२ । श्राकार— $११'' \times 8^{3}_{c}$ " । दशा—जीर्ग् कीरा। पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या –२६७८ । रचनाकाल—सं० १०५० । लिपिकाल—बैशाख कृष्णा ४, सं० १६३२ को नागोर में लिपि की गई ।

विशेष — सिपिकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति सिसी है। रचना बहुत ही सुन्दर और सरस संस्कृत में है।

६६१. सुमतारी डाल — शिब्बूराम । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । झाकार – $= \frac{2}{3}$ \times \times $\frac{2}{3}$ । दशा—शब्दी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—ताबरी । प्रन्य संख्या—२३०२ । रचनाकाल— \times । विपिकास— \times ।

६६२. सोनागीर पण्यीसी—कवि भागीरथ । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । झाकार- $9'' \times 8^{3''}_{7}$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । सन्य संस्था-२४६२ । रचना-काल-ज्येष्ठ शुक्ला १४, सं० १८६१ । लिपिकाल- \times ।

६६३. सोलो रो वाल--× । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । झाकार--इं"×४३"।

दशा-श्रष्ट्यो । पूर्णे । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

६६४ स्यूक्तभन्न मुनि गीतं — नथमल । देशी कागज । पत्र संख्या — १ माकार – १० $\frac{3}{5}'' \times$ ४ $\frac{3}{5}''$ । दशा — जीगुं क्षीण । पूर्ण । भाषा – हिन्दी । लिपि — नागरी । प्रत्य संख्या — २५७० । रचना कालं — \times । लिपिकालं — \times ।

६६५. श्रंगार शतक (सटीक) — मतृंहरि । देशी कांगज । पत्र संख्या- ३० । ग्राकार— ११ $\frac{3}{7}$ " \times ५ $\frac{5}{7}$ " । दशा—जीर्गा क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

६६६. श्रीमान् कुतूहक्क—विनय देवी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । भ्राकार—६६ * \times * * * । दशां—जीर्गः क्षीरा । पूर्णः । भाषा—ग्रंपंभ्रंशः । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४५१ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला २, सं० १६६० ।

नोट-इस प्रन्थ में कामिनी की कियाओं का वर्शन किया गया है।

६६७. क्षेम कुतूहल— क्षेम किव । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । धाकार $-१0\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—जीर्ग क्षींगा । पूर्गा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७५७ । रचना-काल—सं० १४५३ । लिपिकाल—सं० १६६३ ।

६६ - ज्ञान हिमची—कवि जगरूपं । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । श्राकारः १० $\frac{9}{7}$ " × ४" । दशा—ग्रच्छी । पूर्णं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०६४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

विशेष-मुसलमान, मुल्ला, पीर, ग्रल्ला झादि शब्दों का विवेचन तात्विक ढंग से किया गया है। ग्रन्थ इंटट्य है।

विषय-कोश साहित्य

- ६६६. धनेकार्थ मंजरी— नन्दवास । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । दशकार—१० $'' \times \times \frac{1}{2}$ ं। दशा—अञ्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—कोश । भन्ध संख्या—१३२८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला १३, वृहस्पतिवार, सं० १८२३ ।
- ६७०. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । स्राकार-६ $'' \times 8''$ । दशा-जीर्गा । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२०४० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६७१. धनेकार्थध्वनि मंबरी कवि सुद्र । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । प्राकार—१० $\frac{1}{8}$ " \times ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा—जीर्गं क्षीरा । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ८, शनिवार, सं०१६८१ ।

विशेष--नागौर में लिपि की गई।

विशेष -- ग्रन्थ के फट जाने पर भी ग्रक्षरों की कोई क्षति नहीं हुई है।

- ६७३. प्रित संस्था २ । देशी कागज । 'पत्र संस्था- १२ । श्राकार-१०" \times ४ $\frac{5}{5}$ "। दशा-जीएं कीएं । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२४१६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६७५. **धनेकार्य नाममाला** \times । देशी कागज। पत्र संख्या—६ । ध्राकार— १०" \times ४ $rac{3}{6}$ " । दशा—जीर्ग्य । प्राप्त । भाषा— संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या--२३०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६७६. ग्रमियान चिन्तामिरा—हेमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३०। ग्राकार—११" \times ४ $\frac{1}{6}$ "। दशा—ग्रतिजीर्ग्य क्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रम्य संख्या—१५७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पीष शुक्ला १, बुधवार, सं० १६१० ।
- ६७७. धनर कोश—धनरसिंह । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । ध्राकार— १० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दशा-जीर्ग क्षीरा। पूर्ग । भाषा—संस्कृत । स्निप-नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७१७ । रचनाकाल— \times । स्निपिकाल—कार्तिक शुक्ला १३, सं० १८१४ ।
- ६७८. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । ग्राकार-५ है × ४ है । दक्षा-जीर्रा क्षीरा। पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२२६८ । रचनाकाल-×। लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १३, सं १६०८ ।

विशेष--केवल प्रथम काण्ड मात्र ही है।

- ६७६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३६ से ११७ तक । धाकार—१२" \times ६ $\frac{3}{7}$ " । दशा—धच्छी । प्रपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५४६ । रचनाकाल— \times । लिपि—काल— \times ।
- ६८०. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ से ८१ तक । म्राकार— ११ $\frac{3}{6}$ " । दशा—मच्छी । म्रपूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२८६३ । रचनाकात— \times । सिपिकाल— फाल्गुन कृष्णा ३, बुषवार, सं० १८२२ ।
- ६=१. श्रमरकोश वृत्ति—श्रमरसिंह। वृत्तिकार— महेरवर शर्मा। देशी कागज। पत्र संख्या-६४। श्राकार-१२ $\frac{5}{5}$ " \times ४"। दशा-श्रच्छी । पूर्णः । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६=२। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-शक् सं० १७७१।
- ६८२. ग्रमरकोश वृत्ति—ग्रमरसिंह । वृत्तिकार—महोपाध्याय सुनुतिगमसूरी । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । ग्राकार-१२ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\circ}_{7}$ । दशा—ग्रतिजीर्ग क्षीगा । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रम्थ संख्या—१०२४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर सुदी ६, मंगलवार, सं० १७१२ ।
- ६=३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । द्याकार-११″ 🗴 ५है″ । दशा—ग्रतिजीर्गं क्षीण । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-२४०५ । रचनाकाल- 🗴 । लिपिकाल-मंगसिर घुक्ला ५, मंगलवार, सं० १६२२ ।

बिशेष---ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६५०० है।

- ६०४. एकाक्षर नाममाला—पं० वररुचि । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । याकार—१०'' × ४ $\frac{3}{9}''$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१००४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—भावण कृष्णा ६, सोमवार, सं० १६२२ ।
- ६८५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । धाकार-१२" \times ५ \S " । दशा-ग्रन्छी । पूर्ण । यन्य संख्या-१६७१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६८६. एकासरी नाममाला—प्राकसूरि । देशी कागज । पत्र संख्यां –२ । प्राकार १० $'' \times 3$ ्रे'' । दशा—जीर्गं क्षीरा । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । ग्रन्य संख्या २१५६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ६८७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । प्राकार-१०३ँ \times ४३ँ । दशा-जीर्गा । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२४३३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६८८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । भाकार-११'' \times $\vee \frac{3}{7}$ '' । दक्षा-और्एं क्षीरा । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या-२४१३ । रचनाकाल- \times । लिपिकास- \times ।
- ६८८. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-१ । प्राकार-१०३ $^{\circ}$ $^{\circ}$ × ४ $^{\circ}$ $^{\circ}$ । दक्ता-जीएँ । पूर्ण । प्रत्य संस्था-२८५८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ८, सं० १८२६ ।

- ६६०. क्रियाकोश—किशर्नीसह । देशी कागज । यत्र संस्था—३७ रे आकार—११ $\frac{3}{2}$ " \times १ $\frac{3}{2}$ " । दशा—जीएं । पूर्ण । सम्ब संस्था—२३११ । रचनाकास— \times । निपिकास— \times ।
- ६६१. मिल्ल नाममाला हिर्देश देशी कागज । पत्र संस्था + । आकार + १० $\frac{1}{6}$ $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{1}{5}$ । दशा प्रच्छी । पूर्ग । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संस्था १९४३। रचनाकाल \times । लिपि काल \times ।

नोट- ब्रन्थ का दूसरा नाम ज्योतिष नाममाला भी है।

- ६६२. चिन्तामिं नाममाला—हेमचन्द्राचार्यः । देशी कांगले । पत्र संख्या-४४ । प्राकार-१०५ "४४५" । दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११७७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-धश्विन बुदी २, सं० १६७८ ।
- ६६३. द्वि ग्रमिकान कोत्त \times । देशीं कागज । पत्र संख्या ११। श्राकार म $\frac{1}{2}$ \times \times \times \times । दशा जीर्ग् । पूर्ग । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १६८६ । रचना काल \times । लिपिकाल \times ।
- ६६४. धनं जय नाममास्या—धनं जय। देशी कागज। पत्र संस्था—१०। धाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ५"। दशा—जीएाँ क्षीए। पूर्णः। भाषा—संस्कृतः। लिपि—नागरीः। ग्रन्थः संस्था—१७६६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **६६५. प्रति संस्था** २। देशी कागज। पत्र संस्था-१३। ध्राकार-१०न्नै $'' \times ४$ न्नै''। दशा-प्रच्छी। पूर्णे। प्रत्य संस्था-१६६६ । रचनाकास $-\times$ । लिपिकास $-\times$ ।
- ६६६. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-१० । प्राकार-११" \times $\chi_{\overline{\xi}}$ " । दशा-भाग्छी । पूर्त । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१७५० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष सुक्ता १२, सं० १८२२ ।
- ६६७. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था—१३ । धाकार—१०" \times ४ $\frac{2}{7}$ " । दशा— जीसं कीरए । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१४५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६६८. प्रति संख्या ५ । देशी मानजः। पत्र संख्या∸१३ । झाकार-१० है" ४४ ई" । दक्ता-जीर्ग जीखः । पूर्गः । ग्रम्म संख्या-१३६५ । रचनाकाल- ४ । लिपिकास- ४ ।
- ६९६. प्रति संस्थां ६। वेसी कागज । पत्र संस्था—१४। प्राकार—१० हैं \times ४ हैं । दशा—जीएँ। पूर्ण । प्रत्य संस्था—२१२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—उथेष्ठ शुक्ला १, सै० १८०४।
- ७००. प्रति संस्था ७ । देशी कागज । पत्र संस्था-१० । ब्राकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times $\frac{1}{2}$ " । दशा-
- ७०१. प्रति संस्था म । देशी कागज । पत्र संख्या-१म । ग्राकार-१०६ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{9}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७०२. प्रति संस्था ६। देशी कागज । पत्र संस्था-१४। प्राकार-११ $\frac{\pi}{2}$ " \times ५"। दशा- जीखं क्षींसा । पूर्छ । ग्रन्थ संस्था-२६५०। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, सोमवीरं, सं० १४६२।

- ७०३. प्रति संस्था १०। देशी कागज। पत्र संख्या-१६। भाकार-१०"४४हे"। दशा-जीर्गं क्षीरमु । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-२४१८। रचनाकाल-४। लिपिकास-कार्तिक सुक्सा ४, सं०१७१४।
- ७०४. **नाममाला हैनचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था-४० । धाकार-**१०१ ×४३ । दशा-व्यक्तिजीगं क्षीरा । पूर्वा । ध्ववा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ब्रन्य संस्था-१२६६ । रचनाकाल- × । विधिकाल-मंगसिर शुक्ता १२, वृहस्पतिवार, सं० १६३४ ।
- ७०५. **नाममाला कवि धनंजय** । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । धाकार-११″×४हुँ^त । दक्ता-जीर्ग् शीर्ग् । पूर्वं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-१३०७ । एकनाकाल- × । विधिकाल-ज्वेष्ठ सुक्ला ११, सं० १६८१ ।
- ७०६. पुष्पास्त्रय कथाकीश—रामचन्त्र । देशी कागज । पत्र संख्या-२०३ । झाकार-१०" × ४३" । दका-श्रक्ति । पूर्ष । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्य संख्या-११२२ । रचनाकास- × । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १५, सं० १८६२ ।
- ७०७. महालक्ष्मी पद्धति—पं० महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । धाकार- ६३ $^{\prime\prime}$ \times ५ 3 $^{\prime\prime}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-आवर्ग कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६२२ ।
- ७०८. शानमंबरी नाममाला—नन्ददास । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । श्राकार— ७३ $"\times$ ६" । दशा—ग्रन्छी । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८७७ । रचना- काच $-\times$ । सिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १६०३ ।
- ७०१. लघुनाममाला—हर्षकीति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । झाकार—१०" \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्रो । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०६० । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन ग्रुक्ता १, सं० १८७३ ।
- ७१०. विमानुसासन—समर्पसह । देवी कानज । पत्र संख्या-१ । धाकार-११"४४"। दशा-जीएां शीएा । पूर्णे । भाषा-संस्कृतः । विविक्तानगरी । ग्रन्थ संख्या-१३०६। रचनाकाल- ४ । विधिकाल-भाद्रपद्म कृष्णा १३, सं ०१८६४।
- ७११. प्रक्ति संख्या २ । देकी कागज । पत्र संख्या-७४-६६ । झाकार-११"×६" । दशा-कीर्सा । सपूर्ण । सन्य संख्या-१०७६ । रचनाकाल्- × । लिपिकाल नाच शुक्ला ४, सं∙ १८६६ ।

भीट-इसे असरकोश भी कहा बया है।

विषय-चरित्र

- ७१२. **धर्षुत चौपई**—समयसुन्दर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२०.। धाकार-१० $\frac{3}{7}$ " । दशा-ग्रतिजीर्ग्य क्षीया । पूर्या । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय- परित्र । ग्रन्थ संख्या-१११० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७१३. स्रवन्ति सुकुमाल महामुनि सर्खन-महानम्ब मुनि । देशी कागज । पत्र संस्था-४ । स्राकार-१०३ $''' \times ४९$ $''' । दशा-अच्छी । पूर्यो । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । प्रन्य संस्था-२५२४ । रचनाकाल-<math>\times$ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७६६ ।
- ७१४. उत्तम चरित्र— \times । देशी कागज। पत्र संख्या- \times । ग्राकार-१० $\frac{2}{3}$ " \times ४ $\frac{2}{3}$ "। दशा-भच्छी। पूर्या। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-चरित्र। ग्रन्थ संख्या-१५१३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७१५. ऋषमनाथ चरित्र—भ० सकलकीति । देशी कागज । पत्र संख्या-१४६ । धाकार-१२ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-भ्रज्ञे । पूर्ण । भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । सन्य संख्या-२६७७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १२, सं० १८३३ ।

विशेष-श्लोक संख्या ४६२८ हैं।

- ७१७. करकण्ड, महाराज चरित्र—कनकामर । देशी कागज । पत्र संख्या—७३ । धाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—ध्रतिजीर्गं । पूर्गं । भाषा—ध्रपभ्रं श । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १०७० । रचनाकास— \times । लिपिकास— \times ।
- ७१८. कुल व्यव चौपई--पं० क्यसर । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । झाकार-१०" ४४ । दशा-ओर्ए कीए । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी । ग्रम्थ संख्या-१३६६ । रचनाकाल-प्रश्विन शुक्ला १०, सं० १७३४ । लिपिकाल-प्रश्विन कुष्णा २, वृद्धस्पतिवार, सं० १७३३ ।
- ७१६. गुज सथन्टप चरित्र -पं० सुन्दरशकः। देशी कागजः। पत्र संख्या-१८। आकार--१०" × ४० । दशा-जीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरी। ग्रन्थ सख्या-१२०६। रचनाकाल-प्रथम ज्येष्ठ बुदी १५, बुधवार, सं० १५५३। लिपिकाल-श्रावण शुक्ला १२, शनिवार, सं० १६७०।
- ७२०. गौसमस्वामी चरित्र मण्डलाखार्य वर्मचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या ३१ । आकार १२" × ५२ । दशा अच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १२२९ । रचनाकाल ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १७१६ । लिपिकाल चैत्र कृष्णा ८, शुक्रवार, सं० १८३१ ।

७२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३ । फ्रांकार-११३ " × ६३" । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८६७ । रचनाकाल- × । सिपिकास-प्रश्विम शुक्ला ११, मिनिवार, सं० १८२१ ।

७२२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । प्राकार-१०६ × ४६ । दक्षा-प्रक्षी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११३६ । । रचनाकाल-जेष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सँ० १७२६ । लिपिकास-पौष शुक्ला ६, रविवार, सं० १८४८ ।

७२३. प्रति संख्या ४। देशी कागज। पत्र संख्या-२३। ग्राकार-११ है"×५ है"। दशा-ग्रच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२५५५। रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १७२६। लिपिकाल-ग्रश्चित शुक्ला ११, सं० १८२५।

७२४. चन्द्रप्रम चरित्र—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संस्पा–६२ । झाकार— १२ $\frac{9}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७४३ । रचनाकाल—भाद्रपद ६, सं० १७२७ । लिपिकाल—ग्राषाढ कृष्णा २, सं० १५४४ ।

भ्राविभाग---

श्रियं चन्द्रप्रभो नित्यां चन्द्रदश्चन्द्र नांखनः।
भव्य कुमुद्दचन्द्रो वश्चनद्रप्रभो जिनः कियात्।। १ ॥
कुशासन वचोब्डज्जगत्तारण् हेतवे।
तेन स्ववाक्य सूरास्त्र धर्मपोतः प्रकाशितः।। २ ॥
युगादौ येन तीर्थ्रोशा धर्मतीर्थः प्रवतितः।
तमहं वृषभं वन्दे वृषदं वृषनायकम्।। ३ ॥

धन्तमाग---

जिनरुनिदृढ्मूलो ज्ञान विज्ञान पीठः शुभवितरसा साखश्चारुशीलादि पत्रः । सुगुरावयसमृद्धः स्वर्गसौल्यश्रसूनः शिवसुखफलदो वै जैनधमंद्रृ मोडस्तु ॥ ८४ ॥ भूमृन्नेत्राचलशस्वरांकप्रमे (१७२७) वर्षेडतीते नवमीदिवसे मासि भाद्रे सुयोगे । रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि नाभेयस्य प्रवरभवने भूरिशोभा निवासे ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

> रम्यं चतुः सहस्राणाि पन्वदशयुतानि वै। भनुष्दुष्कैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणतः ॥ ५६ ॥

इति श्रीमण्डलस्रि श्रीभूत्रण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचन्द्र शिष्य कविदांमोदर-विरि**षते** श्री चन्द्रप्रभचरिते श्री चन्दप्रभ निर्वाणगमन वर्णुनो नाम सप्त-विशंतितमः सर्गः।

७२४. प्रति संख्या २। देशी कागञ्ज। पत्र संख्या-६५। प्राकार-१४"×६३"। दशा-अच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-११५०। रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १७२७। लिपिकास-सं० १८६६।

- ७२६. **बन्धमन चरित्र यशः कीति ।** देशी कागज । पत्र संख्या—११७ । ग्राकार—१० $'' \times \times_{\frac{1}{2}}''$ । दशा—जीर्यं क्षीर्यं । पूर्यं । भाषा—ग्रपभ्रंश । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३५५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राथ शुक्ला ४, सं० १६०१ ।
- ७२७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—६४ । आकार— १० $\frac{1}{6}$ " \times ५ $\frac{1}{6}$ । दशा—जीर्ग क्षीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१३४१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—बैशाख कृष्णा १०, सं० १६२७ ।
- ७२६. चन्त्रलेहा चरित्र—रामवस्त्रभा देशी कागज । पत्र संख्या—३५ । आकार—१०" × ४" । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५२६ । रचनाकाल—ग्रक्षित शुक्ता १०, रिववार, सं० १७२८ । लिपिकाल—पौष कृष्णा १०, सं० १८५४ ।
- ७२६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४४ । भ्राकार—६" \times ४ $\frac{5}{5}$ " । दशा—धन्सी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७५१ । रचनाकाल—ग्रश्वित शुक्ला १०, सं० १७२८ । लिपिकाल—माथ शुक्ला ११, सं० १८३१ ।
- ७३०. **चरित्रसार टिप्प्स्—चामुण्डराय** । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । **ग्राकार-१०** $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीगं । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५१० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७३१. चेतन कर्म चरित्र— भैया मगवतीदास । देशी कागज । पत्र सख्या— १२ । भ्राकार-१२" × ४हुँ" । दशा-भच्छी । पूर्ण । भ्राषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या— २१२२ । रचनाकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ७, मंगलवार, सं० १७३२ । लिपिकाल-मगसिर कृष्णा ३, सं० १८६ ।

विशेष-इस ग्रन्थ की लिपि नागौर में की गई।

- ७३२. **चेतनचरित्र--यशःकीर्ति** । देशी कागज्ञ । पत्र सख्या—१५ । श्राकार--११-३[™] ×५३[™] । दशा-जीरौ । पूर्यो । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६६ । रचनाकाल- × । लिपिकास-फाल्युन शुक्सा ६, सं० १६०= ।
- ७३३. सम्बूक्ष्याचीयरिश्च-म० सकलकीर्ति । देशी कागज। पत्र संख्या-५८। साकार-१०" ×४३ । दक्षा-जीर्ग क्षीरा। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८०३। रचनाकाल-×। लिपिकाल-×।
- ७३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७५ । प्राकार-११ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{2}$ " । दशा-जीर्गं क्षीरा । पूर्गं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नानरी । ग्रन्थ संख्या-१०=५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १७१३ ।
- ७३४. प्रति संस्था ३। देशी कागज। पत्र संख्या-४८। धाकार-१४" × ७"। दशा-पन्छी। पूर्ण। प्रन्य संख्या-२६१९। रचनाकाल-×। निपिकाल-प्राणाद शुक्ला १४, मंगनवार, सं० १८६६।

विशेष- श्लोक संख्या २१७० हैं।

७३६ जम्बूस्वासीखरिक \times । देशी कागज । प्रत्र संख्या-१२ । स्राकार-१० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दक्षा-जीर्ग । पूर्ण । माथा-हिन्दी । लिपि-नागरी । सन्य संख्या-२७१४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ७, सं० १७२४ ।

७३७ विनवसंवरित्र — पं० लाख् । देशी कागज । पत्र संख्या—१४८ । माकार—१० $\frac{2}{5}$ "×४ $\frac{3}{5}$ "। दशा—प्रतिजीर्गं क्षीरा। । पूर्यं । भाषा—प्रपन्नं श । लिपि—नागरी । प्रन्य संख्या—१२६१ । रचनाकाल—पौष बुदी ६, सं० १२७५ । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुधवार, सं० १४६८ ।

नोट-- ज्येष्ठ कृष्णा ६, बुघवार को नागपुर (नागीर) में मुहम्मद **स्त्री के राज्यका**स में लिपि की गई है।

७३८. जिनवत्तवरित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । भ्राकार—१३ $''\times$ ४ $^{*}_{\mathbf{q}}$ '' । दशा—जीएां । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३४८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष इस ग्रन्थ में १०६० श्लोक हैं, संपूर्ण ग्रन्थ में ६ सर्ग हैं। श्री विश्वानन्यकेन ने भ्रपने पढ़ने के लिए लिपि करवाई।

७३६. जीवंघरचरित्र—म० शुमचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—७७ १ स्राकार—११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—स्रतीजीर्ग् क्षीमा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नामरी । ग्रन्थ संख्या—१३७० । रचनाकाल—स्रश्विन भुक्ला १३, सं० १६२६ । लिपिकाल— \times ।

भाविभाग---

श्रीसन्मतिः सतां कुर्यात्समीहितफलं परं। येनाप्येत महामुक्तराजस्य वर—वैभवः॥१॥

धन्तभाग —

येथां धर्मकथासुयोगसुविधिज्ञान प्रमोका, गमाचार श्रीमुभचन्द्र एव भविनां संसारतः संभवं । मार्गादर्शनकोविदं हतहितं तासस्यभारं सदा, खिद्याद्वाविकरसौः कथंचिदतुर्लैः सर्वत्र सुस्थापिधः ॥ ५ ॥

श्रीमूलसंघो यानिमुख्यसेव्यः श्रीभारतीगच्छ विशेषशोमः। मिध्यामतध्वान्त विनाशदक्षो जीयाच्चिरं श्रीशुभवन्द्रभासी ॥६॥

> भीमद्विक्रमभूपतेवंसुहत द्वैतेशते सप्तके, वेदैः न्युनतरेसमे शुभतरे मासे वरेण्ये गृचौ । वारे गीष्पतिके त्रयोदश तिथौ सन्तूतने पत्तने, श्रीवनद्वश्रभवान्नि वै विरक्तिः चेदं मया तोषतः ॥७॥

भाचंद्रार्के चिरं जीयाच्छुभचन्द्रे ए भाषितं । चरितं जीवकस्याऽत्र स्वामिनः शुभकारएां ॥ प्या

इति श्री मुमुक्षु -- शुभवनद्रविरचिते श्रीमण्जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्ष गमनवर्गानं नाम त्रयोदशोलभ ॥१३॥।

७४०. घन्यकुमारचरित्र— ब्रह्म नेमिवल । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । घाकार— १०६ \times ४६ । दशा-जीर्ग क्षीम्म । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

७४१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२२ । प्राकार-११ $''\times$ ५ $^{*}_{0}$ '' । दशा-जीर्ग । पूर्य । प्रत्य संस्था-२३४१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

७४२. घन्यकुमार चरित्र—म० सकलकीति । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । धाकार—११ $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{9}{7}$ "। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२५१ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—बैशाख कृष्णा ४, रविवार, सं० १८५० ।

७४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । ध्राकार-११६ × ५ । व्यक्ता-जीर्गा । पूर्यो । ग्रन्थ सं० १८६१ । रचनाकाल-४ । लिपिकाल-सं० १८४४ ।

७४४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-२०। ग्राकार-१०३ $"\times$ ४ 3 "। दशा-जीएं। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या--२३६३। रचनाकाल-- \times । लिपिकाल--माध शुक्ला ४, मंगलवार, सं० १६६४।

ब्रादिमाग---

स्वयंभूवं महावीरं लब्बाक्तन्तचतुष्टयं।
शतेन्द्रप्रणतं वन्दे मोक्षाय शरणं सताम् ॥१॥
प्रणमामि गुरुं श्वैव सर्वसत्वाक्त्रभयंकरान् ।
रत्नत्रयेण संयुक्तान्समाराणंवतारकान् ॥२॥
दिश्यास्मरस्वती बुद्धि मम मन्दिष्धयो दढां।
भक्त्यानुरंजिता जेती मातेव पुत्र वस्सला ॥३॥
स्याद्वादवावयसंदर्भ प्रणमम् परमागमम् ।
श्रुतार्षभावनां वक्ष्ये कृतपुष्येन भाविताम् ॥४॥

धन्तमाग---

यः संसारमसारमुन्नतमितक्रांत्वा विरक्तोक्षवद्धत्वा मोहमहाभटं शुभमना रागांधकारं तथा। भादायेति महात्रतं भवहरं माशाक्यसेनो मुनि-नीर्मं न्थ्यं सुखदं चकार हृदये रत्नवयं मण्डनं ॥१॥

शिष्योध्युत्पदपंकजैकभ्रमरः श्रीनेसिसेनोविभूस्तस्य, श्रीगुरु प्रवस्य सुनपाश्वारित्रभूवान्वितः । कामकोधमदान्य गन्य करिणो ध्वंसे मृगार्गा पति:, सम्यग्दर्शन-बोध-साम्य निचितो भवयां ब्रुखानां रविः ॥२॥ पाचारं समितीर्दधी दशविषं धर्मं तपः संयमम् सिद्धान्तस्य गणाधिपस्य गुणिनः शिष्यो हि मान्योऽभवत् । सैद्वान्तौ गुरमभद्रनाममुनियो मिध्यात्वकामान्तकृत् स्याद्वादामलरत्नभूषरमुघरो मिध्यानयध्वंसकः ॥३॥ तस्येयं निरलंकारा प्रन्थाकृतिरसुन्दरा। धलंकारवता दृष्या सालंकाराकृता न हि ॥४॥ शास्त्रमिदं कृतं राज्ये राश्री श्रीपरमार्दिनः। पुरे विसासपूर्वे च जिनालयैविराजिते ॥४॥ यः पाठयति पठत्येव पठन्तमनुमोदयेत्। सः स्वर्गे लभते भव्यः सर्वाक्षसुखदायकं ॥६॥ लम्बकं बुक डगोत्री : भूच्छुभ चन्द्रो सहामनाः । साधुः सुशीलवान शान्तः श्रावको धर्मवत्सलः ॥७॥ तस्य पुत्रो वभूवाऽत्र बल्हालो दानवान्वशी। परोपका रचेतस्को 👚 - न्यायेनाजितसद्धनः ॥५॥ धर्मानुरागिणा तेन धर्मकथा निबन्धनं। चरितं कारितं पुण्यं शिवायेति शिवायिनः ॥६॥

इति घन्यकुमारचरित्रं सम्पूर्णे।

७४६. प्रति संख्या २ । पत्र संख्या—६ । ध्राकार—६ $\frac{2}{5}$ " \times ३ $\frac{2}{5}$ " । दशा– प्रतिजीर्गं । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या—११७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं०१५२० ।

७४७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । ग्राकार-११ $\frac{1}{3}$ " \times ५" । दशा- श्रतिजीर्श क्षीण । पूर्य । ग्रन्थ संख्या-१४१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड—कई पत्र परस्पर चिपक गये हैं जिनको ग्रलग करने पर भी ग्रक्षर स्पष्ट नहीं हैं।

७४८. श्रन्यकुमारचरित्र —पं० रयथ्। देशी कागज। पत्र संख्या - १४। ग्राकार—
१०"×४३ । दला-जीएँ क्षीएा। पूर्णं। भाषा-ग्रपभंश। लिपि-नागरी। ग्रम्थ संख्या-१२३६।
रचनाकाल—×। लिपिकाल-×।

७४९. नवपदयंत्रवक्कद्वार (श्रीपालवरित्र)-× । देशी कागज। पत्र संख्या-३। बाकार-१०"×५२"। दक्षा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । प्रन्य सख्या-१६३०। रचनाकाल-× । लिपिकान-ज्येष्ठ भृक्ला ६, सं० १९२२।

- नोट---यह ग्रन्थ श्वेतास्वराय्नाय के अनुसार है। इसमें औपाल का चरित्र प्राकृत गाथाओं में निबद्ध किया हुआ है।
- ७४१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या ६७ । प्राकार-१२"×४" । दशा-जीर्ग्य सीर्ग्य । पूर्ण । प्रत्य संख्या- २६७६ । रचनाकाल × । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ४, सोमवार, सं०१४३८ ।
- ७५२. नागकुमारचरित्र पं० धर्मधर । देशी कागज । पत्र संख्या ४२ । घाकार १९-१ " ×५" । बशा जीर्ग क्षीण । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १९३४ । रचनाकाल श्रावण शुक्ला १५, सोमवार, सं० १२१३ । लिपिकाल चैत्र शुक्ला २, शुक्रवार, सं० १५६६ ।
- ७५३. नागकुमार चरित्र—मिल्लिषेण सूरी । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । धाकार—११ $\frac{1}{3}$ " \times ५" । दशा—जीएाँ क्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

षादिमाग--

श्रीनेमि जिनम्नस्य सर्बसत्विह्तप्रवस् ।
वस्ये नागकुमारस्य चरितं दुरित।पहं ॥१॥
किविभिजंयदेवादयैर्पद्यैविनिर्मितम् ।
यस्तदेवारित चेदन विषम् मन्दमेष्माम् ॥२॥
प्रसिद्धैः संस्कृतैर्वापयैविद्वज्जन मनोहरम् ।
तन्मया पद्यबन्धेन मल्लिषेगोन रच्यते ॥३॥

श्रन्त माग---

श्रुत्वा नागकुमार चारु चरितं श्री गौतमेनोदितं ।
मध्यानां सुखदायकं भवहरं पुण्यास्रवोत्पादकं ।
नत्वा तं मुगधाधियो गराधर भक्त्या पुरं प्रागम—
च्छीमद्राजगृह पुरन्दरपुराकारं विभूत्या सम ।।६१।।
इत्युमयभाषाकविषक्रवर्ति श्री मल्लिषेरासूरि
तिरचितायां श्री नागकुमार पचमीकथ—यां नागकुमार मुनीश्वर—
निर्वारागमनो नाम पंचमः सर्गः।

७४४. नागभीवरित्र—कवि किशनसिंह। देशी कागज। पत्र संख्या-२८। वाकार-९"×४२"। दशा-प्रच्छी। पूर्णा भाषा-हिन्दीपद्ग। लिपि-नागरी।ग्रन्थ संख्या-११६२। रचनाकान-श्रावग्ग बुदी ६, बृहस्पतियार, सं०१७७०। लिपिकाल-कार्तिक गुक्का २, स०१७७६।

- ७५५. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—१८ । प्राकार—६ $\frac{1}{5}$ " \times ५"। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१०१५ । रचनाकास—श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १७७३ । लिपिकाल— \times ।
- ७५६. नैवश्रवित्त्र (केवल द्वितीय सर्ग) महाकवि हर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । ग्राकार—१२" \times ६" । दशा—श्रच्छी । पूर्यां । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ७५ ः पहजंगमहाराज चरित्र पं॰ दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या ११ । म्राकार ११ $\frac{2}{7}$ \times ४ $\frac{2}{7}$ । दशा जीगं क्षीए। पूर्ण । भाषा ग्रपभ्रंश । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १७७२ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ७५८. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—६६ । श्राकार—११ $\frac{\pi}{2}$ $^{\prime\prime}\times$ χ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्गु क्षीगा । पूर्णु । भाषा—श्रपभ्रं स । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१७६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ७५६. प्रति संस्था ३। देशी कागज । पत्र संख्या-६ । म्राकार १० $\S''\times\chi''$ । दशा-ग्रन्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सस्था-१७६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७६०. ४०७. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या—७८ । प्राकार—११ $"\times$ ५ \S " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०६१ । त्रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावरा मृक्सा ४, मगलवार, सं० १८२१ ।
- ७६१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३१ । श्राकार-१० $''\times$ ४ $^{*}_{2}$ ' । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१११४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ४ मंगलवार, सं० १८२१ ।
- ७६२. प्रति संस्था ६। देशी कागज । पत्र संस्था-१०६ । द्याकार-११६ $"\times$ ४५" दशा-जीएं क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१२४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७६३. प्रद्युम्न चरित्र—पं० रयधू । देशी कागज । पत्र संख्या-११६ । झाकार-१० $\frac{3}{7}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । देशा-जीर्स क्षीरा । पूर्य । भाषा-ध्रपश्च श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४१० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७६४. प्रद्युम्न चरित्र—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१३० । ग्राकार--१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-जीर्ग्य । पूर्ग्य । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३७२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष शुक्ला ६, शनिवार, सं० १६६० ।
- ७६५. प्रद्युम्न चरित्र श्री सिंह। देशी कागज । पत्र संख्या-११८ । धाकार--१० $\frac{3}'' imes 3 \frac{1}{3}''$ । दशा-जीर्रा । पूर्ण । भाषा-धपभ्र श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०७२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
 - ७६६. प्रति संख्या २। । देशी कागज । पत्र संख्या-१४३ । भाकार-१ हुँ"×४३ ।

- दशा-जीर्गं क्षीण । पूर्गं । ग्रन्थ संख्या-११३१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला १४, बृहस्परिवार, सं०१६८० ।
- ७६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४०३ । प्राकार-५ 3 / \times ६"। दशा- प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ७६८. प्रद्युम्न वरित्र— आचार्य सोसकीति । देशी कागज । पत्र संख्या—१३८ । धाकार—१२ $^{\prime\prime}$ \times १ $_{2}^{3}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११२४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—आवाढ ब्रदी ११, मंगलवार, स० १६२८ ।
- ७६९. प्रमजंन चरित्र \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । श्राकार-११ $"\times$ ५" । दशा-जीर्ग क्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२११४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १, रिववार, सं० १७४२ ।
- ७७०. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१२ । ग्राकार-१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा- प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२०१० । रचनाकाल \times । लिपिकाल-ग्रश्विन शुक्ला १४, शनिवार, सं० १७०० ।
 - नोट--यशोधर चरित्र पीटिका मे से ही प्रमजनचरित्र लेकर वर्णन किया गया है।
- ७७१. प्रीतिकरमहामुनि चरित्र— कहा नेमिदलः। देशी कागजः। पत्र संस्या—३०। धाकार—११" \times ५"। दशा—जीएं क्षीरणः। पूर्णः। भाषा—संस्कृतः। लिपि—नागरीः। ग्रन्थ संस्या—१५८१। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ७७२. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र सक्या-२६ । द्याकार-११६ $^{\circ}_{5}$ " \times ४ $^{\circ}_{7}$ " । दशा-जीर्ग क्षीण । पूर्ण । प्रन्थ सस्या-१११६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष सृक्ला ६, सं० १६०६ ।
- ७७३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३२ । आकार-११"४४ है" । दशा-अतिजीर्ग क्षीए। पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-१३६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल कार्तिक कृष्णा ८, सं० १७४६ ।
- ७७४. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र सख्या-१६ । ग्राकार-१० $\frac{9}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा- ग्रन्थी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-२६४३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ४, सं० १६६२ ।
- ७७५. प्रीतिकंरमुनि चरित्र माषा साह जोषराज गोदीका । देशी कागज । पत्र संख्या-५३ । श्राकार-११६ "४४" । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६१५ । रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ता ५, शुक्रवार, सं० १७२१। लिपिकाल-चैत्र कृष्णा १, सं० १८६४ ।
- ७७६. बाहुबसी चरित्र— धनपाल । देशी कागज । पत्र संख्या—२४६ । ध्राकार—१२" \times ५ $^{\circ}_{0}$ " । दशा—जीर्ण क्षीसा । पूर्ण । भाषा—ग्रपभ्रंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०५६ । रजनाकाल—बैशास श्वला १३, सं० १४५० । लिपिकाल— \times ।

७७७. **बाहुबली पांचड़ी—अनवस्ती । देशी कागज । पत्र संख्या**—३ । आकार— १० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_{\Sigma}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्स । पूर्यो । भाषा—प्राकृत । लिपि—नामरी । ग्रन्थ संख्या—१४५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्मुन कृष्णा १, सं० १६६८ ।

७७८. मद्रवाहु चरित्र— आवार्ध रत्ननित्तः । देशी कागव । पत्र संख्या-२२ । (२१वां नहीं है) । भाकार-१२ $''\times$ ५ $^2_7''$ । दशा-मित बीर्ग कीर्ग । भपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संख्या-१७०४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माथ शुक्ता १, सोमवार, सं० १६३६ ।

७७६. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२३ । भ्राकार-११'' \times \lor $^{*}_{7}$ ' । दशा-जीर्ण क्षीरा । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-१६२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १, सम्बत् १८४३ ।

७५०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । भ्राकार-११ $"\times$ ४""। दशा-जीर्गा । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या-१०५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

७८१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५१ । धाकार-१२" \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-बहुत श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी टीकाकी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६८ । रचनाकाल-श्रावण शुक्ला १५, मं० १८६३ । लिपिकाल- \times ।

७८२. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था–२२ । द्याकार–११″×४″ । दशा– अच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संस्था– २३४० । रचनाकाल–× । लिपिकाल–पौष शुक्का १२, बृहस्पतिवार, सं० १६४४ ।

७६३. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था— २२ । भ्राकार—११ $\frac{3}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{2}$ " । दशा—जीर्ग क्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था— २४५१ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल— सं०१६५० ।

७५४. अविष्यदत्त चरित्र—पं० श्रीवर । देशी कागज । पत्र संस्था—७३ । झाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीएं क्षीएा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१११८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—उथेष्ठ शुक्ला १२, बृहस्पतिवार, सं० १६१४ ।

षादि माग:---

श्रीमतं त्रिजगन्नायं नमामि वृषमं जिनं । इन्द्रादिभिः सदा यस्य पादपद्मद्वयी नता ॥ १ ॥

घन्त माग:---

श्री बन्द्रप्रमस्य जगतामिष्ठपस्य तीर्थे यातेयसद्युतकथा कविकंठभूषा । विस्तारिता च मुनिनाथगर्थीः क्रमेगा ज्ञाता मयाप्यपरसूरि मुखाम्बुजेभ्यः ॥११॥ भक्त्याऽत्र ये चरितमेतद तृतबुद्धया श्रण्वंति संसदि पठंति च पाठयंति । दस्या धनं निजकरेगा च लेखयंति व्युद्धाहभावरहिताश्च लिखंति संतः ॥१२॥ तै भवंति बललक्षगाशुद्धाः श्रीधरामलमुखा जनमुख्याः । प्राप्त चितित समस्त सुखार्थाः शुक्रकीतिभवली इतलोकाः ॥१३॥

इति श्री भविष्यदत्त चरिते श्रीघरवि तिते साधु सक्ष्मण नामांकिते श्री बद्धेन—नंद्रि बद्धेन मोक्षणमन वर्णनं

नाम पंचदशः सर्ग समाप्तः ।।

७८५ प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-६३। आकार-११हैं" \times ४हैं"। दमा-ग्रितजीर्रा क्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१८४३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १० बृहस्पतिवार सं० १६७२।

७६६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । माकार—६ $\frac{3}{6}$ " \times ६" । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १६१४ ।

७८७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । श्राकार-११हुँ" ४४६ । दशा-प्रतिजीएं क्षीए। पूर्एं । ग्रन्थ संख्या-२५६१ । रचनाकाल-४। लिपिकाल-चेत्र शुक्ला १३, रविवार, सं० १५३२ ।

विशोध: -- ग्रन्थ के दीमक लग जाने से अतिग्रस्तता को प्राप्त हो रहा है। श्लोक संख्या १५०४ है।

७८८. मिष्ध्यवस् चरित्र-घनपासः । देशी कागजः। पत्रः संख्या-१०४ । म्राकार-१० $\frac{9}{2}'' \times \times \frac{3}{9}''$ । दशा-जीएां क्षीराः । पूर्णः । भाषा-घपभ्रंशः । लिपि-नागरी । ग्रन्थं संख्या-१०१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशाख शुक्ला ५ बृहस्पतिवारः । सं० १८६२ ।

७८६. प्रित संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४५ । ध्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-जीर्गा क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११३२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगिसर शुक्ला १३, बृहस्पतिवार सं० १४६७ ।

७६०. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-११६ ग्राकार-११ $''\times$ ४ $^{1}_{9}''$ । दशा-जीर्ग क्षीरा। पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११७०। रचनाकाल- \times । लिपिकास-फाल्गुन शुक्ला ५, रिबवार सं०१४६४।

७६१. मविष्यवस्य चौपई--वह्मरावमस्य । देशी कागव । पत्र संख्या १६। बाकार-११६ "×१६"। दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी पद्य । लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-११६१। रचनाकाल-कार्तिक शुक्ला १४, सं०१६३३। लिपिकाल-श्रावण कृष्णा १४, सं०१६२३।

७६२. मलय सुन्वरी चरित्र—धलयराम लुहाङ्ग्या । देशी कागज । पत्र संख्या-१२० । धाकार-१० $\frac{9}{7}$ \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३८५ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।

विशेष-पन्ध के दीमक लगजाने पर भी प्रकरों की क्षति नहीं हुई है।

७६३. मिल्लनाथ चरित्र-म० सकलकीति । देशी कागज । पत्र संस्था-३२ । धाकार-१०" \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-धच्छी । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१८६२ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन कुष्णा ११, सं० १६२३ ।

७६४. महिवाल चरित्र भाषा--वं० सवसल । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । आकार-

१२ह्रे" ४ ६३"। दशा—जीर्रो । पूर्यो । भाषा—हिन्द्री । क्षिपि—नागरी । श्रम्थ संस्वा—२२७० । रचनाकास—साधाद कृष्णा ४, बुधवार, सं० १६१० । खिपिकाल—श्रावसः बुदी २, सं० १६३६ ।

विशेष-भाषाकार ने झपनी पूर्ण प्रशस्ति शिक्षि है।

७६५. यद्योषर चरित्र—मुमुक्षु विद्यानस्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६५ । प्राकार—१० $\frac{3}{5}'' \times 8\frac{3}{5}''$ । दशा-जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रम्थ संख्या—१०३५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

७६६. यशोधर चरित्र—सोमकोति । देशी कागज । पत्र संस्था—द १ । धाकार—१० $^{\prime\prime}$ × 3 $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्ग् । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्य संस्था—१०४५ । रचना—काल—पौष बुदी ४, रविवार, सं० १४४२ । लिपिकाल— \times ।

भाविसाग---

प्रशाम्य शंकरं देवं सर्वक्षं जितमन्मयं।
रागादिसर्वदोषध्नं मोहिनिद्रा विविजितं ॥ १ ॥
ग्राह्तंः परमाभक्त्या सिद्धान्सूरीध्वरांस्तथा।
पाठकात् साधवान्यचेति नत्वा परमया मुदा ॥ २ ॥
यशोधरनरेन्द्रस्य जनन्या सिहतस्य हि ।
पवित्रं चरितं वध्ये समासेन यथागमं॥ ३ ॥
जिनेन्द्रवन्दनोद्भूतां नमामि शारद्यां परां।
श्री गुरुष्यः प्रमोदेन श्रोयसे प्रशामान्यहम् ॥ ४ ॥
यत्श्रोक्तं हरिषेणार्थः पुष्पदंतपुरस्सरैः।
श्रीमद्वासवसेनार्थः ग्राह्मस्यार्गंवपारगैः।

श्रम्तभाग---

नंदीतटाल्यगच्छे वंशे भी रामसेनदेवस्य ।
जातो गुणार्श्ववैकश्च श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ६० ॥
निर्मितं तस्य शिष्येशा श्रीयक्षोधर सक्षकं ।
श्रीसोमकीतिमुनिना विशोध्याऽद्यीयतां बुधाः ॥ ६१ ॥
वर्षे षट्तिशसंख्ये तिथिपरगणवासुक संवस्तरे (१४६६) वै
पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोश्चरास्ये हि चन्द्रे ।
गोंदिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने श्रीतलेन्द्रस्य रम्बे
सोमादिकीतिनेदं नृपवरचरितं निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ६२ ॥

इति श्री यशोधरवरिते श्री सोमकीर्त्याचार्य-विरचिते प्रश्नयर्शच-शट्टारक-स्वर्गगमनो नाम प्रष्टमः सर्गः ॥ द ॥

ग्रन्याप्रन्य १०१८ । इति श्रीयशोधर चरितं समाप्तं ।

- ७६७. यशोधर चरित्र सोमदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था—२२६ । आकार—१०३" × ४३" । दशा—जीएाँ । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—मागरी । प्रस्थ संस्था—१३६३ । रचनाकाक्य—चैत्र शुक्ता १२, सं० ८०१ । लिपिकाल—सं० १६४१।
- ७६८. यशोधर चरित्र--पुष्पवन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । म्राकार-१०३ \times x_0^2 । दशा-मच्छी । पूर्ण । भाषा-म्रप्पन्नंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या १०५१ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-माद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६४ ।
- ७६६. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-६=। प्राकार---६" \times 8"। दशा-जीर्ग्यंक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१०६३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्राच शुक्ला ५, सं०१५२१।
- ५००. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५६। ग्राकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ "। दशा-जीर्ग्यंकीर्ग्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पीष कृष्णा ३, सं०१५७४।
- ५०१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—७४ । प्राकार—६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा—जीगं क्षीगा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११३० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रियन शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १४८७ ।
 - ५०२. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—५६ । प्राकार—१० $\frac{3}{7}\times 3$ दशा—जीर्ग्यतीए। पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राध्वन शुक्ला १, शृहस्पतिवार, सं० १६२१ ।
 - ५०३. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-५० । झाकार-१० $\frac{3}{7}'' imes V_{\frac{3}{7}}''$ । दशा-जीर्शां । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२१८ । रश्वनाकाल- \times । लिपिकाल-झाषाढ़ कृष्णा ११, सं०१५८ ।
 - ५०४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । धाकार-१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीएंक्शीण । । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४०१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
 - ५०५. प्रसि संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-७१ । घाकार-११ $'' \times 4 \frac{1}{7}''$ । दशा-जीर्शक्षीरा । पूर्ण । प्रन्थ संख्या-१४१२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ला ४, क्षनिवार, सं० १६५१ ।
 - ५०६. यशोषर वरित्र—पद्मतास कायस्य । देशी कागज । पत्र संख्या—६१ । भ्राकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । देशा—जीर्गं । पूर्णं । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०७५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ६, सं० १६७४ ।

घन्तमाग---

जातः श्री बीरसिंहः सकलरिपुकुलदातिनर्धातपातो, वंशे श्री तोमराणां निजविमल यशोध्याप्तदिक्यकवातः। दानैर्मानैविवेकैने भवति समता येन साकं नृपाणां,

केथामेषा कविनां प्रथमति विवरता अर्तने तव्युस्तानां ।। १ ।। ईस्वरच्डारलं विनिहदकरवातवृत्तसंद्वातः া 🦠 चन्द्र इव दुग्वसिधीस्तस्माद्धरम भूवतिर्जनितः यस्य हि नृपते. यशसा सहसा शुक्रीकृत त्रिष्यंनेऽस्मिन् । कैलामति विरिनिकरः भीरति नीरं खुवीयते तिमिरं ॥ ३ ॥ तत्पुत्रो वीरमेन्द्रः सकलबसुमतीपाल चृड्रामणियः प्ररूपातः सर्वेलोके सकलबुषकलानंदकारी विशेषात्। तस्मिन् भूपालरत्ने निखिलनिधिगृहे गोपदुर्गे प्रसिद्धि म् जाने प्राज्यराज्यं विगतरियुभयं सुप्रजः सेव्यमानं ॥ ४ ॥ वंशेऽमृज्जैसवाले विमलगुणनिधिभू लणः साधुरत्नं। साधुश्री जैनपालो भवद्दित यास्तरसूतो दानशीलः । जैनेन्द्राराधनेषु प्रमुदितहृदयः सेवकः लोगाच्या सत्यशीलाऽजनिविमलमतिर्जनपासस्य भार्या ॥ १ ॥ जाताः षट् तनयास्तयोः सुकृतिनोः श्री हंसराजोऽभवत् । तेषामाद्यतमस्ततस्तदनुजः सैराजनामाऽजनि । रैराजो भवराजकः समजनि प्रख्यातकीतिमहा---साधुश्री कुशराजकस्तदनुषः च श्री क्षेमराजो लघः।। ६ ॥ जातः श्रीकुशराज एव सकलक्ष्मापाल चूडामणेः। श्रीमत्तोमरवीरमस्य विदितो विश्वासपात्रं महान् । मंत्री मंत्र विचक्षास्यः क्षणमयः क्षीस्पारिपक्षः क्षस्यात् कोस्तीमीक्षणरक्षसाक्षमतिः जैनेन्द्रपूजारतः स्वगंस्पृद्धिसमृद्धिकोतिविमलक्ष्वैत्यालयः कारितो । लोकानां हृदयंगमी बहुधनैश्चन्द्रप्रभस्य प्रभीः। येनैतत्समकालमेवरूचिरं भव्यं च काव्यं तथा साधु श्रीकुशराजकेन सुविया कीर्लेश्विरस्थापकं ॥ ८ ॥ तिकस्तस्यैव भागा गुणचरित्तयूषंस्तास् रल्होभिकाना । पत्नी घन्या चरित्रा व्रतनियमयूता भीलगीचेन युक्ता । दात्री देवार्चमाद्या गृहकृतिकुशसा तत्सुतः कामरूपी । दाता कल्यास्मिही जिनगुरुचरसाराधने तस्परीऽभृत ।। ६ ।। लक्षराश्रीः द्वितीयाभृत्सुत्रीला च पतिव्रता। कौशीरा च तुतीयेयमभूद्गुरावती सती ॥ १०,॥ मान्तिइ शस्य भ्यात्तदनु नरपते: सुप्रकानां जनानां। वक्तृग्रां वाचकानां ,.... ,... ।। ११ ॥

चावत्कू मेंस्य पृष्ठे भुजगपितरयं तत्र तिष्ठेद्गरिष्ठे यावत्तत्रापि चंचिद्विकटफणिफ्गामण्डले क्षोणिरेषा । यावत्कीशो समस्त तिदश पितवृत श्चारुचामीकरादि । स्तावद्भव्यं विशुद्धं जगित विजयतां काव्यमेतिच्चराय ॥ १२ ॥ कायस्य पद्मनाभेन बुषपादाम्बजरेगुनां । कृतिरेषा विजयतां स्थेयादाचन्द्रतारकं ॥ १३ ॥

इति समाप्तम् ॥

५०७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७७ । भ्राकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\circ\prime}_{5}$ $^{\prime\prime}$ । दशा— भ्रज्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—११७४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक बुदी ५, बृहस्पितवार, सं० १६२३ ।

५०५. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६४ । प्राकार—१० $'' \times 3$ $_{v}^{2}$ '' । दशा— श्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—११७५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— सं० १८०६ ।

५०६. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । ग्राकार-१० $\frac{9}{5}$ " \times प्र $\frac{9}{5}$ " । दशा—जीगुंक्षीग् । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

५१०. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—६४ । भ्राकार—१० $'' \times ४$ $^{+}_{g}$ '' । दशा—जीर्गा । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या—२४२८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला १०, बृहस्पित-वार, सं० १६८६ ।

-११. यशोषरचरित्र—सट्टारक सकलकौर्ति । देशो कागज । पत्र संख्या-४६ । **धाकार-१०** $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ "। दशा—धितजीर्ग् क्षीरा । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११३५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध शुक्ला ७, सं० १७४० ।

= १२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । ग्राकार—११ $'' \times$ ५'' । दशा—जीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १३, बृहस्पतिवार, सं० १६४४ ।

नोड--लिपिकार की प्रशस्ति दी हुई है।

८१३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । श्राकार—११ $\frac{2}{5}$ " \times ५" । दशा—जीर्ग्राक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६८७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

८१४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । ग्राकार-१० $\frac{3}{9}$ " × ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६६३ । रचनाकाल- × । सिपिकाल-प्रियित शुक्ला ३, सं०१४४७ ।

८१४. यशोधर चरित्र—पूर्णंदेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । धाकार-१२" \times ५ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्णं । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३१७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १७६० ।

दश्द. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । ध्राकार-११ $"\times$ ४" । दशा-जीर्ए क्षीरा पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ग्रक्षिन शुक्ला १, बुध-बार, सं० १६०८ ।

= १७. सशोषरचरित्र— वासवसेन । देशी कागजं । पत्र संख्या—५६ । श्राकार—११" \times ५" । दशा—जीर्एक्षीसा । । पूर्सा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५२२ । रचना— काल $=\times$ । लिपिकाल—कार्तिक घुक्ला १३, सं० १६१६ ।

विशेष-- लिपिकार की प्रशस्ति का मन्तिम पत्र नहीं है।

८१८. यशोधरसरित्र (पीठिका बंध)— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । **धाका**र-११ $''\times$ ४ \S' । दशा-जीर्स् । पूर्स् । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

दश्ह. यशोषर चरित्र टिप्परा—प्रमाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । प्राकार—११" \times ४" । दशा—ग्रच्छी । पूर्रो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३५५ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ३, शनिवार, सं० १६३५ ।

विशेष —हुमायु के राज्यकाल में लिपि की गई है।

५२०. रस्न चूड्रास—यश.कीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । भ्राकार-१० $\frac{9}{9}'' \times 3\frac{9}{9}''$ । दशा—भ्रच्छी । पूर्य । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४७३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर कृष्णा २, सं० १६४० ।

५२१. वर्द्धमान काव्य —पं० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । ध्राकार-११ \times " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दशा-म्रितजीर्गा क्षीरा । पूर्ग । भाषा-भ्रपभ्र श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट---पत्र परस्पर में चिपके हुए होने से झक्षर झस्पष्ट हो गये हैं।

६२३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६० । ग्राकार–१४ $\frac{3}{7}$ " \times ६ $\frac{3}{7}$ " । दशा–जीर्गांक्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२६३८ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

५२४. प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र सख्या-७६। म्राकार-११ $"\times$ ४ $^3_7"$ । दशा-

०२५ वर्द्धमान चरित्र-पुरुपक्षन्त । देशी कागज । पत्र संख्या-६७ । ग्राकार-११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा-जीर्राक्षीरा । पूर्या । भाषा-ग्रपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६४ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

पर्द. वरांग चरित्र--पं तेजपाल । देशी कागज । पत्र संख्या-५५ । ग्राकार---

- ११६ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{9}$ ''। दशा-जीर्ग्णं। पूर्णा। भाषा-अपभ्रंश। लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२१३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मान्नपद शुक्ला ५, शुक्रवार, सं० १६२१।

- **८२६. शान्तिनाय चरित्र—मट्टारक सकलकीति** । देशी कागज । पत्र संस्था-१०६ । श्राकार-१२ $\frac{3}{6}$ " \times ६" । दशा-भ्रम्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१०६३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८३३ ।
- दश-प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७४ । प्राकार-१२हुँ $" \times$ ६" । दशा-प्रच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संख्या-२३६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, रिव-वार, सं० १६३५ ।
- दशः शानिभव्र महामुनि चरित्र—जिनसिंह सूरि (जिनराज)। देशी कागज । पत्र संख्या-२०। ग्राकार-१०" ×४"। दशा-जीगांक्षीण। पूर्ण। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२७३६। रचनाकाल-ग्राप्तिन कृष्णा ६, सं० १६७६। लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १, सं० १६६६।
- **६३२. सन्मतिजिन चरित्र—रयय् ।** देशी कागज । पत्र संख्या—१४४ । ध्राकार— ११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीर्ग् । पूर्ग । भाषा—ध्रपभ्रं श । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०५४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—साध शुक्ला ६, सोमवार, सं० १६०६ ।
- ६३३. सम्मवनाथचरित्र—पं० तेचपात । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । ग्राकार—११ $'' \times$ प्र'' । दशा—जीर्गा । पूर्णे । भाषा—भपन्नंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३५३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रश्विन शुक्ला ४, सं० १६४८ ।
- ६३४. सुकुमाल महामुनि चौपई—शान्ति हुर्ष । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । भाकार-६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-भच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४२१ । रचनाकाल-भाषाढ शुक्ता ५, सं० १७४१ । लिपिकाल- \times ।
- ५३४. सुकुमाल स्वामी चरित्र—मद्दारक सकलकीति । देशी कागज । पत्र संख्या—३४ । बाकार-१० $"\times ४$ ξ^{9} "। दशा—भच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८३८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाषाढ कृष्णा ३, सोमवार, सं० १८२४ ।
- दश-प्रित संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-४१ । भ्राकार-१० $\frac{3}{5} \times 5\frac{3}{5}$ " । दशा-जीर्ग क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१३७३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भ्राषाढ़ कृष्णा १, सं० १६८१ ।

दशः प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-३६ । ग्राकार-१०२ \times ६२ । दशा-जीर्गाक्षीम् । पूर्म । प्रत्य सस्या-२३७६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रायाद शुक्ला ७, ग्रानिवार, सं० १८२४ ।

नोट--- श्लोक संख्या ११०० है।

 $= 3\pi$. सुदर्शनचरित्र— म० सकलकीति । देशी काग्रज । पत्र संस्था—४ से २३ । धाकार—११" $\times \, \mathbb{Y}_2^{\pi}$ " । दशा—जीर्ए क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय श्रावण कृष्णा ४, सं० १४६२ ।

६३६. सुदर्शन चरित्र-मुमुक्षु श्री विद्यानित्द । देशी कागज । पत्र संख्या-४२ । श्राकार-११" \times ५ 9 " । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६६ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा, १४, शुक्रवार, सं० १८२५ ।

५४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या – ५७ । द्याकार – १० $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{1\prime}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा – जीर्गंक्षीरा । पूर्गं । ग्रन्थ संख्या – १०८६ । २चनाकाल – \times । लिपिकाल – बैशाख शुक्ला ५, संब्रह्म । १६६२ ।

५४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । झाकार—६ $\frac{3}{8}$ " \times ४" । दशा— भ्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्य संख्या—२३६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७०२ ।

५४२. सुदर्शनचरित्र—बह्य नेमिवस । देशी कागज । पत्र संख्या—७१ । झाकार—-११ $''\times$ ४ $_{g}^{3}''$ । दशा—घतिजीर्ग क्षीण । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सन्ध्या—१२४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माघ कृष्णा १२, रविवार, सं० १६६१ ।

५४३. सुदर्शनचिरित्र— मुनि नयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । आकार— $\mathbf{१} \bullet_{\mathbf{7}}^{9} \times \mathbf{8}_{\mathbf{7}}^{9}$ । दशा—जीर्ग्ग क्षीण । पूर्ग् । भाषा—प्रपन्नंश । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१०५२ । रचनाकास— \times । लिपिकास—चैत्र शुक्सा २, बुधवार, सं० १४७० ।

५४४. सुरपति कुमार चतुष्पदी— पं० मानसागर गरिंग । देशी कागज । पत्र संख्या— १४ । माकार—१०६ 9 9 8 9 9 1 । दशा—जीर्ग्गकीर्ग । पूर्ग् । माषा—हिन्दो । लिपि—नागरी । प्रत्य संख्या—२५६० । रचनाकाल—सं० १७२६ । लिपिकाल—सं० १७२६ ।

पत्र प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । द्याकार—१० $^{\prime\prime}$ \times $\chi^2_{2}^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११०२ । रचनाकाल—सं० १७२६ । लिपिकाल—माघ शुक्ला १४, सं० १८६६ ।

५४६ श्रीपाल चरित्र—सट्टारक सकलकीित । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । श्राकार-१२ $'' \times \chi_{S}^{3}''$ । दशा-शब्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५२० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ कृष्णा २, सं० १८२७ ।

५४७. श्रीपालचरित्र--प० नरसेन । देशी कागज । पत्र संख्या- ४१ । श्राकार--- १० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{5}{5}$ " । दशा-ग्रसिजीर्ग्य सीएग । पूर्ण । भाषा-श्रपञ्च । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-- १३४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

दक्ष्यः प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-४७ । घाकार-१० $\S'' \times x \S''$ । दक्षा-घच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संस्था-१२४६ । रचनाकाल- \times ।

५४६. भीपालवरित्र-पं० रयघ् । देशी कागज । पत्र संख्या-१११ । झाकार-१२" × ४"। दशा-मतिजीर्ण क्षीरा । पूर्ण । भाषा-प्रपभ्र श । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६८ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन बुदी १०, सं० १५६५ ।

मोड - पोरबास वंशीय श्री हर्रोसह के पुत्र पं० रयषु ग्वालियर निवासी १५वीं सताब्दी के विद्वान हैं। बादशाह हैं मागु के राज्य में लिपि की गई है।

द्धः श्रीपास चरित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । भ्राकार—११३ $"\times$ ५"। दशा—सुन्दर । । पूर्णः । भाषा—संस्कृत भ्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५५६ । रखनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला ११, बृहस्पितवार, सं० १६३६ ।

विशेष—म० सकलकीर्ति के संस्कृत चरित्र के ग्राधार पर हिन्दी लिखी गई है। हिन्दी-कार ने ग्रपना नाम नहीं दिया है।

द्रश्. श्रीपालरास—यज्ञः विजयगिता । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । श्राकार— १०﴿१″ ४४﴿१ूँ″ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा–हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१००४ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—भादवा बुदी ११, सं० १६३२ ।

दश्र. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२६ । भाकार-१० $\frac{3}{6}$ " × ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा-भज्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिप-नागरी । ग्रन्थ सस्या-१०६२ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-बैशास कृष्णा १४, सं० १६३२ ।

द्ध ३. श्रीसकचित्र — शुमचन्त्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या – ६४ । श्राकार – १० दे " × ४ दे" । दशा – श्रच्छी । पूर्य । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । श्रन्थ सख्या – १७६४ । रचनाकास – × । लिपिकाल – बैशाल शुक्ला १४, बुधवार, सं० १८५४ ।

ब्राविभाग---

श्री वर्द्धमानमानंदं नौमि नानागुणाकरं। विशुद्ध ष्यान दीप्ताच्चिहुर्तकर्म्म समुच्चयं ॥ १॥

ध्रन्तभाग---

जयतु जितविषक्षो मूलसंघः सुपक्षो, हरतु तिमिरभारं भारती गच्छवारः। नयतु सुगतमार्गे शासनं घुढ्वगं जयतु शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दो मुनीन्द्रः॥ १७। तदन्वये श्रीमुनिषद्यनन्दी विभाति भव्याकर-पद्मनन्दि। शोभाषिणाली वरपुष्पदन्तः सुकातिसंभिन्न सुपुष्पदन्तः॥ १८॥ पुराण काव्यार्थे विदोवरत्वं विकाशयन्मुक्तिविदोवरत्वं। विभातु वीरः सकलाद्यकीर्तिः कृतापकेनौ सकलाद्यकीर्तिः। १६॥ भृवन शितः यतिः जयताद्यमी भृवनपूरितकीतिचयः सदा ।
भूवन विम्बजिनागमकारणो भव नवाम्बुद्धवातभरः परः ॥ २० ॥
तत्पट्टोदयपर्वते रिवरभूष व्याम्बुजं भासयन् ।
सन्नेत्रास्रहरं तमो विषटयन्नानाकरैः भासुरः ।
भव्याना सुगतस्व विग्रहमतः श्रीज्ञानभूषः सदा
चित्रं चंद्रकसंगतः सुभकरः श्रीवर्द्धमानोदयः ॥ २१ ॥

जगित विजयकीर्तिः पुण्यमूर्तिः सुकीर्तिः जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः । नय नलिन हिमांशुर्जानभूषस्य पट्टे विविध-परविवादिक्साक्षरे वफ्रपातः ॥ २२ ॥ तिष्ठिष्येग शुभेन्दुना शुभमनः श्रीज्ञानभावेन वै पूतं पुण्यपुराग् मानुषभवसंसार विध्वसकः । नो कीर्त्या व्यरिच प्रमोहवणतो जैने मते केवलं नाहकारवणात्कवित्तमदतः श्रीपद्मनःभहितं॥ २३ ॥

> इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रौतुश्च पद्मेश्वरवत्पिवत्रं । भविष्णु संसारसुखं नृदेवं संभुज्य सम्यक्त्व फलप्रदीपं ॥ २४ ॥ चन्द्राऽकं हेमगिरीसागर भूविमानं गंगानदीगमनसिद्धशिलाश्च लोके । तिष्ठंति यावदभितो वरमत्यंशेवास्तिष्ठंतु कोविदमनोम्बुजमध्यभृताः ॥२४॥

इति श्रीश्रेिषाकभवानुबद्ध-भविष्यत्पद्यनाभपुर।गो पंचकत्यागावर्गानं नाम पंचदशः पर्वः ॥ १५ ॥

५५४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२४ । ग्राकार-११" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-ग्रितिजीर्गा । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-१०६१ रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

५४४. श्रेणिकचरित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२२ । ग्राकार—१२" \times ६ $\frac{3}{9}$ " । दशा—श्रच्छी । पूर्गा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट- नेवल चार सर्ग ही हैं।

६४६. श्र**ेणिक महाराज चरित्र–श्रमयकुमार** । देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । <mark>श्राकार–</mark> १०हे'' imes ४हे<math>'' । दशा–जीर्ग्क्षीसा । पूर्स । भाषा–हिन्दी (पद्य) । लिपि–नागरी । स्रथ संख्या– १४६२ । रचनाकान–imes । लिपिकाल–श्रावसा शुक्ला १४, शुक्रवार, सं० १६६४ ।

५५७. हनुमन्चरित्र ब्रह्माजित । देशी काग । पत्र संस्था-७८ । ग्राकार-११" \times ४ $\frac{9}{4}$ " । दशा-जीर्गाक्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-पौष शुक्ला ८, रिववार, सं० १६७५ ।

८४६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७४ । घाकार-११ $'' \times$ ५'' । दशा—जीर्गंक्षीण । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या—१०८७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—घाश्विम कृष्णा ७, बुध-वार, सं० १६४४ ।

दश्ह. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । प्राकार-१०३ "×४"।

दशा-प्राच्छी । पूर्ग । प्रम्थ संख्या-११०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ११, बृह-स्पतिवार, सं• १६४६ ।

- ६६०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । प्राकार-११० ४४ । दशा— बीर्गं क्षीम् । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या-१२४६ । रचनाकाल-४ । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ४, सं∙ १४६३ ।
- =६१. प्रति संस्था ४ । देशी-कागज । पत्र संख्या-५१ । ग्राकार-११'' \times ४ $^2_9''$ । दशा-जीर्ग्रंशीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२५२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १६६१ ।
- **६२. होलरेशुका चरिन—पं० जिनदात ।** देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । धाकार—१० $\frac{9}{7}$ \times $\frac{1}{7}$ । दशा—जीर्णक्षीस् । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५७३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- द्धः हंसराज वैद्यराज चौपई जिनोदय सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । आकार-१० है" ×४ है" । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२८०७ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १७६६ ।
- **८६४. त्रिषव्धि पर्वाग्यस्य विरावली चरित्र हेमच**न्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या— **१५४ । दशा—त्रीग्यं । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—१०३४ । रचनाकाल—\times। लिपिकाल—\times ।**
- नोट---प्रत्थापं० सं• ३५०० है। गुणसुन्दर के पढ़ने के लिए लिपि की गई, ग्रन्थ १३ सगीं में विश्वक्त है।

विषय-सचित्र प्रन्थ

८६५. श्रद्धाई द्वीप विज्ञ-- \times । वस्त्र पर । पत्र संस्था-१। श्राकार-३३ $\frac{3}{5}$ " \times ३२ $\frac{3}{5}$ "। दशा-श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२२२० । रचनाकाल- \times ।

विशेष - भ्रढाई द्वीप का रंगीन चित्र कपड़े पर बना हुआ है।

द६६. ब्रहाई द्वीप चित्र $--\times$ । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१। श्राकार- ४२ $\frac{1}{4}$ \times ४२ $\frac{1}{4}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत और हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय- ब्रहाई द्वीप चित्र । अन्य संख्या --२२१६ । रचनाकाल-चैत्र शुक्ला ४, बृहस्पितवार, सं० १८०१ को श्री गुराचन्द्र मुनि ने पद्मपुरा में लिखा ।

विशेष—वस्त्र में छिद्र हो जाने पर भी शक्षरों को कोई क्षति नहीं हुई है। हाय से किया हुआ रंगीन चित्र बहुत सुन्दर है।

- ५६७. श्रदाई द्वीप चित्र \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । श्राकार——३७" \times ३७" । दशा—जीगृंक्षीम् । पूर्ण् । ग्रन्थ संख्या—२२०६ । रचनाकाल — \times ।
- ५६ द्र. ग्ररहनाथ जी चित्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या- १ । भ्राकार ३ $\frac{3}{7}$ \times २ $\frac{3}{7}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या २२०१ । रचनाकाल — \times ।

विशेष — चित्र श्वेताम्बराम्नायानुसार बना हुगा है।

- ५६९. कुन्थनाथ की का चित्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या १ । धाकार ३ $\S'' \times ''$ ३ । दशा ग्रच्छी । पूर्ण । विषय —कुन्थनाथ तीर्थ कर चित्र । ग्रम्थ संख्या २१६७ । रचनाकाल \times ।
- ५७०. गरोश चित्र \times । देशी कागज । पत्र संख्या-- १। प्राकार—-५" \times ६"। दशा-सुन्दर । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या—-२१६७ । रचनाकाल \times ।

विशेष — गरोश का भ्रतीव सुन्दर रंगीन चित्र कागज पर बना हुया है, जिसमें एक स्त्री गरोश जी के समक्ष खड़ी हुई प्रार्थना कर रही है।

- =७१. गर्गेश चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—५ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा—सुन्दर । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या—२१८६ । रचनाकाल— \times ।

विशेष—गणेश के चित्र के समक्ष सरस्वती हंस के बाहन सहित है। यह चित्र कागज पर चित्राच्कित है। सिंहासन के नीचे चुहा भी चित्राच्कित किया गया है।

=७३. गायक का चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। श्राकार–६ $\frac{3}{5}$ " \times ३ $\frac{3}{5}$ "। दक्ता–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८५ । रचनाकाल \times ।

विशेष-बहुत ही पतले कागज पर हाथ का बना हुआ रंगीन चित्र है।

६७४. चतुर्विशति तीर्थं कर चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार— χ_2^{1} \times χ_3^{1} '। दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७६ । रचनाकाल— \times ।

विशेष--यह चित्र श्वेताम्बर श्राम्नायानुसार बना हुमा है।

६७४. **चतुर्विशति तीर्थं कर चित्र** $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । धाकार— $?''\times ?_{\overline{S}}'''$ । दशा—झच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२०२ । रचनाकाल— \times ।

=७६. चन्द्रपम चित्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या –१ । श्राकार – ६ $\frac{1}{2}$ " \times ७ $\frac{1}{2}$ " । दशा – श्रच्छी । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या – २२०३ । रचनाकाल – \times ।

विशेष - चित्र श्वेताम्बर श्राम्नायानुसार है।

६७७. चन्द्रप्रभ चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। भ्राकार— $\mathbf{v}_{\mathbf{v}}^{\mathbf{v}}'' \times \mathbf{v}''$ । दशा—भ्रच्छी । पूर्ण । भ्रन्थ संख्या—२१६४ । रचनाकाल— \times ।

५७६. चन्द्रप्रम चित्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार-६" \times " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६२ । रचनाकाल-> ।

विशेष - श्वेताम्बर ग्राम्नायानुसार हाथ का बना हुग्रा रंगीन चित्र है।

८७६. जम्बूद्वीप चित्र $-\times$ । वस्त्र पर। पत्र संख्या-११ श्राकार-२५ $\S''\times$ २५ \S'' । दशा-प्राचीन । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२११३ । रचनाकाल $--\times$ ।

विशेष - जम्बूढीप का कपड़े पर रंगीन चित्र है, चित्र में सुनहरी काम प्रतीव सुन्दर मनोहारी लगता है।

८५०. जम्बूहोप चित्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-३१६्ँ" \times २७" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२२०५ । रचनाकाल- \times ।

६६१. तीन लोक का चित्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१। म्राकार—३१'' \times १६ $\frac{1}{2}$ "। दशा—जीर्गा । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या—२२१२ । रचनाकाल \times ।

५६२. तीन लोक का विश्व $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-१। म्राकार-१०३ $"\times$ ५"। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२६१४। रचनाकाल $-\times$ ।

५६३. दूगिंदेषी चित्र— \times । देशो कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—१० $\frac{q}{q}'' \times 8 \frac{q}{q}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७७ । रचनाकाल— \times ।

विशोष — सिंह पर बैठी हुई दुर्गादेवी के ग्रागे वीर भेरी बजा रहा है तथा पिछे की तरफ हाथ में छत्र लिये हुए दूसरा वीर खड़ा है। पतले कागज पर हाथ का बना हुआ ग्रतीव सुन्दर चित्र है।

६८४. हुर्गादेवी चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार–६ $\frac{5}{5}$ " \times ४" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१८४ । रचनाकाल– \times ।

विशेष—सिंह पर बैठी हुई देवी के समक्ष, योद्धा देवी को रोकते हुए रंगीन चित्र द्वारा बताये गये हैं।

द्रद्रम् का चित्र— \times । देशी कागम्र । पत्र संस्था—१० $\frac{3}{9}$ " \times \times $\frac{3}{9}$ " । दक्षा—बीर्ण क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—२१६२ । रचनाकाल— \times ।

८६६. द्वावश भूषा हनुमत् चित्र-- \times । देशी कागज। पत्र संख्या--१। धाकार--१३ $^{\prime\prime}$ \times १३ $^{\prime\prime}$ । दशा-प्राचीन। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या---२२३ $^{\prime\prime}$ १। रचनाकाल-- \times ।

६६७. नरकों के पायड़ों का चित्र— \times । देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार— $2\xi_2^{9\prime\prime}\times2\xi_2^{9\prime\prime}$ । दशा—सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या—२२१४। रचनाकाल— \times ।

विशेष--कपड़े पर सातो नरको के पायड़ों का सुन्दर चित्रण किया हुआ है।

५८६. नेमिनाथ चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । आकार- χ_{ξ}^{μ} $\times\chi_{\xi}^{\mu}$ । दशा-सुन्दर । ग्रन्थ संख्या–२१७५ । रचनाकाल– \times ।

६८. नेमिनाथ चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार—६ $\frac{3}{9}$ " \times ४" । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८१ । रचनाकाल— \times ।

विशेष--श्वेताम्बर श्राम्नायानुसार कागज पर हाथ का बना हुआ नेमिनाथ का सुन्दर चित्र है।

५६०. नेमिनाथ चित्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–३३'' \times २५'' । दशा–सुन्दर । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या–२१६६ । रचनाकाल– \times ।

विशेष - स्वेताम्बर म्राम्नायानुसार बना हुमा चित्र है।

५६१. पद्मप्रभू चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । म्नाकार— χ_{φ}^{σ} " $\times \chi_{\varphi}^{\sigma}$ " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१८० । रचनाकाल— \times ।

विशेष-- प्वेताम्बर मतानुसार बना हुआ कागज पर रंगीन वित्र है।

५६२. पद्मावती देवी व पार्श्वनाथ का चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–१० $\S''\times$ ५ \S'' । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७३ । रचनाकाल– \times ।

विशेष--कागज पर हाथ का बना हुआ सुन्दर रंगीन चित्र है।

५६३. पारवंनाय चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-१२" \times ५ $\frac{3}{7}$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१६० । रचनाकाल $-\times$ ।

विशेष — चित्र में पार्श्वनाय स्वामी के दाहिनी घोर श्री ऋषभनाय घौर सम्भवनाय का चित्र है। बाई घोर श्री नेमिनाय ग्रौर महावीर स्वामी का चित्र है।

 $= \epsilon \$. पार्श्वनाम चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—४ $\frac{1}{9}$ " \times २ $\frac{3}{9}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१६६ । रचनाकाल— \times ।

विशेष-श्वेताम्बर मतानुसार चित्र है।

ंद**६५. पारंवंनाय का चित्र** $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१। ग्राकार-६ $"\times$ ४"। दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२१८३ । रचनाकाल $-\times$ ।

विशेष--कागज पर हाथ का बना हुआ मनोहारी चित्र है।

- **८६६. पारवंनाथ का चित्र**— \times । देशी कागज। पत्र संख्या–१। म्राकार–५ \S'' \times ३ \S'' । दशा–सुन्दर। पूर्श। ग्रन्थ संख्या–२१८६। रचनाकाल– \times ।
- **६६७. पार्वनाथ दं पद्मावती का चित्र** $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१। **बाकार** $-६ \frac{1}{5}" \times 8 \frac{3}{5}"$ । दशा-सुन्दर। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-२१७४। रचनाकाल $-\times$ ।
- ८६८ पार्श्वनाथ व पद्मावती देवी का चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— १ । श्राकार— \mathbf{x}_{3}^{p} " \times \mathbf{x}'' । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७२ । रचनाकाल— \times ।
- **६६६. पुष्पदन्त चित्र**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–४ $\frac{9}{9}$ " \times ४" । दशा–प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१६५ । रचनाकाल— \times ।

विशेष-श्वेताम्बर मतानुसार रंगीन चित्र है।

- ६००. पुष्पबन्त चित्र \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार— $\chi_{\tilde{\gamma}}^{q}$ " \times χ " । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७६ । रचनाकाल— \times ।
- **६०१. भरत क्षेत्र विस्तार चित्र** > । देशी कागज । पत्र सख्या—१ । म्राकार— $११\frac{9}{7}"\times$ ५" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सख्या—२६२० । रचनाकाल— \times ।
- **६०२. भैरव चित्र** \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–५" \times ६" । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१७१ । रचनाकाल– \times ।

विशेष--भैरव जी का चित्र, विशाल नरमुण्डी व खाण्डा हाथ में लिए हुये है।

६०३. महावोरस्वामी जित्र— \times । देशी कागज। पत्र सख्या–१। भ्राकार– ५" \times ४ $^{2}_{7}$ "। दशा–सुन्दर। पूर्या पुंग्रन्थ संख्या–२१७८। रचनाकाल– \times ।

विशेष—श्वेताम्बर भ्राम्नायानुसार कागज पर रंगीन चित्र भ्रतीव सुन्दर बना हुन्ना है। $\hat{\mathbf{E}}$ । $\hat{\mathbf{e}}$ अ. महाचीरस्वामी चित्र— \mathbf{X} । देशी कागज। पत्र संख्या–१। भ्राकार—६ $\frac{3}{7}$ " । दशा—सुन्दर। पूर्णा। ग्रन्थ संख्या—२१६१। रचनाकाल— \mathbf{X} ।

विशेष-श्वेताम्बर भाम्नाय के अनुसार चित्र है।

- **६०५. षृहद् कलिकुण्ड जिन्न**— \times । वस्त्र पर। पत्र संख्या-१। माकार-२३ $\S''\times$ २३ \S'' । दशा-सुन्दर। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२०६। रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १६०७।
 - · विशेष कपड़े पर बने हुए इस चित्र में ६ कोठे हैं।
- **६०६. वासुपूज्य चित्र**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । धाकार–३ $\frac{9}{9}$ " \times २ $\frac{9}{7}$ " । दशा–सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२०० । रचनाकाल- \times ।

विशेष-चित्र श्वेताम्बर माम्नावानुसार है।

६०७. शीतसनाथ चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। श्राकार—२ $\frac{1}{2}$ " \times २ $\frac{1}{2}$ " । दशा—श्रुच्छी । पूर्ख । ग्रन्थ संख्या—२१६८ । रचनाकाल— \times ।

विशेष-चित्र श्वेताम्बर मतानुसार है।

६०८. श्रीकृष्टम् का चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—६ $^{"}\times$ ४ $^{"}$ । दशा—प्राचीन । भ्रपूर्म् । ग्रन्थ संख्या—२१६३ । रचनाकाल— \times ।

विशेष -- केवल खाका बना हुआ है।

६०६. श्रीकृष्ट्म चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–६ $\frac{9}{5}$ " \times दे $\frac{3}{5}$ " । दशा–प्राचीन । पूर्म । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–२१८७ । रचनाकाल– \times ।

विशेष --- पतले कागज पर हाथ का बना हुन्ना रंगीन चित्र है, साथ ही नीचे श्रीकृष्ण की संस्कृत में स्तुति भी दी गई है।

६१०. सरस्वती चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१। ग्राकार-४ \S'' ×३ \S'' । दशा–सुन्दर । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या–२१८८ । रचनाकाल- \times ।

विशेष - वित्र में हंस पर एक बैठी हुई देवी का चित्र है और समक्ष में एक स्त्री प्रार्थना करती हुई चित्रित है।

६११. सामुद्रिक विचार चित्र — \times । देशी कागज । पत्र सँख्या—१ । म्राकार— २१ $\frac{\pi}{2}$ " । दशा—ग्रन्छी । पूर्ग । विषय—ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या—२२२४ । रचनाकाल— ज्येष्ठ कृष्मा ३, सं० १८७० ।

विशेष—स्त्री ग्रौर पुरुष के हाथ व पैर का चित्र ग्रांकित है। १८७० ज्येष्ठ कृष्णा ३, इस चित्र पर लिखा हुग्रा है। ''ग्राचर्यश्री रामकीर्ति छात्र रामचन्द्रस्यमिदं पत्रम्,'' हाथ व पैर के चित्रों में चित्राङ्कित है।

६१२. हनुमान चित्र— \times । देशी कागज। पत्र संख्या–१। ग्राकार–५" \times ६"। दशा–सुन्दर।पूर्गो। ग्रन्थ संख्या–२१६६। रचनाकाल $-\times$ ।

विशेष — हनुमान जी का रंगीन चित्र जिसके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में नर मुण्डि है। चित्र हाथ का बनाया हुआ है और अतीव सुन्दर लगता है।

६१३. हनुमान चित्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार— $\mathbf{z}'' \times \mathbf{z}''$ । दशा—सुन्दर । पूर्या । ग्रन्थ संख्या—२१६६ । रचनाकाल— \times ।

विशेष — कागज के सुन्दर बने हुए चित्र में हनुमान जी को पहाड़ ले जाते हुए चित्रित किया गया है।

६१४. हनुमान चित्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । माकार—५" \times ६" । दशा—सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१७० । रचनाकाल— \times ।

विशेष—कागज पर हाथ से बने हुए चित्र में हनुमानजी हाथ में गवा तथा कुत्ते की मुण्डि लिए हुए हैं।

६१५. ज्ञानचौपड्— \times । वस्त्र पर। पत्र संख्यां–१। द्याकार–३५'' \times २६ $\frac{9}{7}''$ । दशा–सुन्दर।पूर्या।भाषा–हिन्दी।लिपि–नागरी।ग्रन्थ संख्या–२२२**६। रचनाकाल**– \times ।

६१६. ज्ञानचौपड़ — \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । झाकार—२२ $^{\prime\prime}$ \times २१ $\frac{1}{6}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२२६ । रचनाकाल— सं० १८६२ ।

विषय – छन्द शास्त्रा एवं अलंकार

- e१७ **क्यूरीप माधा**—**कुंवर भूवानीदास।** देशी कागज । पृत्र संख्या—१ । स्राकार— e^{2} " \times ४ 3 "। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । प्रम्य संख्या— २०५८ । रचनाकाल—भाद्रपद शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १७७२ । लिपिकाल— ज्येष्ठ कृष्णा ३, सं० १८१८ ।
- **६१ म. छन्द रत्नावली**—हरिराम । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । धाकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ५" । दशा-ध्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२५४० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-बैशाख शुक्ला ६, सं० १८३४ ।
- **६१६. छन्द शतक हर्षकीर्ति सूरि ।** देशी कागज । पत्र संख्या–१७ । धाकार– ६ $\frac{1}{7}$ " \times ४" । दशा–जीर्ग् $\frac{1}{7}$ । पूर्ग् । भाषा–श्रयभ्रंश । लिपि–नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१४६१ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- ६२०. छन्द शास्त्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । माकार- $=\frac{1}{7}"\times \frac{1}{7}"$ । दशा-श्रन्छी । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१४८५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६२१. छन्दसार—नारायस्य दास । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार—१० $\frac{1}{6}$ " \times ५" । दशा—ग्रन्छी । पूर्स । भाषा–हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय–छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या–१६५५ । रचनाकाल–भाद्रपद कृष्सा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८२६ । लिपिकाल– \times ।
- ६२२. छन्दोमजंरी गंगादास । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । श्राकार-१० $\frac{2}{7}$ \times ४ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत भीर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२४८१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ११, सं० १८४९ ।
- ६२३. **छन्दोवंतस** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । ग्राकार-१० $\sqrt[3]{''} \times \sqrt[3]{''}$ । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-२२५४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, सं० १७८४ ।
- ६२४. पार्वनाथजी रौ देशान्तरी छन्त $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-५। द्याकार-६ $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ "। दशा-स्रच्छी। पूर्णः। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-छन्द शास्त्र। प्रन्य संख्या-२१५३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं०१८६८।
- विशेष—कि ने अपना नाम न लिख कर किवराज लिखा है। आगे कि ने लिखा है कि मैंने कालिदास कि जैसे छन्दों की रचना की है।
- ६२४. विगल छन्दशास्त्र पुहुप सहाय (पुष्प सहाय) । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । भाकार-१०१ " ×४१ " । दशा-जीर्ए । पूर्ण । भाषा-भ्रपभ्र श । लिपि-नागरी । विषय-छन्द सास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१७११ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-एं० १७४६ ।

- **६२६. प्रति संख्या २ । देशी** कागज । पत्र संख्या-१४ । ग्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्गं क्षीरा । पूर्गं । ग्रन्थ संख्या-२३१६ । रचनाकला- \times । लिपिकाल- \times । सं० १६३६ ।
- ह२७. पिङ्गस्य रूप दीपक—जयिकशन। देशी कागज। पत्र संख्या-१२। ग्राकार— $= \frac{2}{3}$ $\times \times \frac{2}{3}$ "। दशा—ग्रन्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—छन्द शास्त्र। ग्रन्थ संख्या—२४६३। रचनाकाल—फाल्गुन शुक्ला २, सं० १७७२। लिपिकाल—सं० १८६२।
- **६२८. प्रस्तार वर्णन हर्षकीति सूरि** । देशी कागज । पत्र संख्या १ । ग्राकार १० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा श्रीगंकीर्ण । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय छन्द शास्त्र । प्रत्य संख्या २४२७ । रचना काल \times । लिपि काल \times ।
- ६२६. **माषा भूषण महाराजा जसवन्त सिंह। दे**शी कागज । पत्र संख्या—१५ । **भा**कार—१०'' \times ४ $\frac{3}{7}''$ । दशा—भ्रन्धी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी । विषय—प्रतंशर शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—११०४। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६३०. **बृत रत्नाकर** केवारनाथ मट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार— $११" \times 9^{9}_{2}"$ । दशा—जीर्गंकीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । प्रत्य संख्या—१६६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, मंगलबार, सं० १६६० ।
- ६२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । भ्राकार—११ $\frac{3}{9}$ " \times $& \frac{3}{9}$ "। दशा—श्रीर्गं क्षीरा । पूर्णं । प्रत्य संख्या—१९६१ । रचमाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १५, बृहस्पतिवार, सं० १५२६ ।
- **१३२. प्रति संख्या ३ ।** देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा-श्रन्थ । लिपिकाल- \times ।
- **९३३. प्रति संख्या** ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार—१० $'' \times \times \xi'''$ । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फात्गुन शुक्ला १३, सं० १८११ ।
- **६३४. प्रति संस्था ५ । देशी** कागज । पत्र संस्था-५ । श्राकार-१० $'' \times 3^{n-1}_{q}$ दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२३८७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६३५. दूत रत्नाकर सटीक पं० केबार का पुत्र राम । देशी कागज । पत्र संख्या— ७३ । धाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४" । दशा—जीर्ग कीरग । पूर्य । भाषा—संस्कृत । क्रिपि—सागरी । विषय— छन्द शास्त्र । प्रन्य संख्या—२६४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६३६. कृतरत्नाकर सबीक-केवारवाय महुः टीकाकार-समयसुन्दर उपाध्याय । देशी कागज । पत्र संस्था-२७ । भाकार-१२"×५३" । दशा-भच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ।

लिपि-नागरी । विषय-छन्द शास्त्र । क्रन्य संख्या-१२२≈ । रचनाकास-× । द्वीका का काल-सं० १६६१ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १३, शुक्रवार, सं० १७६२ ।

- ६३७. प्रसि संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । जाकार—१० $\frac{2}{5}$ " \times χ $\frac{2}{5}$ " । दशा-जीएँ । पूर्ण । यग्य संस्था-१०१४ । रचनाकाल- \times । टीकाकाल-सं० १६६१ । लिपिकाल- \times ।
- ६३ म. बृतरत्नाकर सटीक केबारनाथ मट्ट । टीका किव सुरहरण । देशी कागज । पत्र संख्या ३१ । ग्राकार १० $\frac{3}{8}$ " । दशा ग्राच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रान्थ संख्या १७२४ । रचनाकाल \times । टीका काल \times । लिपिकाल श्रावण शुक्ला ३, सं० १८७४ ।
- ६३६. **बाग्मट्टालंकार**—बाग्मट्ट । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । श्राकार-१०" \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा-जीएँ । पूर्ए । भाषा-संस्कृत । लिपि-तागरी । विजय-प्रलकार शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१४६४ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- **६४०. प्रति संख्या २** । । देशी कागज । पत्र संख्या—१८ । स्राकार— $\frac{5}{5}$ " \times ४१० $\frac{3}{5}$ " । दशा—जीएां क्षीएां । पूरां । ग्रन्थ संख्या—१२६८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६४१. विदम्ध मुखमण्डन —धर्मदास । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । घ्राकार-११ $\frac{3}{7}$ \times ६ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । निधि-तागरी । विषय-प्रलंकार शास्त्र । प्रत्य संख्या-१८२४ । रचनाकाल-भाद्रपद घुक्ना २, सं० १८३६ ।
- ६४२. अृतबोध—कानिदास । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । धाकार—१० $^{\prime\prime}$ \times 3_8 $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्एक्षीर्ए । पूर्ए । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—छन्द शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१६४८ । रचनाकान— \times । लिपिकाल—पौष कृष्णा १४ सं० १६३६ ।
- ६४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । श्राकार-११ $'' \times ४ \frac{2}{5}''$ । देशा-जीर्गाक्षीण । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२६२७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६४४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । प्राकार १० $\frac{1}{9}'' \times \frac{1}{9}''$ दशा जीगुं क्षीगु । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या २५४२ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ६४४. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-४ । धाकार- १० $^{\prime\prime}$ × ४ $\frac{1}{3}^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्र्ण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२४२४ । रचनाकाल × । लिपिकान प्रथम श्रावण कृष्णा ६, रिविवार, सं० १७१४ ।
- **१४६. प्रति संख्या ४** । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भ्राकार-१० $\frac{3}{6}'' \times 4''$ । देशा-भ्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७७० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-पौष कृष्णा ६, सं०१५४ ।
 - ६४७. श्रृतबोच सटीक गुजर। देशी कागज। पत्र संख्या-३। श्राकार-१०३×

3 | दशा-जीएँ तीए। पूर्णं। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२६३४। रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४८. **अतुत्रवोध सदीक**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । ग्राकार—१० $\frac{3}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—जीर्गुत्रीस् । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१६० । रचना काल— \times । लिपिकाल—गौव कुष्णा ४, सं० १७७३ ।

विषय-ज्योतिष

- ६४६. अध्यास्म तरंगिए।—सोनदेव शर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । आकार— ११ $" \times \forall_{\mathfrak{g}}^{*}$ । दशा—जीएं । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—ज्योतिष । ग्रन्थ सस्या—१७५१ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—आषाढ् कृष्णा १४, बृहस्पतिवार, सं० १८०७ ।
- ६५०. खरिष्टफल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । धाकार-११ $'' \times v_y^3$ '' । दशा-जीर्गंकीरम् । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-१४७५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६५१. श्रवयड़ केवली । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । श्राकार-१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—जीएाँ । पूर्ए । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संस्था-२६१५ । रचना—काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६५२. श्चर्ग फूरकर्ण शास्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्चाकार—१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—श्रतिजीर्ग क्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या—१३२२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६५३. द्वाराघना कथा कोच-- मुनि सिंहनन्वि । देशी कागवा । पत्र संख्या-३४ । द्वानार-११ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्ग् । द्वपूर्ग्ः। भाषा--संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२५४४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६५४. कालकान महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । घाकार-११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा-धतिजीर्गुक्षीण । पूर्णु । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या-२१०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावर्गा शुक्ला ८, रविवार, सं० १७१६ ।
- ६४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । भ्राकार-१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । देशा-जीर्ग्राक्षीण । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२०७१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६५६ कालकान—लक्ष्मी वस्त्र गरित । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । धाकार— १० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{4}$ " । दशा—जीर्ग्त । पूर्ग । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या—१७६२ । । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६५७. गिस्ति नाममाला—हिरिबस कार्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार— १० $\frac{3}'' imes imes ''$ । दशा—जीर्ग्यंकीरा । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—न।गरी । विषय—ज्योतिष । ग्रन्थ संख्या—१६६= । रचनाकास—imes । लिपिकाल—सं० १७७६ ।
- ६५८. गरिष्यादि प्रश्न विचार— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । ग्राकार— १० $''\times$ ५ $^{+}_{7}$ '' । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । सिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था—२८३६ । रचना—काल— \times । निपिकाल— \times ।

- ६४६. गुरुखार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भ्राकार—११" \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा—जीर्गं क्षीण । पूर्णं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३६८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६६०. ग्रह डिंग्ट बर्गन $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२। श्राकार $-११''\times y''$ । दश्रा—ग्रन्छी । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६६१. प्रह वीपक-- \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार-१०" \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-शीर्णकीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । ग्रन्थ संख्या-२१११ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६६२. ग्रह शान्ति विधि (हवनपद्धति)— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३२ । श्राकार-१० $'' \times \chi_2^{5}''$ । दशा—भ्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६६३. प्रह शान्ति विधान—पं० ग्राशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । ग्राकार—१०" \times ५" । दशा—कीर्ग् । पूर्य । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—होम विधान । ग्रन्थ संख्या—१६६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—शावरा शुक्ला ८, स० १६१६ ।
- ६६४. ग्रहायु प्रमारण $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । क्षाकार-६ $\frac{9}{7}$ \times ४'' । दशा-जीर्ख । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४५४ । रचनाकाल- \times । लिपि-काल- \times ।
- ६६४. गौरल यन्त्र— \times । देशी कागज। पत्र संख्या-१। ग्राकार-११ $\frac{5}{5}$ " \times χ $\frac{5}{5}$ " । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२१। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **६६६. चन्द्र सूर्य कालानस चक---** \times । देशी कानज । पत्र संख्या-१ । भाकार--१०" \times ४ $^{*}_{\delta}$ "। दमा-जीर्गा । पूर्गा । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७२३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **६६७. वमस्कार जिन्तामणि** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । घाकार-६ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दक्का-जीर्ग्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६४२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ६६८. चनस्कार जिन्तामिल-स्थानपाल द्वित्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । भाकार-१०" \times ४७" । दशा-अन्छी । पूर्ग । प्रन्थ संख्या-१४६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-अधिवन घुक्ला १, सं० १८५८ ।
- ६६६. **चौधविद्या वक्क** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । झाकार-६" \times " । दशा-जीर्स्त । पूर्ण । भाषा-संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- ६७०. जन्म कुण्डली विचार— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—२ । आकार—११५ * * * । दशा—प्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । अन्य संस्था—१५५२ । रचना—काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६७१. जन्म पत्रिका— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—१। भ्राकार—१०" \times ४ $\frac{1}{9}$ "। दशा—श्रति जीर्गक्षीण। पूर्गः। भाषा—संस्कृतः। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१५०० । रचना—भाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०३ जन्मपत्रो पद्धति हर्षकीित द्वारा संकलित । देशी कागज । पत्र संख्या ३४ । म्राकार १०३ × ४३ । दशा जीर्स्स । पूर्म । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १६२३ । रचना काल \times । लिपिकाल चैत्र सुनक्षा १३, श्रातिचार, सं० १७७२ ।
- १७३. जन्मफल विचार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । धाकार—७३ $^{"}\times$ ४ $^{"}_{g}$ । देशा—जीर्ग् । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६७४. जन्म पद्धति \times । देशी कागज । पत्र सस्या–६३ । द्याकार–६" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा–श्रच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत श्रौर हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संस्था–१८३७ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
 - नोट-इसमे जन्म पत्रिका बनाने की विधि को सरल तरीके से समकाया गया है।
- ६७५. जातक—विण्डराज दैवक— \times । देशी कागज । पत्र सख्या—४६ । घाकार—१२ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा—भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा- सस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—११६२ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १७६. जातक प्रदीप-सांवता । देशी कागज । पत्र संस्था-११ । द्याकार-१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्एकीरए । पूर्ए । भाषा-गुजराती मिश्रित हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१५६१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६७७. ज्योतिष चक्र—हिम प्रमसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । झाकार— ${\{\circ_{\overline{\gamma}}^{2''}\times \gamma_{\overline{\gamma}}^{2''}}$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ सक्या—२३५४ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ६७८. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपति । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । झाकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या-२२४५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १०, बृहस्पतिवार, सं० १६८५ ।
- विशेष---पत्र संख्या १ से १० तक तो ज्योतिष रत्नमाला ग्रन्थ है धौर उसके पश्चात् २१ तक श्री भाष्करादित ग्रहागम कुतुहल श्री विदग्ध बुद्धि बल्लभ कृत ग्रन्थ लिखा गया है।
- १७६. प्रति संस्था २। देशी कागज। पत्र संस्था-३०। धाकार $-१\circ\frac{3}{5}''\times 8\frac{9}{5}''$ । दशा-जीर्गंकीरा। पूर्ग। ग्रन्थ संस्था-१२५०। रचनाकाल-स० १५७३। लिपिकाल $-\times$ ।

६८०. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—६० । ग्राकार—६ $\frac{5}{7}$ × $\times \frac{1}{7}$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या—११०१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ग्रधिक मास ग्रियन शुक्ला १४, सोमवार, सं० १८७६ ।

६**८१. प्रति संख्या २ । दे**शी कागज । पत्र संख्या-२३ । <mark>प्राकार-१०है" \times ४है" । दशा-</mark> भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२०६ । रचनाकाल- \times । जिपिकाल- \times ।

६८२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । ग्राकार—१० $\frac{9}{5}'' \times 8 \frac{9}{5}''$ । दशा—जीगां । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१२८५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

६८३. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या-४४। ग्राकार-१०" \times ३ $\frac{3}{9}$ "। दशा-जीर्ग्गक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२२०। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावरा शुक्ला ६, मंगल-वार, सं० १७६३ ।

नोष्ट--पत्रों के कोणे जीर्ग हो गये हैं।

६६४. प्रति संख्या ५। देशी कागज । पत्र संख्या-२५ । श्राकार-६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्ग्ग । पूर्ग्ग । ग्रन्थ संख्या-१७८४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

६८५. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र सख्या—२५ । भ्राकार—१० $\frac{4}{5}$ " ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा—श्रन्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१५५० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

६८६. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या –२६ । धाकार –११ $'' \times 8 \frac{3}{9}''$ । दशा – प्राचीन । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या –२१२८ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल –भाद्रपद शुक्ला ६, सं०१७८६ ।

६८७. ज्योतिवसार माषा-कवि कृपाराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । झाकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८७ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा १४, सं० १८८५ ।

६८६. ज्योतिषसार (सटोक)—नारचन्द । टीकाकार—भुजोदित्य । देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । ग्राकार-१०५ $'''\times$ ४ $'''_{g}$ '' । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१४६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फास्गुन कृष्णा १, सं० १८३७ ।

हे ६०. टीपर्स री पार्टी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—६ $\frac{3}{7}$ \times \times $\frac{3}{7}$ । दशा—ग्रच्छी । पूर्य । भाषा—संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५४७ । रचना—काल— \times । लिपिकाल—माध कृष्सा १२, सं० १६३३ ।

६६१. ताजिक नीलकच्ठी-पं नीलकच्छ । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । ग्राकार-

१० $\frac{3}{5}$ " \times प्र $\frac{3}{5}$ " = दशा—प्रच्छी = पूर्णे = भाषा—संस्कृत = सिपि—नागरी = अन्य संख्या—१८०२ = रचनाकास—सं० १६६४ = लिपिकाल—= = =

- $\xi \in \mathbb{R}$. ताजिक पद्मकोश पद्मकोश । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१० $^{\prime\prime}$ × $\chi_{\gamma}^{\prime\prime}$ । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०७३ । रचना-काल—सं० १६२३ । लिपिकाल—माघ शुक्ला ७, सं० १८५३ ।
- ६६३. ताजिक रत्मकोश $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-७ । भ्राकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ "। दशा-भ्रच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत भ्रौर हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२२४८। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला २, सं० १८४४।

विशेष-इस ग्रन्थ का प्रपर नाम पद्मकोष भी है।

- ६६४. दशान्तर दशा फलाफल $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४। घाकार-११ $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{1}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४०। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा १०, बृहस्पतिवार, सं० १८४१।
- **६६५. द्वावशरासी फल**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । घाकार—११ $'' \times \chi_{\xi}^{\eta''}$ । दशा—त्रीर्ण । पूर्त्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६५२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- ६६६. द्वि घटिक विचार—पं० शिक्षा । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार— ११ $'' \times \frac{1}{8}''$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—बैशाख शुक्ला १, बृहस्पितवार, सं० १८६८ ।
- ६६७. दिनमान पत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । देशी कागज । प्रत्य संख्या—१६३२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—कार्तिक कृष्का ४, सं० १८५१।
- **६६ .** प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—१० $\frac{9}{5}$ " × $\chi \frac{9}{5}$ " । दशा— भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६२० । रचनाकाल—× । लिपिकाल—× ।
- ६६६. विन रात्रि मान पत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—११ $\frac{1}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भ्राषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०००. दुर्घाद्मया विचार-पं० शिवा । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । प्राकार-११ $''\times$ ५ $\frac{9}{2}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ग । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या--१८३३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- - १००२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । यत्र संख्या-४ । झाकार $-e^{\frac{2}{3}''} \times 8^{\frac{3}{6}''}$ । दशा-

भ्रष्ट्वी । पूर्णं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । भ्रष्य संख्या-२७७३ । रचनाकास-igm । लिपि-काल-igm > ।

१००३. नवषह स्तोत्र व बान $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । भ्राकार-१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ "। दशा-भच्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५५५ । रबनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१००४. नारव संहिता— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भ्राकार— $\varsigma \frac{3}{5}'' \times 3\frac{9}{5}''$ । दशा–प्राचीन । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१५१ । रवनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१००५. पंचाग विधि— \times । देशी कागज । पत्र संख्या - २ । श्राकार – १२ $'' \times 4\frac{1}{6}''$ । दशा – श्रच्छी । पूर्ण । भाषा – हिन्दी । लिपि – नागरी । श्रन्थ संख्या – २२५१ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१००६. पत्य विचार—वंसतराज । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—६ $\frac{1}{6}$ " \times ४"। दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५१५ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

१००७. प्रश्नसार—हमग्रीय । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । ग्राकार—११\frac{9}{8}"\times६" । दशा—जीर्गंक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सग्या—१७०० । रचनावाल—\times । लिपिकाल—फाल्गून कृष्णा ३, सं० १८८६ ।

१००८. प्रश्नसार संग्रह । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । ध्राकार-१२" \times ५ $\frac{9}{8}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत धौर हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ सख्या-१६१६ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-ग्रश्विन शुक्ला ६, सं० १८६८ ।

१००६. प्रश्नावसी - जिनवल्लम सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । म्राकार—११" \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-मागरी । म्रन्थ संख्या-१४३७ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०१० बहा प्रवीप—पं० काशीनाथ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार—१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशाः जीर्गंकीसा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मात्र कृष्णा ४, सं १६८२ ।

१०११: माडली पुरास —माडली ऋषि । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । झाकार—१० $"\times \lor_3^{0}"$ । दशा-जीर्रासीण । पूर्स । माषा-हिन्दी । लिप-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०१२. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । प्राकार-१०" \times ४ $\frac{9}{5}$ " । दशा-जीर्गंकीण । पूर्ण । प्रन्थ संख्या-२६१७ । रचनाकान- \times । लिपिकाल- \times ।

१०१३. भुवन बीयक-पद्म प्रमसूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । झाकार-१०३ $^{\circ}$ \times ५ $^{\circ}$ $^{\circ}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४५१ । रयनाकास- \times । सिपिकास- \times ।

- १०१४. आस सम्म फल $-\times$ । देशी कानज । पन संस्था-२। प्राकार-२१ $''\times$ ५ $^{\prime\prime}$ । दक्षा-जीर्ग्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१६७६ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १०१४. मुहूर्त चिन्तामिः दैवनराम । देशी कागज । पत्र संख्या १ । प्राकार ११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७३० । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **१०१६. मुहूर्त जिन्तामणि सटीक वैवज्ञाम । टीकाकार –नाराय**ण । देशी कागज । पत्र संस्था–६५ । माकार –१३ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा–मञ्ज्ञी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि –नागरी । प्रत्य संस्था–१६६३ । रचनाकाल \times । टीकाकाल सं० १६२६ । लिपिकाल सं० १६३१ ।
- **१०१७. प्रति संस्था २ । देशी कागज ।** पत्र संस्था—१५७ । **झाका**र—१ \bullet है" \times ५ ξ " । दशा—प्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था—१६५२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- नोट-इस ग्रन्थ की टीका सं० १६४७ गीरीश नगर (ग्रव वाराणसी) में होना बताया गया है।
- १०१८. मुहूर्त मुक्तावली \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । म्नाकार-६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-म्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५१८ । स्वनाकाल- \times । लिपिकाल-माथ कृष्णा १, सं० १८५२ ।
- १०१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । द्याकार—१० $'' \times$ ५'' । दशा— प्राचीन । ग्रपूर्श । ग्रन्थ संख्या—२१५५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०२०. मेघवर्षा — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भ्राकार-११ $'' \times v_0^2$ '' । दशा— भ्रातिजीर्गं क्षीर्ग । पूर्णं । भाषा-संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-१४७६ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०२१. मेदनीपुर का लग्न पश्च \times । देशी कागज । पश्च संख्या-१ । प्राकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{2}$ " । दशा-प्रंच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । सिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-२०७७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०२२. योगसार ग्रहकल $--\times$ । देशी कागज । पत्र सख्या-६ । ग्राकार-७" \times ६" । दक्षा-भच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४६= । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भावण शुक्ला ४, सोमवार, सं० १६०७ ।
- **१०२६. रमल शकुतावली । देशी** कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दक्या—शाचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । बन्थ संख्या—२४४४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माथ कृष्णा १, सं० १८४४ ।
- **१०२४. प्रति संस्था २ । देशी** कागज । पत्र संस्था-४ । धाकार-१२ $\frac{3}{5}$ " \times ६ $\frac{3}{5}$ " । दशा-प्राचीत्र । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२६३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सोमवार, सं० १८७० ।

- १०२४. रमल शास्त्र—पं० जिल्लामिशः । देशी कागजः । पत्र संख्या–१४ । झाकार— ६ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्णः । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०२६. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१५ । घ्राकार-६ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{5}$ " । दशाभ्रम्छी । पूर्ण । भ्राषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१५५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०२७. राज्ञि नकत्र फल-महादेव । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । श्राकार-१० $\frac{3}{9}$ "× ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा-जीर्गंक्षीण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४४ । रचना-काल-× । लिपिकाल-× ।
- **१०२८. राशि फल** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार— $= \frac{3}{2}'' \times \chi''$ । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५४६ । रचना—काल $=\times$ । लिपिकाल $=\times$ ।
- १०२६. राशि लाम व्यय चक $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार— ६ $\frac{3}{3}'' \times 5\frac{3}{3}''$ । दशा-ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८४ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १०३०. राशि संक्रान्ति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार— $E'' \times V_g^{g''}$ । दशा—ग्रच्छी । पूर्यं । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १८४४ ।
- **१०३१. सन्न श्वक्त**— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । श्राकार—१२ \S'' > ४ \S'' । दक्ता—जीर्ग्रंकीरम् । पूर्यं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२८१३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१०३२. लग्नवन्त्रिका—काशीनाथ। देशी** कागज । पत्र संख्या—६६ । द्याकार—६ $^{\prime\prime}$ \times $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६०३ । रचना—काल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला २, बृहस्पतिवार, सं० १८४१ ।
- १०३३. लग्न प्रमास $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-२। घ्राकार-१० $^{n}\times x_{2}^{n}$ । दशा-जीर्सुंशीण। पूर्सं। भाषा-संस्कृत ग्रीर हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८३७। रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १०३४. सम्नावि वर्णन $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । श्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५४२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- **१०३५. लग्नाक्षत फल**—— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार—७ $\frac{9}{4}$ " \times ५" । दशा—धन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७१६ । रजनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०३६. लघु जातक (सटीक) — मह्दोरपस । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । ब्राकार — ६३ $" \times 4$ ३"। दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६२४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१०३७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—२१ । झाकार——१० $^{\prime\prime} imes$ ४ $^{\prime\prime}_2$ । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । प्रन्थ संस्था—१०७४ । रचनाकाल - imes । लिपिकाल— सं० १८३५ ।

१०३८. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । झाकार-११है" \times ५ \S "। दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०३६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । प्राकार—-६" \times $\frac{1}{4}$ "। दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२२४६ । रवनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ३, रवि-वार, सं० १८१६ ।

१०४०. लघु जातक भाषा—कृषाराम । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । श्लाकार— ११ $'' \times ५<math>\frac{1}{3}''$ । दशा—शब्छी । पूर्णे । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५४६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

विशेष—ज्योतिष सार नामक संस्कृत ग्रन्थ का ही हिन्दी ग्रन्थ नाम लघु जातक रखकर कर्ता ने लिखा है।

१०४१. लीलावती भाषा— लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । भ्राकार—१२ $''\times$ ५ ξ''' । दशा—जीर्ग क्षीसा । पूर्या । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । सन्ध संख्या—२५५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकास—मंगसिर कृष्णा १, बृहस्पतिवार, सं० १७६८ ।

विशेष---भाषाकार ने उस समय के राजादि का पूर्ण वर्णन किया है। ग्रन्थ इतिहास की इब्टि से महत्वपूर्ण है।

१०४२. लीलावती सटीक — भास्कराचार्य । टीकाकार—गंगाघर । देशी कागज । पत्र संख्या—६७ । ग्राकार—११ $\frac{9}{7}$ " \times प्र" । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०४३. वर्ष कुण्डली विचार $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । प्राकार-१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{5}{9}$ " । दशा-जीर्ग्रंक्षीरा । पूर्ग् । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रम्य संख्या-२१४१ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१०४४. वर्ष फलाफल चक्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । झाकार-१०३ $^{"}\times$ ४ $^{"}_{\gamma}$ " । दशा-झच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला ७, सं० १६४६ ।

१०४५. वृहद जातक (सटीक)—वराहिमिहिराजार्य । टीकाकार-भट्टोत्पन्न । देशी कागज । पत्र संख्या-१७२ । ग्राकार-१३ $\frac{3}{5}$ ४ $\frac{3}{5}$ । दशा-ग्रब्धी । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६६४ । रचनाकाल- \times । टीकाकाल-वैत्र शुक्ला ५, बृहस्पतिकार, सं० १०२३ । लिपिकाल-सं० १६४२ ।

१०४६. विचिन्तमिश श्रं क $--\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । श्राकार- $\epsilon''\times$ ४ $\frac{9}{7}''$ । दशा-श्रन्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नायरी । प्रन्य संस्था-२७५७ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ४, मंगलवार सं० १७७३ ।

१०४७. बिपरीत ग्रहरा प्रकररा । देशी कागज । पत्र संस्था-१ । श्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-जीर्ग क्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२१४५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१०४८. विवाह पटल $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । धाकार-१० $''\times$ ४'' । दशा-ध्रतिजीर्गा , पूर्ग । भाषा-संस्कृत । लिपि-न।गरी । प्रत्य संख्या-१५०१ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १, सं० १७८१ ।

१०४६. विचाह पटल—श्रीराम मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । धाकार-११" \times ४" । दशा-जीर्एक्षीरा । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६११ । रचनाकाल-प्रश्विन कृष्णा २, बुधवार, स० १७२० । लिपिकाल- \times ।

१०५०. विवाह पटल (भाषा)-पं० रूपचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । भाकार- १० $\frac{1}{4}$ " \times ४ $\frac{1}{4}$ " । दशा-श्रञ्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०५१. विवाह पटल सार्थ--- \times । देशी कागज। पत्र संख्या-६। आकार-७ $\frac{3}{9}$ " \times \times $\frac{3}{9}$ "। दशा-मज्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत भीर हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२४१५। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ कृष्णा ६, बृहस्पतिवार, सं० १६१७।

१०५२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । झाकार-१०" \times ३ \S " । दशा- प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२२५० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०४३. शकुन रत्नावली— > । देशी कागज । पत्र संख्या -१३ से ३२ । ध्राकार-१० $^{\prime\prime}\times$ ४है $^{\prime\prime}$ । दशा—ग्रन्छी । ध्रपूर्ण । भाषा-हिस्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५४२ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल- \times ।

१०५४. **शकुन शास्त्र—भगवद् भाषि**त । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । प्राकार—१०" \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—जीर्गां । पूर्गों । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रम्थ संख्या—१६६८ । रचना-काल— \times । लिपिकान—भाष्ट्रपद शुक्ला १०, सं० १८१७ ।

नोट — सुपारी रखकर देखने से विचारे हुए प्रश्न का फल जात होता है। इसके लिये इस ग्रन्थ का पत्र ७ भीर ८ देखें।

१०४४. शकुनावली— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । भ्राकार— \mathbf{x}_{7}^{9} " । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । भ्रन्थ संख्या—२५२३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०५६. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-५ । भ्राकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ "। दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२७८१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- १०५७. सीव्र बोच (सटीक) काशीनाच भट्टाचार्च । टीका श्रीतिलक । देशी कागज । पत्र संख्याः—११ । द्याकार—१०५ \times ६६ 3 । दशा अण्डी । पूर्ण । भाषा संस्कृत घीर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६८१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—बैशाख शुक्खा \times , सं० १६१७ ।
- १०५०. शोधवोध—काशोनाथ भट्टाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । धाकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०१० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०५६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । भ्राकार—१० $'' \times \xi_{\tau}^{9}''$ । दशा—भ्रुच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११४२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०६०. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । धाकार—६ है " \times ४ ξ " । दशा— श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३३१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावरा कृष्णा ७, सं०१६०६ ।
- १०६१. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था-६ । प्राकार-६" \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा- अच्छी । पूर्गं । प्रन्थ संस्था-१३३२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०६२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । श्राकार-१२ $\S'' \times \chi \S''$ । दशा-ग्रच्छी पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०६३. श्रीझ**वोध सार्थ** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—५३ । **धाकार**—१० $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत धौर हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४८६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावण शुक्ला ५, रिववार, सं० १८६० ।
- १०६४. शुक्कोदय फल $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । धाकार-१० $\frac{1}{6}$ " × ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्गा क्षीरा । पूर्या । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६७८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०६४. षद् पंचात्रिका—सट्ठोत्पल । देश्री कागज । पत्र संस्था—२ । झाकार—११हुँ" \times ४" । दशा—मच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१८४५ । रचनाकास—लिपिकाल— \times ।
- १०६६. प्रसि संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । धाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{7}$ " दशा- जीर्ग्य क्षीण । पूर्य । धावा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-१६६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १०६७. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था—१३ । धाकार—१० $\frac{3}{2}$ " \times χ^{3}_{2} " । भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१५३० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भावसा कृष्या ४, बृहस्पतिबार सं० १८६४ ।
- १०६८. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-७ । म्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ "। दशा-जीर्गाक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१४३० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०६६. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार—१०३ $''\times$ ४ $^{*}_{0}$ '' । दशा—जीएंक्रीए। पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकान— \times ।

१०७०. सद् पंचासिका— बराहिनिहिराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । प्राकार— १० $'' \times 3 \frac{1}{2}'''$ । दशा—प्रच्छी । पूर्या । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२४७ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा २, सं० १७६० ।

१०७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-१०३ $"\times$ ४ $\$^{"}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६४२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०७२. षट् पंचासिक सटीक— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१२ । झाकार—-१० $\frac{3}{5}'' \times \chi''$ । दशा—धच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१२६ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०७३. षट् पंचासिका सटीक—वराहमिहिराचार्य । टीकाकार—मट्टोत्पल । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ । प्राकार—१० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{4}{7}$ 7 । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि— नागरी । ग्रन्थ सख्या—२३५३ । रचना टीकाकाल—सं० ६०० । लिपिकाल—चैत्र शुक्ला १५, बुधवार, सं० १८७७।

विशेष-टीका का नाम "प्रश्नसागरोत्तरशोत्पल" है।

१०७४. **बोडवयोग**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–२ । म्राकार–१२ $^{\prime\prime}\times$ ५ $^{\prime\prime}_5$ । दशा–प्राचीन । म्रपूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । । ग्रन्थ संख्या–२८४६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१०७५. स्वरोदय— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । झाकार—११ $\frac{9}{5}$ " \times $\times \frac{9}{5}$ " । दशा—जीएाँ । पूर्एं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१८४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०७६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-१२ $\S'' \times \chi_{\S}^{2}''$ । दक्ता-श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १८६६ ।

१०७७. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । झाकार-११ $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ "। दशा-जीर्गुक्षीसा । पूर्स । सन्थ संख्या-१६६ । रचनाकाल-imes । लिपिकाल-imes ।

१०७८. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था–६ । धाकार–१० $'' \times 8\frac{9}{5}''$ । दशा– प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था–२८३३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१०७६. स्वप्न विचार— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—१। भ्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{3\prime\prime}_{7}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । सिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२७७६ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।

विशेष-स्वप्त में देखी हुई वस्तुमों का फल का वर्णन विशास है।

१०६०. स्वय्नाध्याय $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था $-\times$ । धाकार $-\epsilon_1^{9''}\times v_0^{9''}$ । दशा—धन्छी । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२८१६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—आवण शुक्ला ७, शुक्रवार, सं० १७८३ ।

१०६१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । प्राकार-१७ $rac{1}{3}'' imes \xi rac{1}{3}''$ दशा-जीर्गक्षीसा । पूर्स । ग्रन्थ संस्था-२८३७ । रचनाकाल-imes । तिपिकाल-सं० १७३४ ।

विशेष - प्रन्थ की भ्रंबावती नगर में लिपि की गई।

१०६२. साठी संवत्सरी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । म्राकार—१० $\frac{3}{5}'' \times 8\frac{3}{5}''$ । दशा—जीएां । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६८८ । रचनाकाल— \times । लिपि—काल— \times ।

१०८३. प्रति संक्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । म्राकार—११६ n \times ४ n n । दशा—प्राचीन । पूर्या । ग्रन्थ संख्या—२५३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०८४. सामुद्रिकशास्त्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । ग्राकार-१० $''\times$ ४'' । देशा-जीर्या । पूर्य । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०८४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । श्राकार-१०३ $" \times ४$ ६" । दशा–जीर्गंक्षीरा । पूर्ण । प्रत्थ संख्या-२४५६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१०५६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या- द । म्राकार-१० $^{\prime\prime}$ imes ४ $\frac{1}{6}^{\prime\prime}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण ।ग्रन्थ संख्या-२४७१ । रचनाकाल- imes । लिपिकाल-imes ।

१०८७. सारणी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । श्राकार—११ $\frac{1}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण । भाषा— हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०६८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०८८. साररणी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । भ्राकार-१०" \times ४-१" । दशा—जीएं । पूर्एं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-१६२७ । रचनाकाल- \times । लिपि-काल- \times ।

१०८६. सारग्गी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–१। ग्राकार–६ $\frac{3}{5}$ " \times ४"। दशा–जीग्गं । पूर्णं । भाषा–हिन्दी । लिपि–नागरी । ग्रन्थ संख्या–१४२८ । रचनाकाल– \times । लिपि–काल– \times ।

१०६०. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-५ । प्राकार-१०'' \times ४ $\frac{1}{5}''$ । दशा-जीगां । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१६२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०६२. सूर्य प्रह बात —पं सूर्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-६" ×

१०६३. संवत्सर फल $--\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-१२। झाकार-११ $''\times$ ४ $^3_7''$ । दशा-अच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी। झन्य संख्या-२१०७। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-धश्विन कृष्णा १०, सं० १७८८।

विशेष-इस ग्रन्थ की लिपि डेह नामक ग्राम में की गई।

१०६४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१२। श्राकार-१३ $'' \times \xi_7^{9}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्श । ग्रन्थ संस्था-२०७२ । रचनाकास- \times । लिपिकास- \times ।

१०६५. होरा श्रक---- \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-१२" \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्एा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०६६. त्रिपता चन-- \times । देशी कागज । पत्र संख्या--२ । श्राकार-१० $\frac{9}{6}$ " \times ५" । दशा-श्रन्थी । पूर्गं । भाषा- हिन्दी । लिप-नागरी । ग्रन्थ संख्या--१५५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१०६७ झान प्रकाशित कीपार्णव— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४४ । श्राकार—११ $''\times$ ५ $\frac{3}{5}''$ । दशा—जीर्ग्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times । कार्तिक कृष्णा १४, सं० १६३० ।

१०६८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४१ । ग्राकार—११" \times ५ $^{\circ}_{5}$ " । दशा—जीर्गं । पूर्गं । ग्रन्थ संख्या—१५७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विषय-न्याय शास्त

- १०६६. घष्ट सहस्त्री-विद्यानित्व । वेशी कागज । पत्र संख्या-२४४ । प्राकार-११कुँ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्ग्कीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-न्याय भास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१३८० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष प्रतिपदा, बुधवार, सं० १६७४ ।
- ११००. श्रास्था बन्तवाव \times । देशी कागज । पत्र संस्था ३ । श्राकार १० $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_7$ । दशा जीर्गुंशीरा । पूर्णं । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय न्याय शास्त्र । ग्रन्थ संस्था १७६६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ११०१. घाष्तमीमांसा वचित्रका—समन्तमद्वाचार्य । टीकाकार—खयचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—७२ । प्राकार—११६ 8 " \times 8 " । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत, टीका हिन्दी में । लिपि—नागरी । प्रन्य संख्या—१८७० । रचनाकाल— \times । टीकाकाल चैत्र कृष्णा १४, सं० १८६६ । लिपिकाल— \times ।
- **११०२. प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या-५६ । ध्राकार-१३ $\frac{9}{8}$ " \times ६ $\frac{9}{8}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६४७ । वचिनका का रचनाकाल-चैत्र कृष्णा १४,सं० १८६६ । लिपिकाल-ग्रक्षियन शुक्ला १०, रिववार, सं० १८६४ ।
- ११०३. **श्रालाप पद्धति पं० देवसेन** । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । श्राकार— १०" \times ४ $\frac{9}{7}$ " । दशा-जीर्ग क्षीमा । पूर्ण । भाषा-सस्कृत । सिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५३१ । रचनाकाल- \times । लिपिकास-कार्तिक कृष्णा ७, सं० १७१५ ।
- ११०४. प्रति संख्या २ । । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । ग्राकार- १२ $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । वशा-मञ्जी । पूर्या । ग्रन्थ संख्या-१६०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **११०५. प्रति संख्या** ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । भ्राकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४२३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १**१०६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज ।** पत्र संख्या—७ । भाकार-१२ $\frac{2}{9}$ " \times ५ $\frac{2}{9}$ " । दशा-जीखंक्षीसा । पूर्सा । ग्रन्थ संख्या—२३३४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ११०७. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । प्राकार-१०हें"×४हें"। वशां-जीर्गंशीरा । पूर्णं । प्रत्थ संस्था-२५६६ । रचनाकाल-४× । लिपिकाल-चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १५६८ ।
- ११०८. ईश्वर प्रत्यिमना सूत्र—श्रमिनव गुप्ताचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-५३। ब्राकार-१३" \times ७ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । विषय-स्याय । प्रत्य संख्या-१६८८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
 - **११०६. गरकोपनिषद् हरिहर ब्रह्म** । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । धाकार-

- ११ह्रै" \times प्र $^{9}_{7}$ "। दशा—मच्छी । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१७७८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—उयेष्ठ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं० १८६४ ।
- १११०. गुरास्थान स्वरूप—रत्नशेखर सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । झाकार—१०" \times ४ 9_7 "। दशा—भ्रष्ट्वी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय श्रावर्ण शुक्ला ५, सं० १८१८ ।
- ११११. **चतुर्दंश** गुणस्**यान**- $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-१। आकार-१२ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{4}$ "। दशा-जीर्गं क्षीरा। पूर्गं। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१५४६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१११२. जोव चौपई— पं० दोलतराम** । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । **धा**कार— $E'' \times Y_0^{1}$ । दक्ता—भव्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४३ । रचना— काल— \times । लिपिकास— \times ।
- **१९१४. तर्क संग्रह—श्रमन्त मट्ट** । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । ग्राकार- १०६ै'' × ५'' । दशा—जीर्ग्ग । पूर्ग्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७१२ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—सं० १८७६ ।
- १११४. ता किकसार संग्रह-पं० वश्वराज । देशी कागज । पत्र संख्या-२४ । ग्राकार-१३ $\frac{2}{5}$ ४ $\frac{2}{5}$ । दशा-ग्रतिजीर्ण कीएा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०३८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१११६. न्यायसूत्रसिथिलेश्वर सूरी** । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । म्राकार-८ $\frac{3}{6}$ " \times ३ $\frac{3}{6}$ " । दशा-जीर्गक्षीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-१३१८ । रचना-काल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला ४, शुक्रवार, सं० १६६७ ।
- **१११७.** न्याय वीपिका—सिननद धर्मभूषणाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-२७ । भ्राकार-११ $\frac{2}{3}$ " \times ४" । दशा-जीर्ग्य । पूर्ण । भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्य संख्या-१३५७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १३, रिवबार, सं० १८१० ।
- १११८. प्रमेष रस्तमाला—माणिक्य तिव । देशी कागज । पत्र संख्या-७७ । झाकार- $\xi_{\eta}^{*} \times \chi_{\eta}^{*}$ । दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-११६३ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१११६. विधि सामान्य**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । धाकार—१०३ $''\times\chi_2^3''$ । दशा—प्रस्की । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्य संख्या—१७५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाय— \times ।

११२०. सप्त पदार्थ संशावचूरि— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । प्राकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्गक्षीए। पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—२३१७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

११२१. तिद्धान्त चन्द्रोवय (तर्क संग्रह व्याख्या) — ग्रनन्तमष्ट् टीका-श्रीकृष्ण धूर्जिट वीक्षित । देशी कागज । पत्र संख्या – ३२ । ग्राकार – १० $\frac{1}{9}$ \times " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा — भ्रष्ठि । पूर्ण । भाषा — सस्कृत । लिपि — नागरी । ग्रन्थ संख्या – १६६६ । रचनाकाल — \times । टीकाकाल — सं० १२७५ । लिपिकाल — \times ।

विषय-नाटक एवं संगीत

११२. मदन पराजय—िकनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । भ्राकार— ११" \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा—प्राचीन । पूर्गो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । भ्रत्थ संख्या—२४३६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १४, सं० १६६१ ।

११२३. मिथ्यात्व खण्डन -- **कवि धनुष** । देशी कागज । पत्र संख्या -- । ४५ । झाकार -- १० $\frac{3}{5}$ " \times ७" । दशा -- प्रच्छी । पूर्ण । भाषा -- हिन्दी । लिपि -- नागरी । विषय -- नाटक । ग्रन्थ संख्या -- २२७४ । रचनाकाल -- पौष शुक्ला ५, रविवार, सं० १८२१ ।

११२४ मिथ्यात्व खण्डन (नाटक) — साह कन्नीराम । देशी कागज । पत्र संख्या — ६३ । म्राकार — ६६ $\%'' \times \times 5$ ं । दशा — जीर्गक्षीरा । पूर्या । भाषा – हिन्दी (पद्य) । लिपि — नागरी । विषय – नाटक । ग्रन्थ संख्या – १२७६ । रचनायाल – पौष शुक्ला ५, सं०१६२०। लिपिकाल – भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार सं०१६००।

नोट—किव ने ग्रंपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है। ग्रन्थकर्ता ग्रादि निवासी चाकसूश्री पेमराज के सुपुत्र हैं। सर्वाई जैपुर के लश्कर के मन्दिर के पास बोरड़ी के रास्ते में रचना की गई है।

११२४. हनुमन्नाटक-पं० दामोदर मिश्र । देशी कागज । पत्र संख्या-३६ । श्राकार-१० $\frac{9}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-**१४**१६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-बैशाख कृष्णा ६, सं० १८४१ ।

११२६. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिजन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । श्राकार— १०ङ्गे" \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नाटक । ग्रन्थ संख्या—५०७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय श्रावशा सुदी २ सं० १७६८ ।

> अन्त—इतिश्रीवादिचन्द्र विरचित ज्ञानसूर्योदयनामनाटको चतुर्थो अध्यायः ४ । इति नाटकं सम्पूर्णामः । सं०१७६८ वर्षे मिति द्वितीया श्रावण शुक्ला तृतीया लिपिकृतं मण्डलसूरि श्री चन्दकीतिना लुएावा मध्ये स्वात्मार्थम् लेखकवाचकयो शिवं भूयात् ।। १ ।।

११२७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३७ । ग्राकार-१० है" × ४ है" । दशा-जोर्गा । पूर्या । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नाटक । ग्रन्थ संख्या-१२३० । रचनाकाल-माघ गुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपिकाल-Х ।

११२८. प्रति संख्या ३ । देगी कागज । पत्र संख्या—५३ । म्राकार—१२ $\frac{5}{2}$ " × ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या—२१०१ । रचनाकाल—माघ शुक्ला ८, सं० १६४८ । लिपि—काल— × ।

प्राविभाग---

धनन्तमहिमाप्ताय सदौंकार नमोस्तु ते ।। १।। तस्मादिभन्नरूपस्य वृष्णस्य जिनेशतुः । नत्वा तस्य पदांभोजं भूषिताऽखिलं भूतलं ।। २।। भूपीठभ्रान्तभूतानां भूयिष्ठानन्ददाधिनीं । भजे भवापहां भाषां भवभ्रमणभंजिनीं ।। ३।। येषां ग्रन्थस्य सन्दर्भो प्रोस्फुरीतिविदोहृदि । ववंदे तान् गुरुन् भूयो भक्तिभारनमः शिराः ।। ४।।

भन्तमाग---

मूलसंघे समासाद्य ज्ञानभूषं बुधोत्तमाः । दुस्तरं हि भवांभीधि सुतरि मन्दते हृदि ॥ ६५ ॥ तरपट्टामलभूषणां समभवद्धंगम्बरीये मत्ते, चंबद्धहंकरः स भाति चतुरः श्रीमत्प्रभाचन्द्रमाः । तत्पट्टेऽजिनि वादिवृंदतिलकः श्रीवादिचन्द्रो यति । स्तेनायं व्यरचि प्रबोधतरिणः भव्यावंजसंबोधनः ॥ ६६ ॥ वसुवेदरसाव्जांके १६८४) वर्षे माधे सिताष्टमी दिवसे । श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोऽयं बोधसरंभः ॥ ६७ ॥ इति समाप्तम् ॥

११२६. संगीतसार—पं० दामोदर । देशी कागज । पत्र संख्या – दर । श्राकार—६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ " । दशा—ग्रतिजीर्गक्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—संगीत । ग्रन्थ संख्या—१३७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विषय--नीतिशास्त्र

- **११३०. चाणक्य नीति चाणक्य** । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । म्राकार १० $\frac{2}{3}$ " × ४" । दशा जीर्ग्यक्षीरा । पूर्ण । **भाषा** संस्कृत । लिपि नागरी । विषय नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या १८४२ । रचनाकाल × । लिपिकाल सं० १८४३ ।
- ११३१. नन्दबत्तीसी— नन्दसेन । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-१० $\frac{3}{8}$ " \times ४ $\frac{9}{8}$ " । दशा-जीर्ग्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१३४० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ११३२. नीतिबाक्यामृत—सोमवेब सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । ध्राकार—१० $'' \times$ ५'' । दशा—प्राचीन । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या—२४१७ । रवनाकाल— × । लिपिकाल—× ।
- **११३३. नीतिशतक (सटीक) मर्नुहरि । देशो कागज** । पत्र संख्या-१५ । **ग्रा**कार-**११** $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{1}{5}$ " । दशा-जीर्ग्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-नीतिशास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१८७१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १, सं० १८२७ ।
- **११३४. प्रति संख्या २ । देशी कागज ।** पत्र संख्या—३३ । ग्राकार—११ $\frac{1}{5}$ " \times ५ $\frac{1}{5}$ " । दशा—भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—११५८ । रचनाकास— \times । लिपिकाल— \times ।
- ११३४. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१६ । प्राकार—५३ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ । दशा— ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ११, सं० १८७१ ।
- ११३६. नीतिशतक सटीक \times । देशी कागज । पत्र संख्या—५६ । झाकार—१२ $\frac{9}{8}\times$ ५ $\frac{9}{4}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्तो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६४८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध शुक्ला १०, मंगलवार, सं० १८३३ ।
- ११३७. नीतिसंग्रह— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । श्राकार—११'' \times ४ $\frac{4}{5}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२८३४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **११३** म. पंचतन्त्र-विष्णु सर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या- न । ग्राकार-११" \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा-जीर्शाक्षीरा । पूर्णा । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या- १०१६ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
 - ११३६. राजनीतिज्ञास्त्र— चम्पा । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-१२३ ×

 x_{η}^{2} ा दशा—ग्रन्छी । पूर्या । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

११४०. वृहद् चाणस्य राजनीतिशास्त्र—चाणस्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१५ । याकार-१०" \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा-प्रतिजीर्गाक्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-१६४५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

११४१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । धाकार-११ $''\times$ ४ $^2'''$ । दशा-प्रतिजीर्गक्षीर्ग । पूर्ग । ग्रन्थ संस्था-१६५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-श्रावण शुक्ला ११, बुघवार, सं० १७१६ ।

विषय-पुरागा

- ११४२. उत्तरपुराल--पुष्पदन्त । देशी कागज । पत्र संख्या--२६३ । धाकार--१३ $\frac{2}{5}$ " \times ५ $\frac{2}{5}$ " । दशा-धन्छी । पूर्ण । भाषा--ध्रपभ्रंश । लिपि--नागरी । विषय-पुराण । ग्रन्थ संख्या--१०४१ । रजनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १४८२ ।
- ११४३. उत्तरपुराण (सटीक)—पुष्पदन्त । टीकाकार—प्रमाचन्द्राचार्य । देशी कःगज । पत्र संख्या—३१ । आकार—११ $\frac{3}{3}$ "× $\frac{1}{3}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्णे । भाषा—ग्रपभ्रं श ग्रीर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पुराण । ग्रन्थ संस्था—११६१ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १५, शनिवार, सं० १६५८ ।
- ११४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३३ । प्राकार—१३६ $'''\times$ ५'''''। दशा— जीर्गा । पूर्गा । प्रन्य संख्या—१०३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **११४५. उत्तरपुराणिटिप्पण प्रभावन्द्राचार्य ।** देशी कागज । पत्र संख्या—६३ । **भाकार—११**" \times ५" । दशा—जीर्ग । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२५२१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ११४६ गरङ्गुराण (सटीक)—वेदण्यास । टीकाकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । म्राकार—१३ $'' \times \lor_{\overline{g}}^3''$ । दशा—म्रतिजीर्गां क्षीण । पूर्गां । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पुराशा । ग्रन्थ संख्या—१६८० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- ११४७. चक्रधरपुराण जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या १३६ । भ्राकार ११ $\frac{3}{6}$ " \times प्र $\frac{3}{6}$ " । दशा भ्रच्छी । पूर्गं । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या ४० प्र । रचना काल \times । लिपि काल \times ।
- **११४८. नेमिजनपुराण बहा नेमियल** । देशी कागज । पत्र संख्या-२२६ । भ्राकार-११ $\frac{3}{7}$ \times $\frac{1}{7}$ \times 1 दशा-जीर्गंकीण । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । ग्रन्थ संख्या-१२३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला २, सोमवार, सं० १६०६ ।
- **११४**६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२०८ । प्राकार—१• $\frac{1}{5}$ " × ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—जीर्ग्यंशीर्ग । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या—१४०४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—ग्राषाढ शुक्ला १४, शनिवार, सं० १६६१ ।
- **११५०. प्रति संख्या ३ । देशी का**गज । पत्र संख्या—१६५ ! स्राकार—१०३ $''\times$ ४ $^3_7''$ । दशा—जीर्गंक्षीम् । पूर्मं । प्रन्थ संख्या—१२६१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
 - ११५१. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२५३ । द्याकार-१०" $imes v_g^{*}$ "।

दशा—जीर्गा । पूर्णं । प्रन्य संख्या—१०११ । रचनाकाल—४ । लिपिकाल—फाल्गुन सुदी १३, शुक-वार, सं० १६७४ ।

११४२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६६ । झाकार-१२" ४४ है" । दशा-जीर्शक्षीण । पूर्ण । प्रन्थ संख्या-२६७६ । रचनाकाल-४ । लिपिकाल-सं० १६७४ ।

११५३. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था-१८५ । झाकार-११६ै" \times ४३ै" । दक्षा-प्रस्थी । पूर्ण । प्रत्य संस्था-२५६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्णा १, रिव- वार, सं० १७०६ ।

विशेष-ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ४५०० है। लिपिकार की प्रशस्ति का ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

११४४. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या—२३० । आकार—११" \times \times " । दशा—अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२३२२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय भाद्रपद कृष्णा =, सोमवार, सं० १६६४ ।

११४५. पद्मनाभपुरास्य—महारक सक्तकीति । देशी कागज । पत्र सख्या—६४ । ग्राकार—६" \times ६ $\frac{9}{4}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्स्य । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगशीर्ष शुक्ला ४, सोमवार, सं० १८४३ ।

११४६. पदापुराण माषा—पं० लक्ष्मीवास । देशो कागज । पत्र संख्या—१७१ । धाकार—११ $\frac{3}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{2}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्यो । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । प्रथ संख्या—१७८० । रचना-कान—गोष शुक्ला १०, सं० १७८३ । लिपिकाल—सं० १८१८ ।

११४७. पद्मपुरास् — रिविषेणाचार्य । देशी काग् । पत्र संख्या — ५६७ । ग्राकार — १३ $" \times$ ५" । दशा — प्रच्छी । पूर्स् । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । ग्रन्थ संख्या — १२२६ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — मंगसिर कृष्सा १३, सं० १८२३ ।

नोट-श्री पार्श्वनाथ के मन्दिर में नागौर में लिपि की।

११४८. पार्श्वनाथपुरासा—पद्मकीति । देशी कागज । पत्र संख्या—७६ । म्राकार—११ $'' \times 4\frac{1}{3}''$ । दशा—त्रीर्सं । पूर्त्य । भाषा—मपभ्रं श । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७७३ । रवनाकाल— \times । निपिकाल—सं० १५०० ।

नोट-लिपिकार की प्रशस्ति विस्तृत दी गई है।

११६०. पार्श्वनाषपुराण — भूषरदास । देशी कामज । पत्र संख्या—६३ । स्राकार— १०"×५डुँ"। दशा-जीर्णेकीरा । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०६६ । रवनाकाल-भाषाव शुक्ला ४, सं० १७८६ । लिपिकाल-भाद्रपद बुदी ११, सं० १८३८ ।

- **११६१. प्रति संख्या २** । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । झाकार-१२३[™]×५३[™] । दशा-मञ्ज्यो । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२६७० । रचनाकाल-ग्रावाढ शुक्ला ४, सं० १७८६ । लिपि-काल-चैत्र कृष्णा ६, मंगलवार, सं० १७६६ ।
- **११६२. पुण्यवन्द्रोबयमुनिसुवतपुराण** केशवसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या— १११ । ग्राकार—१० $\frac{3}{9}$ " \times ६" । दशा—ग्रच्छी । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— २०४६ (ब) । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र बुदी ७, सं० १८६७ ।
- **११६३. पुराणसार संग्रह—म० सकलकीति ।** देशी कागज । पत्र संख्या-१२२ । माकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\circ}$ $^{\prime\prime}$ । दणा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिप-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६७४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला ६, रिववार, सं० १५३७ ।
- **११६४. मिवष्यपुरार्ण** \times । देशी कागज । पत्र संख्या— π । भ्राकार— $\epsilon'' \times \delta''$ । दशा—भ्रष्ट्वी । पूर्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । भ्रन्थ सख्या— १५३८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **११६५. मार्कण्डेयपुराण (सटीक)—ऋषि मार्कण्डेय** । देशी कागज । पत्र संख्या- ६२ । **ग्राकार**—११ $\frac{3}{6}$ " \times ६ $\frac{3}{6}$ " । दशा—जीर्ग्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १८३४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर कृष्णा ८, वृहस्पतिवार, सं० १६२० ।
- **११६६. रामपुराण मट्टारक सोमसेन** । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । म्राकार-१०" \times ५ 3 " । दशा-मच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२१४ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

बाविमाग--

श्रीजिनाय नमः वदेऽहं सुव्रतदेवं पंचकत्याग् नायकं ।
देवदेवादिभिः सेष्यं भव्यवृदं सुखप्रदं ॥ १ ॥
देवपात् सिद्धजिनात् सरीत् पाठकानां साधू संयुकात् ।
नत्वा वक्षे हि पद्मस्य पुरागगुगा सागरं ॥ २ ॥
वन्दे वृषभसेन।दिन् गुगाधीशात् यतीश्वरात् ।
द्वा दशांग श्रुतयैश्च कृतं मोक्षस्य हेतवे ॥ ३ ॥
वंदे समन्तभद्रं तं श्रुतसागरं पारगं ।
भविष्यत् समये योऽत तीर्थनाथो भविष्यति ॥ ४ ॥

द्यन्तभाग---

सप्तदश सहस्राणि वर्षाणि राधवस्येवै। ज्ञोयं हि परमायुष्य सुखसंतति सम्पदं ॥ १४ ॥ प्रश्टादश सहस्राणि वर्षाणि लक्ष्मग्रस्य च।

प्रायु " "परमं सौख्यं भोग सम्पत्ति दायकं ॥ १ ६ ॥

रामस्य चिरतं रम्यं श्रग्गोतियभ्च धार्मिकः ।
सभते सः शिवस्थानं सर्वमुखाकरं परं ॥ १६ ॥
विकासस्य गते शाके षोडण (१६५६) शतवर्षके ।
शतपंचाशत समायुक्ते मासे श्राविष्यके तथा ॥ १७ ॥
शुक्लपक्ष त्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
निष्यन्नं चिरतं रम्यं रामाचन्द्रस्त पावनं ॥ १८ ॥
महेन्द्रकीति योगीन्द्र प्रासादात् च इतं मया ।
सोमसेन रामस्य पुराण् पुष्य हेतवे ॥ १६ ॥
यदुक्तं रिवषेणीन पुराणं विस्तरा " " " " ।
" संकुच्य किचित विकथित मया ॥ २० ॥

गर्वे ग कृतं शास्त्रं नापि कीर्ति फलाष्तये ।
केवल पुण्य हेत्वर्थं स्तुता रामगुगा मया ॥ २१ ॥
नाह जानामि शास्त्रागा न छन्दो न नाटकं ।
तथापि च विनोदेन कृतं रामपुराणकं ॥ २२ ॥
ये सतित विपुषो लोके मोषयं उचते मम ।
शास्त्र परोपकाराय ते कृता ब्रह्मणामुखि ॥ २३ ॥
कथा मात्रं च पद्मस्य वर्त्तं तेवर्णानां विना ।
घस्मिन् ग्रन्थे उभौ भव्याः श्रण्वन्तु सावधानतः ॥ २४ ॥
विस्तार रुचिनः सिन्या ये संति भद्रमानसाः ।
ते श्रण्वन्तु पुरागां हि रविषे ग्रस्य निर्मितं ॥ २५ ॥
रिविषेण कृते ग्रन्थे कथा यावस्पवर्त्तं ।
तावत् च सकलात्रापि वर्तते वर्गा मा विना ॥ २६ ॥
वर्ण्यविषये रम्ये जितूर नगरे वरे ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धोः ग्रन्थः शुभे दिने ॥ २७ ॥

सेनगरोति विस्थाति गुराभद्रो भवन्मुनिः।
पट्टे तस्यैव संजातः सोमसेनो यतीश्वरः।। २८।।
तेनेदं निर्मितं शास्रं रामदेवस्य भक्तितः।
स्वस्य निर्वागहेरवर्थं मंक्षेपेण महात्मनः।। २९॥
यस्मिन् निदपुरे शास्रं श्रण्वन्ति च पठन्ति च।
तत्र सर्वं सुसक्षेमं परं भवति मंगलं॥ ३०॥

धर्मात् लभन्ते शिव-सौल्य-सम्पदः स्वर्गादि राज्याणि भवन्ति । धर्मात् तस्मात् कुर्वेन्ति जिनधर्मेमेंक, विहाय पाप नरकादिकारकं ॥ ३१ ॥ सेरागाग्रे याति परं पवित्रे वृषभषेग्रा गराधर शुभवंशे । गुराभद्रोजनिकः विजनमुख्यः पमितवर्गा सुखाकरजातः ॥ ३२ ॥ श्री मूलसंथे वर पुष्कराख्ये गच्छे सुजातोगुणभद्रसूरिः । पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारको भृवि विदुषां शिरोमिश्य ॥ ३३ ॥ सहस्त्रं सप्तशतं त्रीिश्य वत्तं ते भूवि विस्तरात् । सोमसेनमिदं वक्षे चिरंजीव चिरंजीवतं ॥ ३४ ॥

इति श्री रामपुराणे भट्टारक श्री सोमसेन विरिचते रामस्वामिनो निर्वाणवर्णननामनो त्रयस्त्रिशत्तमोधिकारः ॥३३॥ छः । ग्रन्थाग्रन्थ ७३०० । । मिति श्री जिनायनमः ॥

११६७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । श्राकार--१२'' \times ६'' । दशा-श्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या--१२६३ । रचनाकाल-- \times । लिपिकाल- \times ।

११६०. रामायण शास्त्र—चिन्तन महामुनि । देशी कागज । पत्र संस्था—५१। माकार--११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीर्एंकीरण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था—१०५६ । रचनाकाल-ग्राषाढ़ बुदी ५, रविवार सं० १४६३ । लिपिकाल- \times ।

११६६. वर्द्धमान पुरासा-नवलदास शाह । देशी कागज । पत्र संख्या-१७८ । श्राकार-१२ $\frac{1}{2}$ " \times ६" । दशा-श्रच्छो । पूर्स । भाषा- हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२५८६ । रचना-काल-मंगशीर्ष शुक्ला १५, सं० १६६१ । निपिकाल-मंगशीर्ष शुक्ला ८, बुधवार, सं० १८५८ ।

विशेष — भट्टारक सकलकीर्तिजी के उपदेश के मुताबिक प्रन्थ की रचना की है। पुराण कर्ता ने पूर्ण प्रशस्ति तथा उस समय के राज्य कालादि का विस्तृत बर्गन किया है।

११७०. शान्तिनाथपुरास (सटीक)—भ० सकलकीति । टोकाकार—सेवाराम । देशी कागज । पत्र संख्या-३२७ । श्राकार-दर्ग ×७"। दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत श्रीर हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२४७६ । रचनाकाल- × । टीकाकाल-श्रावस कृष्णा ६, सं० १६३४ । लिपिकाल-श्रावस गुक्ला ११, सं० १६२६ ।

विशेष-भाषाकार ने अपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

११७१ शिवपुरास—वेदव्यासः। देशी कागजः। पत्र संख्या—१८६ । झाकार— ११ $'' \times 9 \frac{1}{6}''$ । दशा—प्रच्छी । पूर्यो । भाषा—संस्कृतः । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२३६२ । रचनाकान— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष-वैष्ण्व पुरासा है।

- ११७२. सन्यक्तकोषुवी पुरारम् महीकत्व । देशी कागज । पत्र संस्था-६७ । स्थाकार-१०" \times ४ $^{9}_{7}$ "। दशा-श्रन्छी । पूर्ग । भाषा-संस्कृत ग्रौर हिन्दी । लिपि-नागरी । अन्य संस्था-१११३ । रचताकाल- \times । लिपिकाल-सं० १८८४ ।
- ११७३. हरिवंशपुराय- बह्म किनदास । देशी कागज । पत्र संख्या-२६ । भाकार-६ $\frac{2}{9}$ " \times ४" । दशा-ग्रच्छी । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ११७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३४८ । ग्राकार—११ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{2}{9}$ " । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राषाढ़ कृष्णा ४, शुक्रवार, सं० १७१८ ।
- **११७५ प्रति संस्था ३। दे**शी कागज । पत्र संस्था--२६६ । ग्राकार--१२" \times ५" । दणा-जीर्गक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था--२४८० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १४, सं० १७५६ ।
- **११७६. हरिवंशपुरारा-- मृति यशःकीति । दे**शी कागज । पत्र संख्या--२६**३ ।** ग्राकार--११क्वै″ ⋋ ५क्वै″ । दशा-ग्रच्छी । पूर्यो । भाषा-श्रपभ्रांश । लिपि-नागरी । ग्रन्थ सख्या--२६४४ । रचनाकाल-- ≾ । लिपिकाल-**श्रा**षाढ़ ह्युक्ला ७. बृहस्पतिवार, सं० १६५२ ।
- ११७७. त्रिविध्टरमृति— पं० ग्राशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-२२ । ग्राकार-१० $\frac{5}{4}$ " > ३ $\frac{3}{6}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रस्थ संख्या—१२६३ । रचनाकाल-सं० १२६२ । लिपिकाल-पौष ग्रुवला ६, ग्रुक्रवार, सं० १४४४ ।
- ११७८. त्रिषिठश्लाका महापुरुषचरित्र— हेमचन्द्राचार्य। देशी कागज। पत्र संख्या-११६ । झाकार-१०"×४६ूँ"। दशा-जीर्गः। पूर्णः। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१३६२। रचनाकाल-सं० १४०४। लिपिकाल-ग्रन्थित कृष्णाः १०, सं० १६४८।
- ११७६. त्रिषिठलक्षरण महापुरारा—पुष्पवन्तः। देशी कागजः। पत्र संख्या—१७१। श्राकार-१३ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{4}{5}$ "। दशा-श्रच्छी। पूर्णः। भाषा-श्रपश्चंशः। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या—१३५१। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **११८०. प्रति संख्या** २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२५३ । झाकार—१३ $" \times \mathbf{x}_{7}^{*}"$ । दशा—म्रातिजीर्गा क्षीरा । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—१४१५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशाख शुक्ला ६, सं० १५८६ ।
- **११८१. प्रति संख्या ३। दे**शी कागज । पत्र संख्या—१४४ । झाकार—१३३ $^{\circ}$ × $^{\circ}$ ४ $^{\circ}$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१०४० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १४६३ ।
- ११५२. त्रियष्ठि सक्षस्यसहापुरास्य गुरुषभद्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या ४१० । आकार—११ $\frac{3}{9}$ " \times ४" । दशा—जीर्या । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१२११ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - **११८३. प्रति संख्या २ । देशी** कागज । पत्र संख्या-४६३ । प्राकार-११ $\frac{1}{6}$ " imes imes

दक्ता-जीर्सा । पूर्ण । प्रम्व संस्था-१०५० । रचनाकाल-४ । लिपिकास-प्राचाढ शुक्ला १३, वनिवार, सं० १७०६ ।

नोट--बिस्तृत प्रशस्ति वी हुई है।

११८४. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-३३६ । धाकार-११ $"\times$ ५" । दशा-प्रतिजीर्ण क्षीरण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला १४, बुधवार, सं० १६६० ।

११८५. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या—३१६ । ग्राकार—१३ $\frac{3}{6}$ " \times ६"। दशा—जीर्ग्रं शीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१८५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माथ शुक्ला १३, सं० १६७६ ।

विषय-पूजा एवं स्तोत्र

११८६. सकलंक स्तुति श्रीद्वाचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था-३ । माकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्ग्यशीरा । पूर्ग । भाषा-संस्कृत । सिष-नागरी । विधय-स्तोत्र । मन्य संस्था-२०३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

विशेष—इस प्रण्य के ग्रन्त में "ग्रकलंकाचार्य विशिषतं स्तोत्र" लिखा है, भीर इसके निषे बौद्धाचार्य लिखा है। यह स्तुति बौद्धाचार्य ने प्रवश्य की है। किन्तु बौद्धाचार्य का नाम प्रकलंक होना शंकास्पद है।

११८७. धाम्मस्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—४ । धाकार—६ $\frac{1}{2}$ " \times ३ $\frac{3}{2}$ "। दशा—प्रच्छी । पूर्गा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । प्रन्थ संस्था—१६६२ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ३, शुक्रवार, सं० १८१६ ।

१९८८. **सहाईद्वीपपूजन भाषा —हालूराम । देशी कागज । पत्र** संस्था-२४४ ! स्नाकार-१३३ ×६ । दशा-स्रतिजीर्ग् । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२६४० । रचनाकाल-ज्येष्ठ शुक्ता १३, शुक्रवार, सं० १८६७ । लिपिकाल-द्वितीय वैशाख कृष्णा २, रिववार, सं० १६०७ ।

११६०. भन्नपूर्णास्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । भ्राकार— ६ $\frac{1}{7}$ \times ३ $\frac{3}{7}$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— १६१७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माघ शुक्ला १ सं ० १८६० ।

१९६९ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । आकार—६ $\frac{2}{5}$ "×४ $\frac{2}{5}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्यों । ग्रन्थ संख्या—२७७१ । र**चनाकाल— × । लिपिकाल—पौष कृष्णा** १, रिववार, सं० १८२१ ।

विशेष-- अपामार्गं का हिन्दी नाम "आंबा ऋाड़ा" है।

११६३. अध्दयस पूजा और बीडवफल पूजा— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—६। ग्राकार—११'' \times ५ $\frac{3}{2}''$ । दशा—जीएँ। पूर्णं। भाषा—संस्कृत। लिपि—नानरी। विषय—पूजा। ग्रस्थ संख्या—१५६२। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

- ११६४. अध्दान्हिका पूजा—म॰ शुमचन्द्र । देशी कागज । पत्र संस्था—४ । प्राकार—१०" \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संस्था—२७२४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १९६५. **ध**ंकरार्भ**लण्डारसक** —देवनन्दि । देशी कार्यज । पत्र संख्या-४ । धाकार-१० $\frac{2}{5}$ \times ४ $\frac{3}{5}$ । दशा-जीर्गं शिषा । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिगि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२०२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- ११६६. ब्राज्ञाधराष्ट्रक शुमचन्त्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या –७ । ब्राकार १२" \times χ " । दशा जीगंकीग् । पूर्ण । भाषा –संस्कृत । लिपि नागरी । विषय –पूजा । ग्रन्थ संख्या २६४१ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- ११६७. इन्त्रघ्वज पूजा— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—७६। झाकार—१२ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ "। दशा—अच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि- नागरी। विषय—पूजा। ग्रन्थ संख्या—१७१७। रकनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ५, सं० १८३४।
- **११६**८. **इन्द्रध्वज पूजन— म० विश्व भूषरा** । देशी कागज । पत्र संख्या—१२२ । ग्राकार—१०ङ्ग" × ५ङ्ग" दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२७४७ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला ६, सं० १८६६ ।
- ११६६. इन्द्र वधुचित हुलास भारती—किचरंग । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । भाकार-७" \times ४ $\frac{2}{7}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-भारती । ग्रन्थ संख्या-२७०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१२००. इन्द्र स्तुति**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । झाकार—१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्गुंक्षीगा । पूर्ण । भाषा—ग्रयभ्रं म । लिपि—तागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१५०४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १२०१. इन्द्राक्षिजगिष्यन्तामिश्चि कवच \times । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । माकार—५ $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—प्रब्द्धी । पूर्ण । भावा—तंत्रकृत । लिपि—तागरी । ग्रन्थ संख्या—१६७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१२०२. इन्द्राक्षि नित्य पूजा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । ग्राकार $\varepsilon_y^{*'} \times y_y^{*'}$ । दशा ग्रन्थ । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय पूजा । ग्रन्थ संख्या १६२३ । रचनाकाल \times । लिपिकाल चैत्र शुक्ला १२ सं० १६२२ ।
- १२०३. इन्द्राक्षिसहस्त्रनामस्तवन $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-४। द्राकार- ६ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ "। दशा-प्रच्छी। पूर्णं। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तीत्र। ग्रन्थ संख्या-१६२१। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १२०४. एकीमावस्तोत्र—वादिराज । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । ध्राकार— १२ $\frac{9}{7}$ × ५ $\frac{9}{9}$ । दशा—प्रच्छी । पूर्य । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१६६४ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

- १२०५. प्रति संस्था २। देशी कागजा। पत्र संख्या—५। झाकार-११५ "×५५"। दशा—झच्छी। पूर्ण। ग्रन्थ संख्या-१३१४। रजनाकाल- ×। लिपिकाल-सं०१८६०।
- १२०६. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-४। श्राकार-११ $''\times$ ४ $\frac{1}{9}''$ । दशा-जीर्गंक्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६८१। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १७१४।
- १२०७. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या—५। ध्राकार-१० है"४४"। दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२३४० । रचनाकाल-४। लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ३, शनिवार सं०१४६२।
- १२०८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या –३ । ग्राकार –११६ * * \times ४ * * * । दशा * ग्रं । ग्रन्थ संख्या २३४४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **१२०६. प्रति संख्या ६**। देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१०'' \times ४ $\frac{3}{9}''$ । देशा—ग्रच्छी । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या—२०२७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १२१०. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-११ $\frac{9}{5}$ " \times ५ $\frac{9}{5}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संख्या-२०४७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १२११. एकीमाव स्तोत्र (सार्थ) त्राविराज सूरि । टीकाकार तागचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या १० । द्याकार ६ $\frac{3}{3}$ " \times ४" । दशा जीर्गं श्री ए। । पूर्ण । भाषा संस्कृत । निपि नागरी । विषय स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या १३२४ । रचनाकाल \times । किपिकाल \times ।
- १२१२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । ग्राकार–१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशः(–जीर्एं क्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्यः(–२४७५ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल–श्रावरण कृष्णा १४, सं०१६=५ ।
- १२१३. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । स्राकार-१०६ $"\times$ ४६"। दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७२= । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रथम श्रावरा शुक्ला =, सं० १७१४ ।
- **१२१४. प्रति संख्या ४**। देशी कागज । पत्र संख्या—१३। ग्राकार—११" \times ४ $\frac{1}{6}$ "। दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२७२१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१२१४. एकी माव व कल्यारा मन्दिर स्तोत्र** $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । स्नाकार१२ $\frac{1}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । देशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१८०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-बैशाख शुक्ता १२, सं० १८३६ ।
- **१२१६. ऋषमदेव स्तवन**— \times ! देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ध्राकार—११'' \times ४ \S'' । दशा—जीर्गुःशीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तीत्र । ग्रन्थ संख्या—१५०२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - १२१७. ऋषिमण्डलपूजा-गुरानंदि । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । भाकार-

११ $^{\prime\prime}$ \times ५ $^{\prime\prime}_{2}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्गुदीसः । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२३३८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२१ = प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । श्राकार—११'' \times χ'' । दशा—प्राचीन । पूर्य । ग्रन्थ संख्या—२५५१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२१६. प्रति संस्था ३। देशी कागज । पत्र संस्था-२०। (२वां तथा **१६ वां पत्र** नहीं है) । ग्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-श्रच्छी । ग्रप्य संस्था-२५६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगसिर शुक्ला ११, सं०१७०८ ।

१२२०. ऋषिमण्डलस्तोत्र— \times । देशी कागज। पत्र संस्था–६। श्राकार—६ $\frac{2}{7}$ \times ३ $\frac{3}{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—ग्रतिजीर्गुंकीण। पूर्ग्। भाषा–संस्कृत। लिपि–नागरी। विषय–स्तोत्र। ग्रन्थ संस्था–१२०७। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट : प्रथम पत्र के फट जाने से प्रक्षर ग्रस्पष्ट हो गये हैं।

१२२१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । म्राकार—१२५ ४ है″ । दशा—जीर्ग्**ण क्षीण । पूर्ग्ण । ग्रन्थ संख्या—१६५७ । रचनाकाल—** ४ । लिपिकाल— म्रश्विन शुक्ला ११ सं० १८२६ ।

१२२२ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । ग्राकार—६ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२१२० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ६, बृहस्पतिबार सं०१६६१ ।

विशेष--यह स्तोत्र मनत्र सहित है।

१२२३ ऋषिमण्डलस्तोत्र (सार्थ)—गौतम स्वामो । देशी कागज । पत्र मंख्या—६ । भ्राकार—६ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{3}{6}$ " । दशा—धच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२४५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२२४. कमंदहनपूजा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२४ । श्राकार— $=\frac{3}{4}"\times 3\frac{3}{8}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्णे । भाषा—संस्कृत ग्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२२७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राषाढ़ कृष्णा ७ शनिवार, सं० १८८४ ।

१२२५. कल्बाएमन्विरस्तोत्र--कृपुदचन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । **ग्राकार-१०**" \times ४ $\frac{1}{5}$ । दशा-जीर्गक्षीरा । पूर्या । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२२६. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । भ्राकार-१०६ै $'' \times \vee$ ६'' । दशा-भ्रतिजीखंशीख । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१६१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२२७. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । म्राकार-१ ४४ । दशा-मच्छी । पूर्ण । ग्रम्थ संख्या-१६५४ । रचनाकाल- 🗙 । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १४, सं० १८२७ ।

१२२८. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१० $\frac{1}{9}$ "×४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—मितित्रीर्गंक्षीरम् । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या—१३६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकल— \times ।

१२२६. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था—४ । धाकार—१०" \times ४ $\frac{2}{7}$ " । दशा—अच्छी । पूर्ल । ग्रन्थ संस्था—१६४७ । रचनाकाल \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ४, सं० १८४० ।

१२३०. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्थान्ध । स्नाकारन्ध्रै" \times ४२ । दशान् बीर्ग्य संस्थान् १६७० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-प्रश्विन कृष्णा =, बुधवार सं० १८४६ ।

१२३१. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । ग्राकार-११ $^{\prime\prime}$ imes ४ $^{1\prime\prime}_{2}$ । दशा-जीएं क्षीण । पत्र संख्या । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६७५ । रचनाकाल- imes । लिपिकाल-imes ।

१२३२. प्रति संख्या = । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । द्याकार-१० $\frac{3}{9}$ "×४ $\frac{3}{9}$ " । द्या-जीगुं क्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७४६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६३१ ।

१२३३. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था-४ । भाकार-६कुँ" \times ४-----दशा-जीर्ग क्षीण । पूर्ग । ग्रन्थ संस्था-१३६३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२३४. प्रति संस्था १०। देशी कागज । पत्र संस्था-३ श्राकार+६ $\frac{3}{9}'' \times V_{\frac{5}{2}}''$ । दशा-जीर्ग् क्षीरा । पूर्ग । ग्रन्थ संस्था-१२०२ । रचनाकाल-imes । लिपिकाल-imes ।

१२३५. प्रति संख्या ११। देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times ५ $\frac{1}{6}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१३१५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ला ५, सोमवार, सं० १८६० ।

१२३६. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । झाकार-१०"×४०"। दशा-जीराह्मीरा । पूर्ण । प्रत्य सख्या-१२०१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-ग्रस्थिन शुक्सा १५ सं० १४६७ ।

१२३७. प्रति संस्था १३ । देशी कागज । पत्र संस्था—४ । ध्राकार—१०'' \times ४'' । दशा—जीर्ग्शक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—२४११ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ध्राषाढ़ शुक्ला ६, सं०१६०७ ।

१२३८. प्रति संख्या १४ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार—१० $\frac{3}{7}$ " \times दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रम्थ संख्या—२३३१ । रश्रनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२३६. प्रति संख्या १४ । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । धाकार— $=\frac{1}{2}"\times$ ५" । दशा—श्रच्छी । पूर्यों । ग्रन्थ संख्या—२२८४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times । पौष शुक्ला ४, सं०१८८१ ।

१२४०. कत्याय मन्दिर स्तोत्र (सटीक)—कुमुदचन्द्राचार्य । टीकाकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । माकार— $=\frac{1}{2}$ " \times ४" । दशा—मच्छी । पूर्या । भाषा—संस्कृत । लिपि—मागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—वैशास कृष्णा १४ बृहस्पतिवार सं० १८७० ।

१२४१. कल्यासमन्दिरस्कोत्र (सटीकः)— कुमृदयस्त्राचार्यः। डीकाकार—महारकः

हर्वकीति । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । श्राकार-१०६ $^{"}$ \times ४ $^{"}_{3}$ $^{"}$ । दशा-जीर्ग । पूर्ग । श्राषा- संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाख-वैशाख कृष्णा ५, सं० १६७७ ।

१२४२. कल्याणमन्दिरस्तोत्र (सार्ष)— \times । देशी कागज । पत्र संस्था–११। माकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा -प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संस्था–२७४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल- \times ।

१२४३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । ग्राकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{3}{5}^{\prime\prime}$ । दशा- भ्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १, बुधवार, सं०१६०१।

१२४४. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-७ । श्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा-जीर्गंक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १६६३ ।

१२४५. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । आकार-११'' \times ४ $^3_{S}''$ । दशा-प्रतिजीर्ग्य क्षीए। पूर्या । प्रत्य संख्या—२१४० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२४६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । स्नाकार-१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ " । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२४७. कल्याएमन्दिरस्तोत्र (सटीक)—कुमृदचन्द्राचार्य। टीकाकार-श्री सिद्ध- सेनाचार्य। देशी कागज । पत्र संख्या ६ । धाकार-=" \times ४ $\frac{5}{7}$ "। दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१७१८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२४८. कल्याम् मन्दिर स्तोत्र (सटीक)-कुमृदचन्द्राचार्य । टीकाकार-हुकमचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । ग्राकार-१०" \times ४ $\frac{2}{8}$ " । दशा-जीर्म्म । पूर्म । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४१२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२४६. गणधरस्वय $-\times$ । देशी कागजः पत्र संख्या-७। ग्राकार-१० $^{\prime\prime}\times$ ४५ $^{\prime\prime}$ । देशी-भन्छीः। पूर्णः। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरीः। विषय-पूजाः। ग्रन्थ संख्या-२७६१। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१२५०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१२ । प्राकार–१० $\frac{1}{2}$ " \times ४" । दशा–जीएां । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२१५६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१२४१. गर्भस्वडारचक्र-वेयनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-४५ से ६६ =२६ श्राकार-१२" \times ५" । दशा-जीर्गुकीरग । श्रपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तुति । ग्रन्थ संख्या-१३५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२४२. गौतम स्तोत्र-जिनप्रमप्तृरि । देशी कागज । पत्र संख्या- १ । आकार— $1 \circ \sqrt[3]{x} \times \sqrt[3]{x}$ दशा-जीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या- १४६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल- \times ।

१२४३. **चतुर्वज्ञीवतोद्यायन पूजा--**पं० ताराचन्व भावकः। देशी कागज। पत्र

संस्था— । आकार — १० है" × ४"। दशा— धण्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। श्रन्थ संख्या— १६१६। रचनाकाल— चैत्र सुक्ला ६, सं० १८०२। लिपिकाल—ज्येष्ठ सुक्ला ६, सं० १८६२।

१२४४. चतुर्विसंति जिननमस्कार $-\times$ । देशी कागजः। पत्र संख्या-१ । ग्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा-जीएंकीए। पूर्एं । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४४० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२४५. **चतुर्विशंति जिनस्तवन** — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — २ । **मा**कार — १०५ $'''\times$ ४५''' । दशा — प्राचीन । पूर्ण । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । विषय — स्तीत्र । ग्रन्थ संख्या — २३१६ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

विशेष -- धन्तिम पत्र में कुछ उपदेशात्मक श्लोक हैं।

१२५६. चतुर्विशिति तीर्षं कर स्तुति — समन्तमद्व स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या - १५ । माकार-११"×५" । दशा-जीरांक्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२११६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-बैशाख कृष्णा १०, मंगलबार, सं० १६५६ ।

१२४७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–६ । स्राकार–१०३[°] ×४३ । दशा–जीर्गक्षीमा । पूर्ण । ग्रन्य संख्या–२११४ । रचनाकाल–> । लिपिकाल–म्राषाढ् कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १६७≒ ।

१२४५. चतुर्विशंति तीर्षं करों की स्तुति—माधनन्वि । । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार-१० $\frac{1}{8}$ " \times ५" । दशा-ग्रतिजीर्ग्यं क्षीरण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौप कृष्णा ६, सं०१६६१ ।

१२४६. प्रति संख्या २ । देशो कागज । पत्र संख्या—२ । श्राकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{5}$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्गंक्षीम् । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या—२०६२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-ग्रापाढ़ शुक्ला ७, सं० १७०४ ।

१२६०. चतुर्विशिति तीर्थं कर स्तुति (सटीक) - पं० धनश्याम । टीकाकार — पं० क्षोमनदेवाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—११ । श्राकार — १०५''' ×४५''' । दशा – जीर्ग्यंकीण । पूर्णं । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या — २१६३ । रचनाकाल – × । टीकाकाल – × । लिपिकाल – श्रावमा कृष्णा ५, सं० १६७० ।

विशेष-- मूल प्रन्थ कर्ता पं० घनपाल के लधुआता श्रीशोभनदेवाचार्य ने वृत्ति की है।

१२६१. चतुर्विशंति तीर्यं कर पूजा—चौधरी रामचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या— ६० । श्राकार—६ $\frac{5}{7}$ \times ६ $\frac{3}{7}$ । दणा—जीर्ग । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—१७६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा ४, सं० १८५७ ।

१२६२. **चतुर्विशति तीर्थं कर पूजा-शुभवन्द्राचार्य ।** देशी कागज । पत्र संख्या-५० ।

- माकार-११" \times ४ $\frac{3}{5}$ "। दशा-जीर्गं। पूर्गं। भाषा-संस्कृतः। लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५८३ । रवनाकात्र- \times । लिपिकाल-भाषाद्यं शुक्ला प्रं, सं० १६६३ ।
- १२६३ चतुर्विशंति जिन स्तवन-पं० रिवसागर गरिए । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । धाकार-१०'' \times 8'' । दशा-जीर्ग् । पूर्ण् । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १२६४. **चतुर्विशति जिनस्तवन—जिनप्रममूरि** । देशी कायज । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{5}{7}$ । दशा—जीएँ श्रीएा । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रग्थ संख्या— १६४४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १२६५. चतुर्विशंति जिनस्तवन ज्ञानचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या २ । श्राकार १० $\frac{1}{8}$ " \times ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा श्रच्छी । पूर्णे । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या १८८० । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **१२६६. चतुःषष्ठी स्तोत्र**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । भ्राकार- १२ $\S''\times$ ५ \S'' । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भ्राषा-संस्कृत । लिपि- नागरी । ग्रन्थ मंख्या-१७०१ । रचनाकाल- \times । सिपिकाल-चैत्र कृष्णा १, सं० १६०४ ।
- **१२६७. चतुःषष्ठो महायोगीनी महास्तवन—धर्मनन्वाचार्य**। देशी कागज । पत्र संख्या-१। ग्राकार-१०५ूँ" \times ४ $९ ९ ९ १ विषय-प्राचीन । पूर्ग् । भाषा-हिन्दी । निषि-नागरी । विषय-स्तात्र । ग्रन्थ संख्या—२६७१ । रचनाकाल-<math>\times$ । निषिकाल- \times ।
- १२६८ **चिन्तामिए पार्श्वनाथ पूजा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या १० । स्नाकार ५ $^{\prime\prime}\times^{\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा प्राचीन । पूर्ण । भाषा हिन्दी भीर संस्कृत । लिपि नागरी । विषय पूजा । प्रस्थ संख्या २२६१ । रचनाकाल × । लिपिकाल भाद्रपद शुक्ला ६ सं० १६४८ ।
 - विशेष-इसमें गजपंथा जी की पूजा लिखी हुई है।
- १२६६. चिन्सामिस पार्श्वजिनस्सवन (सार्थ) \times । देशी कागज । पत्र संस्था २ । श्राकार ५ $\xi'' \times Y_0^{3''}$ । दशा भ्राक्षी । पूर्सी । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय स्तीत्र । प्रत्य संस्था १८८६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- **१२७०. चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—भरणेन्द्र** । देशी कागज । पत्र संख्या –२ । माकार-१० $\frac{9}{7}$ " । दशा-जीर्ग्यकीसा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । सन्य संख्या-१७०८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-- \times ।
- १२७१. प्रति संस्था २ । देशी कागजा । पत्र संस्था-४ । प्राकार-१०६ $"\times$ ४- १ दशा-जीगंकिरण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१७०७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माध कृष्णा १४, सं० १८७६ ।
- १२७२. चित्र बन्ध स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—६ $"\times$ ४ $\frac{1}{2}"$ । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या १३३८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२७३. **षौषीसजितग्राशींबार**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार— १० $^{\prime\prime}\times$ ४ $_2^{2}^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्रोशीरा । पूर्य । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । प्रस्य संस्था-२१५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकास-श्रावण शुक्सा २, सं० १७०१ ।

१२७४. चौबीस तीर्घं कर स्तवन $--\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । झाकार- $= \frac{3}{7} \times 8^{2}$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७१८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ शुक्सा ११, सं० १८४१ ।

१२७४. चौबीस तीर्थं करों की पूजा— युन्वायनशास । देशी कागज । पत्र संख्या—४२ । धाकार—१२ $\frac{3}{5}$ " \times ५ $\frac{3}{5}$ " । दशा—धच्छी । पूर्णं । भाषा—संस्कृत ग्रौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय— पूजा । ग्रन्थ संख्या—१५६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२७६. चौषठयोगीनी स्तोत्र — \times । देशी कागज । पत्र संस्था-१ । भ्राकार— ६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि——नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संस्था—२०२२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष -- प्रन्थ की लिपि नागौर में की गयी है।

१२७७. जय तिहुग्रण स्तोत्र—श्रमयदेव सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । ग्राकार— १०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीर्ग क्षीर्ग । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय— स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२७६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२७६. ज्वालामालिनी स्तोत्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्यां-३ । श्राकार-६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णुग ४, सं० १८४४ ।

१२७६. जिनगुण सम्पत्ति वतोद्यापन— ग्राचार्यं देवनन्दि । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । श्राकार—६ $\frac{1}{3}$ " \times ६" । दशा—ग्रच्छी । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१२६० जिनपूजापुरन्दरविधान — ग्रमरकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या — ६ धाकार-११'' \times ४ $\frac{3}{8}''$ दशा-जीर्गंश्रीरा । पूर्ण । भाषा – ग्रपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । भ्रम्थ संख्या-२५०५ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१२८१. जिनपंचकत्याणकपूजा — जयकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या — ६ । आकार — ११ $\frac{2}{7}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा — जीर्गं श्री गा । पूर्णं । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय — पूजा । प्रत्य संख्या — १६०३ । रचना काल — \times । लिपिकाल — श्रावरा कृष्णा २, रिववार, सं० १६८३ ।

१२८२. जिनसक्तरूप---पं० स्नाक्षाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-१५१। स्नाकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ "। दशा-जीर्गा। पूर्गा। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रंथ संख्या-१६७५। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड: प्रारम्म में श्री वसुनन्दि सैद्धान्ति द्वारा रचित प्रतिष्ठासार संग्रह के ६ परिज्छेद

(पृष्ठ संख्या २२ तक) हैं, पृष्ठ २३ से ६८ तक पूज्यपाद कृत अभिषेक विधि है। ६६ से १५१ तक पंज्ञाशाधर जी कृत जिनयज्ञकल्प निष्यन्त यानी 'कल्प दीपक' प्रकरण पर्यन्त है।

१२८३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६८ । ग्राकार १० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ "। दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२५०५ । रचनाकाल—ग्रिश्विन शुक्ला १४, सं० १२८५ । लिपिकाल— \times ।

१२८४. जिनरस वर्णन —वेणीराम । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । माकार— ८३ ४४ । दणा-अच्छी । पूर्ण । भाषा —हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय —स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— १५६८ । रचनाकाल—माघ शुक्ला ११, मंगलवार, सं० १७६६ । लिपिकाल—ग्रश्विन कृष्णा ७, सं० १८३६ ।

१२०४. जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार— $= x'' \times x''$ । दशा—गीर्गा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१७१० । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।

१२८६. जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । देशी कागज । पत्र संख्या— १३ । आकार-१०" \times ४ $\frac{1}{2}"$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२७६३ । रचनाकाल- \times । तिपिकाल-मान्न शुक्ला १४, सं० १७४७ ।

विशेष —इसी ग्रन्थ में घरगोन्द्रस्तोत्र, पंच परमेष्ठी स्तोत्र, ऋषि मण्डल स्तोत्र भीर वृहत् वर्शन भी है।

१२६७. **जिन स्तवन सार्थ —जयानन्द सूरि । देशी कागज ।** पत्र संख्या–२ । ध्राकार— १० $\frac{1}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दगा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२५६६ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ५, सं० १७४१ ।

१२८६. जिन स्तुति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । म्राकार—१० $\frac{9}{4}$ " \times ५ $\frac{3}{8}$ "। दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिषि—नागरी । विषय—स्तीत्र । ग्रन्थ संख्या—२६६१ । रचना-काल — \times । लिपिकाल— \times ।

१२म्६. जिन सुप्रमात स्तोत्र —िस० च० नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या- १ । म्राकार— $=\frac{2}{3}$ " । द गा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१५३३ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल $-\times$ ।

१२६०. जिनेन्द्र वस्त्वना — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—ग्रन्छी । पूर्ग् । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१७१५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१२६१. किनेन्द्र स्तकन $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-जीर्गांशीगा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४७३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला ६, सं० १६=४ ।

१२६२. तेरह द्वीप पूजा $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१७० । म्राकार-११ - 7

७३ँ″ । दक्ता-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संक्ष्म-२३३१ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-पौष कृष्णा २, सं० १६३६ ।

१२६३. दशकक्षण व्ययसाल— नावशर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या –११ । धाकार- १०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा –जीर्एक्सीए। पूर्ण । भाषा-संस्कृत भीर प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । यस्थ संख्या-२३८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १६८१ ।

१२६४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-११ । ध्राकार-६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ । दशा-जीर्गा । पूर्गा । ग्रन्थ संस्था-१३६० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सँ०१६७६ ।

१२६५. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । श्राकार-१० $\frac{3}{3}$ "×४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-जीर्गो । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या-१३८८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१२६६. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१० । धाकार-११६ $\frac{1}{2}$ " \times ६ $\frac{1}{4}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१५५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ७, बुधवार, सं० १६२६ ।

१२६७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । धाकार—१२ $\frac{2}{3}$ " \times ६" । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—साध कृष्णा ७, संगलवार, सं० १८८१ ।

१२६ - दशलक्षणजयमाला — पाण्डे रह्यू । देशी कागज । पत्र संख्या — द । श्राकार — ६ $\frac{3}{7}$ " \times \times $\frac{3}{7}$ " । दशा – श्रव्छी । पूर्ण । भाषा — श्रपभ्रंश । लिपि — नागरी । तिषय — पूजा । ग्रन्थ संख्या — १६३० । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — श्रावण शुक्ला ६, बृहस्पितवार, सं० १८६ ।

१२६६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ से १० । भाकार— १० $'' \times 8_{\pi}^{9}''$ । दशा—ग्रच्छी । प्रपूर्ण । ग्रन्थ सख्या—२८४८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३००. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या—७ । भ्राकार— $=\frac{9}{7}"\times 8\frac{9}{7}"$ । देशा—जीर्ग्यंत्रीरा । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या— २०४४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३०१. प्रति संख्या ४। देशी कागत्र । पत्र संख्या—१२। ग्राकार—११हुँ" \times ४हुँ"। दशा—जीर्गंक्षीण । पूर्ण् । ग्रन्थ संख्या—२४८६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रम्थिन शुक्ला ४, मंगलवार्, सं० १७३६।

१३०२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-१२ \times ५ है । दशा-जीर्गं श्री ग्रा । पूर्णं । प्रम्य संख्या-२४०० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र कृदगा १०, सं० १८२७ ।

१३०३. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था-१३ । प्राकार--- \times ५ हैं"। दशा-- प्रस्था । पूर्ण । प्रस्थ संस्था--२४०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रश्वित शुक्ला १२, सोमकार, सं० १८०६ ।

- १३०४. दशस्त्रणपूजा—पं० द्यानतराय । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । द्याकार— ६ $\frac{1}{2}$ " \times ६ $\frac{1}{3}$ "। दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । प्रम्थ संख्या—१७१३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—द्वितीय बैशाल कृष्णा १, सोमवार, सं० १८६६ ।
- १३०५. दशलकाण पूषा—सुमितिसागर । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । ग्राकार—१७ $^{\prime\prime}$ \times ६ $_{7}^{3}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीगुंक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२६०७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १३०६. द्वादम वतोद्यापन— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— ε । श्राकार—११ $\S'' \times \chi''$ । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत, प्राकृत, भौरसेनी, मागघी, पैशाचिकी, श्रपभ्रं श, चुलिका श्रादि । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६२८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष - मन्तिम पत्र पर विद्यामंत्र गर्भित स्तीत्र है।

- १३०८. द्विजपास पूजादि व विधान विद्यानंदि । देशी कागज । पत्र संख्या—१२ । भाकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times \mathbf{x} $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीएां क्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६०६ । रजनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१३०६ वीपमालिका स्वाध्याय**— \times । देणी कागज । पत्र संस्था—२ । ग्राकार— १० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा—जीएँ । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१३१०. देवागम स्तोत्र समन्तमद्वाचार्य** । देशी कागज । पत्र संख्या-७ । स्नाकार--१०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-जीर्एक्षीरए । पूर्ए । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१३२१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१३११. प्रति संख्या—२ । दे**शी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—११५ 9 $^{\prime\prime}$ \times ५ 9 $^{\prime\prime}$ दशा—जीर्ग्गंभीग् । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१९७४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १३१२. नग्वीस्वर पंक्ति पूजा विधान— \times । देशी कागज । पत्र सैंख्या—४ । भाकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times प्र $\frac{1}{6}$ " । दशा—जीर्गांशीसा । पूर्सा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय— पूजा । ग्रन्य संख्या—२१२५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १२, सं० १८०१ ।
- **१३१३. नवग्रह पूजा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या— ६ । भ्राकार १०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दक्षा—भ्रज्द्री । पूर्ण । भाषा –संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या— १६३४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
 - १३१४. नवप्रह पूजा विधान--- × । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । आकार--१०"

 $\mathbf{x}_{\mathbf{s}}^{\mathbf{s}}''$ । दशा—श्रन्छो । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । सिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संस्था—२६७३ । रचनाकास— \mathbf{x} । सिपिकास— \mathbf{x} ।

विशेष—इस ग्रन्थ में चिन्तामणि पार्यनाथ स्तवन, पार्श्वनाथ पद्मावती स्तोत्र, पूज्यपादाचार्य कृत पार्श्वनाथ चिन्तामणि पद्मावती स्तोत्र, सध्यवलयपूजा, विद्या देवतार्चन, जिन मातृपूजन, चतुविंशति मात्रा विधान भीर नवग्रहपूजाविधान भी है।

१३१४. नवग्रह पूजा सामग्री— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार-२४" \times १०" । दसा-जीर्गंक्षीरा । पूर्णं । भाषा-हिन्दी । सिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१७६६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ग्रक्षित कृष्णा ८, सोमवार, सं० १६७६ ।

नोट—इसमें पूजा सामग्री का विस्तृत वर्णन है। इस पत्र में जाप्य के भेद, स्तवन विधि, ग्रट्ठारह घान्य, पण्डितों के घारण करने योग्य ग्रामरण सप्त ध्यान, गुरोपकरण, थापड़ा, खावका सामग्री, मगल द्रव्य व्योरा, क्षेत्रपाल पूजा विधि, पंच रस्तनाम, सर्वोषधी का ध्योरा, दशाग धूप का व्योरा, कुंभकार विधि, खाने की विधि, वास की विधि ग्रीर ज्वर की विधि एवं पट्टावली का वर्णन है। वर्जनकाकार ने ग्रपना पूर्ण परिचय दिया है।

१३१६. नारायणपृच्छाजयमारू— \times । देशी कागज । पत्र सख्या—४ । धाकार- १०३ $''' \times ४$ ३''' । दशा—जीर्ग् क्षीण । पूर्ग् । भाषा–धपभ्रं श । लिपि–नागरी । विषय–पूजा । सन्य संख्या–२०५६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१३१७. निर्वाणकाण्डभाषा— मगवतीबास । देशी कागज । पत्र संख्या—११। श्राकार—= ५ १ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—हिन्दी श्रोर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रन्थ सख्या—२२६६ । रचनाकाल— । लिपिकाल—माध्य शुक्ला १४, रविवार, स० १६३३।

टिप्पणी — इस ग्रन्थ में १ से ७ पत्र तक तीन लोक की पूजा है; तदन्तर पत्र में बारह भावना, इसके बाद ६ वें पत्र में एक पद है भीर पश्चात् निवार्शकाण्ड पूर्ण किया गया है।

१३१८. निर्वाणक्षेत्र पूजा— \times । देशी कागज। पत्र संस्था—६ । भ्राकार—१२ $\frac{1}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा—बहुत श्रम्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१५२२ । रचनाकाल—भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १८७० । लिपिकाल— \times ।

१३१६ नेमिनाथस्तवन— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—१। ग्राकार—१० $\frac{1}{9}''\times$ ४ $\frac{1}{9}''$ । दशा—जीगांशीण। पूर्गः। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—१६७७। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३२०. नेमिनाथ स्तोत्र— पं० शाली । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ध्राकार— १० $\frac{2}{3}$ " \times ४ $\frac{2}{3}$ " । दशा—ध्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— १५१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३२१. प्रति संख्या २। देशी कागज। पत्र संख्या-१। धाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दमा-जीर्गाक्षीण। पूर्गा। ग्रन्थ संख्या-१६६०। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड-स्तोत्र में केवल दो प्रकार 'नेम' का ही प्रयोग किया वया है।

- १३२२. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । धाकार-११ $\frac{9}{7}$ \times ४ $\frac{9}{7}$ । दशा-जीर्एकीए। पूर्ए । ग्रन्थ संस्था-१८६१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पीय खुक्ना ४, शनिवार, सं० १७१२ ।
- १३२३. पद्मावती छन्द--कल्यासः। देशी कागजः। पत्र संख्या-२ । झाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{7}$ "। दशा-प्राचीनः। पूर्सः। भाषा-हिन्दीः। लिपि-नागरीः। विषय-स्तोत्रः। ग्रन्थः संख्या-२०६६ः। । रचनाकाल- \times ः। लिपिकाल-- \times ः।
- १३२४. पद्मावती पूजन गोविन्वस्थामी । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । ग्राकार १० $\frac{1}{8}$ " \times ४ $\frac{1}{8}$ " । दणा प्राचीन । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय पूजा । प्रत्य संख्या २१५७ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १३२४ पद्मावती पूजा $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२१ । म्राकार- $=\frac{1}{2}''\times$ ६ $\frac{1}{9}''$ । दक्षा-म्यच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । मन्थ संख्या-१५२३ । रजनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १३२६. पद्मावती स्तोत्र $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-४। ग्राकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ "। दशा-जीर्णकीर्ण। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिप-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१७०६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१३२७. प्रति संस्था** २ । देशी कागज । पत्र संस्था-२ । प्राकार-७ $\frac{3}{5}$ " \times ४" दशा-जीर्र्स् । प्राया-संस्कृत । सिपि-नागरी । विषय-स्तीत्र । प्रन्थ संस्था-१७२१ । रचना-काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १३२६. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था-४। ग्राकार-६ $\frac{9}{7}$ " \times प्र" । दशा- ग्रम्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२२७६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १०, बृहस्पति- वार, सं० १६०६।
- **१३३०. प्रति संख्या ४**। देशी कागज । पत्र संख्या—४ । भाकार-१० $\frac{4}{5}$ " × ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा-जीर्ग्य क्षीरा। पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६१ रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।
- १३३१, पद्मावती सहस्त्रनाम—श्रमृतवत्स । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । श्राकार-११ $"\times$ ५" । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२५४३ । रचनाकाल- \times । लिपि काल- \times ।
- १३३२. पद्मावस्थाष्टक सठीक -पार्श्वदेवगणि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । स्नाकार-१०″ × ५३ँ″ । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिगि-नागरी । विषय-पूजा। ग्रन्थ संख्या-१६२० । रचनाकाल-बैमाख शुक्ता ४, सं० १२०३ । लिगिकाल-क्येष्ठ कृष्णा १३, सं० १६२२ ।
 - १३३३. पत्य विकानपूजा--- म० शुमजन्ताचार्य। देशी कागज । पत्र संख्या-७।

काकार-११ $\frac{1}{6}$ " \times $\frac{1}{8}$ " । दशा-प्राचीत । पूर्त । क्षावा-संस्कृत । लिपि-वागरी । विधय-पूजा । ग्रम्थ संस्था-२५ $\frac{1}{8}$ । लिपिकाल- $\frac{1}{8}$ । लिपिकाल- $\frac{1}{8}$ ।

१३३४. पत्य विधान पूजा—रत्न निन्ध । देशी कागज । पत्र संस्था—७ । प्राकार— ११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\frac{1}{5}}^{\prime\prime}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । जिपि—नागरी । विषय—पूजा । प्रत्य संस्था—२७=६ । रचनाकाल— \times । जिपिकाल—सं० १७६६ ।

१३३४. पत्य विधान पूजा — भनन्तकीति । देशी कागज । पत्र संख्या- ४ । भाकार- १० $\frac{1}{3}$ " × ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । विषय-पूजा । भन्य संख्या-२४०६ । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

१३३६. पार्श्वनाथ स्तवन— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । **भाकार**— १० $'' \times 8''$ । दशा—म्रित नीर्ग्यंशीरण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तीत्र । प्रन्थ संस्था—१४६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३३७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या -१ । प्राकार -११ $'' \times$ ४ $\frac{3}{9}$ । दशा- जीग्रांक्षीसा । पूर्स । प्रन्य सङ्या -१४६१ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $--\times$ ।

नोट-इस पत्र में वितराग स्तोत्र तथा शान्ति स्तोत्र भी है।

१३३८ प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-१ । स्नाकार-१० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था-२३०३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट-इसी पत्र में बीतराग स्तोत्र तथा शान्तीनाथ स्तोत्र भी है।

१३३६. पार्श्वनाथ स्तोत्र—शिवसुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । भाकार- $\xi'' < 3\frac{2}{3}''$ । दशा-जीर्एं । पूर्एं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४७७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१३४०. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । धाकार—११" \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—ग्रतिजीर्गः क्षीगा । पूर्णः । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । यन्थ संख्या—१५१५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल -प्राषाढ कृष्णा १२, सं० १७१४ ।

१३४१. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । प्राकार—१२ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । देशा— ग्रच्छी । पूर्णा । ग्रन्थ संख्या—१७०३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रश्यिन कृष्णा ८, सं० १८६२ ।

१३४२. पार्यनाथ स्तोत्र सटीक $-\times$ । टीकाकार-पयाप्रम देव । देशी कागज । पत्र संख्या-५। ग्राकार-१० $''\times$ ४ $^{\circ}_{5}$ '' । दशा-ग्रच्छी । पूर्गी । भाषा-संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६१० । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१२४३. पारवंनाय स्तवन सटीक—पद्मप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । भाकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४" । दशा—पीर्गंशीण । पूर्गं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रथ्य संस्था— २३२१ । । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट—इसी पत्र के पीछे की ग्रोर सोमसेनगिए। विरिचित पार्श्वनाथ स्तीत्र भी है।

१३४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या–१ । श्राकार–११″ \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दक्षा–जीर्ग क्षीर्ग । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२०६१ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१३४५. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । स्राकार-१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा-जीर्गं क्षीरा । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२१३२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१३४६. पार्श्वनाथ स्तृति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । ग्राकार—प्र 3 " \times ४ 3 " । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२५७६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३४७. प्रति संख्या २। देशी कागज । पत्र संख्या-२ श्राकार-१० $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{9}{6}$ " । दशा-जीएां क्षीएा । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-२६३५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र शुक्ला १२, सं० १७२६ ।

१३४८. पाशा केवली— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—ह । ग्राकार-१०६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्ग क्षीसा । पूर्स । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-१७२६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-मंगसिर क्रुष्सा १०, सं० १६४२ ।

१३४६. पुष्पांजली पूजा— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । झाकार——५ $\frac{1}{6}$ " \times ५ $\frac{1}{6}$ " दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२४४६ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ४, सं० १६०६ ।

१३४०. पूजासारसमुच्चय— संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या— ५७ । भ्राकार— ११" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा— भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या— २५०६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—मंगसिर शुक्ता ११, बृहस्पतिवार, सं० १५१८ ।

१३५१. पूजा संग्रह—— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—द । श्राकार-१०" \times ४२" । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—ग्रपभ्रं णं एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या— २५३१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवार, सं० १७०४ ।

विशेष--- इस ग्रन्थ में देव पूजा, सिद्धों की जयमाल व पूजा, सौलह कारण पूजा व जय-माल, दशलक्षण पूजा व जयमाल श्री भाव शर्मा कृत श्रीर ग्रन्त में नन्दीश्वर पूजा व जयमाल है।

१३४२. प्रतिक्रमण $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । श्राकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१३५३. प्रतिक्रमण्— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–११ । ग्राकार–१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{2}{5}$ " । दशा–प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत ग्रीर प्राकृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या–२२६२ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १४, सं १६८१ ।

१३४४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । ग्राकार-१०" \times प्र $\frac{9}{2}$ " ।

दशा-ग्रन्थी । पूर्श । ग्रन्थ संख्या-२४०७ । रचनाकाल-imes । लिपिकाल-imes ।

१३५५. प्रति संस्था ३। देशी कागज । पत्र संस्था-४। स्राकार १०" \times ४"। दशा-सन्द्री । पूर्या । प्रत्थ संस्था-२८२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१३५६ प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । भ्राकार--१००० ४४ । दशा-प्राचीन । पूर्ता । ग्रन्थ संख्या--२४६७ । रचनाकाल--× । लिपिकाल--× ।

१३५७. प्रतिकामण (समाचारी सटीक)—जिनवत्कम गणि। देशी कागज। पत्र सल्या-२। धाकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४"। दशा-प्रति जीर्ग्य क्षीण।पूर्ग्य। भाषा-प्राकृत एवं हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१७६३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१३५८. प्रतिष्ठासारसंप्रह — बसुनंबि । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । भाकार—१०३ $" \times ४३$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२५२७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावरा कृष्णा १५, सं० १५१६ ।

१३४६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । म्राकार—११ $"\times$ ४ $\frac{3}{9}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या—२४७० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ **शुक्ता** ३, सं० १४६५ ।

१३६०. पंचकल्याणक पूजा--- \times । देशी कागज । पत्र संख्या---२३ । स्राकार--६ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{5}{5}$ " । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । प्रन्थ सन्या-२६०६ । रचनाकाल-- \times । लिपिकाल- \times ।

१३६१. पंचपरमेष्ठी स्तोत्र — जिनप्रभ सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या —२४ । ग्राकार — १० $\frac{7}{4}$, $4 \frac{1}{2}$ । दशा — सुन्दर । पूर्ण । भाषा —संस्कृत । लिपि —नागरी । विषय —स्नोत्र । ग्रन्थ संख्या — २०६० । रचनाकाल — \times । लिपिकाल —माध्र शुक्ला ६, बुधवार, मं० १८५२ ।

१३६२. पंचमेरू पूजा — श्रीकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या — ५ । ग्राकार — ६५ % ४५ % । दशा — ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । विषय — पूजा । ग्रन्थ संख्या — १६३२ । रचनाकाल — % । लिपिकाल — भाद्र पद कुष्ठणा २, मं० १८२७ ।

१३६३. पंचमी व्रतोद्यापन पूजा—ताराचन्द श्रावक । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । माकार $-१0\frac{\pi}{2}$ \times χ '' । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत और हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६१५ । रचनाकाल—चैत्र शुक्ला ६, सं० १८०२ । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ला ६, सं० १८६२ ।

१३६४. बड़ा स्तवन—धश्वसेन । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । द्याकार—७ $\frac{3}{9}$ × \mathbf{x}'' । दसा—धन्छी । पूर्ण । काणा—हिन्दी । तिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१३३६ । रचना-काल— × । लिपिकाल— × ।

१३६५. **बाला त्रिपूरा पद्धति**—श्रीराम । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । ग्राकार- $\varsigma_{\frac{1}{2}}^q \times \Upsilon_{\frac{3}{2}}^q$ । दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२५७४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगसिर कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६६३ ।

१३६६. मक्तामर स्तोत्र-मानतुगांचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ग्राकार-

१०५ै″×४५ै"। दशार्म्मति जीर्ग्यक्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ध्रम्य संस्था-२००० । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

नोट - श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६७. प्रति संख्या २ । देशी काजग । पत्र संख्या-३ । श्राकार--१०" \times ४" । दक्ता-जीगंक्तीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१४६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ता १४, सं० १८१४ ।

नोट-- श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६ प्रति संख्या—३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१०३ * \times ४ 9 * । दशा—जीर्ग्ग क्षीरा। पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावण कृष्णा २, सोमवार, सं०१६७ ।

नोट- श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३६६. मस्तामर स्तोत्र— मानतुं गाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । ध्राकार— १९ $''\times$ ४ $\frac{3}{6}''$ । दशा—ध्रति जीर्गक्षीरा । पूर्ण । भाषा- सस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०४८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट- श्लोक संख्या ४८ हैं।

१३७०. प्रतिसंख्या २। देशी कागज । पत्र सख्या–४ । ध्राकार–८ $\frac{1}{5}$ " \times \mathbf{k}_{3}^{3} " । दशा–श्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या–२२८४ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१३७१. प्रति संख्या ३। देशी कागजा। पत्र संख्या–६। श्राकार–११ n \times ४ n n । दशा–जीर्गुक्षीमा । पूर्मा । ग्रन्थ संख्या–१३८२ । रचनाकाल– \times । जिपिकाल– \times ।

नोट-- श्लोक संख्या-४८ हैं।

१३७२. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था-५ । ग्राकार-६ $\S'' \times Y \S''$ । दशा-जीगों । ग्रन्थ संस्था-१४६८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोह--श्लोक संख्या ४४ हैं।

१३७३. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । श्राकार-६ $\frac{3}{9}$ $'' \times \times \frac{5}{9}$ '' । दशा- श्रातिजीर्गुक्षीरा । पूर्यो । प्रन्य संख्या-१४६४ । रचनाकाल- imes । लिपिकाल- imes ।

नोट--एलोक संख्या ४४ हैं।

१३७४. प्रति संख्या ६। देशी कागज । पत्र संख्या—६। ग्राकार-११ड्रै″×४८्रै″। दशा-जीर्यांशीण । पूर्यां । ग्रन्थ संख्या-१६५३ । रचनाकाल-४ । लिपिकाल-सं० १८२३ ।

१३७४. प्रति संख्या ७। देशी कागज । पत्र संख्या—४। श्राकार—५" \times ६"। दशा—श्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्य संख्या—१६१३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट--- थलोक संख्या ४८ हैं।

१३७६. प्रति संस्था ५। देशी कागज । पत्र संस्था–१२! झाकार–१० है" \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दक्षा–जीर्गंक्षीस । पूर्य । प्रस्थ संस्था–२३७७ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१३७७. मस्तामर स्तोत्र वृक्ति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२७ । धाकार—- १० $\frac{3}{5}$ " \times १ $\frac{3}{5}$ " । दशा—धच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४०० । रसनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ८, सं० १८६६ ।

विशेष-- ग्रन्थ की लिपि भौपाल में की गई।

१३७५. मक्तामर स्तोत्र (सटीक) — नयमल घौर लालचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-४३। ब्राकार-११३ँ"×५३ँ"। दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२२६६ । टीकाकाल-ज्येष्ठ शुक्ला १०, बुधवार, सं० १८२६ । लिपिकाल-पौष कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १६५० ।

टिप्पणी --रायमल्लजी की टीका को देख करके हिन्दी टीका की गई प्रतीत होती है।

१३७६. मक्तामर माषा—पं० हेमराज । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार— १० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{1}_{7}^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्गंकीस्म । पूर्यो । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१६६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३८०. मक्तामर स्तोत्र वृति —मानतुंगावार्य । वृति हार —रत्नवन्त्र मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या—३१ । म्राकार—११" \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा—त्रीखं तीख । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि — नागरी । प्रत्य संख्या—१५६६ । टीकाकाल—म्राषाढ़ शुक्ला ५, बुधवार, सं० १६६७ । लिपिकाल—चैत्र बुख्या ६, रविवार, सं० १७११ ।

१३८१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-३३ । प्राकार-१० $\frac{3}{4}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दमा-जीएँ श्रीरा । पूर्णे । ग्रन्थ संस्था-१३८७ । रचनाकाल- \times । टीकाकाल-ग्राषाढ़ शुक्ला ४, बुधवार, सं० १६६७ । लिपिकाल-पोष शुक्ला १, सं० १७७० ।

१३६२. γ सक्तामर (सटीक) — सानत् गाचार्य । टीका — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — १४ । द्याकार — ११'' ×४ $\frac{5}{2}$ '' । दशा – प्रच्छी । पूर्यो । भाषा – संस्कृत । लिपि – वागरी । प्रस्थ संख्या — १७१४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१३६३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । भाकार-१०" \times ४" । दशा-जीर्ग्यं क्षीरा । भ्रपूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१६८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट--प्रन्थ की केवल ३२ श्लोकों में ही समाप्ति की गई है।

१३-४. मक्तामर स्तोत्र (सटीक) —मानतुं गावार्य । टीका — समरप्रम सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या —१ । धाकार —१० $\frac{1}{6}$ " \times ४" । दशा —बीर्ग्यं क्षीरग् । पूर्ण । भाषा —संस्कृत । लिपि —नागरी । विषय —स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या — १६-६ । रचनाकाल — \times । क्षिपिकाल — \times ।

१३८४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । प्राकार—१० $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीगुंक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६६५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३८६. मस्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तोत्र-- ४। देशी कागज। पत्र संख्या-१०।

श्राकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ "। दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१४३६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१३८७. मारती स्तोत्र—शंकराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । धाकार— १२ $\frac{1}{2}$ " \times \times $\frac{3}{2}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२४१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३८८. भुवनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । म्राकार—११ $\frac{3}{7}$ \times \times $\frac{3}{7}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—म्रच्छी । पूर्ग । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२५१० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१३८६. भूपाल चतुर्विशंति स्तोश्र— पं० आशाधर । देशी कागज । पत्र संख्या— १३ । श्राकार—१०ड्डें $\times ४ \frac{9}{5}$ । दशा—जीर्गंक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२५०० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १७०४ ।

विशेष - इसी प्रन्थ में वादिराज कृत एकी भाव स्तोत्र तथा श्रकलंकाष्टक भी है।

- **१३६०. प्रति संख्या २। देशी** कागज । पत्र संख्या-५ । प्राकार-१०" \times ४ \S "। दशा-भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२०२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, सं० १६७५ ।
- **१३६१. मूपाल चतुर्विशंतिस्तोत्र** (सटीक)— \times । देशी कागज। पत्र संस्था–१०। माकार–१२ $\frac{3}{4}$ × $\frac{3}{4}$ । दशा—श्रच्छी। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। प्रम्य संस्था–१६६३। रचनाकाल— ×। लिपिकाल—चैत्र कृष्ट्णा ४, बृहस्पतिवार, सं० १७६६।
- **१३६२. मंगलपाठ** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । श्राकार-१०" \times ४ \S " । दक्का-जीर्ग्यंशींग । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१३६३. महर्षि स्तवन—पं० भ्राशाधर** । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार— १०३''' \times ४ $rac{3}{9}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२०३२ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल— \times ।
- **१३६४. महालक्ष्मी कवच** $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । प्राकार-६ $\frac{3}{9}$ $^{\prime\prime}\times$ ५ $\frac{3}{9}$ $^{\prime\prime}$ । दक्षा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१६०३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १३६६. महिम्मस्तोत्र (सटीक)-स्रमोध पुरुपबन्त । टीका-लिस्ताशंकर । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । स्नाकार-१२"×५२" । दशा-जीर्राक्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिप-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१७२७ । रचनाकाल- × । क्रिपिकाल-सं० १७६६ ।

- १३६७. महिम्नस्तोत्र—प्रमीच युक्पवस्त । देशी कायज । पत्र संस्था—४ । धाकार— $=\frac{3}{7}\times 8^n$ । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । अस्य संस्था—१२०६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—प्रमेष्ठ कृष्णा २, सं० १व६८ ।
- १३८८. मुक्तावली पूजा— \times । देशी कागज । पत्र संस्था— \times । जाकार— १०" $\times \times ^3_7$ " । दशा—जीर्गंक्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । जिनि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संस्था—२४०७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १३६६. यमाष्टकस्तोत्र सटीक $-\times$ । देशी कागत्र। पत्र संस्था-१। भ्राकार-१० $\frac{2}{7}$ " \times ४ $\frac{2}{7}$ "। दशा-जीर्ग्यंशीरा। पूर्णं। भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संस्था-२०१६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४००. रत्नत्रय प्जा— । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार—११ $^{\prime\prime}$ ×४ $\frac{1}{9}^{\prime\prime}$ । दशा—अच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । प्रत्य संख्या—१६३३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल—श्राषाढ कृष्णा ७, सं० १८२६ ।
- १४०१. रत्नत्रय पूजा \times । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । ग्राकार-११ $''\times$ ५'' । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२२५५ । रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४०२. रामखन्त्र स्तवन —सनतकुनार । देशी कागज । पत्र संख्या— । ध्राकार १०" <१" । दशा त्री गुँ तीला । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या २०६७ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।

श्रन्तमाग ---

श्रीसनतकुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरःम वन्द्रस्तत्रतराज संदूरणम् ॥ विशेष---यह वैष्णव ग्रन्थ है।

- १४०३. **लघु प्रतिक्रमरा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । ग्राकार-११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{3}{9}^{\prime\prime}$ । दशा-प्राचीन । पूर्णं । भाषा-प्राकृत ग्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या-२४३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४०४. **लघु शान्ति पाठ**— \times । देशी कागज। पत्र संख्या-१। श्राकार-६न्नै" \times ४-५ै"। दक्षा-जीर्ग्। पूर्ग्। भाषा-सस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१६४२। रचना-काल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४०५. **लबु सहस्त्र नाम स्तोत्र** $--\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-४। भ्राकार-१० $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा-भ्रच्छी। पूर्ण। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। भ्रष्य संख्या-२६६०। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४०६. लघु स्तवन (सटीक)—श्री सोमनाथ । टीकाकार—मुनि नम्बगुरा श्रीची । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । श्राकार-प्रदे²/* ४२ । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत ।

लिपि-नागरी। ग्रन्थ संस्था-१६०७। टीकाकाल-सं०१३६७। लिपिकाल-बैशाख बुक्ला १५, सं०१६२२।

१४०७. लघुस्वयं मूस्तोत्र—देवनंदि । देशी कागज । पत्र संख्या-१३ । श्राकार-१०"×४- । दत्ता-प्रिति शीर्णशीर्ण । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१३८३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-प्रावाद घुस्ला ४, सं० १७१४ ।

१४०६. प्रति संख्या २ । देशी कागत । पत्र संख्या—३ । श्राकार-११३ै"×४३ै" । दशा—म्रतिजीर्शिक्षीरा । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१७४६ । रचना-काल-× । लिपिकाल—सं० १८२० ।

१४०६. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या–६। श्राकार–१०" \times ४ $\frac{3}{5}$ "। दशा–अच्छी । पूर्ण । प्रत्य संख्या–१९७३ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१४१०. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-५ । ग्राकार-११ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४३८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा १४, सोमवार, सं० १८३८ ।

१४११. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—१२'' \times ५ $^3_8''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०६२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ४, सं० १८१७ ।

१४१२. लघु स्वयं मूस्तोत्र (सटीक) — देवलंदि । दीका — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । माकार—११ $\S''\times$ $\chi''_{\mathfrak{f}}$ " । दशा—प्रतिजीर्गंकीरग् । पूर्गं । भाषा—संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१७४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ६, वृहस्पतिवार, सं० १८२० ।

१४१३. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-५ । ग्राकार-१० $\frac{3}{7}$ "×४ $\frac{3}{7}$ " । दशा-भन्छी । पूर्ण । प्रत्य संस्था-२५७५ । रचनाकाल- × । सिपिकाल- × ।

१४१४ प्रति संख्या ३। देशी कागज। पत्र संख्या-५। श्राकार-६" \times ४ 2_7 "। दशा-जीत्यंक्षीत्य। पूर्यं। प्रत्य संख्या-२५३७। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-चैत्र क्रुष्णा ५, सं०१६२७।

१४१५ सविधविधान पूजा — त्र० हर्षकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या — ११ । धाकार — १० है" ४ ४ है" । दशा – प्रच्छी । पूर्ण । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – पूजा । धन्य संख्या – २६४ = । रचनाकाल – × । लिपि काल – जैशास कृष्णा १३, सं० १६४३ ।

१४१६. वर्डमान जिन स्तबन— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—१। धाकार— ७३ $"\times$ ३"। दशा—प्राचीन। पूर्णे। धाषा -संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या— २५१। रचनाकाल— \times । जिपिकाल— \times ।

१४१७. वर्द मान जिन स्तवन (सटीक)--पं० कनककुशल गणि। देशी कागज। पत्र

संख्या-१। घाकार-१०६ "X४इ"। दमा-जीएं तीला। पूर्णे। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-२५६४। रचनाकाल- X। लिपिकास-सं०१६५३।

१४१८. वन्देतान की जयमाल—माधनन्दि। देशी कागज। पत्र संख्या—२। श्राकार—११ $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{3}{9}^{\prime\prime}$ । दक्षा-प्राचीन। पूर्ण। माषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। श्रम्थ संख्या—२१३६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पौष शुक्ला १०, बृहस्पतिकार, सं०१६८२।

विसेष-सं० १६=३ वैशास कृष्णा ६, को बह्मगोपाल ने भोषित किया है।

१४१६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—१० $\S'' \times \S^{1''}$ । दशा—श्रतिजीर्गं क्षीला । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या—२३६४ । रचनाकाश— \times । लिपिकाल— \times ।

१४२०. बृहतप्रतिक्रमण (सार्य) — \times । देशी कागज । पत्र संस्था – ४५ । भाकार – १३ $^{\prime\prime}$ \times ६ $^{\prime\prime}$ । दशा – अण्छी । पूर्ण । भाषा – प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – पूजा । ग्रन्थ संस्था – २७५४ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – आषाढ़ कुष्णा ३, रविवार, सं० १८४८ ।

१४२१. वृहतकास्ति पाठ — \times । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । स्राकार-६३ n \times ४ n n । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृः । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । सन्ध संख्या-२५५८ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१४२२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । धाकार-१० $\frac{1}{5}$ " \times ४ $^{''}$ ई । दशा-जीर्गं शीरा । पूर्णं । प्रत्य संख्या-२५५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४२३. बृहदस्त्रयं मूस्तोत्र (सटीक) — समन्त महावार्य । टीकाकार — प्रभावनद्वावार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१३६ । ग्राकार –१२६ * / \times ६५ * / \times ६५ * /। दशा—ग्रति जीगुंकीग् । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१३४३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फालगुन कृष्णा ५, रविवार, सं० १७६६ ।

१४२४. वृहवयोडयकः रस्य यूजा — \times । देशीं कागज । पत्र संस्था-२८ । आकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times ४ $\frac{1}{5}$ " । दशा — जीर्संक्षीस् । पूर्स । भाषा-संस्कृतः । लिपि-नागरीः । विषय-पूजाः । ग्रन्थ संस्था-२६३१ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१४२६. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । प्राकार-१०३'' \times ४ $_{9}^{*'}$ । दशा-जीर्गं । पूर्गं । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१४५३ । रचनाकाल- \times । लिपिकास- \times ।

१४२७ विवास व कथा संग्रह \times । देशी कागज। पत्र संस्था-१६६। धाकार-११है" \times ५"। दशा-जीर्ण। पूर्ण। थावा-प्राकृत, धपन्नंग धौर संस्कृत। लिपि-नागरी। विवय-वृत्त, विधान एवं कथा। ग्रन्थ संस्था-१०२६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times । १४२८. विनती संग्रह—पं० भूषरदासजी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । धाकार— ६५ $^{\prime\prime}$ \times $^{\prime\prime}$ \times $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा- धच्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— २७५८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४२६. विमलनाथ स्तवन—विनीत सागर। देशी कागज। पत्र संख्या—६। ग्राकार—६ $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{3}{3}$ "। दशा—प्रच्छी। पूर्ण। भाषा—हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या—२७६६। रचनाकाल—ग्रश्यिन शुक्ला ६, सं० १७६८। लिपिकाल— \times ।

विशेष-इस ग्रन्थ में पार्श्वनाथ, ग्रादीश्वर, चौबीस तीर्थं कर, सम्मेद शिखरजी, बारह मासा ग्रादि सिद्धचक स्तवन भी है।

१४३०. विषापहार स्तोत्र — धनंजय । देशी कागज । पत्र संख्या — ६ । स्राकार — $=\frac{3}{8}$ \times ४ $\frac{9}{8}$ " । दणा — स्रच्छी । पूर्ण । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । विषय — स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या — १८७५ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — फाल्गुन कृष्णा १०, सं० १८७० ।

१४३१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । ग्राकार—११ $'' \times 8 \stackrel{?}{\Rightarrow}''$ । दशा— श्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—२७६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४३२ प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । श्राकार-११'' \times ४ $^2_7''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ग । प्रान्थ संख्या-२७२७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १, सं०१६८२ ।

१४३३. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या–६ । ग्राकार—१०'' \times ४ $\frac{9}{5}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२०४१ । रवनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४३४. प्रति संख्या ५ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । श्राकार -१०'' \times ४ $\frac{3}{5}''$ । दशा—प्रच्छी । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या- २०२५ । रचनाकाल—— \times । लिपिकाल— \times ।

१४३५. विषापहार स्तोत्रावि टीका — \times । टीकाकार —नागचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या —२४ । श्राकार —६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दशा —जीर्ग । भूग्या । भाषा — संस्कृत । लिपि —नागरी । विषय —स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या —१००४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

नोट —श्री पं० मोहन ने स्वात्मपठनार्थं लिपि की है। इस ग्रन्थ में श्री देवनंदि कुत सिद्धप्रिये व वादिराज उपनाम वर्दामान सूनीश्यर रचित एकीमाव स्तोत्र तथा महापण्डित ग्राशाधर कृत "जिनस्तुति' ग्रीर ग्रन्त में श्री धनंजय कृत विषापहार ग्रादि स्तोत्रों की टीका नागचन्द्र सूरि ने इसमें की है।

म्राविभाग---

वंदित्वा सद्गुरुन् पंचज्ञानभूषणहेतवः व्याख्या विषापहारस्य नागचन्द्रेग् कथ्यते ॥१॥

घन्त माग---

इयमर्हन्मतक्षीरपारावारपार्वराशशांकस्य मूलसंघदेशीगरा पुस्तकगच्छप-नशोकावलीतिलकालंकारस्य तौलवदेशविदेश पवित्रीकररा प्रवरा श्रीमल्ललितकीर्तिभ- ट्टारकस्याप्रक्षिष्य गुणवद्वारागोषरा — सकलकास्त्राध्ययन प्रतिष्ठायावास पदेशात्न धर्मप्रभावनाम रीता — देवचन्द्रमूनीन्द्रचरणनस्विष्ठरा चिन्द्रका — चकोरायमारोन करताय विप्रकुलोत्तं स श्रीवत्सगोत्रपवित्र पार्श्वनामंगुमटाम्बातनूषेन प्रवादिन— खकेकरिता नागचन्द्रसूरिता विषापहारस्तोत्रस्य कृतव्याख्या कस्पान्तं तत्ववोधायेति भद्रम । इति विषापहारस्तोत्र—टीका समाप्त ।

१४३६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार-१०"४४" । दशा-अच्छी । पूर्ता । प्रत्य संख्या-१२६६ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल-भाद्रपद सुक्सा १२, सं० १८६८ ।

१४३७. विद्यापहार विलाप स्तवन—वादिचन्त्र । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार— $\varepsilon_3^{g''}\times v_3^{g''}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विदय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२००७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४३८ शनि, गौतम और पार्श्वनाथ स्तवन-संग्रह- \times । देशी कागज। पत्र संख्या-२। ग्राकार- $=\frac{1}{2}''\times \frac{1}{2}'''$ । दशा-ग्रच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्दी भीर संस्कृत। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या २३१८। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ग्राषाढ गुक्ला १२, सं० १८६२।

टिप्पाणी—शनि स्तवन वि० सं० १८६२ द्याषाढ़ शुक्ला ११, को लिखा गया । गौतम स्तवन के कर्ता लासूराम हैं। पार्श्वनाथ स्तोत्र के कर्ता श्री समयसुन्दर हैं।

१४३६. शनिश्वर स्तोत्र— बशरथ । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । माकार–५ $\frac{3}{9}$ " । दशा–श्रच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या–२७६ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१४४०. शारदा स्तवन — हीर । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-१० $''\times$ ४ $^9_8''$ । दशा-जीर्ग्ग । पूर्ग्ग । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-१४४३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४४१. शिव पञ्चीसी व ध्यान बसीसी — बनारसीबास । देशी कागज । पत्र संख्या— ६ । म्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-जीर्र्ण । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या— १६३५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४४२ः शिव स्तोत्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । आकार---" \times ४ $\frac{9}{5}$ " । दशा-जीर्एा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संस्था-१६२४ । रणना-काल- \times । लिपिकाल-पौष शुक्ला ११, सं० १६८० ।

भोट-नवप्रह मंत्र तथा शीतला देवी स्तीत्र है।

१४४४. होमन स्तोत्र—केशरलाल । देशी कागज । पत्र संख्या—५ । झाकार— १० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—झब्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रन्थ संख्या—२४३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४४४. षोडषकारण जयनाल — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१०। श्राकार—१२ $\frac{9}{7}$ " \times ५ $\frac{5}{7}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—ग्रपञ्ज । ग्रीर संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२३=४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल – \times ।

१४४६ **घोडयकाररए पूजा**— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—४। धाकार—१० $'' \times ४$ $\frac{5}{7}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२४१० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—भाद्वपद शुक्ला ४, सं० १७०६ ।

१४४७. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । प्राकार-१०'' \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-प्रकक्की । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या-२७२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४४८. सन्ध्या वन्दन — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—३। श्राकार—१० $\frac{9}{7}$ " \times ६ $\frac{9}{7}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१६४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४४६. समन्तमद्र स्तोत्र $- \times 1$ देशी कागज । पत्र संख्या - २२ 1 धाकार $- ११ \% \times 3\%$ । दशा - प्राचीन 1 पूर्णा । भाषा <math>-संस्कृत । लिपि -नागरी । विषय -स्तोत्र । ग्रन्थ सख्या -२७५६ । रचनाकाल $- \times 1$ लिपि काल -भाद्रपद कृष्णा १४, सं० १६७६ ।

१४५० समवशरण स्तोत्र —िविष्णु शोमन (सेन)। देशी कागज । पत्र संख्या-४ । धाकार-११ $'' \times ४$ $_{g}^{g}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२३४१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

टिप्पणी- मवेताम्बर माम्नायानुसार वर्णान है।

१४५१. समवशरण स्तोत्र— घनदेव । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । म्राकार— ११ $\frac{1}{3}$ " \times \times $\frac{1}{3}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— २६५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन शुक्ला ११, रविवार, सं०१६४८ ।

१४५२. समाधि शतक — पूज्यपाद स्वामी । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ध्राकार — १०६ $''' \times ४$ है''' । दशा—धितजीर्गक्षींगा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६२ । रचनाकाल — \times । स्विपिकाल — \times ।

१४४३. सम्मेद शिखरजी पूजा--मंतदेव। देशी कागज। पत्र संख्या-३। श्राकार-११" \times ५ $\frac{1}{5}$ "। दशा--ग्रन्धी। पूर्णी। भाषा-हिन्दी (पद्य)। लिपि-नागरी। विषय-स्तोत्र। ग्रन्थ संख्या-१५०६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४५४. सम्मेद शिखर पूजा— imes। देशी कागज । पत्र संख्या–२ । श्राकार–६"imes

 v_g^{**} ा वशा—प्रच्छी । पूर्णे । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या—२६५४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४५१. सम्मेद शिकार महातम्य—वर्मदास सुल्लकः। देशी कागजः। पत्र संख्या-ः। आकार-६ $\frac{3}{7}$ \times ६ $\frac{3}{7}$ । दशा-प्रच्छी । पूर्णः। भाषा-हिन्दी (गद्य पद्य मिश्रितः) । लिपि-नागरी । सम्य संख्या-१६३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-पौष श्रुक्ता ११, सं० १६४२ ।

१४४६. सम्मेद शिखर विधान —हीरासाल । देशी कागज । पत्र संख्या-१८ । भाकार-६ $"\times$ ४"। दशा-अच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रम्थ संख्या -१८७३ । रचनाकाल-वैशाख कृष्णा ६, शुक्रवार, सं० १६८१ । लिपिकाल- \times ।

१४४५. सरस्वती स्तोत्र —पं० ग्रासाधर । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । ग्राकार—१०" \times ५" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२१४८ । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।

१४५८. सरस्वती स्तोत्र (सार्थ) — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — \times । न्नाकार — ११ $^{\prime\prime}$ \times १ $^{\circ}$ $^{\circ}$ । दशा — जीर्गंशीरा । पूर्ण । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – स्तोत्र । गृन्थ संख्या – २०८८ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१४४६, सरस्वती स्तोत्र—पं० बनारसीदासः। देशी कागजः। पत्र संस्या—१। आकार—११ $''\times$ ४ \S'' । दशा—प्रच्छी । पूर्याः। भाषा—हिन्दीः। लिपि—नागरीः। विषय—स्तोत्रः। ग्रन्थः संस्या—२६२६ः। रचनाकाल— \times ः। लिपिकाल— \times ः।

१४६०. सरस्वतो स्तोत्र—वृहस्पति । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । म्राकार-१०" \times ४ $\frac{1}{8}$ " । दशा-जीर्ग्कक्षीरा । पूर्ण । भाषा- संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या-२०३५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

दिप्पाणी—सरस्त्रती का रंगीन चित्र है, जिसमें सरस्वती हंस पर बैठी हुई है। इसको पं॰ भाग्य समुद्र के पठन के लिए लिखा गया बताया गया है,।

१४६१. सरस्वती स्तोत्र— \times । देशो कागज । पत्र संख्या—२ । माकार— $=\frac{2}{3}''\times8''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—पस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२८१७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४६२. सरस्वती स्तोत्र भी ब्रह्मा । देशी काग्य । पत्र संख्या – २ । धाकार — १० $\frac{3}{8}$ \times \times $\frac{1}{8}$ । दशा — जीर्स्स । पूर्त्स । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । प्रत्य संख्या — १०१६ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१४६३. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । धाकार-६" \times ४२ । दशा-जीर्ग । पूर्ग । प्रत्य संख्या-१०२३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-मंगिसर शुक्ला १३, शनिवार, सं० १६०६ ।

१४६४. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या—३। भ्राकार—११६ $^{\prime\prime}$ \times ६ $^{\circ\prime}_{5}$ ''। दशा—भ्रच्छी । पूर्या । ग्रन्थ संख्या—१८२८ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—सं० १९४८ ।

१४६४. व्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था- २ । भाकार-६ $\frac{3}{9}$ " \times ६ $\frac{1}{9}$ " । दशा-धन्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१६१६ । रचनाकाल- imes । लिपिकाल- imes ।

१४६६. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था-१। प्राकार-८ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ "। दशा-प्रक्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-१६४३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४६७. सरस्वती स्तोत्र— विष्णु । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । श्राकार— ६" \times ३ $\frac{1}{9}$ " । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—न।गरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या— १८४० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४६ द. सरस्वती स्तोत्र—नागचन्द्र मुनि । देशी कागज । पत्र संख्या – २ । भ्राकार – $\varepsilon'' \times v_{\eta}^{2}$ " । दशा—ग्रतिजीर्ग्यकीर्ग्य । पूर्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रत्य संख्या – १६१५ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१४६६. सर्वतीर्थमाला स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । स्राकार-१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-ग्रातिजीर्गक्षीरम् । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्तोत्र । ग्राथ संख्या-२१४३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४७०. सहस्त्र नाम स्तोत्र—पं० भाशाभर । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । भाकार—११" \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—जीर्गंक्षीरा । पूर्गं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२३६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४७१. सहस्त्र नाम स्तवन - जिनसेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ । माकार-१० $\frac{3}{8}$ " \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा-जीर्गक्षीण । पूर्रो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१०३० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४७२ स्तम्मन पार्श्वनाथ स्तोत्र—नथचन्द्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—६ $\frac{3}{3}$ " × ४ $\frac{3}{3}$ " । दशा—जीर्गा । पूर्णा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६६३ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१४७३. स्तोत्र संग्रह—संग्रहीत । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—१०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा—जीर्एं शीएा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२४५= । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

दिप्पणी — चतुर्विशति स्तोत्र, चन्द्रप्रभ स्तोत्र, चौबीस जिन स्तोत्र, पाश्वेनाथ स्तोत्र, शान्ति जिन स्तोत्र, महावीर स्तोत्र श्रीर धण्टा कर्गा मंत्रादि हैं।

१४७४. स्वर्णाकर्षण भैरव पद्धति विधि व स्तोत्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-४। माकार-१०३ $"\times$ ४२"। दशा-श्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१६०५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-द्वितीय फाल्गुन कृष्णा ६, सं० १६२२ ।

१४७४. साधु बन्दना— बनारसीदास । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ध्राकार— क $\frac{1}{2}$ " \times \times $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीर्राक्षीण । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५०३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४७६: साधु बल्बना--पार्थंबन्द्र । देशी कानज । पत्र संख्या-६ । ग्राकार-१०" \times ३ $\frac{3}{7}$ " । दशा-जीर्गंकीसा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रम्य संख्या-२०१४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-वैशाख कृष्णा १, सं० १७७६ ।

विशेष-- प्रन्तिम पत्र धर वर्तमान काल के २४ तीर्थं करों के नाम तथा सोलह सतीयों के नाम भी हैं।

१४७७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—७ । प्राकार-१० $\frac{9}{5}$ " ४४ $\frac{3}{5}$ " । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण ।-ग्रन्थ संस्था—२७३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४७६. साधारण जिनस्तवन (सटीक) — जधनन्द सूरि । टीकाकार — पं० कनक कुशल गरिए । देशी कागज । पत्र संख्या \rightarrow ३ । श्राकार — १० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा \rightarrow प्राचीन । पूर्ण । भाषा - संस्कृत । लिप - नागरी । विषय - स्तोत्र । प्रस्थ संख्या - २५६३ । रचनाकाल - \times । लिप - नागरी ।

टिप्पणी-प्रनथ की रचना इन्द्रवाद्या छन्द में की गई है।

१४८०. सामयिक पाठ— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । झाकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $_{\overline{\chi}^{\prime\prime}}$ । दशा-जीर्गंक्षीरा । पूर्ण । भाषा—प्राकृत झौर संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या— ११४२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-भाद्रपद शुक्ता ४, सं० १६७६ ।

१४८१. प्रित संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । द्याकार-१०५ $''\times$ ४=0'। दशा-जीर्गक्षीरा। पूर्या । प्रस्थ संख्या-१३८१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४८२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । झाकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times ४" । दशा—ग्रतिजीर्राक्षीरा । पर्गा । ग्रन्थ संख्या—१३४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४८३. सामायिक पाठ — । देशी कागज । पत्र संख्या--१०। ग्राकार--११'' \times ५''। दशा-श्रन्छी । पूर्ण । भाषा--प्राकृत । लिपि--नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संख्या--२४३० । रचना-काल-- \times । सिपिकाल-- \times ।

१४८४. प्रति संख्या २। देशी कागज । पत्र संख्या—६। भ्राकार—१० $'' \times v_{\gamma}^{9}''$ । दशा—प्राचीन । पूर्यो । ग्रन्थ संख्या—२७५३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४८४. सामायिक पाठ — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — κ । ग्राकार — १२ $\frac{3}{7}$ % ६" । दशा — प्राचीन । पूर्ण । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । विषय — पूजा । ग्रन्थ संख्या — २०६० । रचनाकास — \times । सिपिकास — \times ।

- १४८६. प्रति संस्था २। वेशी कागज । पत्र संस्था–११ । स्थाकार–१०६ $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}$ । दशा–जीर्शंक्षीरा । पूर्ण । प्रन्थ संस्था–२०५४ । रचनाकास- \times । लिपिकास- \times ।
- १४८७. सामायिक पाठ सटिक \times । देशी कामज । पत्र संस्था-१ । आकार-१२" \times ६" दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत भीर हिन्दी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संस्था-२७७४ । रचनाकाल \times । लिपिकाल सं० १७३६ ।
- १४८८. प्रति संख्या २। देशी कागज । पत्र संख्या—६ । म्राकार-१० $'' \times 3$ ्रे'' । दशा-मच्छी । पूर्या । प्रत्य संख्या-२८१८ । रचनाकाल- \times । निपिकाल- \times ।
- १४८९. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-१४। आकार-१२ $\frac{9}{5}$ " \times ६"। दशा-ग्रच्छी । पूर्या । ग्रम्थ संख्या-२१२१ । रजनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४६०. सामियक पाठ (सटीक) \times । टीका \times । देशी कागज । पत्र संख्या ४२ । धाकार ११५ै $''\times$ \times १'' । दणा घच्छी । पूर्णे । भाषा प्राकृत, संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १७७६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १४६१. सामायिक पाठ तथा तीन चौजीस नाम— \times । देशी कागज। पत्र संख्या— ३। ग्राकार—११३ $"\times$ ५५"। दशा—जीर्ग्। पूर्ग्। भाषा—प्राकृत, संस्कृत ग्रौर हिन्दी। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—१६५२। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १४६२. सिद्धणक पूजा-शुमचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-४४ । भ्राकार-१० $\frac{1}{3}$ " \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा-जीर्ग् । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१५५४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४६३ सिद्धचक पूजा--भृतसागर सूरि। देशी कागज । पत्र संख्या-१५। भ्राकार-११ $'' \times \forall \bar{g}''$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रग्य संख्या-२०३८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४९४. सिद्धवक पूजा—पं० माशाषर । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । म्राकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—जीर्गंकीएा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय-पूजा । प्रत्थ संख्या—२३६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १४६४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-४ । ग्राकार-६ $\frac{3}{7}$ " ४ देश । दक्ता-भ्रष्ट्धी । पूर्या । प्रत्थ संस्था-२२४४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भंगितर कृष्या ६, सं० १८८६ ।
- **१४६६. सिद्धप्रिय स्तोत्र**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । भ्राकार—६ $\S''\times$ ४ \S'' । दशा—मच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१५६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - १४६७, सिद्ध प्रिम स्तीत्र (सटीक)--देवनन्दि । टीकाकार--सहस्त्रकीति । पत्र

संस्था-१४ । म्राकार- $=\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-धन्छी । पूर्णे । भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । यन्य संस्था-१६६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

- १४६८. सिद्ध सारस्वत मन्त्र गॉनत स्तोत्र—श्रनुभूति स्वरूपाधार्य । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । श्राकार—१०३ $"\times$ ५ $" । दशा—जीगं । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संस्था—१८२२ । रचनाकाल— <math>\times$ । लिपिकाल— \times ।
- १४६६. सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र संकराचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था १ । स्राकार—१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा— संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रम्थ संस्था—१६४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५००. सूर्योदय स्तोत्र—पं० कृष्ण ऋषि । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । ध्राकार—५ $\frac{9}{3}$ " \times ३ $\frac{3}{9}$ " । दशा—अीर्ग । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । प्रन्थ संख्या—१५३४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—बैशाख शुक्ला ५, सं० १८११ ।
- १५०१ भृं लला बद्ध श्री जिन चतुर्विशंति स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । ग्राकार ६ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा प्रच्छी । पूर्ण । भ प्राप्त पंस्कृत । लिपि नागरी । विषय स्तोत्र । ग्रास्थ संख्या १६५० । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १४०२ श्रावक प्रतिक्रमण— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१३ । भ्राकार—१० $\frac{1}{3}$ " \times ६ $\frac{1}{3}$ " । दशा—म्रच्छी । पूर्ण । भाषा—प्राकृत भीर संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१६०० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५०३. श्रीपाल स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार—११ $\frac{3}{9}$ " । दशा—त्रीर्गा । पूर्ण । भाषा—हिन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—१४७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५०४. श्रुत स्कम्ध पूजन भाषा—हेमधन्द्र ब्रह्मचारी । माषाकार—पं० विरधी चन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या—१५ । दशा—ध्रव्ह्मी । ग्राकार—१२३ \times ५ $\frac{2}{7}$ । पूर्ण । भाषा—संस्कृत व हिन्द्री । लिपि—नागरी । विषय—पूजा । ग्रन्थ संख्या—२६६६ । भाषाकाल—फाल्गुन कृष्णा ५, सोमवार, सं० १६०५ । लिपिकाल— \times ।
- १५०५. **क्षेत्रपाल पूजा** श्रान्तिदास । देशी कागज । पत्र सस्या-४ । ग्राकार--१०″×४- । दशा-भच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-पूजा । ग्रन्थ संस्या-२३६६ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल- ४ ।
- १५०६. चाताख्यक— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—६ $\frac{1}{9}$ " \times \times $\frac{1}{9}$ " । दशा—जीएं । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१४६० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रक्षित शुक्ला १३, सं० १७०६ ।

१५०७. **ज्ञानाकुंश** स्तोत्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । ग्राकार—६ $\frac{3}{6}$ " \times ५ $\frac{5}{6}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत एवं हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—स्तोत्र । ग्रन्थ संख्या—२४८६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष--ग्रन्थ के अन्त में पं० द्यानतराय भी कृत पार्श्वनाथ स्तीत्र है।

विषय-मन्त्रा एवं यन्त्रा

१५०८. भनादि मूल मन्त्र \times । देशी कागज । पत्र संख्या -१ । भाकार-६ $'' \times$ २ $_2'''$ । दशा-जीशों । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि -नागरी । विषय-मन्त्र शास्त्र । प्रत्य सख्या--१३२६ । रचनाकाल $- \times$ । लिपिकाल $- \times$ ।

१५०६. अर्घ काण्ड यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । आकार— २६ $"\times$ २६" दशा जीर्ग । पूर्ण । भाषा-प्राकृत व संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय यन्त्र । ग्रन्थ संख्या-२=११। रवनाकाल— \times ।

१५१० उच्चिष्ठस्य गरापित पद्धति —— \times । देशी कामज । पत्र संख्या— \times । धाकार— १०" \times ५ $\frac{3}{6}$ "। दणा ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या—१८८५ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल—उयेष्ठ शुक्ला ३ सं० १६२२ ।

१५११. ऋषि मण्डल यन्त्र — \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । भाकार—१२ \S'' × १२ \S'' । दशा—ग्रच्छी । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । रचनाकाल— \times ।

विशेष--वस्त्र पर यन्त्र के पुरे कोठे भरे हुए नहीं हैं।

१५१२. ऋषि मण्डल यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । श्वाकार—२१'' \times २१'' दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२०७ । रचना काल— \times ।

हिप्पणी--वस्त्र कट जाने से छिद्र हो गये हैं।

१५१३. ऋषि मण्डल व पार्श्वनाय चिन्तामिए बङ्गा यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । त्राकार-४३ $\frac{3}{4}$ " \times २१ $\frac{3}{4}$ " । दशा-जीएाँ क्षीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । प्रत्थ संख्या-२२२३ । रचनाकाल- \times ।

टिप्पणी-ऋषि मण्डल व चिन्तामिं दोनों यन्त्र एक ही कपड़े पर बने हुए हैं।

१५१४. कर्म वहन मण्डल यन्त्र — \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। धाकार— २२ $^{\prime\prime}$ × १५ $\frac{5}{2}^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्छी । अपूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१० । रचनाकाल—अध्वन शुक्ला १, मंगलवार, सं० १८४५, महाराष्ट्र नगर में रचना की गई ।

विशेष-कागज पर यन्त्र बनाकर कपड़े पर न फटने के लिए चिपका दिया गया है।

१४१४. कलश स्थापना मन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। ग्राकार—११ $"\times$ ५" । दशा—प्राचीन । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र सास्त्र । ग्रन्थ मंख्या—२७६२ । रचनाकास— \times । लिपिकाल— \times ।

१४१६. गराधर वस्त्य यन्त्र \times । वस्त्र पर । पत्र सरूबा-१। धाकार-१३ $\frac{5}{7}$ " \times १३ $\frac{5}{7}$ "। दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि नागरी । विषय -यन्त्र । प्रन्थ संख्या-२२०४। रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला १५, बृहस्पितवार सं० १७५६ ।

१५१७. गाया यन्त्र $-\times$ । देशी कागज। पत्र संख्या-३। श्राकार-१० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-प्राचीन। पूर्ण। भाषा-प्राकृत। लिपि-नागरी। विषय-यन्त्र। ग्रन्थ संख्या-२४२६। रचना काल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।

१४१८ गुर्**ण स्थान घरवा**— \times । तस्त्र पर । पत्र संस्था–१ । श्राकार–२४ $\frac{9}{8}$ " \times १५ $\frac{1}{8}$ " । दशा–सुन्दर । पूर्ण । भाषा–प्राकृत श्रीर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—सिद्धान्त । श्रम्थ संस्था–२२२५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विशेष--कपड़े पर गुरा स्थानों का पूर्ण विवरण दिया गया है।

१५१६. चिन्तामणि पार्श्वनाथ यन्त्र—> । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—१६ $^{''}$ । \times १६ $^{*''}$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१७ । रचनाकाल— \times ।

विशेष--कपड़े पर चिन्तामिए। पाश्वंनाथ का रगीन यन्त्र है।

१५२०. ज्वालामालिनी यन्त्र--् । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । भ्राकार-१७ $\frac{1}{5}''\times$ १७ $\frac{1}{5}''$ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ सख्या-२२१५ रचनाकाल- \times ।

१५२१. दशलकास धर्म यन्त्रः । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । ग्राकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ६ $\frac{1}{2}$ " । **दशा-सुन्दर** । पूर्म । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ संख्या-२२३० । रचना-काल-भाद्रपद शुक्ला ६, सं० १६१८ ।

विकोष--वस्त्र पर दशलक्षरा धर्म यन्त्र बना हुआ है।

१४२२. ध्यानावस्था विचार यन्त्र—> । देणी कागज । पत्र सख्या—? । म्राकार—२४हैं" \times २४हें" । दशा—सुन्दर । पूर्यों । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ संख्या —२२२६ । रचनाकाल— \times ।

टिप्पणी—इस यन्त्र में माला फेरते समय ध्यानावस्था के विचारों को बताया गया है। इसी यन्त्र में रत्न त्रय के तीन कोठे हैं, दूसरे चक्र में दशलक्षण धर्मों का वर्णन, तीसरे में चौबीस तीर्थं क्करों के तथा धन्तिम बलय में १०८ला ने है। उनमें कृत, कारित, धनुमोदना पूर्वक क्रोध, मान, माया घीर लोभ के स्थाग का ध्यानावस्था में विचार करने का वर्णन है।

१५२४ नवकार रास—जिनदास कावक । देशी कामज । पत्र संख्या+२ । घाकार— १-" \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—जीएं । पूर्णं । भाषा—हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय—मन्त्र । ग्रन्थ संस्था—१७५४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४२४- पर्मावती देवी यन्त्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । धाकार-२१ $\frac{2}{3}$ " \times १६ $^{\prime}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । बन्ध संख्या-२२३७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४२६. परमेष्ठी मन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—१९ $''\times$ ४ $^*_9''$ । दशा—श्रतिजीएां श्रीएा । पूर्या । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—मन्त्र । ग्रन्थ संख्या—१४६७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४२७. पंच परमेष्ठीमण्डल यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । भ्राकार— २१ $\frac{1}{2}$ " \times १५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । प्रत्य संख्या— २२०६ । रचनाकाल—प्रश्विन शुक्ला १, मंगलवार सं० १५४ ।

१४२८. भैरव पताका यन्त्र—ः । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । द्याकार—२५ $''\times$ २० ξ'' । दशा—जीर्ग्क्षीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत ग्रौर हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१६२६. भैरव पद्मावती कल्प--मिल्लिषेण सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-३६। साकार---११ $\frac{9}{2}''$, ५ $\frac{3}{2}''$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्रु । ग्रन्थ संख्या-२७५२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१५३०. वृहत्वोड्व कारण यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । प्राकार—२६३'' × २६३'' । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । यन्य संख्या—२२१४ । रचनाक्कल— \times ।

विशेष-- कपडे पर रंगीन चित्र है, जिसमें १६८ कोठे बने हुए हैं।

१५६१. बृहद् सिद्ध वक्त यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । भ्राकार—२५६'' × २५ ξ'' । दशा—प्राचीत । पूर्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२१६ । रचनाकाल— \times ।

१५३२. बिजयपताका मन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । श्वाकार-११ $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_{7}$ । दशा-भ्रम्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्र । ग्रन्थसंख्या-१५५६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१५३३. विजयपताका यन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । याकार-६" \times ५ $\frac{3}{4}$ "। दशा-जीएांक्षीण । पूर्ए । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । प्रत्य संख्या-२२३६ । रवनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१५३४ ज्ञान्ति चक्न मण्डल $-\times$ । वस्त्र पर । पत्र संख्या-१ । म्राकार-६ $\frac{3}{9}$ " \times - $\frac{3}{9}$ " दशा-सुन्दर । पूर्णं । भ्राषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-यन्त्र । म्रत्य संख्या-२२२७ । रचना-काल- \times । लिपिकास-ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १५०१ ।

१५३५. शिवार्चन चन्द्रिका—श्रीनिवास मद्द । देशी कागज । पत्र संख्या ४ । श्राकार-११" \times प्रवा-ग्रच्छी । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ संख्या-१८८७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१५३६. षट्कोस् यन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । द्याकार— $0'' \times 4\frac{3}{5}''$ । दशा—द्यक्छी । धपूर्स । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । प्रस्थ संख्या—२२३४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट- कपड़े पर षट्कीण का अपूर्ण यन्त्र बना हुआ है।

१५३७. सम्यक चरित्र यन्त्र— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—६" \times ५ $\frac{3}{7}$ " । दशा—ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४३०. सम्यग्वर्शन यन्त्र— \times । वस्त्र पर । पत्र संख्या—१ । श्राकार— $\chi^{9''}_{5} \times \chi^{9''}_{5}$ । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संस्था—२२३२ । रचना—काल— \times ।

१५३६. सम्यग्वर्शन यन्त्र — \times । वस्त्र गर । पत्र संख्या—१ । ध्राकार—५ $\frac{9}{9}$ " \times ५" । दशा—ध्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—यन्त्र । ग्रन्थ संख्या—२२३१ । रचनाकाल— \times ।

१५४०. स्वर्णाकर्षसा भैरव— × । देशी कागज । पत्र संख्या–३ । ग्राकार–१०″ × ४६ँ″ । दशा–ग्रन्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–मन्त्र शास्त्र । ग्रन्थ सख्या– १६०४ । रचनाकाल– × । लिपिकाल -ज्येष्ठ शुक्ला ३, सं० १६२३ ।

१४४१. - हमल वर्जू यन्त्र---imes। वस्त्र पर । पत्र संख्या--१ । ग्राकार--१५ $^{\prime\prime}$ imes१७ $^{\prime\prime}$ । दशा-प्राचीन । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि--नागरी । विषय-यन्त्र । ग्रन्थ सख्या--२२२२ । रचनाकाल-- imes ।

विरोष---यह यन्त्र स्वेताम्बराम्नायानुसार है। यन्त्र में सुनहरी काम है, वह भ्रति सुन्दर लगता है।

योग शास्त्र

- १४४२. योग झास्त्र—हेमसन्द्राचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—४८ । झाकार—१० $\frac{3}{7}$ \times ४ $^{\prime\prime}$ । दशा—मच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—योग । ग्रन्थ संख्या—१६७० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ना १४, सं० १६६०
- १४४३. **योगसार संग्रह**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या–३१ । **धा**कार–११ $''\times$ ५ $\frac{1}{5}''$ । दशा–जीर्गो । पूर्गो । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विषय–योग । ग्रम्थ संख्या–१५६३ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- १५४४. योगसाधनविधि (सटीक)— गोरलनाथ । टीकाकार—कपनाथ ज्योतिथी । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । आकार-११'' \times χ $\frac{3}{9}$ '' । दशा-प्रच्छी । पूर्ग । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-योग । ग्रन्थ संख्या-१७२२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४४५. योग ज्ञान— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । प्राकार—१०'' \times ४ $\frac{1}{9}''$ । दशा-जीर्ग् । पूर्ग् । भाषा—संख्या—१४२३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५४६ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । म्राकार-१० $\frac{1}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ " । दशा-जीर्र्श । पूर्य । प्रस्थ संख्या-२०५७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १५४७ हट प्रदीपिका झारमाराम योगीन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या–१५ । द्याकार–६ $\frac{3}{7}$ " \times ५ $\frac{5}{7}$ " । दशा–भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–न।गरी । विषय–योग । प्रन्थ सख्या–१६४० । । रचनाकाल– \times । लिपिकाल–भाद्रपद शुक्ला १, सं० १८८० ।
- १५४८. ज्ञान तरंगिराी-मुम्कु महारक ज्ञानभूषरा । देशी कागज । पत्र संस्था-२७ । ग्राकार-११६ ४४ है । देशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-१८१७ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-फाल्गुन शुक्ला १२, सं० १८१८ ।
- १४४६. प्रति संक्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२८ । घाकार—६ $\frac{3}{7}$ " ×४ $\frac{1}{7}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्या । ग्रन्थ संख्या—१२७४ । रचनाकाल—सं०१४६० । लिपिकाल—सं०१८४० ।
- १४५०. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । प्राकार-११ है"×४" । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-२४४१ । रचनाकाल-सं० १५६० । लिपिकाल-माथ गुक्ला १२, सं० १७६२
- १४४१. मानास्यंव--शुभचन्त्रवेव । देशी कागज । पत्र संख्या-१४३ । धाकार- ११६ n \times n n 1 दक्या-प्रतिजीखं क्षीस्य । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रस्य संख्या-

१२०५ । रचनाकाल—× । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ११, सोमवार, सं० १६०७ ।

विष्यती पन्ने परस्पर निपने हुए हैं। हा हु

१४४४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र सख्या-१३७नः विकास-१० हिंद्रिकार् १० हिंद्रिकार् । सन्याः संख्याः १७६२ । कार्यक्षानात्र । सन्याः संख्याः १७६२ । कार्यक्षानात्र । सन्याः संख्याः १७६२ । कार्यक्षानात्र । सन्याः स्थाः । १००० कि

ं १४४४, विश्वतिकां विद्याला का विश्वतिकां का विष्यतिकां का विश्वतिकां का विश्वतिकां का विश्वतिकां का विश्वतिकां

१४४६. ज्ञानार्गंव तत्व प्रकरण — \times । देशी कांगर्ज । पित्र संख्यां—६ ि धांकर्रि— ११ * \times १ *

शिक्षा गया है।

१००० क्षिप्र प्रमान निर्माण तर्व प्रकरण — × । देशी कागज । यत्र संख्या-४ । त्राकार-११६ ×४३ । दक्षा-त्रीणं भीषा । पूर्ण । भाषा-नेस्कृत । लिपि-नीगरी । प्रत्य संख्या-२१४२ । रचनाकाल-× । विधिकाल- × ।

ार्क पुरेश्यम् स्वानार्येव वश्वतिका पं० वश्ववस्त । देशी कागज । पत्र संख्या-२७१ । श्रक्ताहरू-१ वैद्वा ४ ५६% है वशाह्यहर्त सञ्ची । पूर्ण । भाषा-संस्कृत टीका हिन्दी में । लिपि-नागरी । यन्य संख्या-१८०० । रचनाकाल-माघ श्रुक्ता ४, सं० १८६६ । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ५, सं० १८६६ ।

्ष्य प्रमाणकार की विस्तृत सम्मन्ति है। १००० विस्तृत सम्मन्ति है।

१४६६ ज्ञानास्त्रंत्र वचनिका—सुमबन्ताचार्यः । टीकाकार—पं० वयचन्त्र आवकृतः । देशी काँगजः । ह पृत्रे सिस्या-२२ से १४० (अयम पत्र महिन्दे हे । अस्त्र स्वत्र सिस्या-२२ से १४० (अयम पत्र महिन्दे हे । अस्त्र सिस्या-२२ से अविधि हिन्दी । पूर्वः सिया-यावनी साम्यास्त्र सिम्यानिक स्वत्र सिम्यानिक स्वत्र सिम्यानिक सिम्

टीका रचनाकाल-माथ धुक्ला ५, बृहस्पतिबार, सं०१८१७। लिपिकाल-कार्तिक **धु**क्ला ४, सनिबार, सं०१८६३।

१४६०. जानाकुंश- × देशी कागज । पत्र संख्या-२। बाकार-१०" × ४३"। दशा-अव्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-तापरी । प्रत्य संख्या-२४०१। रचनाकाल- × । लिपिकाल-फोल्यून कृष्णा ७, सं० १८२० ।

व्याकरण शास्त्र

- १५६१. ग्रानिट कारिका— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—११ $''\times$ ४ $^{1}_{7}''$ । दशा—जीर्ग्शशीण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । ग्रन्थ संख्या—१४८७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १४६२ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । भाकार—१०" \times ४" । दशा—ग्रतिजीर्गं शीरा । पूर्णे । ग्रन्थ संख्या—१४८८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १४६३. प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या—३। प्राकार—५ $\frac{1}{9}$ " \times ४"। दशा—जीगुंकीग्ण । पूर्णा । प्रस्थ संख्या—१४५६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । श्राकार-१० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा-जीर्गांक्षीरा । पूर्गा । प्रन्थ संख्या-२१५० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४६४. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । ग्राकार-१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{5}{5}$ " । दशा-जीर्ग्यक्षीम् । पूर्णं । ग्रन्थ संख्या-२६२८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ग्रश्चिन शुक्ला १३, सं० १७१३ ।
- **१५६६. प्रति संस्था ६**। देशी कागज । पत्र संस्था–१। आकार-११" \times ४ $\sqrt[3]{}$ "। दशा-प्राचीन । पूर्गा । ग्रन्थ संस्था–२६३३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १४६७. म्निट् कारिका (सार्थ) \times । देशी कागजः पत्र संख्या २ । म्नाकार ११ $'' \times$ ५'' । दशा प्राचीन । पूर्णं । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रन्थ संख्या २७६७ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १४६ =. ग्रनिट् सेट कारकघ्टी— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—२। ग्राकार—१० $\frac{9}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा—प्राचीन। पूर्ण। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२००६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५६६ मध्य**य तथा उपसर्गार्थ**- \times । देशी कागज । पत्र संस्या-३ । ग्राकार-११ $\frac{2}{3}$ " \times ५ $\frac{2}{3}$ " । दशा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संस्था-१६६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १५७०. भ्रष्यम दीपिका— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-४ । भ्राकार-१२ $^{\prime\prime}\times$ ६ $^{\prime\prime}$ । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा -सस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रम्थ संख्या-२३०६ । रचना-काल- \times । लिपिकाल -सं०१८२३ ।
- १५७१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—द । झाकार—६ $\S'' \times 8 \S''$ । दक्षा—प्राचीन । पूर्ण । प्रत्य संख्या—२०६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १०, सं० १८२१ ।

१५७२. संस्था वीपिका वृत्ति — \times । देशी कागज । पत्र संस्था — \times । भाकार – १० $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा – प्राचीन । पूर्ण । माथा – संस्कृत । लिपि – नागरी । सन्य संस्था – २००५ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१५७४. कासन्त्र कपमाला—सिव वर्मा। देशी कागञ्ज। पत्र संस्था—१०५। क्याकार—१२ $''\times$ ५''। दशा—जीगोंशीण । पूर्यं। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। श्रन्थ संस्था—२६८२। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१५७५. कातन्त्र कपमाला वृत्ति—भावसेन । देशी कागज । पत्र संस्था-६८ । माकार-१० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ '' । दशा-जीर्ग्य क्षीरा । पूर्य । भाषा—संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२३७८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४७६. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१२८ । ध्राकार-११" \times ४ \S " । दशा-जीर्गक्षीण । पूर्ग । ग्रन्थ संख्या-२३७२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१४७६. कारक विवरस्य— \times । देशी कागज। पत्र संख्या—४। धाकार—६ $\frac{1}{6}$ " \times ४"। दशा—जीर्गा। पूर्णा। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रम्थ संख्या—१७४०। रश्चनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा ४, सं०१८७३।

१५६०. किया कलाप—विश्वयानन्द । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । ध्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $\frac{1}{2}^{\prime\prime}$ । दशा—जीगुं क्षीण । पूर्यु । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ सस्या—१४१५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १७६४ ।

१४८१. **बातु पाठ**— हवंकीर्ति सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । द्याकार— ११ $"\times$ ४" । दशा—सञ्जी । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७५० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४६२. **धातु पाठ—हेर्मांतह सन्देलदाल । दे**सी कागज । पत्र संख्या—१३ । प्राकार— १० $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{3}{7}^{\prime\prime}$ । दक्षा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२०३१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

विसेत्र--कर्ता ने अपना पूर्ण परिचय विया है। यह रचना सारस्वत मतानुसार है।

१५५३. **वातु क्यावली**— \times । देशी कानज । पत्र संख्या-२४। ब्राक्तर-१२ $\frac{3}{7}$ \times ५ $\frac{3}{7}$ । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१८०८ । रक्ता-काल- \times । लिपिकाल- \times ।

१५८४. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—५४ । प्राकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—धन्छी । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संस्था—११८७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४८१. यद संहिता--- \times । देशी कागज। पत्र संख्या-१०। ग्राकार-१० $\frac{2}{5}$ " \times \times "। दशा-जीर्ग्/जीण। पूर्ण् । भाषा-संस्कृत भौर हिन्दी। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संख्या-१८३६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट-परमहंस परिवाजक अनुभूति स्वरूपाचार्य कृत सारस्यत प्रक्रिया के पद्यों का सरव हिन्दी में अनुवाद है।

१५८६. पाणिनीय सूत्र परिमाणा—स्याडि । देशी कागज । पत्र संख्या—३ । श्राकार—१० $'' \times \mathbf{v}_{\mathbf{v}}^{\mathbf{v}}''$ । दशा -प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२५३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक कृष्णा १, सं० १८४४ ।

१४८७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । प्राकार—६ $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—ध्रक्की । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२३१२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल \times ।

१४८८. पंच सन्धि शस्त्र \times । देशी कागज। पत्र संख्या—७। स्राकार—६ $''\times$ ४''। दशा—श्रन्थी। पूर्णं। माषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। ग्रन्थ संख्या—२११६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१५८. प्रक्रिया कौसुबी—रामचन्द्राश्रम । देशी कागज । पत्र संस्था-१७२ । भाकार-१२६ $^{\circ}$ " \times ४ $^{\circ}$ " । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२६६७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

मोड--हितीया वृत्ति है।

१५६०. प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राश्रम । देशी कागज । पत्र संख्या—५१ । ग्राकार—१२ $\frac{2}{5}$ " । दशा—ग्र**च्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृ**त । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्रियन शुक्ला १, सं०१६५४ ।

मोड-तृतीया वृत्ति है।

१५६१ प्राकृत लक्षरा—पं वण्डः देशी कागजः। पत्र संख्या—६। श्राकार— १० $\frac{3}{7}$ \times ५ $^{\prime\prime}$ । दशा—जीर्गुंक्षीरा। पूर्णः। भाषा—प्राकृत और संस्कृतः। लिपि—नागरीः। ग्रन्थ संख्या—१३३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१४६२ प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१४ । भ्राकार-११'' \times x ξ'' । दशा-सुन्दर । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-१४६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकास- \times ।

१५६३. प्राकृत संकास विधान-कवि सण्ड । देशी कागज । पत्र संख्या-२०।

माकार-१२ $\frac{1}{2}$ " । दशा-जीर्संकीरा । पूर्णः भाषा-प्राकृत, संस्कृत, समभ्रांस, पैशाची, मागवी भौर सौरदोनी । लिपि-नागरी । निषय-व्याकरसा । प्रन्त संस्था-१०४३ । रचना-काल- \times । लिपिकास-संगतिर सुक्ता १२, सं० १७६२ ।

१५६४. लघु सारस्वत— कल्यास्य सरस्वती । देशी कागज । पत्र संस्था-२२ । धाकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-जीस्तं । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-ध्याकरस्य । सन्ध संस्था-१६६० । रचनाकाल- $<math>\times$ । लिपिकाल-पौष कृष्णा २, सं० १८०७ ।

१५६५. लघु सिद्धान्स कौमुबी — पास्तिकी ऋषिराख । देशी कागज । पत्र संस्था— ६२ । ध्राकार $-१o'' \times 8\frac{1}{4}$ । दशा—ध्रतिजीर्ग्य । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय— व्याकरसा । ग्रन्थ संस्था—११६७ । रचनाकाल— \times ।

१५६६ वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक— दामोवर । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । ध्राकार-१०" \times ४ \S " । दक्षा- ध्रव्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रम्थ संख्या-२३१४ । रचनाकाल-स० १६०७ । लिपिकाल- \times ।

नोट---ग्रन्थाग्रन्थ संख्या ६३२ है।

१५६७. वाक्य प्रकाशामिषस्य टीका— \times । देशी कागण । पत्र संस्था—६ । धाकार—१० $''\times$ ४ $^{5}''$ । दशा—ध्रतिजीर्गक्षीण । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१४७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१५६ =. शस्य बोध – \times । देशी कागज । पत्र सस्या – ३ । श्राकार – १०५ 4 \times ४ 3 । दशा – श्रम्ब । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – श्याकरण । श्रम्थ संस्था – १७६० । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

१५६६. शब्द सेव प्रकाश--सहेश्वर कवि । देशी कागज । पत्र संख्या-१७ श्राकार-१२" \times ५ $\frac{1}{5}$ । दशा-जीर्ग् । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-स्थाकरगा । ग्रन्थ संख्या-१६८५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१६००. शब्द रूपावली— \times । देशी कागज । पत्र संख्या-११ । ग्राकार-१२ $^{\prime\prime}\times$ ५ $\frac{3}{9}^{\prime\prime}$ । दणा-ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-मागरी । ग्रन्थ संख्या-१८०७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१६०१. प्रति संख्या—२। देशी कागज। पत्र संख्या—२०। भ्राकार-१२" \times ५ $\frac{1}{2}$ "। दशा—सुन्दर। पूर्गे। प्रम्थ संख्या—१२७४। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा १२ सं० १८८७।

१६०२. कृष्ट रूपावसी— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । आकार-१८ $\frac{1}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ । दशा—जीएं । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२०१७ । रचना-काल— \times । लिपिकाल— \times ।

१६०३. शस्त्र रूपावली (सकारान्त पुलिंग शस्त्र) – \times । देशी कागज । पत्र संख्या – \times । स्वाकार – - १० $\frac{9}{7} \times \mathbb{V}_{7}^{\frac{1}{7}}$ । दशा – सन्द्री । पूर्तो । भाषा – संस्कृत । स्विप – नागरी । प्रत्य संख्या –

२०१७ । रचनाकाल- 🗡 । लिपिकाल- 🔀 ।

- १६०४. शब्द रूपावली— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । भाकार—६३ \times ४५ । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२११६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध शुक्ला ६, सं० १८६३ ।
- १६०५. शब्द समुख्य--प्रमरचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या-६ । ध्राकार- १० $\frac{\pi}{4} \times \sqrt{\frac{3}{8}}$ । दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३३२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६०६. शब्द साथन \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१० । श्राकार— $=\frac{3}{9}"\times 8"$ दशा—ग्रच्छी । पूर्गा । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरगा । ग्रन्थ संख्या—१८५१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माघ शुक्ला ६, सं० १८८३ ।
- **१६०७. शब्बानुशासन वृत्ति —हेमचन्द्राचार्य** । देशी कागज । पत्र सख्या–५२। श्राकार–११३ 2 2 2 2 3 2 2 3 3 3 4 5 5 6 6 6 6 6 6 7 7 7 7 8 8 7 8
- **१६०**द. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—७ । स्राकार–१०३ $'\times$ ४५'' । दशा—ग्रतिजीर्गा । पूर्गा । ग्रन्थ संख्या—१६७१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट - चतुर्थ ग्रध्याय पर्यन्त है।

- **१६०६. षट् कारक प्रक्रिया**—ः । देशी कागज । पत्र सस्या—६ । भ्राकार—१० \times ४ $\frac{2}{9}$ । दशा— प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—२१२७ । रचना-काल— \times । लिपिकाल—कार्तिक मुक्जा, ७ स० १०२१ ।
- **१६१०**. **सन्धि ग्रथं** पं**० योगक** । देशी कागज । पत्र संख्या—२० । ग्राकार—६" \times ४" । दशा—ग्रच्छी । पूर्णं । भाषा—संस्कृत व हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रन्य संख्या—२१४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—पौष शुक्ता १, मं० १८१६ ।
- १६११. सप्त सूत्र-्र। देशी कागज । पत्र संख्या-२ । ग्राकार-७६ $^{\prime\prime}$ \times 8 $^{\prime\prime}$ । दशा-1 ग्रन्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । सिपि-नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१४५० । रचन-काल- × । निपिकाल- × ।
- १६१२ः समास चक्र $-\times$ । देशी कागज । पत्र संख्या-द श्राकार $-६ \frac{1}{9}" \times x \frac{1}{9}"$ । दशा-ध्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-न।गरी । ग्रन्थ संख्या-१६८५ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-सं० १६१७ ।
- १६१३. समास प्रयोग पठल-- वररूचि । । देशी कागज । पत्र संख्या-३ । ध्राकार- ११ $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-- ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा-- संस्कृत । लिपि-- नागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संस्था-१६४५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६१४. समास प्रयोग पटल-पं० वररूचि । देशी कागज । पत्र संख्या-२ । आकार-१० $\frac{1}{2}$ > ४ $\frac{3}{6}$ "। देशा-जीर्याकीरा । पूर्य । भागा-संस्कृत । लिपि नागरी । ग्रम्थ संख्या-

२६४३। रचनाकाल $- \times 1$ लिपिकाल $- \times 1$

- १६१४. सर्वे**शत् रूपावली** \times । देशी कागज । पत्र संस्था-३० । ग्राकार-११ $\frac{3}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा-ग्राक्टी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि नागरी । विषय-स्थाकरण । भ्रत्थ संस्था-१२४२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रक्षित शुक्ला १४, सं० १८५५ ।
- १६१६. सारस्वत दीपिका-श्रनुभूति स्वरूपाचार्य । दीकाकार-मेघरस्व । देशी कागव । पत्र संख्या-३०६ । श्राकार-१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_2$ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीखंक्षीण । पूर्ण । श्रावा-संस्कृत । विपिनागरी । विषय-व्याकरण । ग्रन्थ संख्या-१०६५ । रचनाकाल- \times । टीकाकाल-विक्रम सं०१५३६ । लिपिकाल- \times ।
- १६१७. सारस्वत बातु पाठ— हर्षकीर्ति सूरी । देशी कागज । पत्र सख्या–२० । धाकार–१० $\S'' \times \S^3_{g''}$ । दशा–जीर्ग्य । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । सिपि–नागरी । विषय–व्याकरस्य । सन्थ संख्या–१३६६ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल–फाल्गुन शुक्ला ३, स० १७४६ ।
- १६१८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । आकार-१० \times ४ $\frac{1}{9}$ । दशा-जीगुंक्षीण । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-२१०४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ कृष्णा ८, शुक्रवार स० १६४८ ।
 - नोट-- ग्रन्थ की नागपुर के तपागच्छ मे रचना हुई लिखा है।
- १६१६. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । स्नाकार-६५ \times ४६ । दशा-ग्रच्छी । पूर्यो । ग्रन्थ सख्या-२१०० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६२०. सारस्वत प्रक्तिया पाठ परमहंस परिवाजक अनुसूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था-३ । आकार- १० $\frac{1}{9}$ \times ४ $\frac{1}{9}$ । दशा-श्रव्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-क्याकरण । ग्रन्थ संस्था-१४६३ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६२१. सारस्वत ऋजूप्रक्रिया परमहंस परिकाशक श्रृभूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था ६ । श्राकार १०५ 9 $'' imes imes ^{9}$ '' । दशा श्रातजी गौकी गा । पूर्ण । श्राषा संस्कृत । लिपि नागरी । श्रन्थ सल्या १६१६ । रचनाकाल imes । लिपि नागरी । श्रन्थ सल्या १६१६ । रचनाकाल imes । लिपि नागरी ।
- १६२२. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-१० । ग्राकार- $\mathbf{e}'' \times \mathbf{e}''$ । दशा-जीर्गंशीरा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ मंस्था-१६०८ । रचनाकाल- \mathbf{x} । लिपिकाल-माथ कृष्णा ८, सं० १७०३ ।
- १६२३. सारस्वत प्रक्रिया—परिवाजक श्रनुपृति स्वरूपावार्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१०३ । श्राकार—१० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{5}{7}$ " । दशा—श्रन्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि— नागरी । ग्रंथ संख्या—२६८८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्णा ७, सं० १६४२ ।
- **१६२४ः प्रति संस्था २। देशी कागज। पत्र संस्था**र-७६। आकार-११हुँ"×४हुँ"। दणा-जीग्रंक्षीण। पूर्ण। ग्रन्थ संस्था-२४२५। रचनाकास- ×। निपिकास- ×।

- १६२४. प्रति संस्था १। देशी कागज। पत्र संस्था-४६। स्राकार १०"४४"। दशा-जीर्गा। पूर्णा । ग्रन्थ संस्था-१६७३। रचनाकाल-फाल्गुन शुक्ला १, बृहस्पतिबार सं०१७६०।
- १६२६. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या-१०२ । ग्राकार-१० $^{\prime\prime}$ ×४ $^{\prime\prime}$ । दशा-त्रीर्गं । पूर्ग् । ग्रन्थ संख्या- १५८८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-प्रापाढ़ कृष्णा १४, सं० १७८६ ।
- १६२७. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२६ । स्नाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्गांत्रीसा । पूर्य । प्रत्थ संख्या-११४६ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १६२८. प्रति संस्था ६। देशी कागज । पत्र संस्था-८६ । श्राकार-११ $\frac{1}{9}$ " \times \times "। दशा-त्रीर्गंक्षीण । पूर्ण । ग्रम्थ संस्था-१००६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- कर्तिक शुक्ला ३, बृहस्पतिवार सं० १५७६ ।
- **१६२**९. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । श्राकार-१०" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्गा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११४३ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १६३०. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या—५६ । भ्राकार——१०६ 1 " \times ४ 1 " । दशा—जीर्गंक्षीरा । पूर्ण । प्रन्थ संख्या—१०६६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- **१६३१. प्रति संख्या ६। देशी** कागज । पत्र संख्या—६१। ग्राकार—११ $\frac{9}{9}$ " \times \times "। दशा—जीखं क्षीमा । पूर्यं । ग्रन्थ संख्या—१२६०। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ शुक्ना ११, शुक्रवार सं० १८०४।
- **१६३२. प्रति संस्था १०। दे**शी कागज । पत्र संस्था-४ । श्राकार-१०३ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ 1 दशा-जीर्श । पूर्श । ग्रन्थ संस्था-१३३० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१६३३. प्रति संख्या ११**। देशो कागज । पत्र संख्या -४३। ग्राकार--१० $^{\prime\prime}$ ×५ $^{\prime\prime}$ । दशा--ग्रातिजीर्शिशीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या--१०६७ । रचनाकाल-- × । लिपिकाल-- × ।
- नोड ग्रनेक पत्र जीर्गंक्षीरण श्रवस्था में हैं। ग्रनुभूति स्वरूपाचार्यं का दूसरा नाम नरेन्द्रपूरीचररण है।
- १६३४. प्रति संस्था १२ । देशी कागज । पत्र संस्था = । आकार $\{?^{\frac{n}{2}} \times x^{\frac{n}{2}} \cdot 1\}$ दशा प्रत्ये । पूर्यो । ग्रन्थ संस्था ?
- १६३४. प्रति संस्था १३। । देणी कागज । पत्र संस्था-४३ । धाकार-१० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{1}{7}$ "। दशा-जीएंशीएा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-११२६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६३६. प्रति संस्था १४ । टीकाकार—श्री निश्र वासद । देशी कागज । पत्र संस्था—८३ । प्राकार—१०३ * * \times १ * * * । दशा—श्रीर्णंकीण । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—११८० । रसनाकाल— \times । लिपिकाल—वैत्र कृष्णा ५, रिवदार, सं० १६१५ ।

मोरं--टीका का नाम बालकोचिनी टीका है।

१६३७. श्रीत संस्था १४ । देशी कागज । यत्र संस्थां+४२ । साकारं- १० "४४० " र दक्षा-जीखं । पूर्या । यून्य संस्था-१८७१ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल-पीय कृष्णा ८, सीमधार सं० १८४४ ।

१६३६. प्रति संख्या १६। देशी कागज । पत्र संख्या-४७ । प्राकार-१० $^{\prime\prime}$ \times ४ $^{\prime\prime}_{2}$ $^{\prime\prime}$ । देशा-प्राच्छी । प्रपूर्य । प्रत्य संख्या-११५३ । रचनाकाल- \times । शिपिकाल- \times ।

नोट-धन्तिम पत्र नहीं है।

१६३६. प्रति संस्था १७। देशी कागज । पत्र संस्था-१३। भाकार-११ \times "४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-प्रतिजीर्गक्षीम् । पूर्ण । प्रत्य संस्था-१३६३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं०१४४६।

१६४०. प्रति संख्या १६ । देशी कामजा पत्र संख्या-१०४ । घ्यकार-११ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्णंकीरम । पूर्णं । प्रत्य संख्या-२४५० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माथ शुक्सा ७, सं० १६५७ ।

१६४२. प्रति संख्या २०। देशी कागज। पत्र संख्या-- । आकार-११" x ४३"। दशा-जीर्गाकीण। पूर्गा। ग्रन्थ संख्या-२८०६। रचनाकाल- x। लिपिकाल- x।

विशेष- केवल विसगं सन्धि है।

१६४३. प्रति संस्था २१ । देशी कागज । पत्र संस्था-६ । धाकार-६ $\frac{9}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा-जीर्ग्राकीगा । पूर्ग । बन्य संस्था-२६८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१६४४. सारस्वत ऋजू प्रक्रिया—अनुपूति स्वरूपाचार्य । देशी कागज । पत्र संख्या— ६ । प्राकार-११ $\frac{5}{7}$ ×४ $\frac{5}{7}$ । दशा-जीर्संक्षीसा । पूर्ण । पाषा—संस्कृत भीर हिन्दी । लिपि— नागरी । ग्रन्थ संख्या- २०७६ । रचनाकान— × । लिपिकाल— × ।

विशेष-पं० उघा ने नागौर में लिपि किया।

१६४५. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था-द ! ग्राकार-६" \times ४ $\frac{1}{2}$ " । देशा-प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२१३७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नौड-संज्ञा प्रकरण प्रयंन्त ही है।

१६४६. प्रति संस्था ३। देशी कागज। पत्र संख्या-१०। धाकार-१०" \times ४२ै। दशा-प्राचीन। पूर्णै। प्रन्य संख्या-२०२६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाष कृष्णा २, संगद्धवार, सं० १७०३।

मोद---ग्रन्थ संज्ञा पर्यम्त ही है।

१६४७. प्रति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था-७। आकार-१०"४-ई"। दशा-अच्छी । पूर्ण प्रत्य संस्था-२३३०। रचनांकाल- ×। लिमिकाल- ×।

- १६४८ सारस्यत व्याकरण (सटीक)— समुभूति स्वक्ष्माचार्य। टीक्रा—वर्मदेव। देशी कागवा पत्र संख्या—६४ । झाकार—११३ "×४"। दशा—जीर्ण । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—
 नागरी 1 प्रत्य संख्या—१०४८ । रचनाकाल— ×। लिपिकाल—भाद्रपद शुक्ला १, बृहस्पतिवार,
 सं० १६०३।
- १६४६. सारस्वत शस्त्राधिकार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६१ । आकार— ६३ $"\times$ ३ $rac{3}{6}"$ । दशा—जीर्गां । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—१५६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—चैत्र कृष्णा ६, सं० १६८६ ।
- १६५०. सिद्धान्स कीमुदी (सूत्र मात्र) \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१७ । द्याकार—११ $"\times$ ५"। दशा—द्यक्छी । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्याकरण । प्रस्थं संख्या—१३०५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६५१. सिद्धान्त चन्द्रिका (केवल विसर्ग सन्धि)— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । धाकार—११ $\frac{2}{5}$ " \times ५ $\frac{2}{5}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२२८६ । रचनाकास— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६५२. सिद्धान्त चित्रका सटीक-उद्भट्ट । देशी कागज । पत्र संस्था-१ से १० । स्थाकार-१२" \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा-श्रच्छी । प्रपूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था-२६५० । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- **१६४३. सिद्धान्स चन्द्रिका मूल रामचन्द्राश्रम** । देशी कागज । पत्र संस्था–२४ । **धाकार–१२५ै**" \times ४६ैं" । दशा–जीर्ग्ग । पूर्ण । भाषः–सस्कृत । लिपि–नागरी । ग्रन्थ सस्या–१८४६ रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।
- **१६५४ मिति संख्या २। दे**शी कागज । पत्र संख्या-४८ । भाकार-८ $\frac{3}{9}$ "×६ $\frac{3}{9}$ " । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भ्रन्थ संख्या-१८७४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-सं० १६६० ।
- १६४४, प्रति संख्या ३। देशी कागज । पत्र संख्या-४१। झाकार- ५ $\frac{3}{7}$ /×६ $\frac{1}{7}$ / । दशा-भच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१८७८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-संगसिर शुक्ला ४, सोमबार सं० १६०६ ।
- **१६५६. प्रति संख्या ४। देशी** कागज । पत्र संख्या-२४ । धाकार-६ $\frac{3}{9}$ "×६ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीर्गा । प्रत्य संख्या-१७३४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

नोह-प्रनथ में केवल स्वर सन्धि प्रकरण है।

- १६४७. प्रति संख्या—५. देशी कागज । पत्र संख्या—२५ । झाकार—१०३ $^{"}\times$ ६ $^{"}$ । दशा—सुस्दर । पूर्या । ग्रन्थ संख्या—११३६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

मोड-प्रादिक प्रकरशा से ग्रन्थ प्रारम्भ किया गया है।

१६४६. सिद्धान्त चन्त्रिका-रामचन्त्राखार्थ। देशी कागज। पत्र संख्या-१३०।

क्षाकार-१०" \times ४ $\frac{2}{5}$ । दशा-जच्छी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । मिपि-नागरी । प्रस्थ संस्था-२८०४ । रचनाकाल- \times । विपिकाल-प्रश्विन शुक्ता ११, सं० १८०६ ।

- १६६०, प्रति संस्था २ । देशी कागज । पर्व संस्था-१२१ । आकार-१०"×४०" । दशा-प्राचीन । पूर्ण । सन्थ संस्था-२७४० । रचनाकाल- × । लिपिकाल-पीप खुक्ला १३, खुकवार सं० १७८४ ।
- १६६१ सिद्धान्स चित्रका वृत्ति—रामचन्त्राध्यमकार्यः। वृत्तिकार-सदानम्बः। वेशीः कागवः। पत्र संख्या-८०। धाकार-६ है"×४ है"। दशा-छच्छीः। पूर्णः। भाषाः संस्कृतः। निपि-नागरीः। ग्रन्थ संख्या-१०७१। रचनाकाल-- ×। विपिकास-- ×।
- १६६२. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१३२ । आकार—१० $^{\prime\prime}$ \times * $^{\ast\prime}$ । दशा—सुन्दर । पृर्युं । ग्रन्थ संख्या—१०५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६६३. प्रति संस्था ४। देशी कागज . पत्र संस्था-२४२। प्राकार-११३ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ $^{\circ}$ । दशा-प्रस्क्षी । पूर्ण । यन्य संस्था-१०६२। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भावण बुदी ८, सं०१८६६।
- १६६४. प्रति संख्या ४। देशी कागज । पत्र संख्या→१३३ । काकार-१००० ४४० । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-११२१ । रचनाकाल- × ।
- १६६५. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था—६५ । श्वाकार—१० $^{\prime\prime}$ \times ४ $\frac{2}{7}^{\prime\prime}$ । दशा—घच्छी । पूर्ण । प्रत्य संस्था—११२० । रचनाकास— \times । लिपिकाल—पौष श्रुक्ला १४, मंगलवार, सं० १८४० ।
- १६६६. प्रति संस्था ६। देशी कागज । पत्र संस्था-१०३ । धाकार-११ \times ५३ । दशा-सुन्दर । पूर्गा । प्रन्थ संस्था-२३१८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल \times ।
- १६६७. प्रति संस्था ७ । देशी कागज । पत्र संस्था-११३ । प्राकार-११'' \times χ ्रे'' । दशा-सुन्दर । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२३२७ । रचनाकाल्- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६६ संस्कृत मंजरी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । आकार—१०" \times ४ $\frac{1}{2}$ " । देशी-अव्ह्यी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२१० । रचनाकाज \times । लिपिकाल—च्येष्ठ शुक्ला ६, सोमवार, सं० १८१६ ।

व्रत विधान साहिरय

- १६६६. खणुत्रत रस्मप्रदीप—साहल सुवलरक्षण । देशी कागज । पत्र संख्या— १२४ । स्नाकार—११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{6}$ " । दशा—प्रतिजीर्गंक्षीण । पूर्ण । भाषा—प्रपन्न । लिपि—नागरी । विषय—त्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१४११ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—भाद्रपद कृष्णा ६, शनिवार, सं० १४६६ ।
- **१६७०. धनन्त विधान कथा** \times । देशी कागज । पत्र संख्या—२ श्राकार—१०६ * " । दशा—जीर्ग । पूर्ण । भाषा—भपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय—न्नत विधान । ग्रन्थ संख्या—१४३२ । रचनाकाल— \times ।
- १६७१. शब्दक सटीक-शुमचन्त्राचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था-१८ । श्राकार-१०३ $"\times$ ४ $^2_7"$ । दशा-श्रतिजीर्गक्षीरा । पूर्ण । भाषा-प्राकृत श्रीर संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान । ग्रन्थ संस्था-२४०४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोट--प्रन्थ के दीमक लगजाने से प्रक्षरों को क्षति हुई है।

- १६७२. श्रक्षय निधि व्रत विधान— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—४ । ध्राकार—१० $\frac{3}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—ग्रन्थी । पूर्ण । भ्राषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२६६३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६७३. एकली कररण विधान \times । देशी कागज । पत्र संख्या २ । ध्राकार ११ $\frac{1}{3}$ " \times ५ $\frac{1}{3}$ " । दशा शब्द्धी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय विधि विधान । शब्द संख्या २५०६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।
- १६७४. कल्यासा पंचका रूपसा विधान— \times । देशी कागज। पत्र संख्या-२१। माकार-११ $''\times$ ४'''। दशा-जीर्सं। पूर्सं। भाषा-संस्कृत। लिपि-नागरी। विधय-व्रत विधान। प्रम्य संख्या-११९१। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १६७४. **कल्याण माला**— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— \times । श्राकार— ε_{γ}^{0} \times \times \times । दक्षा—बीर्ग्क्षीरा। पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधान । ग्रन्थ संख्या—१४४३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— सं० १६६२ ।
- १६७६. जलसात्रा पूजा विधान—देशी कागज। पत्र संख्या—२ । प्राकार— १९ $^{\prime\prime}$ \times $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा—प्रच्छी। पूर्णु। भाषा—संस्कृत। लिपि—नागरी। विषय—पूजा विधान। धन्य संख्या—१८५६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

- १६७७. शिवस्ता कल्प र्व ० झाराधर । देही कामजू । यह संस्था-७२ । घाकार— ११"४४हे" । दसा-मण्डी । पूर्ण । काया-संस्कृत । लिपि-नागरी । विवान-विधि विधान । ग्रम्य संस्था—२५१४ । रचनाकाल-नास्थिन सुनुसः १५, सं० १२८५ । लिपिकाल-वैशास सुनुसः ३ सं० १५०३ ।
- १६७८. वसस्याण वतोकायन— \times । देशी कागज । पत्र संस्था-१८ । प्राकार—१० $\frac{3}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा—जीर्संकीरस । पूर्त । भाषा—संस्कृत । सिर्मि—नागरी । विषय-जित विवास । भ्रत्य संस्था—२१४४ । रचनाकारा— \times । सिषिकास सं० १७२१ ।
- १६७६. द्वादश क्रत कथा— देशी कागज । पत्र संख्या—२ । आकार—६३ * \times ४ * * । दक्का—अच्छी । पूर्ण । आवा—संस्कृत । विपि—नागरी । विषय—क्रत विधान । श्रम्थ संख्या—१३२७ । । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६८०. नन्दिस्य कथा $-\times$ । देशी कामस । पत्र संख्या-३। धाकार-११ $''\times$ ४ $\frac{3}{6}''$ । दशा-जीर्गुक्षीण । पूर्यो । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । विषय-कृत सन्धा । भन्ध संख्या-१६८४ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १६८१. नम्बोश्यर पंक्ति विधान—शिव वर्मा । देशी कागज । पत्र संख्या—२ । धाकार—११ $\frac{1}{6}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—विधि विधान । ग्रन्थ संख्या—२०११ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६८२- प्रतिमा भंग शान्ति विधि— \times । देशी कागजः। पत्र संख्या—१। श्राकार— $\varepsilon'' \times s''$ । दशा—प्रच्छी । पूर्णं। भाषा—हिन्दी । सिषि—नागरी। विध्य-शान्ति विधि। प्रन्य संख्या—१४४४। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६८३ पंच मास चतुर्वशी वतीसायन—सुरैन्त्रकीर्ति । वेशी कागज । पत्र संख्या—२३ । भाकार—१० $\frac{9}{5}$ " \times ५" । दशा—जीर्गं । पूर्णं । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी विश्य—क्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—१२२७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६८४. पंचमी वत पूजा विधान हर्षकीति । देशी कागज । पत्र संस्था १ । भाकार १० $^{\prime\prime}$ \times 1 , देशा धच्छी । पूर्ण । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय प्रत विधान । प्रत्थ संस्था १८४१ । रचनाकाल \times । लिपिकाल भाष्ठ कृष्णा ४, रविवार, सं० १६१३ ।
- १६८४. पंचासत किया वतीस्वायन— \times । देशी कागज । पत्र संस्था— $\mathbb P$ । प्राकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $\frac{1}{2}^{\prime\prime}$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—प्रत विधान । प्रत्य संस्था—२४० $\mathbb P$ । रचनाकार्य— \times । जिपिकास— \times ।
- १६=६. बारह सते टिप्पणी × । देशी कागज । पत्र संख्यां— = । श्राकार— ६"×४ऐ" । दशा—प्राचीन । पूर्या । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विचान । ग्रन्थ संख्या—२०६१ । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१६=७. राई प्रकेरण विकि $--\times$ । देशी कार्गज । पत्र संख्या – ३ । आकार – ६ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा – प्रच्छी । पूर्ण । भाषा – हिन्दो । लिपि – नार्गरी । विषय – विकि विभाग । प्रेन्थ संख्या – २७=५ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – \times ।

विशेष-इस प्रन्य में विवाह के समय की जाने वाली कियाघों का वर्णन है !

१६८६. राम विष्णु स्थापना— \times । देशी कागज। पत्र संख्या- \times । ग्राकार- $\mathbf{E}_{\mathbf{x}}^{\mathbf{x}''} \times \mathbf{x}_{\mathbf{x}}^{\mathbf{y}''}$ । दशा-प्रच्छी। पूर्णु। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-विषि विधान। प्रम्थ संख्या-२७६२।। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

विशेष-इस प्रन्थ में वैष्णाव मतानुसार राम भीर विष्णु की स्थापना का वर्सन है।

१६८. रुक्मणी वृत विधान कथा — विशासकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या ५ । स्राकार — १३ $\frac{9}{5} \times = \frac{9}{5}$ । दशा — सुन्दर । पूर्णं । भाषा — मराठी । विषय — वृत विधान । ग्रन्थ संख्या — २६१० । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — ग्राध्वन कृष्णा १, शनिवार, सं० १९४५ ।

टिप्पली-इस प्रन्थ में पद्यों की संक्या १६९ हैं।

- १६६०. वतों का वर्णन $-\times$ । देशी कागज। पत्र सख्या-२। श्राकार-१२ $''\times$ ५ $\frac{3}{9}''$ । दशा-जीर्ग्ग। पूर्ण् । भाषा-रिहरी। लिपि-नागरी। विषय-बन विधान। ग्रन्थ संख्या-१६५१। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- **१६६१. वत विधान कथा**—**वेबनन्दि**। देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । श्राकार-१० $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{1}{9}$ " । दशा—जीर्गुं शीर्ग् । पूर्णुं । भाषा—श्रपभ्रंश । लिपि—नागरी । विषय-व्रत कथा । ग्रन्थ संख्या—१३३५ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १६६२. सत विधान रासो--किनमति । देशी कागज । पत्र संख्या-१६ । धाकार-१९"×५३" । दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । विषय-त्रात विधान । ग्रन्थ संख्या-१६०८ । रचनाकाल-धिवन शुक्ता १०, सं०१७६७ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा १४, सं०१८६ ।
- १६६३ वस विवास रासो-पं० वौलतराम । देशी कागज । पत्र सस्या-२६ । धाकार-५३"×४" । दशा-धच्छी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी (पद्य) लिपि-नागरी । विषय-रासो साहित्य । ग्रन्थ संस्था-१६६४ । रचनाकाल-ग्रश्विन शुक्ला १०, बृह्स्पतिबार, सं० १७६० । विपिकाल-ग्राषाढ़ शुक्ला १३, सं० १८६४ ।
- १६६४. व्रतसार— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। धाकार—१० $^{\prime\prime}\times$ ४ $^{\prime\prime}_{2}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्तो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—व्रत विधान । ग्रन्थ संख्या—२४६४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
 - १६९४. बसुवारानाम वारिएरि महाशास्त्र— × । देशी कारा त । पत्र संख्या—६ ।

शाकार-६ पुँ"×४" । यशा-भण्छी । पूर्ण । भाषा- संस्कृत । लिपि-नागरी । तिथय-विधि विचान । ग्रन्थ संख्या-१६६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१६६६ खुसस्सपन बिंचि $- \times 1$ देशी कागकः । पत्र संख्या-४४ । आकार-११ $" \times 4"$ दशा-प्राचीन । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-विधि विधान । प्रत्य संख्या-२४०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

लोक विज्ञान साहित्य

- १६६७. सम्बद्धीप वर्णन $-\times$ । देशी कागजः। पत्र संस्था-ः। साकार- १० $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{1}{2}$ "। दशा-श्र=छी। पूर्णः। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-लोक विज्ञानः। ग्रन्थ संस्था-१६०१। रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल $-\times$ ।
- १६९६. क्रिलोक प्रक्राप्त सि० व० नेमियन्तः । देशी कागज । पत्र संस्था–२८६ । ग्राकार १०५ $^{\circ}$ $^{\circ}$
- १६६६. त्रिलोक स्थिति— देशी कागज । पत्र संख्या— ३३ । श्राकार-१०६ 9 9 9 1 । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिप--नागरी । विषय-लोक विज्ञान । प्रत्य संख्या-११५६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल-ज्येष्ठ गुक्ता ६, सं०१६०४ ।
- १७००. त्रिलोकसार सिद्धान्त चक्रवर्ती नेमिचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या— २३ । ग्राकार-११ $''\times$ ४ $^2_g''$ । दशा-जीर्ग्यंकीण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । विषय-लोक विकान । ग्रन्थ संख्या-१३४२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १७०१. प्रति संस्था—२। देशी कागज। पत्र संस्था—७६। धाकार-१० $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ "। दशा—जीएँ। पूर्णं। ग्रन्थ संस्था—११६६। रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध शुक्ला १५, सोमवार, सं० १५५१।
- १७०२. प्रति संख्या ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-२० । ग्राकार-१२" × ४० । दशा-जीर्राकीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२४६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक शुक्ला १२, सं० १४१० ।
- १७०३. त्रिलोकसार (सटीक) नेशिकन्द्र । टीकाकार सहस्त्रकीर्ति । देशी कागज । पत्र संख्या दर्श प्राकार -१० $'' \times$ ४ $\frac{2}{5}$ " । दक्षा जीएँ । पूर्ण । भाषा पूल प्राकृत में भौर टीका संस्कृत में । लिपि नागरी । विषय लोक विज्ञान । अन्य संख्या ११४० । रचनाकाल \times । लिपिक। ल भाद्रपद शुक्ला ११, सोमवार, सं० १४८४ ।
- १७०४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—५५ । भ्राकार—१० $\frac{3}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा—जीर्गंकीसा । पूर्स । प्रन्थ संख्या—१२५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ज्येष्ठ कृष्या ११, बृहस्पतिबार, सं० १५६५ ।
- १७०५. त्रिलोकसार सटीक—सि॰ च० नेमिचन्द्र । टीका—बह्मभूताकार्य । देशी कागज । पत्र संख्या-४६ । झाकार-११" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्थ संस्था-१४१३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

काराज । पत्र संस्था-२२१ । भाकार-११० × ४० । वसा-मण्डी । पूर्य । भाषा-आकृत (मूल) टीका संस्कृत में । निपि-नागरी । विषय-लोक विक्राम । सम्ब संस्था-१२१६ । रचनाकाल-×। निपिकाल-×।

नोड-शका का नाम तरव प्रदीपिका है।

१७०७. विलोकसार भाषा—सुनितिनीति । देशी कानव । पत्र संस्था-११ । साकार-६३"×४३" । दशा-मन्धी । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रम्थ संस्था-१६२६ । रचनाकाल-साथ सुनला १२, सं० १६२७ । लिपिकाल- × ।

नोट-- त्रिलोकसार (प्रक्रित)मूल के कर्ता निद्धान्त चक्कवर्ती नेमिश्वन्त्र हैं। इसी के आधार पर प्रस्तुत यन्य में भाषा की नई है।

१७०८. प्रति संक्या २ । देशी कागज । पत्र संक्यान्य । ग्राकार-१२५ ४६ । दशा-श्रक्ती । पूर्ण । ग्रन्थ संक्या-२७३० । रचनाकाल-माच श्रुक्ता १२, सं० १६२७ । सिपिकास-चेत्र कृष्णा १, सं० १८६० ।

१७०६. जिलोकसार माथा—बत्तनाथ बोगी। देशी कागज। पत्र संस्था—६२। ब्राकार-११ $''\times$ ५ $^{?''}$ । दशा—प्रच्छी। पूर्ण। भाषा-हिन्सी (पद्य)। लिपि-नागरी। ग्रन्थ संस्था—१११७। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्राथाढ़ बुदी ५, सोमवार, सं० १८६२।

भावकाचार साहित्य

१७१०. आचारसार—चीरनन्दि । देशी कागज । पत्र संस्थां—६६ । आंकार-१० $^{\prime\prime}$ \times $^{\circ}$ । दशा—अच्छी । पूर्णे । भाषा—संस्कृत । निप—नागरी । विषय—श्रावकाचार । ग्रन्थ संस्था—१०५ \times । तिपिकाल— \times ।

१७११. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्थां—६२ । आकार—१ $\S^n \times \S^n = 1$ दशा—जीशी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था—१३०२ । रजनाकाल— \times । लिपिकाल—पीप कृष्णा ३, रचिंदार, सं० १६६५ ।

१७१२. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संख्या-४१ । प्रोकार-११"×४ है"" । दशा-जीर्शंशीसा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१२६५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७१३. प्रति संख्या ४ । देशी कागत्र । पत्र संख्या-४६ । माकार-११" \times ४ $\frac{3}{9}$ " । दशा-मितिजीस्प्रीसा । पूर्य । प्रत्य सख्या-२४६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१७१४ उपदेश माला — वर्मदास गिर्ण । देशी कागज । पत्र सख्या —३० । म्राकार — १० $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{7}$ " । दशा — जीएँ । पूर्ण । भाषा — प्राकृत । लिपि — नागरी । विषय — श्रावकाचार । मन्य संख्या — ११४४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१७१४. उपदेश रत्नमाला— सकलभूषण । देशी कागज । पत्र संस्था—१२७ । आकार—१०० थे" ×३० । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—आवकाचार । ग्रन्थ संस्था—१६७४ । रचनाकाल—श्रावरा शुक्ला ६, स० १६२७ । लिपिकुक्लिभाइपद कृष्णा ६, सोमवार, सं० १६०४ ।

मोड-इस प्रम्थ का नाम षट्कर्मोपदेश रत्नमाला भी है।

१७१६. प्रति संक्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६८ । भ्राकार-१२५ ४ ३ । दशा-भ्रब्धी । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-२७०८ । रचनाकाल-श्रावण शुक्ला ६, सं० १६२७ । लिपिकाल-भाद्रपद कृष्णा २, शुक्रवार, सं० १८८७ ।

प्राविभाग---

वंदे श्रीवृषमदेवं दिव्यलक्षण्यस्थितम् । श्रीखित-प्राखिसङ्गं युगादिपुरुषोत्तमम् ॥१॥

क्ररतमाग---

श्रीमूलसंयतिलके वरनंदिसंघे गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगस्त्रसिद्धे । श्रीकृत्दकुन्दगुरु पट्टपरम्परायां ग्री पद्मनंदि मुनीपः समभूज्जिताक्षः ॥ तत्पट्टचारी जनहितकारी पुरागुमुख्योत्तमशास्त्रकारी ।

भट्टारकः श्री सकलाविकीविः प्रविद्यनामाध्यतिः पुणासूनिः । भूवन्त्रीतिगुवस्तत् स्विद्धो भूवसभासननामन सन्दनः । राजनि तीत्र तपश्चरताक्षमो विविधवर्धसमृद्धि सुदेशकः ।। भीजान् भूवेश परिभूषितांगः प्रसिद्धं पाण्डित्यकलानिकानः । श्रीज्ञानभूवास्यगुरुस्तदीय पट्टोदयाद्वाविव भानुरासीत् ।। मट्टारकः श्रीविजयादिकीतिस्त्वीय पट्टे परिलम्बकीतिः। महामना मोक्षयुक्तामिलाबी वभूवः जैनावनिपारवैपादः ।। भट्टारकः श्रीशुभचन्द्रसूरिस्तत्पट्टपंके बहुतिग्मरिक्यः। त्रैविद्यवंद्यः सकल प्रसिद्धौ वादीभसिहो जयताद्वरित्र्यां । पट्टे तस्य प्रीणित प्राश्यिवर्गः शान्तो दान्तः शीलकाली सुबीमान् । जीवात्स्रिः; श्रीसुमस्यादिकीर्तिगंच्छाबीशः कृमकान्तिः कलावान् ।। तस्याभूच्य गुरु भ्राता नाम्ना सक्तभूषराः। सूरिजिनमते लीनमनाः बन्तोषपोषकः ॥ तेनीपदेशसङ्करनमालासंज्ञो मनोहरः। कृतः कृति जनानंद-निमित्तं प्रन्थः एषकः ॥ श्रीनेमिचन्द्राचार्यादि यतीनामाग्रहात्कृतः । संबर्धमानाटोलादि प्रार्थनातो मर्पेषकः ॥ सप्तविशंत्यिके वोडगशतवत्सरेषु विकमतः। श्रावणमासे शुक्लपक्षे वष्ट्यां कृतो ग्रन्थः ॥

१७१७. ज्यासकाचार —पूज्यवाद स्वास्तः। क्रेसी क्राह्मजः। एत्र संख्या—४। श्राकार—१० $\S''\times$ ४ \S'' । दशा—जीएंक्षीण। पूर्णः। सामा—संस्कृतः। निपि—तागरीः। विषयः—श्रावकाचार। ग्रन्थः संख्या—२७६०। रचनाकाल— \times । निपिकाल— \times ।

१७१६. उपासकाव्ययन — बसुनन्दि । देशी कामज । पत्र संस्था+२६ । प्राकार— ११ $'' \times \lor_7^{2''}$ । दशा-जीर्गा । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-बानरी । विषय-भावकाव्यर । क्षत्र्य संस्था-१३७५ । रचनाकास्य- \times । लिपिकाल $+ \times$ ।

१७१६. प्रति संक्या २ । देशी काक्रण । यत्र संक्या-३३ । आकाहरू १०३ "४४३" । दक्षा-जीर्का । पूर्व । प्रत्य संक्या-१३७७ । क्रवसाकाल- 🗶 । लिपिक्स्म-सं०३६४३ ।

१७२०. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-२६ । वासार-११है"×४३ॄ" । दशा-ग्रतिवीर्शकीरा । पूर्ण । । प्रन्य संस्था-१३६७ । रजनाकाल÷ × । जिपकाबःः × ।

१७२१. प्रति संस्था ४ । देखी कागम । प्रम संस्थान्देन । प्राकार- १०६ "४४६"। दशा-वित्तिवीर्शिया । पूर्ण । प्रमा संस्थान्-१३७८ । रचनाकाल- 🗶 । निर्मिकाल-प्रस्कृत कृष्णा ६, रविवार, सं० १४२४ ।

- १७२२. प्रति संस्था ४ ! देशी कागज । पत्र संस्था-२८ । घाकार-१२"×४३" । दशा-जीर्शकीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२६७४ । रचनाकाल- × । विपिकाल- × ।
- १७२६ क्रिया कलाप सदीक-पं० जाताचर । देशी कायज । पत्र संख्या-१०० । आकार-१४" × ४२" । दशा-भण्डी । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२७५४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-बैणाल कृष्णा १, सं० १४३६ ।
- १७२४. क्रिया कलाप दीका—प्रमाचन्द्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१२३ । धाकार-१०३ 2 \times ४ 2 । दशा-जीर्ग । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-१३६१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १७२४. कियाकोश भाषा —िकशर्नीसह । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । भाकार— १२'' × χ_{2}^{2} '' । दशा—प्रच्छी । पूर्ण । भाषा—िहन्दी (पद्य) । लिपि—नागरी । प्रत्य संख्या—१०६६ । रचनाकाल—भाद्रपद धुक्ला १५, रविवार, सं० १७६४ । लिपिकाल—पौष धुक्ला १५, सं० १६६४ ।
- १७२६ प्रति संस्था २। देशी कागज। पत्र संस्था-७६। झाकार-११३ ॥ ॥ दशा-जीर्गाः। पूर्णः। प्रत्य संस्था-१८०४। रचनाकाल-भाद्रपद शुक्ला १४, रविवार, सं० १७८४। लिपिकाल-वैशाल शुक्ला ८, शनिवार, सं० १८४६।
- १७२७. क्रिया विधि मंत्र \times । देशी कागज । पत्र संख्या २ । ग्राकार ६ $\frac{3}{6}'' \times 8''$ । दशा प्रच्छी । पूर्ण । भाषा संक्त । निपि नागरी । ग्रन्थ संख्या १६५७ । रचनाकाल \times । निपि काल बैशाख शुक्सा १२, रविवार, सं० १६४६ ।
- १७२०. **वित कल्याण माला—पं० धाकामर** । देशी कागज । पत्र संख्या –२ । धाकार ६ $\frac{1}{7}$ " \times , \times , $\frac{1}{7}$ " । दशा—ध्रम्श्री । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । तिपि—नागरी । प्रत्य संख्या—१७५४ । रचनाकाल \times । तिपिकाल \times ।
- १७२६. जैनरात $-\times$ । देशी कागज । पत्र संस्था-द । आकार-१० $\S'' \times \chi_{\S''}^2$ । देशा-धक्छी । पूर्णे । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था २५३५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-प्रश्विन शुक्ला ११, रिववार, सं० १६०३ ।
- १७३०. वर्म परीका व्यमितगित । देशी कागज । पत्र संस्पा—६२ । झाकार— ११"×४३" दशा-जीखंत्रीया । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । प्रन्य संस्पा—२६८ । रचनाकाल—सं० १०७० । खिपिकाल— × ।
 - नोड---प्रन्थ कर्ता की पूर्ण प्रशस्ति लिखि हुई है।
- १७३१. यमं प्रश्नोत्तर सावकाचार-- महुत्तक सकतकीतः देशी कागज। पत्र संस्था-६६। भ्राकार-१०" x ४ है"। देशा-- श्रीसंशीय। पूर्यः। भ्राचा-संस्कृतः। सिपि-नागरी। ग्रम्य संस्था-१७७६। रचनाकाण- x । सिपिकाल- x ।

१७३२. प्रति संस्था १ । देशी कार्यण । प्रत्न संस्था-६३ । प्राकार-१२"×2" । देशा-जीर्यक्षीता । पूर्व । प्रत्य संस्था-१२८६ । देशवाकास- ४) लिपिकास-चैत्र शुक्ता ८, सोमवार, सं० १६४७ ।

१७३६. वर्ग संबद्ध-पँ० वेबावी । देशी कागत । पंत्र संख्या-६६ । प्राकार-१०३ × ४३ । दशा-जीर्छेकीरण । पूर्ण । प्रावा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१२४१ । रचनाकाल-सं० १४४० । त्रिपिकाल-भावरा शुक्ला १४, शनिवार, सं० १४७० ।

१७३४. ब्रिति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६० । साकार-११३ ×४३ । द्या-कोर्स्सास् । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । सन्य संख्या-१०३७ । रचनाकाल-सं० १४४० । लिपिकाल-भाद्रपद बुदी २, सं० १७०८ ।

१७३४. प्रति संख्या ३। देशी कागजा पत्र संख्या-४६। आकार-२०२ "४४० । दशा-जीर्गा । पूर्ण । प्रत्य संख्या-११८७ । रचनाकाल-सं० १४४० । सिपिकाल-उथेष्ठ शुक्ला ८, बुबबार, सं० १४६७ ।

नोट-ग्रन्थ कर्ता ने भ्रपना पूर्ण परिचय दिया है।

१७३६. धर्म संग्रह---पं० मेचावी । देशी कागज । पत्र संख्या--७४ । प्राकार-- १०३ \times ४ 2 । दशा-प्रक्षी । पूर्ण । माषा--संस्कृत । जिपि-नागरी । ग्रन्य संख्या--२५७३ । रचनाकाल-वैशाल श्कला १५, रचिवार, सं० १६४६ ।

विशेष --इस ग्रन्थ का नाम "सम्बन्ध संसुचिका चूलिका" भी है।

१७३७. धर्माषृत सुक्ति — पं० साशायर । देशी कागज । पत्र संख्या – ६० । साकार – १० 2 " \times ४ 2 " । दगा – जोर्लं तीर्ण । पूर्ण । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । प्रत्य संख्या – १४०७ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल – फाल्मुन कृष्णा १०, सं० १५३६ ।

१७३८ प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—४७ । आकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ६ $\frac{1}{2}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ती । ग्रन्थ संख्या-११८५ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड---ग्रन्थ का प्रपरनाम सुक्ति संग्रह है।

१७३६. **धर्मोपदेसपीयूव वर्ष-बक्षा नेमिश्नः**। देशी कागज । पत्र संस्था-२६ । श्वाकार-१०" \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दशा-प्रतिजीर्गं शिएा । पूर्ण । भाषा -संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रत्य संस्था-१०४४ । रचनाकास- \times । लिपिकाल- \times ।

नोड-पत्र बत्यधिक जीर्णावस्था में हैं।

द्याविमाय---

औं सर्वत्र प्रणम्योज्यैः केंबलझानंशोधनं । सद्धमें देशयास्येष भव्यानां शर्महेतवे ।।१।।

प्रसामाग ---

गच्छे श्रीमति मूलतिकके सारस्वतीये शुने ।

विद्यानंति गुरूपपट्टकमलोस्नास वदो शास्कृदः ।
श्री भट्टारकमलिस्बूवरागृहः सिद्धान्तिस्तुमृद्या —
स्तिन्द्रिक्यो मुनिसिहनंति सुगुरूजीयात् सतां भूतले ॥१॥
तेषां पादांक्त्रशुमे निहित निजमितनेमिदतः स्वशस्या ।
भक्त्या गास्त्रं चकार प्रचुरसुखकरं श्रावकाचारमुच्चैः ।
नित्यं भक्योविश्वृदैः सकलगुरानिधैः प्राप्तिहेतुं च मत्वा ।
गुक्त्या संसैवितोऽसौ विश्वतु शुभतमं मंगलं सज्जनानां ॥१८॥
लेखकानां वाचकानां पाठकानां तथैव च
पालकानां सुखं कुर्यानित्यं शास्त्रमिदं शुमं ॥१६॥
इति श्री धर्मापदेशपीयूषवर्षनाम श्रावकाचारे भट्टारक श्री सस्तिमृष्ण-

इति श्री वमापदेशपीयूषवयनाम श्रीवकाचार मट्टारक श्री काल्समूषण-शिष्यब्रह्मनेमिदलविरिचते सल्लेखनाक्रम व्यावर्णनीनाम पंचमोश्रीवकारः । इति समाप्तः ।

१७४०. प्रति संस्था २ । देशो कागज । पत्र संख्या—२३ । आकार—६ $\frac{3}{9}$ \times ४ $\frac{2}{7}$ । दक्षा—जीर्ग । पूर्ण । प्रन्य संख्या—११४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—श्रावश शुक्ल। ११, सोमवार, सं० १६२६ ।

१७४१. प्रति संस्था ३ । देशी कागज । पत्र संस्था-२२ । प्राकार-१०"×४३" । दशा-जीर्ग । पूर्ग । प्रत्थ संस्था-१३६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाच-ज्येष्ठ शुक्ला २, सं०१६७७ ।

१७४२. प्रति संख्या ४ । देशी कागज । पत्र संख्या—२१ । ज्ञाकार—१९'' \times ४ $\frac{5}{7}''$ । दक्षा—जीर्यंशीर्य । पूर्ण । प्रत्य संख्या—-१६१८ । रचनाकाल - \times । लिपिकाल - बैशाख शुक्ला \times , सं० १७०४ ।

१७४३. प्रति संक्था ४ । देशी कागन । यत्र संख्वाच३१ । झाकार-१०ऐ" ४४३ । दशा-जीर्गंक्षीमा । पूर्वा । ग्रन्थ संख्या-२४२३ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल- सं०१६४४ ।

१७४४. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । यत्र संस्था-२५ । धाकार-१० है" ×४ है" । दशा-प्रस्त्री । पूर्या । ग्रन्थ संस्था-२६६६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-भाद्रप्रव कृष्णा १, सं० १६८० ।

१७४१. धर्मोनदेवापृत--पदाकिय । देशी कागज । पत्र संस्था--२४ । आकार-- ११ $\frac{1}{9}$ " \times ५ $\frac{1}{9}$ "। दक्षा--धन्छी ।पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संस्था--२७०२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

बिशेष - प्रन्य के प्रारम्भ में पद्मतन्ति पच्चीसी लिखा है।

१७४६. परानंवि संविक्तिति - परानंवि । देवी कातत्र । पत्र संख्या-२२४ । बाकार-११"×४३" । दक्षा-चित्रविर्धेकीया । पूर्य । सामा-चंस्कृत । लिपि-नागरी । विवय-स्रावकावार । ग्रन्थ संख्या-१२७६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १३,६० ।

नोट-पत्र गल चुके हैं।

रेजेंडब. 'प्रति संदेखी है। देशी कीगवा। पत्र संद्या-प्रेड ('धाकार-११०") दंशी-धान्त्री । पूर्ण । सन्य सहया-१४३७। रेचनाकाल--- × । सिपिकाल-- × ।

१७४६. अति संस्था ४। देशी कागज । पत्र संस्था–६८ । आकार-१०५ $^{"}$ \times ४५ $^{"}$ । दशा-जीर्या । पूर्तं । सन्य संस्था–१०४१ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१७६०. प्रति सस्या ४ । देशी कागज । पत्र सस्या–८६ । आकार---१२ $\frac{5}{5}$ " \times ६" । दशा-जीसंकीस । पूर्य । प्रत्य सस्या---१००६ । रचनाकास-- \times । सिपिकास-- \times ।

१७५१. प्रति संस्था ६ । देशी कागज । पत्र संस्था–६४ । प्राकार $-१0\frac{1}{9}"\times 8\frac{1}{9}"$ दशा—जीएं । पूर्य । ग्रन्थ संस्था–१८५७ । रचनाकाल $-\times$ । लिपिकाल-श्रावश कुच्छा ६, खुकवार, स०१८०७ ।

१७५२. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या-४८ । श्राकार-११ड्रे" ४६ड्रे" । दशा-अच्छी । पूर्ण । ग्रन्थ सख्या-२६३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-कार्तिक सुवसा ३, सोमवार, स० १८१६ ।

१७५३. प्रति सल्या ६ । देशी कागज । पत्र सस्या–६८ । प्राकार–१२ $\frac{1}{2}$ " । दशा–जीर्शकीए। । पूर्श । प्रत्य सल्या–२३२३ । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१७१४. प्रथमिव पंचित्रति (सडीक) — \times । देशी कागज। यत्र सस्या–१४७। माकार-१२ $\frac{3}{5}$ " \times १ $\frac{3}{5}$ "। दशा-जीर्खांशीण। पूर्या। माषा-सस्कृतः। लिपि-नागरी। प्रम्य सस्या-२४४६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१७५१, प्रजीवसार—यकःकर्शितः। देशी कागवः। पत्र संस्थाः २०। आकार—११ $\frac{9}{7}$ ×५"। दशा—जीर्ग्यक्षीरम् । पूर्णः। भाषा—संस्कृतः। लिपि—नागरीः। ग्रन्थ संस्थाः १६५% । रचनाकाल— × । लिपिकाल— × ।

१७४६. प्रश्लोत्तरोपासकाचार—सहारक सकलकर्ति । देशी कागवा । पत्र सख्या—१२३ । भाकार-१० $\frac{3}{5}$ "×४ $\frac{1}{5}$ "। दशा-जीसंक्षीता । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । सिपि-नागरी । प्रत्य संख्या-१३६५ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१७६७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । यत्र संख्या-७३ । खाकार-११है"×६ है" । दशा-बहुत सुन्दर । पूर्वो । प्रत्य संख्या-१४६२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-प्राप्तक्य कृष्णा १२, सं० १६२१ ।

१७४.म. प्रति संस्था ३। देशी कागज । यत्र संस्था-१११। काकार-१९"×४२"। वका-जीखंशीया । पूर्व । प्रत्य संस्था-१७४२ । रचनाकाल- × । जिपिकाल-प्राचाद कुन्ता ७, स्विवार, सं० १७११ ।

मोड-प्रमस्ति दी गई है।

१७६६. प्रति संस्था ४ । येशी कागज । पत्र संस्था-१२७ । बाकार-१०३"× ५३" । यश-भक्छी । पूर्व । सम्य संस्था-१८६८ । रचनाकाल- × । क्रिमिकाच- × ।

१७६०. प्रसि संस्था ४ । देशी कामख । पत्र संस्था-११४ । धाकार-११ई"× ४"। दशा-जीर्स । पूर्य । सन्य संस्था-१२६२ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल-मंगसिर शुक्का ६, सोमवार, सं० १६६४ ।

१७६१. प्रति संस्था ६। देशी कागज । पत्र संस्था-१३६। भाकार-१०३ × × । दशा-जीर्र्ण । पूर्ण । प्रन्थ संस्था-१३४०। रचनाकाल- × । लिपिकाल-अधिवन कृष्णा ४, सीमवार, सं० १७२६।

१७६२. प्रति संख्या ७ । देशी कागज । पत्र सख्या–१५६ । भाकार–११ $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ $^{\prime\prime}$ । दशा–शितिजीर्गुंकीरम् । पूर्म । प्रत्य संख्या–१२३३ । रजनाकास– \times । लिपि-काल– \times ।

१७६३. प्रति संस्था = । देशी कागज । यत्र सख्या—१३३ । धाकार—११" \times \times $\frac{1}{2}$ " । दशा—श्रच्छी । पूर्ण । प्रन्थ सख्या—१३०१ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—ग्राचाढ़ कृष्णा १, सं० १६५० ।

१७६४. प्रति संख्या ६ । वेशी कागज । पत्र सख्या-११० । प्राकार-११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{2}$ " । दशा-प्रच्छी । पूर्ण । प्रन्थ संख्या-१०३६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-साथ बुदी ६, सोमवार, सं० १४६० ।

१७६४. प्रति संस्था १०। देशी कागज । पत्र संस्था-११३। प्राकार-६२ $^{"}$ \times ५ $^{"}$ $^{"}$ । दशा-श्रच्छी । पूर्यं । ग्रन्थ संस्था-२४६२ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१७६६. प्रति संख्या ११। देशी कागज । पत्र संख्या-१३४। श्राकार-११ $\frac{3}{6}$ " \times ५" । दशा-प्राचीत । पूर्ण । प्रत्य संख्या-२६२४। रचनाकाल- \times । सिपिकाल-मंगसिर कृष्णा ३, सोमकार, सं० १५६३।

टिप्पर्गी-लिपिकार ने पूर्ग प्रशस्ति लिबि है।

१७६७. प्रति संख्या १२ । देशी कागज । पत्र संख्या—१७१ । द्याकार—११ $\frac{9}{2}$ " \times १ $\frac{9}{6}$ " । दशा—प्राचीन । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—२६०० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माथ शुक्ला ६, बृहस्पतिवार, सं १६४३ ।

१७६०. अति संख्या १३ । देशी कागज । पत्र संख्या—६६ । धाकार—११ $\frac{1}{9}$ " \times ४ $\frac{3}{9}$ " वशा—जीर्राक्षीर्र्ण । पूर्ण । प्रस्थ संख्या—२६१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—ग्राषाङ् कृष्णा २, श्रानिवार, सं० १७०६ ।

नीट-- सिपिकार की प्रशस्ति का पत्र नहीं हैं।

१७६६. प्रायत्थित कास्त्र—श्रकलंक स्वामी । देशी कागज । पत्र संस्था—१ । स्वाकार—१०" \times ५" । दशा—श्रक्षी सुन्दर । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संस्था—१४७८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१७७०. यूनाबार प्रवीषिका महार्थक संस्तानीत । वैशो कार्यज । पत्र संस्था-१०७ । बाकार-१६३ ×६३ । वंशी-जीरोजीख । पूर्व । विधि-वार्यदी । विषय-वाबकाबार । सन्ध संस्था-१०७० । रचेनाकाल- × । विधिकाल- × ।

१७७१. रत्नकरण यावकाबार (सटीक)— समन्तमा । टीकाकार-प्रमाविद्याचार्य हैं देशी कागज । पत्र संख्या-३८ । प्राकार--१४"×६३" । दर्शा-जिल्हिंसीसा । पूर्य । पाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रज्य संख्या-१२७२ । रचनाकाल- 🔀 । किपिकास-प्रचन भाषाक कृष्ण ७, सं०१८६६ ।

१७७२. प्रति संस्था २ ।। देशी कानज । पत्र संस्था—६६ । झाकार १०🖟 🗡 ४ है "। दशा—जीर्रोक्षीरा । । पूर्य । प्रत्य संस्था १००० । रचनाकास— 🔀 । लिपिकाल—साथ शुक्ता १२, सं० १४४३ ।

१७७३. रत्नकरण्ड आवकाचार—आवश्व । देशी कागज । पत्र संख्यां-१४० । श्राकार-१० है "४४ है "दशा-जीर्गक्षीरा । पूर्ण । श्रावा-प्रपन्ध श्व । लिपि-नागरी । विषय-आवका-वार । ग्रन्थ संख्या-१०६१ । रचनाकाल-४। लिपिकाल-ग्रावाद कृष्णा ११, रविवार, सं० १६४१ ।

१७७४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-१३१ । आकार-१२हुँ $"\times$ ५" । वशा-जीर्एक्षीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या-१७६८ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१७७५. रस्ममासा — शिवकोट्याचार्य । देशी कागज । पत्र संस्था — ३ । भ्राकार — १२ $\frac{3}{7}$ " \times ४ $\frac{3}{8}$ " । दशा — जीर्गक्षीरम् । पूर्म । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । ग्रम्य संस्था — २०१५ । रचनाकाल — \times । लिपिक लि — \times ।

१७७६. रत्नसार—पं० जीवन्थर । देशी कागज । पत्र संख्या—३० । आकार-११" \times ४ $\frac{3}{2}$ " । दशा—जीर्गंक्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२७०३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१७७७. रात्रि मोजन दोष विचार—धर्म समुद्र वश्यकः। देशी कागज । पत्र संस्था—१८ । धाकार-१० $"\times$ ४ $\frac{1}{2}$ " । दशा—धच्छी । पूर्णः भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । ग्रम्भः संस्था—२४७२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल -चैत्र सुक्ला ४, सोमवार, सं० १६८७ ।

१७७८. विवेक विलास — जिनवल सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या—४६ । प्राकार—६२ $"\times$ ४ $\frac{1}{2}"$ । दशा—प्राचीन । पूर्ग । जावा—संस्कृत । लिपि—नागरी । ग्रन्थ संख्या—२४३२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—सं० १६०६ ।

विशेष--श्री सेरशाह के राज्य में लिपि की गई। परस्पर में पत्र विपक जाने से अक्षरों को अति हुई है।

१७७६. वतसार भावकाचार— \times । देशी कागज । पत्र संस्था-३ । आकार्-१० $\frac{3}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{2}$ " । दशा-जीर्रांकीरा । पूर्ण । माषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संस्था-२५६१ । रचनकाल- \times । जिपिकाल- \times । १७८०. वहकार्याक्षेत्र साला-- सम्प्रकीति । देशी कार्युः । पत्र संस्था-६३। साक्षार-११५ × ४ । दशा-जीर्याकृतिसः । पूर्णः । शावा-सपभंशः । लिपि-नागरी । विषय-सावकावारः । सन्य संस्था-१४०८ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-मात्र कृष्णाः १३, सं० १६०७ ।

१७६१. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्था—१०१ । झाकार—११ $\frac{1}{2}$ " \times ४ $\frac{3}{6}$ " । दका-श्रीसंक्षीस्स । पूर्यं । सन्य सस्या—११३३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—थौष बुदी १३, सोमवार, सं० १४६३ ।

१७६२. बद्कर्मोपदेश रत्नमाला—अङ्गरक सक्ष्मणसेम । पत्र संस्था—६५ । ग्राकार—११२ $^{\mu}$ \times ४ $^{\pm}$ $^{\mu}$ । दशा—तीर्गक्षीरा । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लियि—नागरी । विषय—क्षावकाबार । ग्रम्थ संस्था—१०६५ । रचनाकाल— \times । लियिकाल—पौष शुक्सा १४, शुक्रवार, सं०१७३६ ।

नोड-प्रशस्ति विस्तृत रूप से दी हुई है।

१७६६. श्रवाबसूर्णो — \times । देशी कागज । पत्र सस्या – ३६ । श्राकार – १० $\frac{9}{9}$ " \times ४ $\frac{9}{9}$ " । दशा — जीर्ण । पूर्ण । भाषा – संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय – श्रावकाचार । ग्रन्थ संस्था – १४१६ । रचनाकाल – \times । लिपिकाल — \times ।

१७६४. आवक धर्म कथन — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — ७ । स्राकार — १०" \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा - जीगीक्षीरा । पूर्ण । भाषा - सस्कृत । लिपि - तागरी । ग्रन्थ संख्या -१३११ । रचनाकाल - \times । लिपिकाल - \times ।

१७८४. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—६" \times ४ 3_6 " । दशा—जीर्ग्यंकीरा । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या—१६१२ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कार्तिक शुक्ला १२, सं० १६७१ ।

१७८६. श्रायक वत भण्डा प्रकरण सार्च $\cdot \times 1$ देशी कागज । पत्र संख्या—३ । श्राकार—१०३ 2 2 2 2 3 2 3 3 3 3 3 4 5

१७६७. श्रावकाचार—पद्मनन्ति । देशी कागज । पत्र संख्या-६४ । ग्राकार-१०हुँ" ×४हुँ" । दशा-जीर्एक्षीरण । पूर्ण । भाषा-प्राकृत । लिपि-नागरी । प्रन्य संख्या-१०१३ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-ग्रावाढ सुदी १३, सोमवार, सं० १७०३ ।

नोड--प्रशस्ति विस्तृत रूप में उपलब्ध है।

१७८८. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या—१४ । द्याकार—१० $\frac{3}{5}$ " \times ४ $\frac{3}{5}$ " । दक्षा—जीर्णंकीरण । पूर्णं । प्रन्य संख्या—११८६ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—फाल्गुन कृष्णा २, बृहस्पतिचार सं० १६१४ ।

१७८६. प्रति संस्था है। देशी कागजा पत्र संस्था-६८। ग्राकार-११ है 🗡 🗙

४ई"। वंशा-जीर्णसीर्थ । पूर्ण । बन्ध संस्था-२४३७ । रचनित्रिक 🗙 । विभिक्तस-काविक

१७६०. प्रति संस्था ४। देशी कीगंत्र। पत्र संस्था-६८। श्रीकार-१०ई"×४इँ"। दशा-प्राचीत । पूर्या । ग्रन्थ संस्था-२६९९। रचनाकाल- ४। लिपिकाल-पीय सुरेशी १, रविवार, सं०१६७६)

१७६१. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-७७ । स्रोकार-१०ई"४४६"। दशा-ग्रन्थी । पूर्ण । ग्रन्थ संस्था-२५३४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-चैत्र केस्सा द, सं०१६७२ ।

बिशोप -- लिपिकार ने अपनी प्रशस्ति में भट्टारकों का अच्छा वर्णन किया है !

१७६२. श्रामकाचार – पं॰ ग्रासाचर । देशी कामज । पत्र संस्था–१७ से ६३ । श्राकार–१० $''\times$ ४'' । दशा–ग्रच्छी । पूर्ण । भाषा–संस्कृत । लिपि–नागरी । विवय–श्रावकाचार । ग्रन्थ संस्था–१२१० । रचनाकाल– \times । लिपिकाल– \times ।

१७६४. श्रावकाचार — \times । देशी कागज । पत्र संर्केश — ११ । श्राकार — १२ $^{\circ}$ × $^{\circ}$ । देश — जीर्णक्षीए। पूर्णं । भाषा — प्राकृत । लिपि — नागरी । सन्य संस्था — २३५६ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१७६४. श्रांबकाचार — महारके सकलेकीति । देवी कार्यके । यत्र संख्या-७०। बाकार-१२"×४"। दशा-जीएंकीए। पूर्ण । भाषा-सँस्कृत । लिपि-नीगरी । विवय-श्रावकाचार । प्रत्य संख्या-१७३४। रवनाकाल- × । विपिकाल- × ।

१७६६. श्रावकासार — पूज्यपीय स्वामी । देशी कांगज । पंत्र संख्या – ६ । श्राकार – १०इ "४४ है । दशा – प्राचीन । पूर्ण । भाषा – संस्कृत । लिपि – मंगिरी । ग्रन्थ संख्या – २०४६ । रचनाकाल – ४ । सिपिकाल – प्राचाद सुक्ला ४, सं० १६७४ ।

१७६७. प्रति संस्था २ । देशी कागज । पत्र संस्थी-४ । प्राकृरि-१०"×४६"। दशा-प्राचीन । पूर्य । ग्रन्थ संस्था- २४४६ । रचनाकास- × । लिपिकासे-४ ।

१७६८: श्रावकाराधन - समय सुग्वर । देशी कागज । पत्र संस्था-द । शाकीर-१० है" ४४३ । देशा-प्राचीन । पूर्णे । भाषा-संस्कृत । लिपि-नामरी । प्राच्य संस्था-२७१६ । रचनाकास-सं० १६६७ । लिपिकाल- × ।

१७६६. स्वामी कार्तिकेया कुँक्का — कार्तिकेय। देशी किंगर्का । पर्न संख्या - २७। बाकार-१०३ "४६ । दशा-जीर्यातीया। पूर्यो । भाषा-प्रोक्केस । निपि-नीर्गरी। विवर्ध- व्यावकाचार । प्रत्य सच्या-१३६८ । रचनाकाल - ४ । लिपिकाल-कीर्तिक सुक्यों ६; सं० १६३५ ।

१८०० सागार वर्षामुत-पं० द्यासाधर । देशी काग्रज । पत्र संस्था-५६ । धाकार-११" × ४" । दशा-जीर्णंशीरण । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिप्नि-नागरी । दिष्य-भावकाचार । ग्रन्थ संस्था-१२४० । रचनाकाल-सं० १२६६ । शिपिकाल-संगितर धुक्सा २, दृहस्पतिवार, सं० १६५३

१८०१. प्रति संख्या २ । देशी कागज । पत्र संख्या-६६ । आकृार-१० $\frac{3}{9}$ " \times ५ $\frac{3}{9}$ " । दशा-जीएंक्षीरा । पूर्ण । प्रन्थ संख्या-१००१ । रचनाकाल-पौष कृष्णा ७, सं० १२६६ । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा ६, सोमवार, सं० १६१२ ।

नोट-प्रमस्ति विस्तृत रूप से उपलब्ध है।

१८०२ सागार धर्मामृत सटीक — पं० ग्रासावर । टीकाकार — \times । देशी कागज । पत्र संख्या — ६२ । भ्राकार — १० $'' \times 8$ $_{9}^{1}$ । ध्या — जीर्णक्षीरा । । पूर्ग । भ्रावा — संस्कृत । स्विप — नागरी । विषय — श्रावकाचार । ग्रम्थ संख्या — १००८ । रचनाकाल — वौष बुदी ७, सं० १२६६ । सिपिकाल — \times ।

नीट-टीका का नाम "कुमुद चन्द्रिका" है।

१८०३. प्रति संस्था २ देशी कागज । पत्र संस्था-११४ । प्राकार-११ $\frac{1}{8}$ " \times $\frac{1}{8}$ " प्राकार-११ $\frac{1}{8}$ " \times प्राकार, संग्लवार, सं०१६८७।

विकेष वि० सं० १३०० कार्तिक मास में नलकच्छपुर में नेमिनाय चैत्यालय में रचना की गई।

१००४. सार समुख्यय — कुलभद्र । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । माकार-११" \times ४ $\frac{3}{5}$ "। दक्षा-त्रीगंकीरा । पूर्या । भाषा-सस्कृत । लिपि-नागरी । प्रन्थ संख्या-२०१३ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्णा २, मंगलवार, स० १६६६ ।

विशेष-इस प्रन्थ की मालपूरा में लिपि की गई।

१६०५. प्रति संस्था २ । । देशी कागज । पत्र संस्था-१७ । धाकार-११" \times ५" । दशा-जीर्णक्षीरण । पूर्ण । प्रत्थ संस्था-२४०६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१८०६. प्रति संख्या ६ । देशी कागज । पत्र संख्या-१४ । भाकार-११६ $^{\circ}$ " \times ४" । दशा-श्रच्छी । पूर्यो । प्रत्य संख्या-२६४६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-माघ शुक्ला ७, सोमबार, सं० १६४४ ।

१६०७. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संख्या-२३ । भाकार-१० $^{\prime\prime}$ ×४ $^{\prime\prime}_7$ । दशा-प्रस्की । पूर्ण । ग्रन्थ संख्या- २६९७ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१८०६. प्रति संस्था ४ । देशी कागज । पत्र संस्था-१६ । प्राकार-१०२ \times ४५ वशा -प्राचीन । पूर्ण । जन्य संस्था-२६६४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाजपद कृष्णा ११, मंगलवार, सं० १५६२ ।

विशेष--विपिकार ने भपनी पूर्ण प्रशस्ति लिखि है।

र्षः १ वर्षः सम्बोध संवासिका सार्वं - × । देशी कागणः । पत्र संस्था--७ । धाकार-१०" × ४ है" । दशा-प्राचीन । पूर्णे । भाषा-प्राकृत व संस्कृतः । लिपि-नागरी । सन्य संस्था २४२२ । रचनाकाल-- × । सिपिकाल-माध कृष्णा १४, शनिवार, सं० १७०६ ।

१६६०. प्रति संस्था २। देशी कार्गज । पत्र संस्था—६१। प्राकार—११ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ "। दशा—जीखंसीखा। पूर्यं। प्रग्य संस्था—२१३०। रचनाकाल— \times । निर्णिकाल—प्राचाद कृष्ण २, प्रतिवाद, सं०१६९७।

१द११. त्रिवर्णाचार—जिनसेनंश्वार्यं। देशी कागवः। पत्र संस्था-२०३ । प्राकार=१३ $"\times$ '६"। दशा—बन्धीः। पूर्णः। भाषा—संस्कृतः। लिपि—नागरीः। विषय-श्रावकाचारः। प्रत्य संस्था-१४८६ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

अवशिष्ट साहित्य

- १६१२. मह्ठारह नाता को ध्योरी— \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१। बाकार— χ_2^{2} " \times रहे"। दशा—प्रच्छी । पूर्य । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—एक ही भव में १८ नाते जीव का वर्योन है । प्रन्य संख्या—१६४१ । रर्बनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १५१३. सरतुर पंथवास (बातुर प्रत्याक्यान) \times । देशी कागज । पत्र संख्या ३ । साकार १०" \times ४ $\frac{1}{3}$ " । दशा प्रति जीसींशीण । पूर्य । भाषा संस्कृत । लिपि नागरी । विषय मंगल पाठ । प्रत्य संख्या १४६६ । रचनाकाल \times । लिपिकाल \times ।

नोड-भवेताम्बर प्राम्नायानुरूप रचना है।

- १८१४. एकविशंति स्थानक—सिद्धसेन सूरि । देशी कागज । पत्र सक्या—४ । धाकार—१०३'' \times ४ $^2_7''$ । दशा—प्राचीन । पूर्ण । भाषा—प्राकृत व हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय—धर्म । प्रत्य संस्था—२७८३ । रचनाकास— \times । लिपिकाल— \times ।
- १०१४. ऋषमवास विनती \times । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । स्नाकार— ७३'' \times ६ $_{7}^{9}''$ । दशा—जीर्एंक्षीरा । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—१५४७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—माध कृष्णा १२, बृहस्पतिवार, सं० १७८४ ।
- १६९६. कोकसार—धामन्तः। देशी कागजः। पत्र संख्या-४०। धाकार-६ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{3}{2}$ "। दशा-प्रच्छीः।पूर्णः।भाषा-हिन्दीः (पद्यः)। लिपि-नागरीः। विषय-कामशास्त्रः। ग्रन्थं संख्या-१०६६। रचनाकाल- \times । लिपिकाल-भाष्ट्रपद शुक्ताः ६, मंगलवार, सं० १६२५।
- १६१७. सण्ड प्रसस्ति— \times । देशी कागज । पत्र संख्या— । प्राकार-११ $^{"}\times$ ४ $^{"}_{9}$ " । दशा—प्रच्छी । पूर्यों । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—काव्य । ग्रन्थ संख्या— १०४८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।
- १**८१८. गर्जासह कुनार जीपई—ऋषि वेदीचन्य** । देशी कागम । पत्र संख्या—१३ । **धा**कार—१० $\frac{9}{4}$ " \times ५"। दशा—धन्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । **जि**पि—नागरी । प्रन्थ सख्या—१८६५ । रखनाकाल—कार्तिक **शुक्ला** ५, मंगलवार, सं० १८२७ । लिपिकाल— \times ।
- १६१६. संसक सुनि की सर्कसाय -- \times देशी कागज। पत्र संख्या-१। धाकार-११ $''\times$ ५ $^{*}_{5}$ ''। दशा-प्रच्छी। पूर्णे। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। विषय-धर्म। ग्रन्थ संख्या-२६२४। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।
- १८२०. गद्य प्रदाति X । देशी कामज । पत्र संख्या-३ । घाकार-१०३ X४ । दक्षा-प्राचीन । पूर्ती । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-२३१३ । रचना-काल- X । निपिकाज- सं० १६३० ।

१७२१ पूर्विकरि X । देशी कागज । पूत्र संस्था- ३ । स्कार-१२३ × ६"। दक्षा-विश्वेषा । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । निषि-नागरी । विश्वय-इतिहास । अन्य संस्था-२६४० । रचनाकाल- × विषिकाल- × ।

हिप्पाती-प्रन्तिम पत्र पर प्रायश्चित विधि भी है।

१८२२. सुके हुए रस्य — \times । देशी काय व । पत्र संस्थान २३ । श्राकार — १० $^{\prime\prime}$ \times \times 3 । दशा — ग्रुकी । पूर्ख । भाषा — संस्कृत । लिपि — नागरी । विषय — भिन्न - भिन्स विषयों के पश्च । श्रम्थ संस्था — १२२६ । रचनाकाल — \times । लिपिकास — \times ।

१८२३. छायूर पुरुष स्वतः — × देशी कागज । पत्र संस्था-१ । आकार-१०"× ४२ । दशा-प्रस्की । पूर्या । भाषा-संस्कृत व प्राकृत । लिप्-नागरी । विषय-सामुद्रिक सास्त्र । प्राथ संस्था-१६२८ । रचनाकाल- × । लिप्काल- × ।

१०२४. सम्बद्धीप संसद्धसी—हिरमह सुरि । देशी कागम । पत्र संस्था—३ । प्राकार— १०५ $"\times$ ४ $"_0$ " । दशा—जीर्एंक्षीम । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । सिपि—नागरी । विषय—गिरात । प्रन्थ संस्था—१५२८ । रचनाकाल— \times । सिपिकाल—प्रश्चिन शुक्सा १, स० १७६८ ।

१६२४. जिनवर्म पद—समय सुन्दर । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । झाकार— १२ $\frac{1}{2}$ " \times ५ $\frac{1}{2}$ " । दशा—मन्छी । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—पदावली । ग्रन्य संख्या—१४४६ । रचनाकाल— \times । लिपिकास— \times ।

१८२६. जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई—कित जगरूप। देशी कागज। पत्र संख्या-२६। ग्राकार-११३ ×५५ । दशा-श्रञ्छी।पूर्णु। भाषा-हिन्दी (पर्रा)। लिपि-नागरी।ग्रन्थ संख्या-१७४८।पचनाकाल-ज्येष्ठ कृष्णा १२, बुधवार, स०१८१। लिपिकाल-वैशाख शुक्ला १४, सं०१८७२।

१८२७. दुष्टिया यत अण्डन--डाइसी मुनि । देशी कागज । पत्र संस्था-७ । प्राकार-१०" × ४२" । दशा-जीर्या । पूर्ण । भाषा-प्राकृत एवं संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-दुष्टिया मत का खण्डन । प्रत्य सस्या-१५२६ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ता २, सं० १८४७ ।

१६२६. दान विधि— \times । देशी कागज । पत्र संस्था—६ । झाकार-६कुँ $"\times \vee$ कुँ"। दशा—अध्यक्षी । पूर्यो । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—धर्मे । ग्रन्थ संस्था—१६५१ । रभनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८२६, बानावि संबाद—ससय सुम्बर । देशी कागृज । पत्र संख्या—६ । ग्राकार—१०" \times ४ $\frac{1}{9}$ " । दशा—ग्रच्छी । पूर्ण । श्राया—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—काव्य । ग्रन्थ संख्या—१४५७ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८३०. ब्रीक्षा प्रतिष्ठा विश्वि $--\times$ । देवी क्ष्मज । पत्र संस्था-६ । ब्राकार-१६ $''\times\times^2$ '' । द्रशा-धृष्की । पूर्णे । माया-संस्कृत एथं हिन्दी । विषि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । यन्य संस्था-१६२७ । रचनाकाल $-\times$ । जिपिकाल $-\times$ ।

१८३३. **नेमजी का पर—उदय रं**ल । देशी कार्गज । पत्र संस्था—१ । आकार— १०३ $"\times$ ४ $\frac{1}{2}"$ । दशा—सुन्दर । पूर्ण । भाषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—काथ्य । ग्रन्थ संस्था—१४९८ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

नोट-नेमजी का राजुल से भव-भव का सम्बन्ध बताया गया है।

१८३४. नेमंत्री राकुल सर्वेद्या—रामकरस्य । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । श्राकार—१०" \times ४ $\frac{3}{6}$ " । देशा—जीएविंगिए। पूर्ण । भाषा—हिन्दी । सिपि—नागरी । प्रन्थ संख्या—१५१४ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८३४. नेमीश्वर पद—धर्मचन्द नेमिचन्द । देशी कागज । पत्र संख्या—१ । ग्राकार—१३ $"\times8"$ । दशा—जीर्श । पूर्ण । माषा—हिन्दी । लिपि—नागरी । विषय—काव्य । ग्रन्थ संख्या—१७६१ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८३६. पांक्वेंभं थ विनती—जिनसमुद्र सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या-१ । साकार-६ $\frac{3}{7}$ \times ४ $^{\prime\prime}$ । दशा-जीर्रो । पूर्रो । भाषा-अपभ्रंश । लिपि-नागरी । विषय-विनती । ग्रन्थ संख्या-१४३४ । रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

१८३७ पिण्ड विशुद्धावं चूरी — जिनवल्लम सूरि । टोका — श्रीचन्द सूरि । देशी कागज । पत्र संख्या — १ प्राकार — १०५ % \times ४५ । दशा — जी ग्रीक्षी ग्रा । पूर्ण । भाषा — संस्कृत एवं प्राकृत । लिपि — नागरी । विषय — पिण्ड शुद्धि वर्णन । प्रत्य संख्या — २७८८ । रचनाकाल — \times । टाकाकाल — कार्तिक कृष्णा ११, सं० ११७६ । लिपिकाल — \times ।

, १८३८ प्रशुम्म चरित्र—महासेनाचार्य । देशी कागज । पत्र संस्याँ—७१ । भाकार— १० $\frac{3}{7}$ \times ४ $\frac{3}{7}$ । दशा—भ्रम्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । लिपि—नागरी । विषय—चरित्र । ग्रन्थ संख्या—२४८८ । रचनावाल— \times । लिपिकाल—वैज्ञास कृष्णा १३, सं० १६६८ ।

१८३६ पंक्यक्कारंग — \times । देशी कागज । पत्र संस्थां —१ । आकार —१० है" \times ४ है" । दशा —जीर्ग् भीर्ग । पूर्ण । भाषा —प्राकृत । लिपि —नागरी । विषय —श्रंत्रांर । प्रन्य संस्था — २७३४ । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — \times ।

१८४०. बुद्धिसागर स्थ्डान्स — बुद्धिसागर । देशी कांगज । पर्त्र संस्था-५ । भाकार— ६३ $^{\circ}$ \times \times $^{\circ}$ । दशां—जीर्गुक्षीसा । पूर्ती । भाषां—संस्कृतं । लिपि—नागरी । विषय—उपदेश । ब्रान्य संस्था—१३१६ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—कंत्निंगुन शुक्सा १५, बुंबवार, सं० १६४६ ।

देशभए के कार क कारती संबद्ध × र देशी सामग्र १ पेग संबदा-४३ १ व्याकार-१२ × १३ १ वर्षा-कार्यो । पेर्ज (भावा-हिल्डी । सिनि-तासरी । विश्व-भवन क बारतीयी का संबद्ध । बेल्ल संबदा-११८० । रक्ताकाल- × । सिनिकाल-धामाई युवसा ८, स० १८६१ ।

१८४२ विकास विश्व वंश्व कार्यास । देसी कार्या । पत्र संस्था-१०४१ वाकार-११३"×४"। इक्ष-विश्व जीर्याकीया । पूर्व । भाषा-सम्भ्र व । लिपि-नागरी । तिष्य - विश्व । प्रत्य संस्था-२६८८ । रचनाकाल- ४ । लिपिकाल-कार्तिक कृष्णा ६, वृहस्पतिचार, वंश १५६७ ।

१८४३. मावना बसीसी --× । देवी कागज । पत्र संस्था-२ । साकार-१०३ "× ४३" । दशां-प्राचीन । पूर्ण । मावा-संस्था । निष-नागरी । विषय काग्य । प्रथ संस्था-२६५७ । रचनाकास- × । निषिकाल - × ।

१८४४. काबी कुलकरों की नामावसी— × । देवी कागज । पत्र संख्या-४ । ब्राकार-११"×५-। देवी कागज । पत्र संख्या-४ । ब्राकार-११"×५-। देवी कागज । पत्र संख्या-४ । ब्राकार-११ किप-नागरी । विषय-नामावसी । प्रत्य संख्या-२६३२ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१०४४. मुबनेश्वरी स्तोत्र—पृथ्वीधरावार्थं । देशी कागज । पत्र संस्था—३ । प्राकार—११ $\frac{3}{7}$ " \times χ^{3}_{7} " । दशा—प्रक्वी । पूर्यं । भाषा—संस्कृत । जिपि—नागरी । विध्य-स्तोत्र । प्रत्य संस्था—२५१० । रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१८४६. सूर्ति पूजा मण्डन--पं० मिहिर चना वास जैनी । देशी काना । पत्र संख्या-१३ । बाकार--दुर्ण × ४″ । दशा-सुन्दर । पूर्ण । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-तकों के भाषार पर मूर्ति पूजा का मण्डन किया गया है। बन्द सख्या-१६३७ । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १६४४ ।

१८४७, मुद्राविष -- × । देशी कागज । पत्र संस्था-१ आकार-१०" × ४६"। दशा-प्राचीन । पूर्यो । माथा-संस्कृत । लिपि - नायरी । विषय - मुद्रा पहिनने का वर्योत । ग्रन्थ संस्था --२७७७ । रचनाकास -- × । लिपिकाल -- × ।

१८४८. रचुवंश के राजाओं की मामावसी-- × । देशी कागज । पत्र संस्था-१। माकार-१० है" × ४ है" । दशा-शब्दी । पूर्व । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-इतिहास । प्रम्थ संस्था-१८५१ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१०४६. रत्नकोश-- × । देशी कागज । पत्र संक्या-१२ । बाकार-१०३"× ४३" । क्ला-बीर्श्वकीण । पूर्व । फाया-संस्कृत । लिपि-नागरी । विवय-संगीत । प्रत्य संख्या-२११२ । रवनावाल- × । लिपिकाल- × ।

१ देश. १रम वरीका- × । देशी कानज । पत्र संस्था-४ । बाकार-१०"× ४३"। व्यवस-सम्बद्धी । पूर्व । शाका-क्रिकी । लिपि-संख्यो । विषय-रत्नों की वरीका । 'सम्ब संस्था-२७४३ । व्यवसाकाल- × । विधिकाल- × । रैन्धरै. रत्न परीक्षा (एत्न वीपिका)— वण्डेस्थर सेठ। येशी काग्रज । यम संक्षाः
-४ (ब्राकार-१०" × ४३" । दशा-ब्रब्छी । पूर्णः भाषा-संस्कृतः । लिपि-नानशै । विषय-रत्न परीक्षा वर्णन । प्रत्य संख्या-२७४४ । रचनाकाल-×। लिपिकाल-वैशास शुक्ता ३, शुक्तवार, सं० १००० ।

१न५२ सीस भी चरित्र — \times । देशी कागजः । पत्र संस्था- \times । ग्राकारू-१२ $\xi'' \times \times \xi'''$ । दशा-भ्रच्छी । पूर्ण । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । विषय-चरित्र । सम्बसंस्था-२१०३। रचनाकाल- \times । लिपिकाल- \times ।

विशेष--गौतम स्वामी से राजा श्री एक ने यह चरित्र बुना है, उसी का वर्एन है।

रैन्ध्र बोडव कारस पूजा — \times । देशी कागज । पत्र सक्या म्प्ष । स्राकार — १० $''\times$ ४६''' । दशा — प्राचीन । पूर्ण । भाषा — प्राकृत व संस्कृत । लिपि – नागरी । विषय — पूजा । प्रत्य संख्या — २४१० । रचनाकाल — \times । लिपिकाल — वैशाल शुक्ता ५, सं० १७०६ ।

१०५४. स्त्री के सोलह लक्षस्य— \times । देशी कागजः। पत्र सस्या—१। धाकार—१०५ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ $^{\circ}$ 1 दशा—ग्रन्छी। पूर्ण। घाषा—संस्कृत धौर हिन्दी। लिपि—नागरी। विषय—लक्षणावली। ग्रन्थ संस्क्रा १४६३। रचनाकाल— \times । लिपिकाल— \times ।

१०५४. स्वर सन्धि--पं० योगकः । देशी कार्गजं । पत्र संस्था-१६ । ग्राकार-१०५ ४६ । दशा-प्राचीन । पूर्णं । भाषा-संस्कृत भौर हिन्दी । लिपि-नागरी । विषय-व्याकरशा । ग्रन्थ संस्था-२०६४ । रचनाकाल- × । लिपिकाल- × ।

१०६ $^{\prime\prime}$ ×४ $^{\prime\prime}$ दश-जीर्गं । पूर्णं । भाषा-संस्कृत । लिपि-नागरी । ग्रन्थ संख्या-१४४१ । रचना काल- × । लिपिकाल- × ।

१८५७. सर्वेया वसीशी--कवि जनम पोहकरस्य (कास्क्रस्य) देशी कामज । पत्र संख्या -४। आकार $-१ \circ 2^9 \times 8 \frac{1}{2}$ "। दशा--वीर्ण । पूर्यो । भाषा-हिन्दी (पद्य) । किपि--नागरी । ग्रम्थ संख्या-१४३१ । रचनाकाल-- \times । लिपिकाल-पोष-कृष्णा ८, मंगलवार, सं० १६६४ ।

१८५० संबह ब्रम्थ—संब्रित । देशी कावज । पत्र संस्था—७४ । झाकार— १९३ $^n \times 4^{\frac{1}{2}^n}$ । दशा—ंग्रच्छी । पूर्ण । भाषा—संस्कृत । किपि—नागरी । ब्रम्थ संस्था— १२८३ । रचनाकाल— \times । लिपिकाल—फाल्युन कृष्या १२, सं० १८६६ ।

१०४६. संबीप्त वेदान्त सास्त्र— परमहंस परिवासकावार्थ की अध्यक्तर ! देशी कागज । पत्र सत्त्र्या—१४ । माकार-१०६ "४४६" । दशा-कीर्शकीता व पूर्यो । भाषा-संस्कृत । विधि-नागरी । विषय-वेदान्त । ग्रन्य संख्या-१४३५ । रचनाकाल-× । विधिद्याल-× ।

१०६०. संयम वर्णन् × । देवी कावजः। एक संस्थानक व न्याकार-१२ ४ ४ १ १ १ । दशा-वीर्णक्षीताः। । पूर्णः। भावा-अपन्नं भाषीर हिस्ती । पूर्वपन्नावरीः। बन्ध संस्थाः ४ २१४६ । रवनाकाल- × । लिपकाल- × ।



रेगपेरे. इतियेश पुरासा—पूरीय अधानाति । देशी मानवा । पण सेम्बान-देशे । आकार-११वें ४४वें । तथा-मच्यी । पूर्त । जास-नापण ज्ञ । विशि-नागरी । विश्वन-सूराण । कम्म संस्था-२९४४ । पंत्रीवासाय-४८ । विशिक्षणा-वेशवार जुल्लेहरू, सुमुद्धारिकार, सं० १९४२ ।

१०६२- विकोजन क्रिका—गत्रम सर्वतिष्ठ । वैकी कारण । पत्र संस्थाः है । वाकार-६३ ×५३ । वका-वीर्ताया । पूर्व । वाका-संस्कृत । विकि-वाक्ती । विका-वर्तन । क्रम संस्था-१७३७ । रचनाकान- × । विकिन्ता-× ।

1 4.

प्रज्ञात एवं प्रवकाशित प्रन्थों की नामावली

क्रंत्रं	ग्रन्थ सूची । क्रमांक	ता प्रत्यकानाम	ग्रन्थकार	भाषा
₹.	११८६	ग्रकलंक स्तुती	बौद्धाचार्य	संस्कृत
٧.	ξ9×	श्रन्यापदेश शतक	मैथिली मधुसूदन	**
Э.	११६२	धपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	•)
٧.	७१६	ग्रंबड़ चरित्र	पं० ग्रम रसुन्दर	• 11
¥.	७१३	भ्रवन्ति सुकुमाल महामुनि वर्णन	महानन्द मु नि	हिन्दी
€.	२८६	ग्रश्विनी कुमार संहिता	प्रक्षिन ी कुमार	सस्कृत, हिम्दी
9.	इ ७ इ	धाख्य दशमी वत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
۶.	39	ध ारमानुशासन	पार्थनाग	संस्कृत
٤.	EX3	धाराधना कथाकोश	मुनि सिहनन्दि	,,
१ 0.	२४	भालाप पद्धति	कवि विष्गु	**
११.	११६६	भा शाधराष्ट्रक	शुभचन्द्रसूरि	संस्कृत
१२.	3399	इन्द्र वधुचितहुलास गारती	रुचिरंग	हिन्दी
₹₹.	२७	इष्टोप देश टीका	गौतम स्वामी	संस्कृ त
१४.	१८१४	एकविशाति स्थानक	सिंहसेन सूरि	प्राकृत, संस्कृत
१४.	£X8	काल ज्ञान	म हादेव	संस्कृत
१ ६.	३८७	काष्टांगार कथा		हिन् दी
१७.	४३६	कुमारसम्भव सटीक	टीका लालुकी	संस्कृत
१८.	८१७	खुदीप भाषा	कुवरभुवानीदास	हिन्दी
१ ٤.	६६१	ग्रह दीपक		संस्कृत
२०.	१२६७	चतुष वट महायोगिनी महास्तवन	धर्मनन्दाचार्ये	हिन्दी
२१.	₹3₹	बन्दनराजा मलय गिरी चौपई	जिनहर्षं सूरि	17
२२.	७२६	चन्द्रलेहा चरित्र	जिनहर्ष सूरि	17
₹₹.	४४७	चातुर्मास व्याल्यान पद्धति	शिवनिधान पाठक	**
२४.	335	चिन्त चमत्कार सार्थ		संस्कृत, हिन्दी
२४.	ሂሄፍ	चौबोली चतुष्पदी	जिनचनद्र सूरि	हिग्दी
२६.	१०८	चौबीस वण्डक	गजसार	प्राकृत
२७.	3 = 9	जयति उखाण (बालावबोघ)	श्रभयदेव सूरि	प्राकृत, हिन्दी
२६.	१२८०	जिनपूजा पुरन्दर विधान	ग्रमरकीति	धपश्चं श

₩०सं०	ग्रन्थ सूची क्रमांक	का ग्रन्थ की नीम	प्रमानगर	मनवा
₹€.	१२८६	जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र	सिद्धक्षेत्र दिवाकर	संस्कृत
₹0,	१२=७	जिनस्तवन मार्थ	जवानन्द सूरि	12
₹१.	११२	जीव तस्व प्रदीप	केशकाचार्य	प्राकृत, संस्कृत
₹२.	७७३	ज्योतिष चक	हेमप्रभ सूरि	संस्कृत
₹₹.	१२८	तत्व आन तरंगिणी	मुमुझु भट्टारक ज्ञानभूषरग	संस्कृत
₹४.	६६=	ज्ञान हीमची	कवि जगरूप	हिन्दी
₹¥.	६६२	ताजिकपद्मकोश		संस्कृत
₹€.	५१२	त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपई	प ० जिनमति	हिन्दी
₹७.	१ ४३	दश भ्रछेग	فنعابهم	हिन्दी, ग्रंपभं
₹ 55	४१०	द्वादश चकी कथा	ब्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत
₹€.	१६८	धर्म सवाद	_	11
80.	५६५	नम्दे श्वर काव्य	मृगेन्द्र	17
४१.	१६८१	न दीश्यर पक्ति विधान कथा	शिववर्मा	17
४२.	१७२	नयचक बालावबोध	सदानम्द	हिन्दी
४३.	७५०	नागकुमारी चरित्र	पु रुप द<i>न्द्र</i>	ध्रपञ् ष
88.	१३१६	नारायशा पृच्छा जयमाल	***	
४५.	१३६१	पच परमेव्डी स्तोत्र	जिनम्रम सूरि	संस्कृत
४६.	११५५	पद्धनाभ पुराण	भ० सकलकीति	12
४७.	१३२४	पद्मावती पूजन	गोविन्द स्वामी	17
४ =,	१६५	प्रथम बलाण		हिन्दी
٧٤.	७६५	प्रशुप्त सिंग	महाकवि सिंह	श्र पश्रं श
¥0. 1	६२४	पार्श्वनायजी यो देशान्तरी छ	द कविराज	हिन्दी
ે પ્રશ્	६२५	पिगल छंद	पहुष सहाय	भ्र पभ्रं श
४२.	६२७	चिमलक्य दीपक	जयकिशन	हिन्दी
ሂ ፟.	?	विगल भाषा	पं० सुखदेव मिश्र	17
ሂሄ.	१५३७	पिण्ड विद्युद्धावचूरी	जिसक्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत
44.	४२६	प्रियमेलक कथा	बहावेसीकास	हिन्दी
¥ Ę.	१३६४	बाला/त्रिषुरा पढित	श्रीराम	संस्कृत
4 0.	४६०	बुद्धि रसामण	पं ♦ महिराज	सपन्नं ग, हिन
¥=.	४३७	बाहुबली पाथडी	****	झप∙, सं•
¥€.	888	भरत बाहुबस्रो वर्णन	शीशराज	हिन्दी

₩oĦo	वस्य सूर्य		ग्रन्थकार	मापा
	941 0			
Ęo.	9 55	भविष्यदत्त चरित्र	पं० धनपाल	श्रपभ्र ं श
ξ ξ.	२ १ २	भव्य मार्गशा		हिन्दी
६२ .	१३८७	भारती स्तोत्र	शंकराचार्यं	संस्कृत
₹₹.	3 \$ \$	भूषरा बावनी	द्वारकादास पाट राी	हिन्दी
ÉR	६१३	मंगल कलश चौपई	लक्ष्मी हर्ष	11
ĘX.	¥€=	मयुराष्टक	कवि मयुर	संस्कृत
६६.	१३६३	महर्षि स्तवन	पं० ग्रामाघर	**
Ę (9.	४४६	मूलसंघाग्रगी	रत्नकीर्ति	**
६=	Ęοχ	मेचदूत सटीक	लक्ष्मी निवास	"
£ 8.	३१४	योग शतक	बिदग्ध नैव	11
60	१५४५	योग ज्ञान		,,
७१.	5 20	रत्न ज् डरा स	यशः कीर्ति	हिन्दी
७ २.	१८५१	रत्न परीक्षा	चण्डेक्वर सेठ	संस्कृत
9 3.	३७७६	रत्नसार	पं० जीवंधर	10
68.	१६६७	राई प्रकरण विधि	-	हिन्दी
٧٧.	६२०	रामाज्ञा	तु लसीदास	हिन्दी
<i>७</i> ٤.	१४०२	रामचन्द्र स्तवन	सनत्कुमार	संस्कृत
66.	<i>७७७</i>	रात्रि भोजन दोष विचार	धर्मसमुद्रवाचक	हिन्दी
64.	8 5 5 6	रुकमणी वृत विधान कथा	विशालकीर्ति 	मराठी
98.	६२१	लधुस्तवन सटीक	लबु पण्डित	संस्कृत
50.	३२४	लंघन पध्य निर्णय	वाचक दीपचन्द्र	12
۶ ۲.	४६२	लिध विचान वत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी
۶ ۲.	६२२	लक्ष्मी-सरस्वती संवाद	श्रीभूषरा	संस्कृत
دو.	३२६	बनस्पति सत्तरी सार्थ	 मुनिचन्द सूरि	प्राकृत, संस्कृत
۳ ٧.	१४१७	वद्धंभान विनस्तवन सटीक	पं० कनककुशलगिख्	संस्कृत
εĶ.	१०४४	वर्षं कुण्डली विचार		73
⊏ ₹.	६२४	बसुधारा महाविद्या	नन्दन	संस्कृत
40.	१४६६	बास्य प्रकास सूत्र सटीक	दामोवर	11
55,	२३ १	बाद पण्डीसी	बह्य गुलाल	 हिन्दी
58.	- 	विक्रमसेन चौपई	मानसागर	11
£0.	१०४६	विचित्रमित् शंक		
~~ .	1-04	A LANGE OF THE PARTY OF THE PAR		17

٤٦.		•		
- ,,	8 838	विमलनाथ स्तवन	विनीत सागर	हिन्दी
€₹.	१०५१	विवाहपटल सार्थ		संस्कृत, हिन्दी
٤٧.	१७७=	विवेक विलास	जिनदत्त सूरि	संस्कृत
ξĶ	१४३७	विषापहार विलाप स्तवन	वादिचन्द्र	*1
१६	६३३	वैराग्य माला	सहल	9)
.03	१४४६	शनिश्चर स्तोत्र	दमरथ	**
€ = .	६२६	वृन्दावन काव्य	कवि माना	11
88.	४६५	श्रावक चूल क या		**
800.	५११	क्षुल्लककुमार (राजऋषिवर	सुन्दर	हिन्दी
		चौपई)		
१०१.	२ द १	श्रे एिक गीतम सवाद		सस्कृत
१०२	१६६६	श्रुतस्तपन विधि	_	11
₹0₹.	६५१	सप्त व्यसन समुच्चय	पं० भीमसेन	10
१०४.	አድ٥	सम्यक्तव	कवि यशसेन	**
१०५.	१४४१	समवशरण स्तोत्र	धनदेव	11
१०६.	१८६०	संयम वर्णन		ग्रपभ्र ग, हिन्दी
१०७.	१४५६	सरस् वती स् तुति	. बनारसीदास	हिन्दी
१०५.	१०६३	सबत्धर फल	_	संस्कृत
१०६.	१ ४७६	साधु वन्दना	पार्श्व चन्द्र	,,
११०.	१४७=	साधु वन्दना	समयसुन्दर गणा	हिन्दी
१११.	२६६	सामायिक सटीक	पाण्डे जयवंत	संस्कृत, हिन्दीं
११२	\$3 ¥ \$	सिडचक पूजा	श्रुतसागर	सं म्कृत
११३.	३४१	सिन्दुरप्रकरण	सोमप्रभावार्य	n
868	ሄ ሩሂ	सिहल सुत चतुष्पदी	समयसुन्दर	हिन्दी
११५.	460	सुगन्धदशमी कथा	सुगीलदेव	भ पश्च [ं] श
११६.	46 6	सुगन्बदमामी कथा	ब्रह्म जिनदास	संस्कृत
११७.	२७०	सुमदानो चोढालीयो	कवि मानसागर	हिन्दी

क्र०सं०	ग्रन्थ सूची व क्रमांक	हा ग्रन्थकानस्य	प्रत्यकार	माधा
११८.	२७१	सुभाषित कोश	हरि	संस्कृत
११६.	ረ ጸጸ	सुरपति कुमार चतुष्पदि	पं० मानसागर	हिन्दी
१२०.	\$ \$ 8	स्यूलभद्रमुनि गीत	नथमल	11
१२१.	¥00	हरिश्चन्द्र चौपई	ब्रह्मवे ग्गीदाम	,,
१२२	X0E	हन्सवत्स कथा		,,
१२३.	ሂ∘።	हन्सराव बच्छराज चौपई	भावहर्ष	,,,
१२४.	४०२	हेम कथा	रक्षामित्	संस्कृत श्रीर हिन्दी

अनुक्रमिका अकारादि स्वर

प्रंथ का नाम	तेसक	माचा	पृष्ठ सं स्था	ग्रंच सूची कमांक
	(स))		
ग्रकलंक स्तुति	बोद्धाचार्यं	संस्कृत	१३१	११८६
ग्रक्षय निषि दत-विधान		11	१ = 0	१६७२
ग्रग्नि स्तोत्र	-	,,	4 # 8	११८७
धर्घकांड यंत्र	-	प्राकृत-संस् कृत	१६३	१५०६
भ्रद्वारह नाता को व्योरो		हिन्दी	१६५	१८१२
म्रदाई द्वीप चित्र		-	₹3	८६४
भ्रढाई द्वीप चित्र	_	-	₹3	= ६ ६
भ्रदाई द्वीप चित्र	_		€3	= ६७
धहाई द्वीप पूजन भाषा	डालूराम	हिन्दी	१३१	११८८
भ्रदाई द्वीप पूजा		*1	१३१	११८९
ध रणुवत रत्नदीप	साहल सुबलरकगा	भ पभ्र ंश	१८०	१६६६
ध्रध्यात्म तरंगिसी	सोमदेव शर्मा	संस्कृत	१०३	383
धनन्तवत कथा	पद्मनन्दि	"	130	३६६
ग्रनन्तवत कथा	बह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३६८
ग्रनन्त विघान कथा	-	धपञ्च श	१ 50	१६७०
श्रमपूर्णास्तोत्र	शकराचार्य	संस्कृत	१३ १	११६०
ग्रन्यापदे श शतक	मैथिली मधुसूदन	2)	ξ×	ሂየ३
भ्रनादि मूल मंत्र	_	प्राकृ त	६३९	१५०८
ध्र निट का रिका	-	सं स्कृत	१७०	१५६१
ग्रनिट कारिका सा र्थ	-	"	०७१	१५६७
धनिट सेट कारकष्टी	-	,,	१७०	१५६८
धनित्य निरूपण चतुर्विः	ाति	,,	¥۶	४१७
ग्र नेकार्थं ध्वनि मंजरी	कवि सूद	*1	६=	६७१
ग्रनेकार्थ ध्वनि मंजरी	-	21	६ =	६७२
भ्रतेकार्थं नाममाला	हेम चन्द्राचार्यं	,,	६ ८	६७४
भ्रनेकार्थ मंजरी	नम्ददास	हिन्दी	६८	६६६
भ्रपामार्ग स्तोत्र	गोविन्द	संस्कृत	१ ३१	११६२
अभक्ष वर्णन	-	हिन्दी	१	१
ग्रभिषान चिन्तामणि	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	\$ 5	40
ग्रमर कोश	धम रसिंह	31	६८	६७७
ग्रमरकोश दृत्ति	-	**	48	६ = १
"	भट्टोपाध्याय सुनुस्तिगयसूरि	3 2	६८	६ =२

ग्रम्थ नाम	नेसक	मावा	पृष्ठ संस्था	शन्य सूची क्यांक
मर्जू न चौपाई	समयसुन्दर	हिन्दी	७२	७१२
धरहनाथ चित्र	_	` -	£3	= \$ =
मरिष्ट फल	_	संस्कृत	₹०३	8 X o
श्रवन्ति सुकुमाल कथा	हस्ती सूरि	हिन्दी	३७	3₽€
	ने वर्णन महानन्द मुनि	71	७२	७१३
प्रवयड़ केवली	_	संस्कृत	१०३	६५१
भ्रव्यय तथा उपसर्गार्थ		,,	१७०	१४६६
भ्रव्यय दीपिका	_	**	१७०	१५७०
भ्रव्यय दीपिका वृत्ति	-	3)	१७१	१५७२
म्रश्विनी कुमार संहिता	श्रक्षिनी कुमार	n	38	३=६
ग्रशोक सप्तमी कथा	-	"	₹७	०थ६
ग्रष्टक सटीक	शुभवन्द्राचार्य	प्राकृत-संस्कृत	१८०	१६७१
भ्रष्ट नायिका लक्ष्मग	-	सं स्कृ त	५६	५१ ६
भ्रष्ट दल पूजा भौर वोड	ৰে	हिन्दी	१३१	११६३
दल पूजा				
प्रष्ट सहस्त्री	विद्यानन्दि	संस्कृत	११७	3309
भ्रष्टाह्मिका पूजा	भ० शु भचन्द्राचार्य	,,	१३२	११ह५
ग्रस्टाह्निका व्रत कथा		11	३७	३७१
प्र ष्टोत्तरी शतक	पं० भगवती दास	हिन्दी	8	२
ग्रंक गर्भ खण्डार चक	देव नन्दि	संस्कृत	¥	४२
"	-	1,	१ ३२	2319
श्रंक प्रमास	-	प्राकृत-हिन्दी	¥	४६
भ्रंग फूरकरा शास्त्र	-	हिन्दी	803	६५२
भ्रंजन निदान सटीक	भग्निवेश	संस्कृत-हिन्दी	35	२६०
ग्रंबड़ चरित्र	पं० ग्रमर सुन्दर (ग्रा	संस्कृत ()	७२	७१६
भाकाश पंचमी व्रत कथा	बह्म जिनदास	हिन्दी	३७	३७२
धास्तय दशमी वृत कथा	-	21	७ ६	₹eş
श्राख्या दन्तवाद	_	संस्कृत	११७	8800
भागम	_	प्राकृत-हिन्दी	9	ą
धा चारसार	वीर नन्दि	सं स्कृत	१८६	१७१०
माठ कर्म प्रकृति विचार	_	हिन्दी	8	×
भात्म मीमांसा वचनिका	समन्तभद्र	संस्कृत-हिन्दी	8	¥
म्रात्म मीमांसा वचनिका	जयचन्द खाबहा	39	8	¥

शंव गास	संसर	भाषा	पृष्ठ सं०	प्र'थ सूची कमक
बात्म सम्बोध काव्य	रयबू	झपञ्जंश	8	Ę
घात्म सम्बोध काव्य	-	24	ξ¥	४१८
भात्म सम्बोध पंचासिका	-	**	χą	४२०
ग्र ात्मानुशासन	गु ण भद्राचार्य	संस्कृत	₹	१४
धारमानुगा सन	पा श्वंनाग	संस्कृत	\$	38
भ्रात्मानुशासन सटीक	प० प्रभाचन्द्राचार्य	93	२	8 =
भ्रात्मानुशासन सटीक	-	हिन्दी	२	१७
मातुर पचलागा	-	संस्कृत	१६८	१८१३
भ्रादित्यवार कथा	भानुकीर्ति	हिम्दी	३८	メッチ
ग्राप्त मीमासा	समन्तभद्राचार्व	सस्कृत	११७	१ १०१
ग्रायुर्वेद संग्रहीत ग्रंथ		संस्कृत-हिन्दी	38	₹€\$
भ्रार्थ वसुघारा घारग् री नाम महाविद्या	श्री नन्दन	संस्कृत	χş	५२१
ग्राराघनाकथा कोश	बहा नेमियत	"	₹≒	३७६
ग्राराघना कथा कोश	मुनि सिहनन्दि	**	१०३	£ x 3
भाराधनासार	मित्रसावर	प्राकृत-संस्कृत और		२०
भाराधना सार	पं० देवसेन	সা কূর	3	२ २
म्रालाप पद्धति	कवि विच्यप्	संस्कृत	ą	78
आलाप पद्धति	पं० देवसेन	•;	११७	£099
भालो च ना पाठ	जोहरी लाल	हिन्दी	3	२४
भागावरा ष्टक	गुभच न्द्र सूरि	संस्कृत	१३२	११६६
पासव विचि	-	हिन्दी	₹€	२६२
	(電十載)			
इन्द्रध्वज पूजन	म० विश्वभूषरा	संस्कृत	१३२	११६८
इन्द्रध्वज पूजा	_	17	१३२	११६७
इन्द्र वधुषित हुलास मारती	इचिरंग	हिन्दी	१३२	3388
इन्द्र स्तुति	-	ग्रपञ्च श	१३२	१२००
इन्द्राक्षि जगिव्यन्तामिण कवच	-	संस्कृत	१३२	१२०१
इन्द्राक्ष नित्य पूजा	-	13	१३२	१२०३
इन्द्राक्षि सहस्त्र नाम स्तक्त	-	#;	१३२	१२०३
इस्टोपदेश	पूज्यपाद गौतम स्वार	री "	Ę	२७
इष्टोपदेश	पूज्यपाद	13	ጸ	₹€

ग्रन्थ नाम	लेखक	माषा	पृष्ठ सस्था	धन्य सूची क्रमांक
इष्टोपदेश टीका	पं० ग्राशाचर	संस्कृत	γ	३ २
् इश्वर कार्तिकेय संवाद एवं रूद्राक्ष		•		
उत्पत्ति, घारण मंत्र विधान		,,	ሂሄ	४२३
ईम्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	ग्रिभिनव गुप्ताचा		११७	११०८
	(उ)			
उच्छिष्ट गरा पति पद ति	-	संस्कृत	१६३	१५१०
उत्तम चरित्र	-	,,	७२	७१४
उत्तर पुराण	पुष्पदन्त	श्र पभ्रं श	१२४	११४२
उ त्त र पुराण सटीक	-	अपभ्रं म, सस्कृत	१२४	१ १ ४३
उत्तर पुराण सटीक	प्रमाचन्द्राचार्य	संस्कृत	१२४	११४५
उत्तराध्ययन	_	प्राकृत	X	३ ४
उदय उदीरण त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	,,	8	३६
उपदेश माला	धर्मदास गरिए	ग्रपभ्रं श	१८६	१७१४
उपदेश रत्नमाला	सकलभूषरा	संस्कृ त	१८६	१७१५
उनसर्ग शब्द	-	1)	१७१	१५७३
उपासकाचार	पूज्यपाद	,,	१८७	१७१७
उपासकाभ्ययन	वसुनन्दि	संस्कृत	१८७	१७१८
	(ए—ऐ)			
एक गीत	श्रीमति कीर्तिवाचक	हिन्दी	ХX	५२४
एक पद	रंगलाल	,,	३८	३७८
एक पद	गुसाब चन्द	1,	₹≒	७७इ
एक व्यावणी	-	•	X	४०
एकलीकरण विधान		संस्कृत	१८०	१६७३
एक विशंति स्थानक	सिद्धप्तेन सूरि ।	गाकृत <mark>ग्र</mark> ीर हिन्दी	१६८	१ 5१४
एकाक्षर नाममाला	पं ० वर रुचि	संस्कृत	ĘE	६८४
एकाक्षरी नाममाला	प्राक्सूरि	**	६६	६ ८६
एकीभाव व कल्यागा मन्दिर स्तोत्र	•	**	१३३	१२१४
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज सूरि	1)	१३२	१२०४
एकीभाव स्तोत्र सार्थ	-	10	१३३	१२१ १
एकीभाव स्तोत्र टीका	नागचन्द्र सूरि	19	१३३	१२१२

ग्रन्थ नाम	लेखक	माषा	पृष्ठ संस्या	प्रस्य सूची
And the state of t		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		क्रमांक
ऋषभदास विनती	(死)	हिन्दी	१९=	१८१५
ऋषभदेव स्तवन	_	संस् कृ त	6 # #	१ २१६
ऋषभनाय चरित्र	भ० सकलकीर्ति		५२ ७२	७१५
ऋषि मण्डल व पाव्यंनाय	4. 444444	3,	٠,	0,1
चिन्तामणी बड़ा यन्त्र	_		१६३	१५१३
_	गुरानन्दि	*,	१२२ १३३	१२ १ ७
ऋषि मण्डल पूजा	301114	,,	(1 	१५१२
ऋषि मण्डल यन्त्र	_	12		
ऋषि मण्डल यन्त्र	•••	11	१६३	१५११
ऋषि मण्डल स्तोत्र ऋषि मण्डल स्तोत्र सार्थ	— गौतम स्वामी	., संस्कृत—हिन्दी	१३४ १३४	१२ २ ० १२२३
1814 4.04 ((II) (II)	(有)	4/8/4 16-41	170	1114
कथाभीश	क्रह्म नेमिदत्त	संस्कृत	३८	३७९
कथा प्रबन्ध	प्रधाचन्द्र प्रभाचन्द्र		₹7 ३ ८	२०५ ३८३
कथा संग्रह	7-11-4-8	,, भ्रषभंगव संस्कृत		२-२ ३ ५४
कथा संग्रह		संस्कृत		२ ०० ३८ ५
कनकावली व शील कथा	_	445.0	35 20	۲۳ ٩. ३ ८६
		" धपभ्र ंश	3 €	
करकण्डुचरित्र कर्मकाण्ड सटीक	कनकामर वं - चेन्यरच्य		७ २ ''	७१७
कर्मकाण्ड सटीक	पं० हे मरा ज —	हिन्दी	ų ų	४७ ४ ५
कर्मदहन पूजा	_	'' संस्कृत, हिन्दी	१३४	१२२४
कर्म दहन मण्डल यनत्र	***	संस्कृत	१६३	१५१४
कर्मप्रकृति	सि० च० नेमिचग्द्र	प्राकृत	X	χo
कर्म प्रकृति सार्थ	_	प्राकृत – संस्कृ त	Ę	X 5
कर्म प्रकृति सूत्र भाषा	_	हिन्दी	Ę	ξ¥
कल्यारा पंचका रोपण विधान	-	संस्कृत	१८०	१६७४
कल्यागा मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	11	१३४	१२२४
कल्यासा मन्दिर स्तोत्र (सटीक)		,,	१३४	१२४०
कल्याए। मन्दिर स्तोत्र टीका	भं० हर्षकीति		१३५	१२४१
कल्यासा मन्दिर स्तोत्र सार्थ	64	"	१३६	१२४२
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	- सिद्धसेनाचार्य	"	१३ ६	१२४७
कल्याण मन्दिर स्तोत्र सार्थ	हुकमचन्द	'' संस्कृत—हिन्दी	१३६	१२४¤
कल्यास माना	8 111 41 4	संस्कृत	१ 50	१६७५
Treate and and	-	// S///	9 # 2	9090

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संस्था ग्रम्य सूची	
				क्रमांक
काठिन्य श्लोक	***	संस्कृत	Xε	४२४
कातन्त्र रूपमाला	शिव वर्मा	,,	१७१	१५७४
कातन्त्र रूपमाला वृत्ति	भावसेन	"	१७१	१५७५
कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्ति केय	प्राकृ त	૭	Ę
कारक परीक्षा		संस्कृत	१७१	१५७८
कारक विवर ए	-	,,	१७१	१५७९
काल ज्ञान	-	1)	२९	२ ९५
काल ज्ञान	महादेव	,,	\$0 \$	९५४
कालज्ञान	लक्ष्मी वरूलभगणि	हिन्दी	१०३	६५६
काव्य टिप्पण		संस्कृत	૭	33
काष्टागांर कया	_	हिन्दी	३९	३८७
किया कलाप	विजयानन्द	संस्कृत	१७१	१५८०
किया कलाप टीका	प्रभाचन्द्र	,;	હ	90
क्रियाकलाप सटीक	पं० माशाधर	"	१८८	१७२३
कियाकलाप सटीक	प्रभाचन्द्र	,,	१८८	१७२४
कियाको श	किशन सिंह	हिन्दी	७,७०,१८८	७१,६९०
				१७२५
किया गुप्त पद्य	-	संस्कृत	ሂሄ	५२६
किराता जूँ नीय	भारवि	"	५४	५२७
किरातार्ज्नीय सटीक	मल्लिना थ सू रि	,,	**	४३२
किरातार्जूनीय सटीक	एकनाथ भट्ट	1)	XX	¥ ¥ ¥
किया विधि मन्त्र	-	,,	१ ८८	१७२७
कुश्धनाथ चित्र		_	९ ३	८ ६९
कुमार-सम्भव	कालिदास	37	ሂሂ	५३४
कुमार सम्भव सटीक	पं० लालु	"	ሂሂ	प्र३६
कुल ध्वत चीपइ	पं० जयसर	हिन्दी	७२	७१५
केशव बावनी	केशवदास	,,	ХX	५३७
कोकसार	भा नन्द	,,	१६८	१⊏१६
	(概)			
खण्ड प्रशस्ति	_	संस्कृत	१९=	१८१७
खण्ड प्रशस्ति		,,	५५	४३८
खंघक मुनि की सज्भाय		हिन्दी	१९८	१८ १ ९
9				

गराघर बलय	ग्रन्थ नाम	तेसक	माचा	वृष्ठ संस्था	प्रम्य सूची क्रमांक
गरणघर बलय		(ग)		
गया पद्धति — ,, १६४ १ गया पद्धति — ,, १९८ १ गया पद्धति — ,, १९८ १ गया पद्धित — , १३ गया चित्र — , १३ गयाण व सरस्वती चित्र — , १३ गयाण व सरस्वती चित्र — , १३ गयाण व सरस्वती चित्र — , १३६ १ गयाण व सरस्वती चित्र — , १३६ १ गयाण व सरस्वती चित्र — , १३६ १ गयाण व्याप पत्र विचार — , १८४ १ गरहोपनिषद् हिरहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरह प्राण वेदव्यास ,, १२४ १ ग्रह दीपक — ,, १०४ गरह शानित विचि — ,, १०४ गरह शानित विचि — ,, १०४ गरह शानित विचान पं० प्राणाचर ,, १०४ गरह शामाचर	गजसिंह कुमार चौपई	ऋषि देवीचन्य	हिन्दी	१९५	१८१८
गद्य पद्धति — ,, १९८ १ गरोण वित्र — — ९३ गरोण व सरस्वती चित्र — — ९३ गरीण त सरस्वती चित्र — — ९३ गरिणताम माला हिरदित्त संस्कृत ७०,१०३ ६९१, गर्भ खण्डार चक्र देवनन्दि ,, १३६ १ गरिणताम प्राण — हिन्दी १०३ गरहोपनिषद् हिरहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरह पराण वेदव्यास ,, १२४ १ ग्रह दिपक — ,, १०४ ग्रह पराण वेदव्यास ,, १०४ ग्रह प्रान्ति विधि — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधि — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० माणाघर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० माणाघर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० माणाघर ,, १०४ ग्राया यन्त्र — प्राकृत १६४ ११ ग्राया यन्त्र — प्राकृत १६४ ११ ग्राया वर्च ए० जयसर हिन्दी ७२ ग्राया वर्च — ग्राकृत मौर हिन्दी ७२ ग्राया स्थान कथा काह्ना छावड़ा हिन्दी ७ ग्राय स्थान वर्च सार्थ रत्नोखर सूरि संस्कृत ७ ग्राय स्थान वर्च सार्थ — प्राकृत मौर हिन्दी ७ ग्राय स्थान वर्च सार्थ परन्तोखर सूरि संस्कृत ७ ग्राय स्थान वर्च सार्थ — प्राकृत–हिन्दी १६४ ११ ग्राय स्थान वर्च सार्थ — प्राकृत–हिन्दी १६४ ११ ग्राय स्थान वर्च सार्थ — संस्कृत ७ ग्राय स्थान वर्च सार्थ — संस्कृत ७	गग्राचर वलय	-	संस्कृत	१३६	१२४९
गद्य पद्धति — ,, १९८ १ गर्गेश चित्र — — ९३ गर्गेश चित्र — — ९३ गर्गेश व सरस्वती चित्र — — ९३ गर्गेश वण्डार चक देवनन्दि ,, १३६ १ गर्गेश प्रमाण — हिन्दी १०४ ग्रह दीपक — ,, १०४ ग्रह दीपक — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधि — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधि — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधा — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधा — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० माणावर ,, १०४ ग्रा गाया यन्त्र — प्राकृत १६४ १। ग्रा सम्बट्य चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ ग्रा सम्बट्य चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ ग्रा स्थान कथा वामोदर संस्कृत २६ ग्रा स्थान कथा वामोदर संस्कृत २६ ग्रा स्थान चर्चा सार्थ — प्राकृत मौर हिन्दी ७ ग्रा स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत मौर हिन्दी ७ ग्रा स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत निन्दी १६४ १। ग्रा स्थान वर्चा सार्थ — प्राकृत–हिन्दी १६४ १।	गराघर वलय यन्त्र			१६४	१५१६
गरोण व सरस्वती चित्र ९३ गरिएतनाम माला हिरदत्त संस्कृत ७०,१०३ ६९१, गर्भ खण्डार चक्र देवनन्दि ,, १३६ १ गर्भ होपनिषद् हिरहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गर्भ इंपराण वेदव्यास ,, १२४ १ ग्रह हिष्ट वर्णुन - ,, १०४ ग्रह दीपक - ,, १०४ ग्रह दीपक - ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० भागावर ,, १०४ ग्रह शास्त्र का चित्र - , १६४ १ ग्रह शास्त्र (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत १६४ ग्रह सम्बद्ध पं० जयसर हिन्दी ७२ ग्रह स्थान कथा वामोदर संस्कृत १६ ग्रह स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ ग्रह स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ ग्रह स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - संस्कृत ७ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - संस्कृत १६८ ११	गद्य पद्धति	-		१ ९=	१८२०
गरोण व सरस्वती चित्र ९३ गरिएतनाम माला हिरदत्त संस्कृत ७०,१०३ ६९१, गर्भ खण्डार चक्र देवनन्दि ,, १३६ १ गर्भ होपनिषद् हिरहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गर्भ इंपराण वेदव्यास ,, १२४ १ ग्रह हिष्ट वर्णुन - ,, १०४ ग्रह दीपक - ,, १०४ ग्रह दीपक - ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं० भागावर ,, १०४ ग्रह शास्त्र का चित्र - , १६४ १ ग्रह शास्त्र (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत १६४ ग्रह सम्बद्ध पं० जयसर हिन्दी ७२ ग्रह स्थान कथा वामोदर संस्कृत १६ ग्रह स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ ग्रह स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ ग्रह स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - संस्कृत ७ ग्रह स्थान वर्च सार्थ - संस्कृत १६८ ११	गराोश चित्र	_	***	93	500
गिर्शातनाम माला हिरदत्त संस्कृत ७०,१०३ ६९१, गर्भ खण्डार चक देवनन्दि ,, १३६ १ गर्भ खण्डार चक देवनन्दि ,, १३६ १ गर्भ खण्डार प्रक देवनन्दि ,, १३६ १ गर्भ खण्डार प्रक दिवनार		_			५७२
गर्भ खण्डार चक देवनन्दि ,, १३६ १ गार्भिण्यादि प्रथन विचार — हिन्दी १०३ गरुडोपनिषद् हरिहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरुडोपनिषद् हरिहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरुड परिंद वर्गुन — ,, १०४ पह दिपक — ,, १०४ पह प्रान्ति विधि — ,, १०४ पह प्रान्ति विधान पं॰ प्राणाघर ,, १०४ पहापानित विधान पं॰ प्राणाघर ,, १०४ पहापान्ति विधान पं॰ प्राणाघर ,, १०४ पाया यन्त्र — प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र — पं॰ जयसर हिन्दी ७२ गायक का चित्र पं॰ जयसर हिन्दी ७२ गुस्पान्त विधान — ,, ४६ पुर्मान्द्र पं॰ जयसर हिन्दी ७२ पुर्मा स्थान क्या काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुम्म स्थान क्या काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुम्म स्थान चर्चा सार्थ — प्राकृत सौर हिन्दी ७ गुम्म स्थान चर्चा सार्थ	_	हरिदस	संस्कृत		६९१,९५७
गार्भिण्यादि प्रश्न विचार — हिन्दी १०३ गरुहोपनिषद् हिरहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरुह पुराग् वेदव्यास ,,, १२४ १ ग्रुह दिष्ट वर्गुन — ,, १०४ ग्रुह दीपक — ,, १०४ ग्रुह शान्ति विधि — ,, १०४ ग्रुह शान्ति विधान पं० झाशाधर ,, १०४ ग्रुह शान्ति विधान पं० झाशाधर ,, १०४ ग्रुह शान्ति विधान — ,, १०४ ग्रुह शान्ति विधान पं० झाशाधर ,, १०४ गाया यन्त्र — प्राकृत १६४ १। गायक का चित्र — , प्रकृत १६४ १। गायक का चित्र — ,, ग्रुह्म संस्कृत प्रथ्म प्रमुख्य दिल्दी ७२ ग्रुह्म संस्कृत ए० जयसर हिन्दी ७२ ग्रुह्म संस्कृत २६ ग्रुह्म स्थान कथा काहृना छावड़ा हिन्दी ७ ग्रुह्म स्थान चर्चा सार्थ रत्नोखर सूरि संस्कृत ७ ग्रुह्म स्थान चर्चा सार्थ — प्राकृत हिन्दी १६४ १। ग्रुह्म स्थान वर्चा सार्थ — संस्कृत ७ ग्रुह्म स्थान वर्चा सार्थ — संस्कृत ७ ग्रुह्म स्थान वर्चा सार्थ — संस्कृत ७	_				१२५१
गरुहोपनिषद् हिरिहर ब्रह्म संस्कृत ११७ १ गरूड पुराग् वेदन्यास ,, १२४ १ ग्रह दिष्ट वर्गुन — ,, १०४ ग्रह दीपक — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधि — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं॰ भाशाधर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं॰ भाशाधर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं॰ भाशाधर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं॰ भाशाधर ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान चर्चा सार्थ संस्कृत २६ ग्रह शान्ति विधान चर्चा सार्थ संस्कृत ७ ग्रह शान्ति विधान चर्चा सार्थ — ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान चर्चा सार्थ — ,, १००० विधान विधान संस्कृत ७ ग्रह शान्ति विधान संस्कृत ७ ग्रह शान्ति विधान संस्कृत ७ ग्रह शान्ति विधान संस्कृत ७ ग्रह स्थान वर्चा सार्थ — संस्कृत १९८ १९८ ग्रह स्थान व्यान वर्चा सार्थ — संस्कृत १८८ १९८ ग्रह स्थान वर्चा सार्थ — संस्कृत १९८		-			९४८
गरूड़ पुरासा वेदव्यास ,,, १२४ १ ग्रह दिघ्ट वर्स्मुन		हरिहर ब्रह्म			११०९
पृह दिष्ट वर्गुन - ,, १०४ प्रह दीपक - ,, १०४ प्रह शान्ति विधि - ,, १०४ प्रह शान्ति विधान पं० भाशाधर ,, १०४ प्रहायु प्रमारा - ,, १०४ गाथा यन्त्र - प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र - प० जयदेव हिन्दी, संस्कृत १६४ गुज सन्घटप चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुरापरत माला वामोदर संस्कृत २६ गुरापरत माला वामोदर संस्कृत २६ गुराप स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुरा स्थान कथी - प्राकृत भौर हिन्दी ७ गुरा स्थान चर्चा सार्थ रत्नवेखर सूरि संस्कृत ७ गुरा स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत निर्न्दी १६४ ११ गुरा स्थान वर्चा सार्थ - प्राकृत निर्न्दी १६४ ११ गुरा स्थान वर्चा सार्थ - संस्कृत ७ गुरा स्थान वर्चा सार्थ - संस्कृत ७ गुरा स्थान वर्चा सार्थ - संस्कृत ७	*				११४६
ग्रह दीपक - ,, १०४ ग्रह शान्ति विधि - ,, १०४ ग्रह शान्ति विधान पं॰ प्राशाघर ,, १०४ ग्रहायु प्रमारा - ,, १०४ गाथा यन्त्र - प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र - प० प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र - प० प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र - प० प्राकृत १६४ ११ गुज सन्घटप चरित्र पं॰ जयसर हिन्दी ७२ गुराघर दाल - ,, ११५ ११ गुराप स्थान कथा वामोदर संस्कृत २६ गुराप स्थान कथा काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुराप स्थान कथा काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुराप स्थान चर्चा सार्थ रत्नघेलर सूरि संस्कृत ७ गुराप स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुराप स्थान वर्चा सार्थ - संस्कृत ७ गुराप स्थान वर्चा सार्थ - संस्कृत ११८ ११		~-			९६०
प्रह शान्ति विधि — ,,, १०४ प्रह शान्ति विधान पं० प्राशाघर ,, १०४ प्रहायु प्रमाण — ,, १०४ गाथा यन्त्र — प्राकृत १६४ १९ गायक का चित्र — प्राकृत १६४ १९ गायक का चित्र — , १३ गीत गोविन्द (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत १६१ गुज सम्घटप चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुग्णघर ढाल — ,, १६६ १९ गुग्णघर ढाल — ,, १६६ १९ गुग्णचर काल — ,, १६६ १९ गुग्णच्यान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्णच्यान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्णच्यान चर्चा सार्थ प्रत्नेषद सूरि संस्कृत ७ गुग्णच्यान चर्चा सार्थ — प्राकृत—हिन्दी १६४ १९ गुग्णच्यान वर्ष — प्राकृत—हिन्दी १६४ १९ गुग्णच्यान वर्ष — संस्कृत ७ गुग्णच्यान वर्ष पर्ताविद सूरि संस्कृत ७	ग्रह दीपक	_		१०४	९६१
प्रह शान्ति विधान पं श्राशाधर ,, १०४ प्रहायु प्रमाण — ,, १०४ गाथा यन्त्र — प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र — पर्वेष हिन्दी, संस्कृत १६४ गुज सन्धट विदित्र पं जयसर हिन्दी ७२ गुग् सन्धट विदित्र पं जयसर हिन्दी ७२ गुग् स्थान कथा वामोदर संस्कृत २६ गुग् स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुग् स्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुग् स्थान कथी — प्राकृत भौर हिन्दी ७ गुग् स्थान चर्च सार्थ रत्नेशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग् स्थान चर्च सार्थ — प्राकृत निर्दे १६४ ११ गुग् स्थान चर्च सार्थ — प्राकृत निर्दे १६४ ११ गुग् स्थान वर्च सार्थ — संस्कृत ७ गुग् स्थान देख — संस्कृत ७ गुग् स्थान देख — रत्नेशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग् स्थान देख — रत्नेशेखर सूरि संस्कृत १६८ १९		_		-	९६२
प्रहायु प्रमाण - ,,, १०४ गाथा यन्त्र - प्राकृत १६४ ११ गायक का नित्र ९३ गीत गोविन्द (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत ४५ गुज सन्घटप चरित्र पं॰ जयसर हिन्दी ७२ गुग्गाचर ढाल - ,, ४५ गुग्गाचर ढाल - ,, ४५ गुग्गाच्यान कथा वामोदर संस्कृत २६ गुग्गास्थान कथा काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा - प्राकृत भौर हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुग्गास्थान वर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुग्गास्थान दवस्य रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गास्थान दवस्य रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गास्थान दवस्य रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७		पं० माशाघर			९६३
गाथा यन्त्र - प्राकृत १६४ ११ गायक का चित्र ९३ गीत गोविन्द (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत १६ गुज सन्घटण चित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुगुपसर ढाल - ,, १६६ गुगुपस्न माला दामोदर संस्कृत २६ गुगुपस्थान कथा काहुना छावड़ा हिन्दी ७ गुगुप स्थान चर्चा मार्थ रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुगुप स्थान चर्चा सार्थ रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुगुप स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुगुप स्थान चर्चा सार्थ - संस्कृत ७ गुगुपस्थान स्वरूप रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुगुपस्थान स्वरूप रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुगुपस्थान स्वरूप रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७	•	_			९६४
गायक का चित्र नीत गोविन्द (सटीक) जयदेव हिन्दी, संस्कृत १५ गुज सन्घटप चित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुग्गाचर ढाल - ,, १६ गुग्गास्थान कथा काह्ना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ न् प्राकृत गौर हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ रत्नशेखर स्रि संस्कृत ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुग्गास्थान स्वरूप रत्नशेखर स्रि संस्कृत ७ गुग्गास्थान स्वरूप रत्नशेखर स्रि संस्कृत ११८ गुग्गास्थान स्वरूप रत्नशेखर स्रि संस्कृत ११८ गुग्गास्थान स्वरूप रत्नशेखर स्रि संस्कृत ११८	_	***			१५१७
गुज सन्घटप चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुग्गाघर ढाल ,, ४५ गुग्गारल माला दामोदर संस्कृत २६ गुग्गास्थान कथा काह्ना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा प्राकृत ग्रीर हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ रत्निशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ प्राकृत-हिन्दी १६४ १९ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ प्राकृत-हिन्दी १६४ १९ गुग्गास्थान स्वरूप रत्निशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गस्थान स्वरूप रत्निशेखर सूरि संस्कृत ११८ १९ गुरुवार व्युच्छति प्रकरग्ग हिन्दी १०४			_		テ セコ
गुज सन्घटप चरित्र पं० जयसर हिन्दी ७२ गुग्गाघर ढाल ,, ४५ गुग्गारल माला दामोदर संस्कृत २६ गुग्गास्थान कथा काह्ना छावड़ा हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा प्राकृत ग्रीर हिन्दी ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ रत्निशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ प्राकृत-हिन्दी १६४ १९ गुग्गास्थान चर्चा सार्थ प्राकृत-हिन्दी १६४ १९ गुग्गास्थान स्वरूप रत्निशेखर सूरि संस्कृत ७ गुग्गस्थान स्वरूप रत्निशेखर सूरि संस्कृत ११८ १९ गुरुवार व्युच्छति प्रकरग्ग हिन्दी १०४	गीत गोविन्द (सटीक)	जय देव	हिन्दी, संस्कृत	ሂሂ	XYO
पुरागरत्न माला वामोदर संस्कृत २६ गुराग स्थान कथा काहृना छावड़ा हिन्दी ७ गुराग स्थान चर्चा - प्राकृत मौर हिन्दी ७ गुराग स्थान चर्चा सार्थ रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुराग स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुराग स्थान वर्ष - संस्कृत ७ गुराग स्थान वर्ष रत्नघेखर सूरि संस्कृत ७ गुराग स्थान वर्ष रत्नघेखर सूरि संस्कृत ११८ ११ गुरुवार ब्युच्छति प्रकरण - हिन्दी १०४		पं० जयसर		७२	७१९
गुरा स्थान कथा काहना छावड़ा हिन्दी ७ गुरा स्थान वर्षा - प्राकृत ग्रीर हिन्दी ७ गुरा स्थान वर्षा सार्थ रत्नशेखर सूरि संस्कृत ७ गुरा स्थान वर्षा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुरा स्थान वर्ष - संस्कृत ७ गुरा स्थान वर्ष रत्नशेखर सूरि संस्कृत ७ गुरा स्थान स्वस्प रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११८ १९ गुरुवार व्युच्छति प्रकररा - हिन्दी १०४	गुराघर ढाल		,,	४४	५४१
गुरा स्थान वर्षा – प्राकृत भीर हिन्दी ७ गुरा स्थान वर्षा सार्थ रत्नशेखर सूरि संस्कृत ७ गुरा स्थान वर्षा सार्थ – प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुरा स्थान वर्ष — संस्कृत ७ गुरा स्थान देष - संस्कृत ७ गुरा स्थान स्वस्प रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११८ ११ गुरुवार ब्युच्छति प्रकररा – हिन्दी १०४	गुराहरून माला	दामोदर	संस्कृत	38	२ ९७
गुरा स्थान चर्चा सार्थ रत्नशेखर सूरि संस्कृत ७ गुरा स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुरा स्थान बंघ - संस्कृत ७ गुणस्थान स्वरूप रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११८ ११ गुरुवार व्युक्क्क्वित प्रकरण - हिन्दी १०४	गुरा स्थान कथा	काह ना छावड़ा	हिन्दी	હ	७२
गुरा स्थान चर्चा सार्थ - प्राकृत-हिन्दी १६४ ११ गुरा स्थान बंघ - संस्कृत ७ गुणस्थान स्वरूप रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११८ ११ गुरुवार ब्युच्छति प्रकरण - हिन्दी १०४	गुरा स्थान चर्चा	-	प्राक्टत भौ र हिन्दी	હ	७३
गुरा स्थान बंघ — संस्कृत ७ गुणस्थान स्वरूप रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११ ११ गुरुवार व्युच्छति प्रकरण — हिन्दी १०४	गुरा स्थान चर्चा सार्थ	रत्न शे खर सूरि	संस्कृत	હ	७४
गुणस्थान स्वरूप रत्नशेखर सूरि संस्कृत ११८ ११ गुरुवार व्युक्ख्वित प्रकरण – हिन्दी १०४	गुरा स्थान चर्चा सार्थ	_	प्राकृत-हिन्दी	१६४	१४१८
गुरुवार व्य ुव्ह्यति प्र करण - हिन्दी १०४ प	गुरा स्थान बंघ	***	संस्कृत	હ	७६
गुरुवार व्युच्छति प्रकरण - हिन्दी १०४	गुणस्थान स्वरूप	रत्नशेखर सूरि	संस्कृत	१ १=	१ १ १०
गुर्वावस्री - संस्कृत १९९ १०	गुरुवार व्यु च्छ ति प्रकरण	-	हिन्दी	१०४	९५९
	गुर्वाबन्नी		संस्कृत	१९९	१=२१

प्रत्य नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संस्था प	न्थ सूची
				नमांक
गोम्मटसार	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	७	<i>છહ</i>
गोम्मटसार भाषा	पं० टोडरमल	राजस्थानी	5,	د ۶
गोम्मटसार सटीक		प्राकृत-संस्कृत	5	4
(जीवकाण्ड मात्र)				
गोम्मटसार सटीक	-	7 <i>1</i>	5	50
गोरख यन्त्र	~	हिन्दी	१०४	९६५
गौतम ऋषि कुल	-	प्राकृत-हिन्दी	38	३८९
गौतम पुरूखरी	सि द्धस्वरू प	हिन्दी	५५	५४२
गौतम स्वामी चरित्र	मण्डलाचार्य श्रीधर्मचन्द	संस्कृत	७२	७२०
गौतम स्तोत्र	जिनप्रम सूरि	"	१३६	१२ ५२
	(ঘ)			
घटकर्पर काव्य		संस्कृत	ሂሂ	X 83
	(च)			
बक्रघर पुराए।	जिनसेनाच।र्य	संस्कृत	१२४	१ १ ४७
चकवर्ती ऋद्धि वर्णन	-	हिन्दी	5	58
वतुर्देश गुरास्थान चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत-संस्कृत	4	দ ঙ
चतुर्देश गुणस्थान	-	हिन्दी	३ ९	9€0
चतुर्दशीगरूड़ पंचमी कथा	-	मराठी	११८	११११
चतुर्दशी द्रतोद्यापनपूजा	पं० ताराचन्द श्रावक	संस्कृत	१३६	१२५३
चतुर्विणंति स्थानक चर्चा	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	3	55
चतुर्विशति तीर्यंकर चित्र	-	-	83	१८७४
चतुर्विशंति तीर्थंकर चित्र	-	-	83	१८७५
चतुर्विशंति जिन नमस्कार		हिन्दी	१३७	१२५४
चतुर्विशंति जिनस्तवन	-	संस्कृत	१३७	१२५५
चतुर्विशंति तीर्थं कर स्तुति	समन्तभद्र	**	१३७	१२५६
चतुर्विशंति तीर्थं कर स्तुति	पं० घनश्याम	•)	१३७	१२६०
चतुर्विशंति तीर्थं कर पूजा	चौघरी रामचन्द्र	हिन्दी	१३७	१ २६१
चतुर्विशंति तीर्थं कर पूजा	गुभवन्द्रा चार्य	संस्कृत	१३७	१२६२
चतुर्विशति जिनस्तवन	पं० रविसागर गरिए	*1	१३८	१२६३
चतुर्विशंति जिनस्तवन	जिनप्रभसूरि	**	१३८	१२६४
चतुर्विशंति जिनस्तवन	शान बन्द्र	1,	? ३८	१२६५

प्रत्य माम	लेखक	मावा	पृष्ठ संस्था	प्रन्य सूची ऋगांक
चतुःषष्ठी स्तोत्र	_	संस्कृत	१३८	१२६६
चतुःषष्ठी महायोगिनी महास्ट	त्वन धर्म नन्दाचार्य	हिन्दी	१३८	१२६७
चतुः श्रि शंद भावना	मुनि पद्मनंदि	संस्कृत	3	દુક
चन्दनमस्य गिरिवार्ता	भद्रसेन	हिन्दी	3 \$	93₽
चन्दनराजमलयगिरि चौपई	जिनहर्ष सूरि	-	38	\$3 \$
चन्द्रप्रभ चरित्र	पं० दामोदर	संस्कृत	9	७२४
चन्द्रप्रभ चरित्र	यश:कीर्ति	श्रमभ्रं श	৬४	७२६
चन्द्रप्रभूचित्र			83	=७ ६
चन्द्रप्रभ ढाल	-	हिन्दी	५६	५४६
चन्द्रलेहा चरित्र	रामवलल्भ	,,	७४	७२५
चन्द्रहासासव विधि	_	,,	२€	२६८
चन्द्रसूर्य कालानल चक		संस्कृत	१०४	8 \$ \$
चमत्कार चिन्तामणि	स्थानपाल द्विज	,,	१०४	६६७
चरचा पत्र	-	हिन्दी	3	६१
चर्चायें		प्राकृत-हिन्दी	3	83
चर्चा तथा शील की नवपाढी		, t	£	٤3
चरचा शतक टीका	हरजीमल	हिन्दी	3	१६
चरचा शास्त्र		,,	१०	33
चरचा समाधान	भूघरदास	प्राकृत हिन्दी	१०	१००
चारित्रसार टिप्पग	चामुण्डराय	सं <i>स्कृ</i> त	७४	०६७
चाराक्यनीति	चारगक्य	11	१२२	११३०
चिन्त चमत्कार सार्थ	_	संस्कृत हिन्दी	38	338
चिन्तामिए। नाममाला	हरिदस	संस्कृत	90	६६१
चिन्तामिण पाश्वंनाथ पूजा		संस्कृत –हिन्दी	१ ३८	१२ ६ ⊏
चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र	धरगोन्द्र	संस्कृत	१३८	१२७०
चिन्तामिए। पाश्वंनाथ यन्त्र	***	"	१६४	१५१६
चित्रबन्ध स्तोत्र	-	**	१३८	१२७२
चुने हुए रत्न) e	335	१=२२
वेतन कर्म चरित्र	भैया भगवतीदास	हिन्दी	७४	७३ १
चेतन चरित्र	यशःकीर्ति	,,	७४	७३२
चौषड़िया चक	-	संस्कृत धौर हिन्दी	808	६६६

ग्रन्थ नाभ	लेखक	मावा	पृष्ठ संस्था	प्रन्य सूची
				क्सांक
चौबीस कथा	पं. कामपाल	हिन्दी	3€	¥3 \$
चौबीस जिन ग्राशीवाद	-	संस्कृत	3 6 8	१२७३
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	-	10	3€\$	१२७४
चौबीस तीर्थंकरों की पूजा	बृन्दावनदास	संस्कृत भीर हिन्दी	१३६	१२७४
चौबीस ठाणा चौपाई	पं ० स्रो हर	प्राकृत भीर हिन्दी	१०	Fog
चौबीस ठाएा। भाषा	-	प्राकृत	१०	१०५
चौबीस ठाएग पिठिका	सि• च• नेमिचन्द्र	प्राकृत भीर संस्कृत	१०	१०६
तथा बंघ व्युच्छति प्रकरण				
चौबीस ठाएा सार्थ	सि० च० नेमिचन्द्र	संस्कृत	१०	१०७
चौबोस दण्डक	गजसार	प्राकृत	१०,११	१०५,१०६
चौबीस दण्डक गीत विवरण	•	हिन्दी	११	११०
चौबोली चतुष्पदी	जिनचन्द्र सूरि	n	४६	ጳ ४ኖ
चौर पंचासिका	कविचोर	संस्कृत	५६	४४६
चौषठ योगिनी स्तोत्र	-	***	398	१२७६
	(ਬ)			
छन्द रत्नावली	हरिराम	हिन्दी	3 3	६ १=
छन्द शतक	हर्ष कीर्ति सूरि	ध पश्चंश	33	383
छन्द शास्त्र	_	संस्कृत	33	६२०
छन्दसार	नारायगदास	हिन्दी	33	६२१
छ न्दोमजंरी	गंगादास	प्राकृत −संस्कृ त	33	E ? ?
छन्दोवतम	-	संस्कृत	33	६२३
छाया पुरुष लक्षरा		संस्कृत-प्राकृत	338	१ =२३
	(अप)			
जन्म कुण्डली विचार	_	मंस् कृ त	१०५	600
जन्म पद्धति	-	संस्कृत-हिन्दी	१०५	ક્ છ ક્ર
जन्म पत्रिका	-	संस्कृत	१०५	६७१
जन्म पत्री पद्धति	हर्षकीति द्वारा संकलित	,,	१०५	१७२
जन्म फल विचार	-	#1	१०५	€७३
जन्मान्तर गाया	-	प्राकृत	१ १	888
जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	हिन्दी	38	¥3\$
जम्बू स्वामी चरित्र	भं० सकलकीति	संस्कृत	७४	६६७
जम्बूद्वीप चित्र		"	દ૪	508
		••		-

बम्बूढीप संप्रहणी प्रमाद सूरि प्राकृत हिन्दी १६६ १८ १८ व्यवसाह पूजा कियान — ब्रह्मुल १८० १६६ १८ व्यवसात पूजा कियान — ब्रह्मुल १८० १६६ १८ व्यवसात पूजा कियान — ब्रह्मुल १८० १६६ १८ व्यवसात पूजा कियान — ब्रह्मुल १८० १६६ व्यवसात प्राणित ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	ग्रन्थ गाम	नंबक	मावा	पृष्ठ संस्था	ग्रम्य सूची क्रमांक
खबतिहुए। स्तोत्र	जम्बूद्वीय वर्गंन		हिन्दी	१८४	0359
जलवाता पूजा विवान — इंस्कृत १६० १६० व्यवस्त पं ज्ञयरस्त ,, ३० व्यवस्त पं ज्ञयरस्त ,, ३० व्यवस्त पं ज्ञयरस्त ,, ३० व्यवस्त वर्षात होमप्र सूरि ,, १०६ ६६ व्यवस्तित रत्नमाला थिपति ,, १०६ ६६ व्यवस्तित रत्नमाला थिपति ,, १०६ ६६ व्यवस्तित रामाणा किन कृपाराम हिन्दी १०६ ६६ व्यवस्तित मार्गा किन कृपाराम हिन्दी १०६ ६६ व्यवस्ता माणित हिन्दी १०६ १८० व्यवसा माणिती यन्त्र — ,, १६४ १४० व्यवसाण माणा पं प्राथमाण्य संस्कृत १८६ १८० व्यवसाण माणा पं प्राथमाण्य संस्कृत १८६ १८० व्यवसाण माणा पं प्राथमाण्य संस्कृत १८६ १८० व्यवसाण पं प्राथमाण्य ,, १६४ व्यवसाण पं प्राथमाण्य ,, १६८ व्यवसाण पं प्राथमाण्य ,, १६८ व्यवसाण पं प्राथमाण्य ,, १६८ व्यवसाण पं प्राथमाण्य संस्कृत १८६ १८० व्यवसाण पं प्राथमाण्य संस्कृत १६६ १८० व्यवसाण पं प्राथमाण कृषा ज्यकीति संस्कृत १६६ १८० व्यवसाण कृषा ज्यकीति संस्कृत १६६ १८० व्यवसाण विषय पं प्राथमाण कृषा ज्यकीति संस्कृत १६६ १८० व्यवसाण विषय पं प्राथमाण संस्कृत १६६ १८० व्यवसाण विषयमाण विषयमा हिन्दी १४० १२० विषय सक्तवन सार्व ज्यानस्त सूरि ,, १४० १२० विषय सक्तवन सार्व ज्यानस्त सूरि ,, १४० व्यवसाण विषय मार्व कृष्ण ,, १४० व्यवसाण कृषा — ,, १४० व्यवसाण कृषा मार्व कृष्ण ,, १४० व्यवसाण कृषा मार्व कृष्ण ,, १४० व्यवसाण कृषा मार्व कृष्ण ,, १४० व्यवसाण ,, १४० व्यवसाण कृष्ण ,, १४० व्यवसाण ,, १४० व्यवसाण कृष्ण ,, १४० व्यवसाण कृष्ण ,, १४० व्यवसाण कृष्ण ,, १४० व्यवसाण ,, १४० व्	बम्बुद्धीप संग्रहणी	हरिभद्र सूरि	ब्राकृत	338	१=२४
स्वत पराजय पं० जयरस्न ,, ३० स्था स्थातित संस्कृत १०६ हा स्थान्य सम्यत्य सम्यत्व सम्यत्य सम्यत्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स	जयतिहुगा स्तोत्र	ग्रभयदेव सूरि	प्राकृत-हिन्दी	३६१	१ २७७
ज्योतित वक हेमप्रभ सूरि ,, १०५ ६५ ज्योतित रत्नमाला थीपति ,, १०६ ६५ ज्योतित सार नारचन्द्र ,, १०६ ६५ ज्योतित सार पाषा किन कुपाराम हिन्दी १०६ ६५ ज्योतित सार माणा किन कुपाराम हिन्दी १०६ ६५ ज्याता मालिनी स्तोत्र — ,, १६४ १६५ ज्याला मालिनी यन्त्र — ,, १६४ १६५ ज्याला मालिनी यन्त्र — ,, १६४ १६५ जातक प्रदीप सांवला गुजराती व हिन्दी १०६ ६५ जिन कल्याएा माला प० प्राण्ञाघार संस्कृत १०० १५६ जिन कल्याएा माला प० प्राण्ञाघार संस्कृत १०० १५६ जिन वल्याएा माला प० प्राण्ञाघार संस्कृत १०० १५६ जिनदत्त कथा गुएगमद्राचार्य ,, १६६ १६६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान समरकीति संस्कृत १३६ १६६ १८० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ध किन जात्रण हिन्दी १६६ १८० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ध किन जात्रण हिन्दी १६६ १८० जिन स्तकन सार्य क्यानच्य संस्कृत १३६१० १२६ जिन स्तकन सार्य स्तक्ति द्वाकर संस्कृत १३६१० १२६ जिन स्तकन सार्य अयानच्य सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तकन सार्य अयानच्य सूरि ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिद्धतेन दिवाकर संस्कृत १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिद्धतेन दिवाकर ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिद्धतेन दिवाकर ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिठ क नीमकच्य ,, १४० १२६ जिन स्तक्त सर्यंन — ,, १४० १२६ जिन स्तान कथा — ,, १४० १२६	जलयात्रा पूजा विधान	_	बंस्कृत	१८०	१६७६
ज्योतिष रत्नमाला थीपति ", १०६ ६५ ज्योतिष सार नारचन्द्र ", १०६ ६५ ज्योतिष सार पाषा किन कुपाराम हिन्दी १०६ ६५ ज्योतिष सार मारा किन कुपाराम हिन्दी १०६ ६५ ज्यातिष सार सटीक भुनेदित्य संस्कृत १०६ ६५ ज्याता मालिनी स्तोत्र — ", १६६ १६५ ज्याता मालिनी यन्त्र — ", १६४ १६५ जातक प्रदीप संवला गुजराती व हिन्दी १०६ ६५ जिन कल्याएा माला प० प्राथाघर संस्कृत १०० ६५ जिन नत्याएा माला प० प्राथाघर संस्कृत १०० १०६ जिन नृत्या सम्पतित्रतोश्वापन मा० देवनंदि ", १३६ १२५ जिनदत्त कथा गुएगनद्राचार्य ", ६६ १०६ जिनदत्त कथा गुएगनद्राचार्य ", ६६ १०६ जिनदत्त कथा गुएगनद्राचार्य ", ६६ १०६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान समयसुन्दर हिन्दी १६६ १०६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान प्रमरकीति संस्कृत १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान प्रमरकीति संस्कृत १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान प्रमरकीति संस्कृत १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर स्रमर विधान प्रमरकीति संस्कृत १३६१० १२६ जिन सूति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किन जगरुण हिन्दी १६६ १०६ जिन सूति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किन जगरुण हिन्दी १६६ १०६ जिन स्तवन सार्थ सद्योत सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १३६१० १२६ जिन स्तवन सार्थ अथानन्द सूरि ", १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ स्वानन्द ", १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर ", १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिर्व च० नीमकन्द्र ", १४० १२६ जिन रात्र कथा — " ", ४० १२६ जिन रात्र कथा — ", ४० १०६ जिनन्दर वर्गन स्वीत्र — ", १४० १२६ जिनन्दर वर्गन स्वीत्र — ", १४० १२६ जिनन्दर वर्गन स्वीत्र — ", १४० १२६	क्वर पराजय	पं० जयरत्न	,,	₹ 0	
ज्योतिष सार माषा किव कृपाराम हिन्दी १०६ हैं। ज्योतिष सार माषा किव कृपाराम हिन्दी १०६ हैं। ज्योतिष सार मटीक भुवोदित्य संस्कृत १०६ हैं। ज्यासा मालिनी स्तोत्र — ,, १६४ १६३ व्यासा मालिनी स्तोत्र — ,, १६४ १६३ व्यासा मालिनी यन्त्र — ,, १६४ १६३ व्यासा मालिनी यन्त्र — ,, १०६ १६३ व्यासा मालिनी यन्त्र — ,, १०६ १६३ व्यासा प्रतिष सार्वेष सार्वेस पृण्णा सम्पतिवत्रतेषापन प्राच्णा पण्णामाष्ट्र संस्कृत १८६ १८६ व्यासा पृण्णामाष्ट्र संस्कृत १८६ १८६ व्यासाम पर्या पृण्णामाष्ट्र संस्कृत १८६ १८६ व्यासाम पर्या प्राच्या पृण्णामाष्ट्र संस्कृत १८६ १८६ व्यासाम पर्या प्राच्या — संस्कृत १८६ १८६ व्यासाम पर्या माणा पर्या समयसुन्दर हिन्दी १८६ १८६ व्यासाम प्राच्या — संस्कृत १३६ १८६ व्यासाम प्राच्या पर्या पर्या पर्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या पर्या पर्य पर्य पर्या पर्य पर्य पर्य पर्या पर्य पर्य पर्य पर्य पर्य पर्य पर्य पर्य	ज्योतिष चक	हेमप्रभ सूरि	,,	१०५	१७७
ज्योतिष सार भाषा कि कुपाराम हिन्दी १०६ हैं। ज्योतिष सार सटीक भुजे दिस्य संस्कृत १०६ हैं। ज्यासा मालिनी स्तोत्र — ,, १६६ १२० ज्यासा मालिनी स्तोत्र — ,, १६६ १२० व्यासा मालिनी यन्त्र — ,, १६६ १२० बातक दण्डिराज दैवज ,, १०६ हैं। जातक प्रदीप सौवला गुजराती व हिन्दी १०६ हैं। जिन कल्यागा माला प० प्राप्ताघर संस्कृत १८८ १८० जिन कल्यागा माला प० प्राप्ताघर संस्कृत १८८ १८० जिनदत्त कथा गुणा महप्रतिवृत्तो खापन भा० देवनंदि ,, १३६ १२० जिनदत्त चरित्र — ,, ७६६ १८० जिनदत्त चरित्र — ,, ७६६ १८० जिनदत्त चरित्र — ,, ७६६ १८० जिनद्त्त चरित्र — संस्कृत ४० ४० जिनद्र्जा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनद्र्जा पुरन्दर कथा — संस्कृत १३६ १८० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई कि जगरुण हिन्दी १६६ १८० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई कि जगरुण हिन्दी १६६ १८० जिन रस वर्णन वेश्विराम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णन वेश्विराम हिन्दी १४० १२० जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिडसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिठ च० नैनिचम्द्र ,, १४० १२० जिन पुप्रभात स्तोत्र — ,, १४० १२० जिन स्तवन सार्थ — ,, १४० १२० जिनन्दर वर्दम — ,, १४० १२०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति	"	१०५	१७=
ज्योतिष सार सटीक भुजे दित्य संस्कृत १०६ हर् ज्वाला मालिनी स्तोत्र — ,,, १६४ १४: बातक दण्डिराज देवज ,, १०५ हर् जातक प्रदीप सौवला गुजराती व हिन्दी १०५ हर् जिन कल्याण माला प० भाषाघर संस्कृत १०० १२६ जिन कल्याण माला प० भाषाघर संस्कृत १०० १२६ जिनदत्त कथा गुणाभद्राचार्य ,, १३६ १२५ जिनदत्त कथा गुणाभद्राचार्य ,, ७५ ७: जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७: जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर कथा कथकीति संस्कृत १३६ १२६ जिनपूर्त उत्थापक प्रजा जयकीति संस्कृत १३६ १२६ जिन मूर्ति उत्थापक प्रवेश चौपई किय जगरुग हिन्दी १६६ १०० जिन मूर्त उत्थापक प्रवेश चौपई किय जगरुग हिन्दी १४० १२६ जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १३६ १२६२,१६६ जिन सत्वन सार्थ जयानस्य सूरि ,, १४० १२६ जिन सत्वन सार्थ जयानस्य सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तुति — ,, १४० १२६	ज्योतिष सार	नारचन्द्र	17	१०६	650
ज्वाला मालिनी स्तोत्र — ,,, १३६ १२५ थ्यः वाला मालिनी यन्त्र — ,,, १६४ १४ः वाला मालिनी यन्त्र — ,,, १६४ १४ः वालक दिवज्ञ ,, १०६ ६५ वालक प्रदीप सौवना गुजराती व हिन्दी १०६ ६५ वालक प्रदीप माला प० भाषाघर संस्कृत १०० १२६ १२५ वालक कथा गुण्मद्रावार्य ,, १३६ १२५ वालक कथा गुण्मद्रावार्य ,, १६६ १०० वालक मं प० समयसुन्दर हिन्दी १६६ १०० वालक मं प० समयसुन्दर हिन्दी १६६ १०० वालक प्रदार कथा — संस्कृत ४० ४० वालक वालक प्रदार कथा — संस्कृत ४० ४० वालक वालक वालक वालक वालक वालक वालक वालक	ज्योतिष सार भाषा	कवि कृपाराम	हिन्दी	१०६	८ इ. ३
ज्वाला मालिनी यन्त्र — ,, १६४ १४: बातक वण्डिराज देवज ,, १०४ ६५ जातक प्रदीप साँवना गुजराती व हिन्दी १०४ ६५ जिन कल्याग् माला प० प्राशाघर संस्कृत १०० १०६ जिन कल्याग् माला प० प्राशाघर संस्कृत १०० १०६ जिनदत्त कथा गुग्गमद्राचार्य ,, १६६ १०६ जिनदत्त कथा गुग्गमद्राचार्य ,, १६६ १०६ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत १३६ १०६ जिन मूर्ति उत्थापक प्रजा जयकीति संस्कृत १३६ १०६ जिन मूर्ति उत्थापक प्रवेश चौगई किव जगरुग हिन्दी १६६ १०६ जिन रस वर्णन वेशिराम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णन वेशिराम हिन्दी १४० १२० जिन सत्वन सार्य जयानन्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तवन सार्य ज्यानन्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तवन सार्य — ,, १४० १२० जिनन्तर वर्णन — ,, १४० १२०	ज्योतिष सार सटीक	भु जो दित्य	संस्कृत	१०६	१न३
बातक दण्डिराज देवज ,, १०४ ६५ जातक प्रदीप साँवला गुजराती व हिन्दी १०४ ६५ जातक प्रदीप साँवला गुजराती व हिन्दी १०४ ६५ जात करवाए। माला प० श्राशाघर संस्कृत १८६ १८६ जिन पुण सम्पतिवतोद्धापन भा० देवनंदि ,, १३६ १२५ जातदत्त कथा गुएमभद्राचार्य ,, १६६ १८६ जातदत्त कथा गुएमभद्राचार्य ,, १६६ १८६ जातपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जातपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जातपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत १३६ १८६ जातपूजा पुरन्दर कथा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ जातपूजा पुराच जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ जातपूजा पुराच जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८६ १८६ १८६ वर्च जातपूजा जयकीति संस्कृत १४० १८६ जात स्त्राच सार्व जयानच्य सूरि ,, १४० १८६ जात स्त्राच सार्व जयानच्य स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच — ,, १४० १८६ जातच्याच — ,, १४० १८६ जातच्याच स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच — ,, १४० १८६ जातच्याच स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच — ,, १४० १८६ जातच्याच स्त्राच — ,, १६६ वर्च स्त्राच — ,, १४० १८६ जातच्याच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच म्याच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच म्याच म्याच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच म्याच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच म्याच — ,, १४० १८६ जावच स्त्राच म्याच म्याच म्याचच म्याच	ज्याला मालिनी स्तोत्र	-	**	3 ₹ 9	१२७=
जातक प्रदीप साँवला गुजराती व हिन्दी १०४ ६५ जिन कस्यारण भाला प० प्राशाघर संस्कृत १८८ १५६ जिन गुण सम्पतिव्रतोखापन प्रा० देवनंदि ,, १३६ १२५ जिनदत्त कथा गुण सम्पतिव्रतोखापन प्रा० देवनंदि ,, १३६ १२६ जिनदत्त कथा गुण महावार्य ,, १६६ १८६ जिनदत्त चिरित्र — ,, ७४ ७३ जिनघर्म पद समयसुन्दर हिन्दी १६६ १८६ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर विधान प्रमरकीति ग्रम्भ श्रेष १३६ १८६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर विधान प्रमरकीति ग्रम्भ श्रेष १३६ १८६ १८६ जिन मृति उत्थापक उपदेश चौपर्व किन जारुप हिन्दी १६६ १८६ १८६ प्रम्म प्रमाण पर संस्कृत १३६१८१ १८८२,१६६ जिन रस वर्णन वेतिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णन वेतिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णन वेतिराम हिन्दी १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्त कथा — ,, १४० १६६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्त कथा — ,, १४० १६६ जिनस्त वन्दन स्तवन , ,, १४० १६६ जिनस्त वन्दन स्तवन , ,, १४० १६६ जनस्त वन्दन स्तवन , ,, १६६ वनिन्द्र वन्दन स्तवन , ,, १६६ वनिन्द्र वन्दन स्तवन , ,, १४० १६६ जनस्त वन्दन स्तवन , ,, १६६ वनिन्द्र वन्दन स्तवन ,, १६६ वनिन्द्र वन्दन स्तवन ,, ,, १६६ वनिन्द्र वन्दन स्तवन ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	ज्बाला मालिनी यन्त्र	eras.	,,	१६४	१५२०
जिन कस्यागा माला प० ग्रामाघर संस्कृत १८८ १८८ जिन गुणा सम्पतिवृत्तो छापन ग्रा० देवनंदि ,, १३६ १२८ जिनदत्त कथा गुणाभद्राचार्य ,, ६६ ३६ जिनदत्त चित्रत्र — ,, ७५ ७३ जिनदत्त चित्रत्र — ,, ७५ ७३ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४८ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४८ जिनपूजा पुरन्दर ग्रामर विधान ग्रामरकीति ग्राप्त्रंण १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रामर विधान ग्रामरकीति ग्राप्त्रंण १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रामर विधान ग्रामरकीति ग्राप्त्रंण १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रामर विधान ग्रामरकीति संस्कृत १३६ १२६ १८६ जिन मूर्ति उत्थापक प्रपदेश चौपई किन जारुप हिन्दी १६६ १८८ १८८ जिन मूर्ति उत्थापक प्रपदेश चौपई किन जारुप हिन्दी १६० १२६ जिन रस वर्णान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन स्तवन सार्व जयानस्य सूरि ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र किथा — ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्व जयानस्य सूरि ,, १४० १२६ जनानस्य स्तोत्र कथा — ,, ४० ४० जनानस्य स्तोत्र ,, १४० १२६ जनानस्य स्तोत्र कथा — ,, ४० ४० जनानस्य स्तोत्र ,, १४० १२६ जनानस्य स्तोत्र — ,, ४०० ४०० जनानस्य स्तोत्र — ,, ४००	बातक	दण्डिराज दैवज	"	१०५	દહયૂ
जिन गुण सम्पतिवृतोश्वापन भा० देवनंदि ,, १३६ १२० जिनदत्त कथा गुणमद्राष्ट्रायं ,, ३६ ३६ ३६ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर अपर विधान भ्रमरकीति भ्रप्रभंश १३६ १२० जिनपंच कल्याणक पूजा जयकीति संस्कृत १३६ १२० जिन पूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किव जगरुप हिन्दी १६६ १८० १८० जिन रस वर्णन वेरिश्राम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णन वेरिश्राम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णन सिस्कृत वेरिश्राम हिन्दी १४० १२० जिन सहस्त्र नग्नम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन स्तवन सार्थ अथानन्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तवन सार्थ जयानन्द सूरि ,, १४० १२० जनान्तर वर्णन — भरेव भरेव स्तवन सार्थ — ,, १४० ४० जनान्तर वर्णन — भरेव स्तवन स्तवन स्तवन — स्तवन १४० १२० जनान्तर वर्णन — भरेव स्तवन १४० १२० जनान्तर वर्णन — भरेव स्तवन १४० १२० जनान्तर वर्णन — स्तवन १६० १२० वर्णन स्तवन	जातक प्रदीप	सौवला	गुजराती व हिन्दी	१०५	<u> १७६</u>
जिनदत्त कथा गुग्गभद्राचार्य ,, ६६ ३६ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनधुमं पद समयसुन्दर हिन्दी १६६ १८६ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर कथा जयकीति संस्कृत १३६ १२६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किव जगरुप हिन्दी १६६ १८६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किव जगरुप हिन्दी १६० १२६ जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्गान संस्कृत विद्याकर संस्कृत १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तुति — ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि च नेमिचस्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि च नेमिचस्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि च नेमिचस्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि च नेमिचस्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि च नेमिचस्द्र ,, १४० १२६ जिनस्त सर्गन — ,, १४० १२६ जिनस्त सर्गन — ,, १६० १२६ जिनस्त सर्गन — ,, १६० १६६ जिनस्त सर्गन — ,, १६६ जिनस्त सर्गन — ,, १६० १६६ जिनस्त सर्गन — ,, १६० १६६ जिनस्त सर्गन — ,, १६० ०६६ जिनस्त सर्गन म्, १६० ०६६ जिनस्त सर्गन म्, १६	जिन कल्यागा माला	प० ग्राशाधर	संस्कृत	१८८	१७२८
जिनदत्त कथा गुगामद्राचार्य ,, ६६ ३६ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनदत्त चरित्र — ,, ७५ ७३ जिनधुमं पद समयसुन्दर हिन्दी १६६ १८६ जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४६६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर कथा जयकीति संस्कृत १३६ १२६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किव जगरुप हिन्दी १६६ १८६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपर्ष किव जगरुप हिन्दी १६० १२६ जिन रस वर्णान वेरिएराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णान वेरिएराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णान सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तुति — ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि० च० नेमचन्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कि० च० नेमचन्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र कथा — ,, ४० ४० जिनान्तर वर्णन — अपभंश, हिन्दी ४० ४० जिनान्तर वर्णन — संस्कृत १४० १२६ जिनम्द्र वन्दनम — संस्कृत १४० १२६	जिन गुए सम्यतिवृतोशापन	भ्रा० देवनंदि	,,	3€\$	१२७६
जिनदत्त चरित्र जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर क्रमर विधान ग्रमरकीित ग्रपन्नं श १३६ १२६ जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर विधान ग्रमरकीित ग्रपन्नं श १३६ १२६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किष जगरुप हिन्दी १६६ १६६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किष जगरुप हिन्दी १६६ १६६ १६६ १६६ छन्नं संस्कृत १३६१६१ १२८२,१६५ जिन रस वर्णान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्णान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंठ कि च नेमिचन्द्र ,, १४० १२६ जिन रात्रि कथा जिनान्तर वर्णान — ग्रमभंश, हिन्दी ४० ४६ जिनान्तर वर्णान — ग्रमभंश, हिन्दी ४० १६६ जिनान्तर वर्णान — ग्रमभंश, हिन्दी ४० १६६	जिनदत्त कथा	गुराभद्रा चार्य			३९६
जिनधमं पद समयसुन्दर हिन्दी १६६ १८० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर विधान ग्रमरकीति ग्रमञ्जंश १३६ १२० जिनपंच कल्याग्राक पूजा जयकीति संस्कृत १३६ १८० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किंव जारुप हिन्दी १६६ १८० १२० जिन रस वर्णात वेश्विताम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णात वेश्विताम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्णात सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन स्तवन सार्व ज्यानस्द सूर ,, १४० १२० जिन स्तवन सार्व ज्यानस्द सूर ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंक च नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन स्ति कथा — स्तकृत १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति कथा — स्ति स्तृत १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त १४० १२० जिन स्ति व्यक्त स्ति स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति व्यक्त स्ति स्ति व्यक्त स्ति स्ति व्यक्त स्ति स्ति व्यक्त स्ति स्ति स्ति व्यक्त स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्	जिनदत्त चरित्र	-			985
जिनपूजा पुरन्दर कथा — संस्कृत ४० ४० ४० जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर विधान ग्रमरकीति ग्रपभंश १३६ १२० जिनपूंच कल्यास्मक पूजा जयकीति संस्कृत १३६ १२० जिनपूजि उत्थापक उपदेश चौपई किव जगरुप हिन्दी १६६ १६६ ६६० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किव जगरुप हिन्दी १६६ १६० ६२० जिन रस वर्सान वेस्पिराम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्सान वेस्पिराम हिन्दी १४० १२० जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन स्तवन सार्ख जयानस्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तुति — ,, १४० १२० जिन स्तुति — ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किव जिनम्बन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किव जिनम्बन्द्र ,, १४० १२० जिन सार्ब क्या — ,, १४० १२० जिन सार्ब क्या — ,, १४० १२० जिन सार्व क्या — ,, १४० १२० जिन सार्ब क्या — ,, १४० १२० जिन सार्व क्या — ,, १४० ००० जिल सार्व क्या —	जिनधर्म पद	समयसुन्दर		338	१=२५
जिन गूजा पुरन्दर ग्रमर विधान ग्रमरकीति ग्रपन्नं श १३६ १२० जिन गूंच कल्याराक पूजा जयकीति संस्कृत १३६ १२० जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किब जारुप हिन्दी १६६ १६६ ६६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किब जारुप हिन्दी १६६ १६६ १६६ जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२० जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२० जिन सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन स्तवन सार्ख ज्यानस्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तुति — ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किं क नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किं क नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किं क नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किं क नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र किं क नेमियन्द्र ,, १४० १२० जिन स्तुत्र वर्षान — ,, १४० ४० ४० जिनान्तर वर्णान — ,, १४० १२० ४०० जिनान्तर वर्णान — ,, १४० १२० जिनान्तर वर्णान — ,, १४० ०० जिलान्तर व	जिनपूजापुरन्दर कथा	_			४०२
जिनपंच कल्यासाक पूजा जयकीर्ति संस्कृत १३६ १२६ जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई किन जगरुप हिन्दी १६६ १६६ ६६६ छिन सज्ञकल्प पंच्छाशाचर संस्कृत १३६१६१ १२६२,१६६ जिन रस वर्सान वेस्सिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्सान सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सिंठ चन्द्रनियमस्त ,, १४० १६६ जिन स्तान कर्या — स्तर्कृत १४० १६६ जिनस्त वन्द्रना — सर्वकृत १४० १२६ जिनस्त वन्द्रना — सर्वकृत १४० १२६		श्रमरकीर्ति	ग्र ाभ्र ंश	3€\$	१२८०
जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश नौपई किंव जगरुप हिन्दी १६६ १६६ १६६ छन मूर्ति उत्थापक उपदेश नौपई किंव जगरुप हिन्दी १६६ १६६ १८६२,१६६ जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२६ जिन रस वर्गान सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२६ जिन स्तवन सार्व जयानस्द सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तुति — ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र किंव निमचन्द्र ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र किंव निमचन्द्र ,, १४० १२६ जिन रात्रि कथा — ,, ४० ४० जिनान्तर वर्गान — अपभ्रंश, हिन्दी ४० ४६ जिनान्तर वर्गान — संस्कृत १४० १२६	_	जयकीर्ति	संस्कृत		१२=१
जिन सज्ञकल्प पं अश्वाचर संस्कृत १३६१६११२६२,१६६ जिन रस वर्गान वेस्तिराम हिन्दी १४० १२६ जिम सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२६ जिन स्तवन सार्थ जयानस्य सूरि ,, १४० १२६ जिन स्तुति — ,, १४० १२६ जिन सुप्रभात स्तोत्र सि० च० नेसिचस्द्र ,, १४० १२६ जिन रात्रि कथा — ,, ४० ४० जिनान्तर वर्गान — सपभ्रंश, हिन्दी ४० ४६ जिनेन्द्र वन्दना — संस्कृत १४० १२६	जिन मूर्ति उत्थापक उपदेश चौपई	कवि जगरुप			१६२६
जिन रस वर्गान वेशिराम हिन्दी १४० १२० जिम सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिम स्तवन सार्थ जयानस्द सूरि ,, १४० १२० जिम स्तुति — ,, १४० १२० जिम सुप्रभात स्तोत्र सिंठ च नेमिचस्त्र ,, १४० १२० जिम सुप्रभात स्तोत्र सिंठ च नेमिचस्त्र ,, १४० १२० जिम स्तात्र कर्गा — ,, ४० ४० जिमान्तर वर्गान — सपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० जिमान्तर वर्गान — सरकृत १४० १२०	_	पं० म्राशाचर	•	३ ६१⊏१ १२	
जिम सहस्त्र नाम स्तोत्र सिद्धसेन दिवाकर संस्कृत १४० १२० जिन स्तवन सार्थ जयानस्त सूरि ,, १४० १२० विच स्तुति — ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सि० च० नेसिचस्त्र ,, १४० १२० जिन रात्रि कथा — ,, ४० ४० जिनान्तर वर्णन — अपभंश, हिन्दी ४० ४० जिनान्तर वर्णन — संस्कृत १४० १२०	जिन रस वर्णन	वेशिराम			१२८४
जिन स्तवन सार्थं जयानम्द सूरि ,, १४० १२० जिन स्तुति — ,, १४० १२० जिन सुप्रभात स्तोत्र सिं० च० नेमिचम्द्र ,, १४० १२० जिन रात्रि कथा — ,, ४० ४० जिनान्तर वर्णन — सपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० जिनेन्द्र वन्दना — संस्कृत १४० १२०	जिम सहस्त्र नाम स्तोत्र		· ·		१२८६
बिन स्तुति ,,, १४० १२० विन सुप्रभात स्तोत्र सि० च० नेमिचन्द्र ,, १४० १२० विन रात्रि कथा ,,, ४० ४० विनान्तर वर्णन भ्रपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० विनेन्द्र वन्दना संस्कृत १४० १२०					१२८७
जिन सुप्रभात स्तोत्र सि० च० नेनिचन्द्र ,, १४० १२० चिन रात्रि कथा ,, ४० ४० जिनान्तर वर्णन स्रपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० विनेन्द्र वन्दना संस्कृत १४० १२०				•	१२८८
जिन रात्रि कथा - ,, ४० ४० जिनान्तर वर्षांन - भ्रपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० जिनेन्द्र वन्दना - संस्कृत १४० १२०	_	सि० च० नेमिचस्द			१२८६
जिनान्तर वर्णन - श्रपभ्रंश, हिन्दी ४० ४० विनेन्द्र वन्दना - संस्कृत १४० १२८	•	-			¥°3
बिनेन्द्र बन्दना - स [°] स्कृत १४० १२।		_			808
					१२६०
		-	,		1351

प्रन्थ नाम	लेशक	माबा १	गुष्ठ सं स्था प	त्य सूची क्रमांक
जीव चौपई	पं० दौलतराम	हिन्ही	११८	१११२
जीव तत्व प्रदीप	केशवा चा र्य	श्राकृत भीर संस्कृत	११	११२
जीवन्घ रचरित्र	भ० शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत	७४	3 € €
जीव प्रकपरा	गु णरय णभूषरा	प्राकृत	११	११३
जीव विचार प्रकरण	-	प्राकृत धी र संस्कृत	र ११	११४
जीव विचार सूत्र सटीक	शान्ति सूरि	j >	११	११६
जैन रास	···	हिन्दी	१८८	१७२६
जैन शतक	भूघरदास खण्डेल वाल	1)	११	११६
	(₹-3)			
टीपर्गं री पाटी	-	संस्कृत धौर हिन्दी	१०६	033
दुण्डिया मत खण्डन	ढाढसी मुनि	प्राकृत ग्रीर संस्कृत	339	१८२७
ढाढसी मुनि गाथा	ढाढसी	1)	१२	१२०
ढाल बारह भावना	-	हिन्दी	४६	४४०
ढाल मंगल की	-	,,	५६	ሂሂየ
ढाल सुभद्रारी	_	11	४६	५५२
ढाल श्रीमन्दिर जी	-	79	५६	५ ५३
ढालक्षमाकी	मुनि फकीरचन्द	**	५६	४४४
	(ন)			
तत्वधर्मामृत	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१२	१२२
तत्वबोध प्रकरण		•	१२	१२४
तत्वसार	पं० देत्रभेन	प्राकृत	१२	१२६
तत्वत्रय प्रकाशिनी	ब्रह्मश्रुतसागर	संस्कृत	१ २	१२७
तत्वज्ञान तरंगिराी	भ० ज्ञानभूषण	संस्कृत	१२	१२८
तत्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र देव	**	१३	१३०
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामी	17	१३	१ ३३
तस्वार्थं सूत्र टोका	श्रुतसागर	,,	१३	१३५
तत्वार्थ सूत्र टीका	सदासुख	संस्कृत भौर हिन्दी	r १ ३	१३७
तत्वार्थं सूत्र भाषा	कनककीर्ति	33	१३	१३८
तत्वार्थं सूत्र वचनिका	पं० जयचन्द	,,,	१३	१३९
तर्के परिभाषा	केशव मिश्र	संस्कृत १२,	११ ८, १ २	१, १११४
तर्क संग्रह	प्रनन्त भट्ट	9,	११८	१११४
वाजिक नीलकण्ठी	पं० नीलकण्ठ	,,	१०६	१३३

धन्य नाम	शेखक	मावा	पृष्ठ संख्या ।	प्रस्य सूची
-				ऋयांक
ताजिक पद्मकोश	· -	संस्कृत	१०७	६६२
ताजिक रत्नकोश	~	संस्कृत ग्रौर हिन्दी	१०५	£3 3
तार्किकसार संग्रह	पं० वरदराज	संस्कृत	११८	१११५
तीन लोक का चित्र	_	_	£ ¥	१८८१
तीन सोक चित्र	_		88	१८८२
तीर्थं जयमाल	सुमति सागर	हि न्दी	४०	४०४
तीस बोल	~	**	४६	ሂሂሂ
तेरह द्वीव पूजा	– सं ⁻	स्कृत ग्रीर हिन्दी	१४०	१२६२
तेरह पंथ खण्डन	पं•पन्नालाल	हि न्दी	१४	१४०
	(;	ŧ)		
दण्डक चौपई	पं० द ोल तराम	हिन्दी	१४	१४१
दण्डक सूत्र	गजसार मुनि	प्राकृत	१४	१४२
दशग्रच्छेरा	_	ग्रपञ्ज श	१४	१४३
दश अञ्छेरा ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	४७	१५७
दर्शनसार	भ० देवसेन	प्रा कृत	१४	१४६
दर्शनसार सटीक	शिवजीलाल	प्राकृत भीर संस्कृत	१४	१४४
दर्शनसार कथा	पं० भारमल	हिन्दी	४१	308
दशलक्षरण कथा	पं० लोकसेन	संस्कृत	४०	४०६
दशलक्षरा कथा	ब्रह्म जिनदास	्र हि न्दी	४०	805
दशान्तर दशा फलाफल	-	संस्कृत	१०७	833
दशलक्षरा जयमाल	भाव शर्मा	संस्कृत धीर प्राकृत	१४१	१२६३
दशलक्षण जयमाल	पाण्डे र य पू	श्र ाम ंश	१४१	१२६८
दशलक्षरा पूजा	पं॰ द्यानतराय	हिन्दी	१४२	४०६१
दशलक्षण पूजा	सु मतिसागर	सस्कृत	१४२	१३०५
दशलक्षण घर्मयन्त्र	-	"	१ ६४	१५२१
दशलक्षरा वतोद्यापन		*,	१६१	१६७=
द्रव्य संग्रह	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४	१४७
द्रव्य संग्रह सटीक	त्रभा बन्द्रा वार्य	प्राकृत भीर सस्कृत	१४	१५१
इव्य संग्रह सटीक	पर्वत धर्मार्थी	,,	१५	१५२
द्रव्य संग्रह सटीक	बहादेव	31	8 x	१५३
द्रव्य संग्रह सार्थं	-	7.8	१५	१५५
द्रव्य संग्रह टिप्परा	प्रभाचन्द्रदेव	**	१४	१५७

युग्य नरम	लेकक	माचा	पृष्ठ संख्या	सम्ब सूची
				क्रमांक
दान निर्ण्य शतक	कवि सूत	सं स्कृ त	X/o	ሂሂሩ
द'न विधि		"	338	१८२८
दानशील तप संवाद शतक	सयम सु न्दर गणि	हिन्दी	₹¥	३ ३८
दानादि संवाद	समयसुन्दर	11	339	१८२६
द्वादम चक्री कथा	ब्रह्म नेमिदस	संस्कृत	88	*{0
द्वादश भावना	श्रुतसागर	,,	१६	१६०
द्वादण भूजा हनुमत्चित्र		-	٤x	55
द्वादम राशि फल	_	"	१०७	233
द्वादशवतोद्यापन	-	"	१४२	१३०६
द्वादश वतक्या	-	"	१८१	१६७६
द्वात्रिशी भावना	-	"	१४२	<i>७०६</i> १
द्वि घटिक विचार	पं० शिवा	"	७०१	१३ ३
द्विसन्धान काव्य	नेमि चन्द्र	"	५७	४५६
द्विसन्धान काव्य सटीक	पं० राघव	,,	ধ্ত	५६०
द्वि मभिघान कोश	-	,,	190	\$3 3
द्विजपाल पूजादि व विवान	विद्यानिद	"	१४२	१३०५
दिनमान पत्र	-	हिन्दी	१०७	e 3 3
दीपमालिकास्वाध्याय	-	"	१४२	30€9
दीक्षा प्रतिष्ठा विधि	-	सस्कृत धीर हिन्दी	338	१८३०
दुर्गादेवी चित्र	_	_	£3,83	553,554
दुषड़िया विचार	प० शिवा	संस्कृत	१०७	8000
देव।गम स्तोत्र	समन्त्रभद्राचार्य	19	१४२	१३१०
दोहा पाहड़	कुन्दकुन्दाचा र्य	সান্ত ন	१५	१५⊏
	(ध)			
धनं जय नाममाला	घ नं ज य	संस्कृत	90	688
घत्यकुनार चरित्र	बहा नेमिदत्त	,,	<i>७६</i>	७४०
धन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	,,	49.5	98x
बन्यकुमार चरित्र	भ० सकलकीति	. ;	७६	७४२
धन्यकुमार चरित्र	पं० रयधू	ग्र पभंश	<i>હ</i> હ	ゆえと
धर्मपरीक्षा रास	सुमति कीर्ति सूरि	(हिन्दी	१६	१ ६३
धर्म प्रक्तोत्तर	भ० सकलकीति	संस्कृत	१६	१६४
वर्षप्रकोत्तर श्रावकाचार	भ० सकलकीर्ति	**	१८८	१७३१
धर्मर सायगा	मुनि पद्मनंदि	সাকু ৰ	१ ६	१६५
	-		•	

त्रम्य गाम	लेकक	माण	ष्ट्रक संख्या	प्रम्य सुची क्रमांक
धर्म परीक्षा	वं० हरिषेएा	भपभ्रं श	५७	४६३
घमें परीक्षा	भ्र मितगतिसूरि	संस्कृ त	४७,१८८	प्रहर,१७३०
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	विजय राज	हिन्दी	ΥŞ	866
धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई	ला लचन्द	n	४१	४१२
धर्मशर्माम्युदय	हरिश्चन्द्र कायस्थ	संस् कृ त	X (9	१६४
घर्मसं ग्रह	पं० मेघावी	31	१८६	⊍ ₹ ⊍ \$
धर्म संवाद		,	१६	
धर्मामृत सूक्ति	पं० भ्राशाघर	,	१८६	
धर्मीपदेश पियुष	ब्रह्म नेमिदस	"	\$=E	3 5 0 9
धर्मीपदेशामृत	पद्मनंदि	,,	980	१७४४
ध्यान बत्तीसी	वनारसीदास	हिन्दी	१६	148
ध्यानावस्था विचार यंत्र		स स्कृ त	१६४	१४२२
धातु पाठ	हर्षकीति सूरि	,	१७१	१५८१
धातु पाठ	हेमसिंह खण्डेलवाल		१७१	१५५२
घातु रूपावली	_	,,	१७२	१५५३
भूप दशमी तथा ग्रनन्तव्रत कथा।	•	,,	४१	४१४
all and all all and the	(न)			
नन्द बत्तीसी	नन्दसे न	संस्कृत और हिन्दी	१२२	
नन्द सप्तमी कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	४१	
नन्दीक्वर कथा	_	संस्कृत	४१,१८१	४१६,१६८०
नन्दीश्वर काव्य	मृगेन्द्र)	४७	४६४
नन्दीश्वर जयमाल		त, संस्कृत भीर हि	न्दी २००	१८३१
नन्दीश्वर पंक्तिपूजा विद्यान		संस्कृत	१४२	१३१२
नन्दीश्वर पंक्ति विधान	शिववर्मा	**	१५१	१६८१
नन्दी सूत्र	-	भपश्च [े] श	१७	१७०
नयचक	देवसेन	संस्कृत भीर प्राकृ	त १७	१७१
त्यचत्रवालाय बोध	सदानन्द	हिन्दी	१७	१७३
नयचक भाषा	पं० हेमराज	•	१ ও	१७१
नलद मयन्ती चउ पई	सय मसु न्दर सूरि	**	ሂ=	
ननोदय काट्य	र्तवदेव रविदेव	'' संस्कृत	×ِد	_
नलोदय टीका	रायदय रामभूषि मिश्र		٠ ٢=	
नक्षार कथा	शनकाष । नज श्रीमत्याद	11	४१	
नरकों के पायड़ों का चित्र	न्या मध्य थि	**	£3	

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संख्या	प्रन्य सूची कर्माक
नवतत्व टीका	–	संस्कृत	१७	१७४
नवतस्य वर्गान	ध भयदेव सूरि	प्राकृत और हिन्दी	१७	१७६
नवपद यन्त्र चक्रद्वार	-	प्राकृत	७७	380
(श्रीपाल चरित्र)				
नवग्रह पूजा	-	संस्कृत	१ ४२	१३१३
नवग्रह पूजा विधान	-	1,	१४२	8368
नवग्रह पूजा सामग्री	-	हिन्दी	१४३	१३१५
नवग्रह फन	_	"	१०७	१००१
नवप्रहस्तोत्र व दान	-	संस्कृत भीर हिन्दी	१०८	१०० ३
नवकार महामन्त्र कल्प	_	संस्कृत	१६४	१५२३
नवकार रास	जिनदास श्रावक	हिन्दी	१६५	१५२४
नवरथ	-	,,	१७	३७१
नवरत्न काव्य	-	संस्कृत ग्रीर हिन्दी	ሂና	४७१
न्याय दीपिका	ग्रमिनव धर्मभूषणाच।	र्य संस्कृत	११८	१११७
न्याय सूत्र	मिथिलेक्वर सूरि	11	११८	१११६
नवनिधि नाम	-	हिन्दी	२००	१८३२
नागकुमार चरित्र	पुष्पदन्त	भ षभंश	७=	७५०
नागकुमार चरित्र	पं० घर्मघर	संस्कृत	ওৎ	७५२
नागकुमार चरित्र	मल्लिषेगा सूरि	",	७=	७५३
नागकुमार पंचमी कथा	मस्लिषेण सूरि	11	४१	388
नागश्रीकथा	ब्रह्म नेमिदत्त	•	४२	४२०
नागश्री चरित्र	कवि किशनसिंह	हिन्दी	ওচ	७५४
नाड़ी परीक्षा सार्थ	-	संस्कृत	ষ্	४०६
नाममाला	हेमचन्द्राचार्य	"	७१	७०४
नाममाला	कवि घनंजय	7)	७१	४०९
नारद संहिता	-	11	१०५	१००४
नारायण पृच्छा जयमाल	-	भ पभ्रं श	१ ४३	१३ १ ६
नास्तिकवाद प्रकरण	***	संस्कृत	१७	१८०
निषण्टु	हेमचन्द्र सूरि	*,	३०	३०६
निषण्टु	सोमश्री	1;	ξo	३०८
निषण्टु नाम रत्नाकर	परमानन्द	11	३०	३०७
नित्य किया काण्ड	- 5	गकुत, संस्कृत श्रौर हिन्दी	१७	१८१
निर्दोष सप्तमी कथा	•••	हिन्दी	४३	४२२

ग्रन्थ मास	लेसक	मावा	पृष्ठ संख्या	प्रनथ सूची
		(क्रमांक
निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवती दास	संस्कृत धौर हिन्दी	6 83	१३१७
निर्वाण क्षेत्र पूजा	-	हिन्दी	१४३	१३१८
नीतिशतक	भर्नुहरि	संस्कृत	ሂዳ	५७२
नीतिवाक्यामृत	सोमदेव सूरि)1	१२२	११३३
नीतिशतक सटीक	-	,,	१२२	११३
नीति संग्रह	-	,,,	१२२	११३७
नेमजिन पुराण	ब्रह्म नेमिदत्त	•)	१२४	
नेमजी की ढाल	रायचन्द्र	हिन्दी	४८	FOX
नेमजी का पद	उदयरत्न	,,	२००	१८३
नेमिद्रत काव्य	विक्रमदेव	संस्कृत	रूद	४७४
नेमजी राजूल सबैया	रामकरण	हिम्दी	२ ००	१८३४
नेमि निर्वाण महाकाव्य	कवि वाग्भट्ट	संस्कृत	χę	प्र७३२
नेमीश्वर पद	धर्मचंद नेमिचद	हिन्दी	२००	१८३४
नेपधकाव्य	हर्ष कीर्ति	संस्कृत	४६,७६	४=१,७४६
पथ्यापथ्य संग्रह	_ (q	!) संस्कृत	30	३१०
पद सहिता	<u>-</u>	संस्कृत ग्रीर हिन्दी	१७२	१५५४
पद्मनंदि पंचविशति	पद्मनंदि		250,888	४२४,
C-		.,		७४६ १७५४
पद्मप्रभू चित्र	-	ngian.	દપ્ર	5 € 8
पद्म पुरास	भ० सकलकीति	\$ r	१२५	११५५
पद्मपुराग भाषा	पं० लक्ष्मीदास	हिन्दी	१ २५	११५६
पद्म पुरासा	रविषेणाचार्यं	संस्कृत	१२५	११५७
पद्मावती कथा	महीचन्द सूरि	,1	४३	४२४
पद्मावती खन्द	कस्यागा	हिन्दी	१४४	११२३
पद्मावती देवी व पार्श्व-		•	£Х	८६ ३
नाथ का चित्र पद्मावती देवी यन्त्र	_	; f		* * * *
पद्मावती पूजन	- गोविन्द स्वामी	संस्कृत	१६५	१४२=
पद्मावती पूजा	गाविष्य स्वासा);	688	१३२४
पद्मावती स्तोष	-	संस्कृ त और हिन्दी	688	१३२४
पद्मावती सहस्त्रनाम	_	संस्कृत	\$ 88	१३२६
पद्मावत्याष्ट्रक सटीक	त्रमृतवत्स 	संस्कृत	888	8 ≇ ₹ 8
पद्मानस्याण्डकस्टाक पण्डानोगीत	पाश्वंदेवगिता	,,,	888	१३३२
पण्डाना चात परमहंस चौपई		हिन्दी	Χ£	Xςą
אויא מטריר אויא	नहा रायमल्ल	##	४३	२४७

				क्रमांक
परमात्म छत्तीसी	पं० भगवतीदास	हिन्दी	१८	१८३
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	ग्रपभ्रं श	१८	6=8
परमात्म प्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	,,	१८	१८४
परमेष्ठी मन्त्र	-	संस्कृत	१६५	१५२६
पत्य विचार	वसन्तराज	"	१०८	१००६
पस्य विघान पूजा	भ० शुभचन्द्राचार्य	*1	१४४	१३३३
पत्य विधान पूजा	श्रनन्तकी ति	"	१४५	१३३४
पस्य विधान पूजा	रत्ननन्दि	,,	१४४	१३३४
पहंजरा महाराज चरित्र	पं० दामौदर	श्रपञ्च`श	3 છ	७४७
प्रक्रिया कीमूदी	रामचन्द्राश्रम	संस्कृत	१७२	१५८६
प्रतापसार काव्य	जीवन्धर	हिन्दी	3 %	ሂ≒ሂ
प्रतिक्रमस्		प्राकृत	१४६	१३५२
प्रतिकमण सार्थ	-	प्राकृत, हिन्दी	3\$	१८३
प्रतिक्रमण सार्थ	***	प्राकृत, संस्कृत	१४६	१३ ५३
प्रतिमा बहोत्तरी	द्या नतराय	हिन्दी	38	858
प्रतिमा भग शान्ति विधि विधान	·	,,	१८१	१६≒२
प्रयम बसारा	-	,,	38	१६५
प्रद्युम्न कथा	ब्रह्म वेग्रीदास	27	88	¥ \$ %
प्रद्युम्न चरित्र	पं० रयघू	ध्रपभ्रं श	3 છ	७६३
प्रद्युम्न चरित्र	म हा सेनाचार्य	संस्कृत	98,	७६४,
G	-		200	१८३८
प्रद्युम्न चरित्र	श्री सिंह	धपभ्रं श	30	७६५
प्रशुप्त चरित्र	सोमकीर्ति	संस्कृत	50	७६८
प्रबोधसार	यशः कीर्ति	,,	838	१७५५
प्रभंजन चरित्र	_	**	50	७६९
प्रमेयरतमाला वचनिका	-	संस्कृत, हिन्दी	38	११६
प्रमयरत्नमाला	पं० माशिक्यनन्दि	संस्कृत	११५	१११८
प्रलय प्रमाग	-	,,	38	939
प्रवचनसार कृत्ति	_	प्राकृत, संस्कृत	38	१६=
प्रवचनसार वृति	धमृतच न्द्र सूरि	"	39	338
प्रवचनसार सटीक	-	प्राकृत, संस्कृत, हि	न्दी १६	२०२
प्रस्तारवर्णन	हर्ष कीति सूरि	संस्कृत	१००	ह २ =
प्र श्नसार	हयग्रीव	**	१०५	8000

प्रन्थ नाम	लेखक	मावा	वृष्ठ संस्था	प्रन्थ सूची क्रमांक
प्रश्नसार सग्रह	_	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१००५
प्रम्नावली	जिनवल्लभ सृरि	संस्कृत	१०८	3:09
प्रश्नोत्तरोपासका वा र	भ० सकलकीति	**	२०,	२०३,
			१८१	१७५६
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	विमल	,,	3 %	४८६
प्रक्र्वोत्तर रत्नमाला	राजा भ्रमोचहर्ष	**	२०	२०४
प्राकृत लक्षरम् विद्यान	कवि चण्ड	प्राकृत, संस्कृत, श्रपभ्रं ह पैशाची, मागधी श्रादि	r १७२	२०४
पा कार्ग्य		•	3.0	३११
पागिनीयसूत्र	- ध्याहि	संस्कृत	३ <i>०</i> १७२	रऽऽ १४८६
प्रायश्चित	व्याप्त श्रकलंघ स्वामी	"	१ <u>६</u> २	१ ७६९
प्रायश्चित बोल	अवस्य मः इत्रामा	,, हिन्दी	ξo	५ ०५,
पार्कान।थ चित्र		16.41		
वस्थानात्र । जन	_	_	€¥,	¤€¥,
पार्क्वनाथ ग्रीर पद्मावती चि	'ম		દ ૬ દ ૬	46X
पार्श्वनाथजी के देशान्तरी छन		- -		⊏€ २
•		हिन्दी 	33	६२४
पार्श्वनाथ पुराण	पद्मकीति	धप भ्र [ं] ग	१२५	११५८
पार्श्वनाथ पुरागा	प० रयघू)) 	१२५	११५६
पार्श्वनाथ पुराण	भूषरदास	हिन्दी	१२५	१ १६०
पार्श्वनाथ विनती	जिनसमुद्रसूरि	श्र पभ ंश	२००	१= ३६
पार्श्वनाथ स्तवन	~ _	संस्कृत	१४४	१ ३३६
पार्ण्यनाथ स्तवन सटीक	प द्मप्र भसूरि	11	१४५	६ ३ ४ ३
पाइवंनाथ स्तोत्र	शिव सु न्दर	11	१४५	३६६१
पार्थनाथ स्तोत्र	~	<i>it</i>	१४६	१३४६
पार्श्वनाथ स्तीत्र	-	संस्कृत, हिन्दी	१ १४५	१३४२
पामा केवली	~	संस्कृत	१४६	१३४८
पिगंत छन्द शास्त्र	पहुपसहाय	श्चवभ्रं म	33	દરપ્ર
पिगंस रूप दीपक	जयकिशन	हिन्दी	१००	६२७
पिण्ड विशुद्धावच्रि	जिनवल्लभ सूरि	संस्कृत, प्राकृत	२००	१८३७
प्रियमेलक कथा	ब्रह्म वेणीदास	हिन्दी	8₹	४२६
प्रीतिकंर मुनि चरित्र भाषा	जोघराज गोदीका	11	50	४ ७७
पुण्य बत्तीसी	समय सुन्दर	4,	१ =	१स६

ग्रन्थ नाम	लेखक	माषा पृष	ठ संस्या प्र	य सूची
				क्रमांक
पुण्याश्रव कथाकोण	रामचन्द्र	संस्कृत	४३,	४३०,
			७१	७०६
पुष्पाश्चव कथाकीम सार्थ	-	97	४३	४ई१
पुरासार संग्रह	भ० सक नकीर्ति	"	१२६	११६३
पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	धमृतचन्द्राचार्य	"	१८	१८७
पुष्पदन्त चित्रं		-	१६	€oo
पुरुपांजली पूजा	-	सस्कृत	१४६	३४६१
पुष्पाजली वतोद्यापन	पं० गंगादास	हिन्दी	६०	४८८
पूजासार समुच्चय	संग्रहीत	संस् कृत	१४६	१३५०
पूजा संग्रह	-	प पभंश	१४६	१३५१
पंच बसारा	-	प्राकृत	२००	१८३९
पच कल्याग्गक पूजा	_	संस्कृत, प्राकृत	१४७	? ३६०
पचतन्त्र	विष्णु समि	संस्कृत	१२२	११३८
पंच परमेष्ठी यनत्र	-	19	१६५	१४२७
पंच परमेष्ठी स्तोत्र	जिनप्र भसू रि	3)	१४७	१३ ६१
पंच प्रकाशसार	_	प्राकृत, संस्कृत	१=	१=६
पंच मास चतुर्दशी वतोदापन	सुरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१८१	१ ६८३
पत्रमी सप्ताय	कीर्ति बिजय	हिन्दी	६०	४≂६
पंच सग्रह	-	प्राकृत	१८	१८८
पंच सन्धि शब्द	-	संस्कृत	१७२	१५८८
पंचमीत्रत यूजा विघान	हर्षंकीति	17	१८१	१६८४
पचाशत किया व्रतोद्यापन	_	,,	१ = १	१६८५
पांच बोल		\$9	ሄ፪	४५४
	(ब)			
बड़ा स्तवन	श्र श्वसेन	हिन्दी		
बंध स्वामित्व (बंधतत्व)	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत ग्रीर हि	त्वी २०	२०६
बंधोदयउदीरण सत्ता विचार	सि॰ च॰ नेमिचन्द्र	प्राकृत	२०	२०=
बंधोदयउदीरणमत्ता स्वामिस्व		त्राकृत, संस्कृत	२०	२१०
ब्रह्म प्रदीप	पं० काशीनाथ	संस्कृत	१०=	१०१०
बारह व्रत कथा		,,	88	
बारह वत टिप्पगी		हिन्दी	१=१	१६८६
बासा त्रिपुरा पद्धति	श्रीराम	संस्कृत		
बाबन दोहा बुद्धि रसायन	प० महिराज	पपभंश, हिन्दी		४६०

प्रन्य गाम	लेखक	माचा	पुष्ठ संस्था ।	•••
	-	·		क्सांक
बाहुबली चरित्र	धनपाल	ग्रपभंश	50	७७६
बाहुबली पायड़ी	~	भ्रपभ्रं श, संस्कृ	हत ४४	४३७
बाहुबली पाथड़ी	प्रभयवली	प्राकृत	1 = 8	ાથ
बुद्ध वर्णन	कविराज सिद्धराज	संस्कृत	88	358
बुदिसागर स्टान्त	बुद्धिसागर	,,	२००	१८४०
वंकचूल कथा	शहा जिनदास	"	88	358
	(भ)			
भक्तामर री ढाल	-	हिन्दी	६०	४६१
भक्तामर स्तोत्र	मानतुगांचार्यं	संस्कृत	१४८	3758
भक्तामर भाषा	नयमल और लालचन्द		१४६	२३७=
मक्तामर भाषा	प० हेमराज	हिन्दी	388	१३७६
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	रत्नचन्द मुनि	सं स्कृत	388	१३८०
भक्तामर सटीक	_ ~	**	388	१३५२
भक्तामर तथा सिद्धप्रिय स्तीत्र		,,	388	१३८६
भगवती माराघना सटीक	-	प्राकृत-सस्कृत	२०	288
भजन व श्रारती संग्रह	-	हिन्दी	२०१	१=४१
भद्रबाहु चरित्र	भ्रा० रत्ननन्दि	संस्कृत	= ?	७७=
भरत बाहुबली वर्गान	मी शराज	हिन्दी	የ አ	888
भरत क्षेत्र विस्तार चित्र	~	संस्कृत	8 इ	६०१
भव्य मार्गेगा		हिन्दी	70	२१२
भविष्यदत्त चरित्र	पं० श्रीघर	संस्कृत	۳ १	७७७
भविष्यदत्त चरित्र	पं० घनपाल	ग्रमभं ग	۳ ٦ ,	७६६,
			२०१	१=४२
मविष्यदत्त चीपई	व० रायमल्ल	हिन्दी	45	930
मिष्यपुराण	-	संस्कृत	१२६	११६४
माडली पुराण	भाडली ऋषि	हिन्दी	१०८	9099
गमिनी विलास	पं० जगन्नाथ	संस्कृत	६०	४६२
गरती स्तोत्र	शंकराचार्यं	,,	१४०	१३८७
ाव नासार संग्रह	महाराजा चामुण्डराय	19	२ १	२१४
गव संग्रह	देवसेन	प्राकृत	२१	२१६
ाव संप्रह	श्रुतमुनि	n ´	78	२१≤
ाव संग्रह	पं० वामदेव	संस्बृ त	२ २	२२१

प्रस्थ नाम	ले सक	भाषा	पृष्ठ संस्था	वृत्य सूची कसांक
भाव संग्रह सटीक		हिन्दी	२२	२२२
भाव त्रिभंगी सटीक	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत, संस्कृत	२०१	१ ८४४
भावी कुलकरों की नामावली	-	"	२०१	१८४४
भाषाभूषगा	महाराजा जसवन्तसिह	हिन्दी	१००	353
भुवन दीपक	पद्मप्रभ सूरि	संस्कृत, हिन्दी	१०८	१०१३
भुवनेश्वरी स्तोत्र	पृथ्वीघराचार्य	मं स्कृ त	२०१	१५४५
भूपाल चतुर्विंगति स्तोत्र	पं० ग्राशाधर	.,	१५०	१३८६
भूषरा भावनी	भूषरा स्वामी	हिन्दी	३४	३४०
भैरव चित्र	··-	-	६६	६०२
भैरव पताका यन्त्र	_	संस्कृत, हिन्दी	१६५	१५२=
भैरव पद्मावती कल्प	मल्लिषेण सूरि	संस्कृत	१६४	१५२६
भोज प्रबन्ध	कवि बल्लाल	***	६०	£ 3 X
	(年)			
मदन पराजय	जिन देव	मंस्कृत	ξο,	५६४,
			820	११२२
मदन पराजय	हरिदेव	प पभ्रं श	६०	છ 3 પ્ર
मदन युद्ध	वूचराज	हिन्दी	ል ጀ	४४२
मयुगब्टक	कवि मयुर	संस्कृत	६१	५६=
मलय सुन्दरी चरित्र	ग्र खयराम लुहाड़िया	हिन्दी	5 ?	७१२
मल्लिनाय चरित्र	भ० सकलकीति	संस्कृत	5 ?	इ ३ ७
महर्षि स्तोत्र	पं० म्राशाधर	*1	१५०	६३६१
महालक्ष्मी कवच	-	21	१५०	४३६४
महालक्ष्मी पद्धति	पं० महादेव	*1	७१	606
महालक्ष्मी स्तोत्र		p 1	१५०	४३६५
महाबीर जिन नय विचार	यशः विजय	प्राकृत, हिन्दी	२२	२२४
महाबीर स्वामी चित्र	~~	-	€ ६	४०३
महिपाल चरित्र भाषा	पं० नथमल	हिन्दी	द २	४3७
महिम्न स्तोत्र सटीक	ग्रमोच पुष्पदन्त	संस्कृत	१५०,	१३६६
			848	0359
मृगी संबाद चौपई	-	हिन्दी	<mark>४</mark> ४	६४४
मृत्यु महोत्मव वचनिका	पं० सदासुख	सस्कृत, हिन्दी	२२	२२६

ग्रत्थ नाम	लेखक	भाषा	पुष्ठ संख्या	प्रनथ सूची
				क्रमांक
मार्कण्डेय पुराशा सटीक	मार्कण्डेय	संस्कृ त	१ २६	११६५
माधवानल कथा	कुंवर हरिराज	हिन्दी	४४	8 88
माधवानल काम कन्दला चौपई	देव कुमार	"	४ሂ	४४६
मानमंजरी नाममाला	नन्ददास	संस्कृत	७१	905
मास लग्न फल	_	11	308	१०१४
मिथ्यात्व खण्डन	कवि सनुप	हिन्दी	१२०	११२३
मिथ्यात्व खण्डन नाटक	साह कन्निराम	13	१२०	११२४
मुक्तावली कथा	***	संस्कृत	ሄ ሂ	७४४
मुक्तावली पूजा	_	11	१५१	23 € \$
मुद्राविधि	_	,,,	२०१	१८४७
मृहर्त चिन्तामणी सटीक	देवकी राम	,,	308	१०१५
मुहूर्त चिन्तामग्री	नारायग	**1	१०६	१०१६
मुहर्त मुक्तावली		संस्कृत, हिन्दी	309	१०१८
मृतिपूजा मण्डन	पं०मिहिर चन्द्रदास	-	२०१	१८४६
मृल संघाहणी	रत्नकीर्ति	संस्कृत	४४	४४६
मृलाचार प्रदीपिका	भ•सकलकीति	,	₹3\$	०७७ १
मेघकुमार ढाल	मुनि यशःनाम	हिन्दी	६१	33%
मेचदूत काव्य	कालिदास	संस्कृत	६ १	800
मेघदुत काव्य मटीक	लक्ष्मी निवास	3 7	६१	६०५
मैघदूत काव्य सटीक	बल्लभ देव	,,	६१	६०६
मेघदूत काव्य टीका	वत्स	79	€ १	603
मेघमाला व्रत कथा	भुनि वल्लभ	,,	88	388
मैध र्का	_	संस्कृत, हिन्दी	309	१०२०
मेदनीपुर का लग्न पत्र	~	हिन्दी	308	१०२१
मोक्ष मार्ग प्रकाशक वचनिका	पं० टोडरमल	हिन्दी, राजस्थ	गनी २२	२ २४
मंगल कलम चौपई	लक्ष्मी हर्ष	हिन्दी	६ २	६१३
मंगल पाठ	-	17	१५०	१३६२
	(य)			
यमक स्तोत्र	चिरन्तन भाचार्य	संस्कृत	६२	६१४
यमाष्टक स्तोत्र सटीक	-		१५१	3389
यशोधर चरित्र	मुमुक्षु विद्यानन्द	,,	द३	¥30
यशोधर चरित्र	सोमकीर्ति सोमकीर्ति		دع	७१६
33133 3133	MIN WIN	11	4	364

प्रत्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संस्या	प्रन्थ सूची क्रमांक
यशोधर चरित्र	सोमदेव सूरि	"		७३७
यशोषर चरित्र	पुरुपदन्त [े]	मप अंश	58	७६=
यशोधर चरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	संस्कृत	58	५०६
यशोधर चरित्र	भ० सकलकीर्ति	,,	58	८ ११
यशोधर चरित्र	पूर्गादेव	,,	= 	= ۶ ٤
यशोधर चरित्र	वासवसेन	,,	<i>ح</i> ا	८१७
यशोधर चरित्र (पीठिका बंध)	_	11	= 19	- د १ =
यशोधर चरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	"	50	382
यज्ञदत्त कथा	-	"	४४	४५१
योग चिन्तामिए		संस्कृत, हिन्दी	· 38	383
योग शतक	विदग्ध वैद्य पूर्णातेन	संस्कृत	₹	३१४
योग शतक		91	₹ १	3 ?
योग सतक टिप्परा	-	संस्कृत, हिन्दी		₹१६
योग शतक सटीक	-	संस्कृत	3	₹१७
योग शतक	धन्वन्तरि	संस्कृत, हिन्दी	₹₹	३१८
योग शतक सार्थ		,,	₹ १	388
योग शास्त्र	हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	१६७	१५४२
योग साधन विधि (सटीक)	गोरखना प	हिन्दी	१६७	१५४४
योगसार गृहफल	-	संस्कृत	308	१०२२
योगसार संग्रह	_	11	१६७	१५४३
योग ज्ञान	-	,,	१६७	१५४५
	(₹)			
रचुवंश भहाकाव्य	कालिदास	संस्कृत	६ २	६१५
रचुवंश राजाओं की नामावली	-	"	२०१	१८४८
रघुवंश	कालिदास	,,	६२	६१=
रघुवंश टीका	ग्रा नंददेव	11	६२	६१६
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	11	£38	१७७१
रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	प्रभाचद्राचार्य	11	838	१७७२
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	श्रीबन्द	ध पभ्रं श	१८३	६ ००३
रत्नकोश	group.	संस्कृत	२०१	१५४६
रत्न चूड़रास	यशः कीर्ति	हिन्दी	59	520
रत्नमाला	शिवकोट्याचार्य	संस्कृत	£3\$	१७७५

प्रम्य नाम	लेखक	मावा	पृष्ठ संख्या १	स्य सूची
			_	क्रमांक
रत्नसार	पं० जीवन्धर	11	₹33	१७७६
रात्रि भोजन दोष विचार	घ मं समुद्रवाचक	हिन्दी	₹3\$	१७७७
रत्नत्रय विवान कथा	प० रत्नकीति	संस्कृत	४६	४५३
रत्नत्रय द्वत कथा	श्रुतसागर	19	४६	४५२
रत्नत्रम पूजा		**	१५१	१४००
रत्न परीक्षा (रत्न दीपिका)	चण् डेश्व र सेठ	"	२० २	१८५१
रल परीक्षा		हिन्दी	२०१	१८४०
रत्नावली वत कथा	-	संस्कृत	४६	४४४
रमल शकुनावली	_	हिन्दी	308	१ ०२३
रमल शास्त्र	षं० चिन्तामणी	**	११०	१०२४
रस मं जरी	_	संस्कृत	\$ 8	३२•
रस रत्नाकर (बातु रत्नमाला)	_	1,	38	३ २१
रसेन्द्र मंगल	नागार्जु न	"	₹१	३२ २
रक्षा बन्धन कथा	49940	हिन्दी	४६	४ሂሂ
राजनीति शास्त्र	चम्पा	9 1	१ २२	११३६
राई प्रकरस विवि	_	"	१६२	१६८७
राजवातिक	धकलंकदेव	सस्कृत	२२	२२७
राम भाजा	तु लसीदास	हिन्दी	६ २	६२०
रामपुराग	भट्टारक सोमसेन	संस्कृत	१२६	११६६
रामायरा भास्त्र	चिरन्तन महामुनि	"	१२=	११६८
रामचन्द्र स्तवन	सनतकुमार	17	१ ५१	१४०२
राम विष्गु स्थापना		हिन्दी	१६२	१६८८
राम विनोद	रामचन्द्र	"	३२	३२३
राशि नक्षत्र फल	महादेव	संस्कृत	११•	१ ०२७
राशिफल	-	सस्कृत, हिन्दी	११०	१०२८
राशि लाभ व्यय चक	-	हिन्दी	88+	१०२६
राशि संकान्ति	_	,,	११०	• ६० ३
रात्रि भोजन दोष चौपई	मेषराज का पुत्र	**	४६	४५ ६
रात्रि भोजन त्याग कथा	भ० सिंहनंदि	संस्कृत	४६	328
रावि भोजन त्याग कथा		हिन्दी	४६	8 ۥ
हरमाणी वत विधान कथा	विशाल कीर्ति	मराठी	१¤२	84=€
रोटतीज कथा	गु ण्नदि	संस्कृत		

प्रत्य नाम	लेसक	भाषा	पृष्ठ संस्था	ध्रम्थ सूची कर्माक
	(ল)			
लग्न चक	-	संस्कृत	११०	\$ \$ 0 \$
सरन चन्द्रिका	काशीनाथ	9;	११०	१०३२
लग्न प्रमारा	-	संस्कृत, हिन्दी		₹ ₽\$
लग्नादि वर्गान	-	संस्कृत	११०	१०३४
लग्नाक्षत फल	_	"	१ १०	१०३५
लघु जातक (सटीक)	भट्टोत्पल	"	१११	१०३६
लघु जातक भाषा	कृपाराम	 हिन्दी	१११	8030
लघु तत्वार्थं सूत्र	-	प्राकृत, संस्कृत		२२८
लघुनाम माला	हर्ष कीर्ति सूरि	संस्कृत	৬ ছ	300
लघु प्रतिक्रमतु	-	संस्कृत, प्राकृत	१४१	१४०३
लघु शान्ति पाठ	-	संस्कृत	१५१	१४०४
लघु सहस्त्र नाम स्तीत्र	-	**	१५१	१४०५
लघु स्तवन (सटीक)	सो मनाथ	,,	१५१	१४०६
लबु स्त्वराज काव्य सटीक	सघु पण्डित)1	Ęą	६२१
लघु स्तवन टीका	मुनि नन्दगुरा कोग्री	**	१५१	१४०६
लघु स्वयंभू स्तोत्र	देवनंदि	3)	१५२	? 809
ल घु स्वयंभू स्तोत्र (सटीक)	देवनं दि	संस्कृत, हिन्दी	१५२	१४१२
लघु सारस्वत	कल्याण सरस्वती	संस्कृत	१७३	8468
लषु सिद्धान्त कौमुदी	पारिएनी ऋषिराज	,,	१७३	१५६५
लब्धि विधान पूजा	म ० हर्षकीति	,,	१५२	१४१५
लब्बि विघान वृत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	86	४६२
लक्ष्मी सरस्वती संवाद	श्री भूषण	सस्कृत	६३	६२२
लंघन पथ्य निर्गुय	बाचक दीपचन्द	**	३२	३२४
लिगानु शा सन	भ्रमरसिंह	>1	७१	७१०
लील।वती भाषा	लाल चन्द	हिन्दी	१११	१०४१
लोलावतो सटीक	भास्कराचा <i>र्य</i>	सस्कृत	११ १	१०४२
लीलावती भाषा	नातचंद	हिन्दी	288	१०४१
	(력) .		- •	
वर्दमान काव्य	जयमित्र हल	अपञ्च श	ĘĘ	६२४
वदंगान काव्य	षं० नरसेन	,	5 G	म २१
वर्दमान चरित्र	कवि शसग	संस्कृत	50	= 25

ब्रम्ब दाम	लेखक	माबा	पृष्ठ संस्था	प्रम्य सूची क्रमांक
वदंगान वरित्र	<u> </u> ुष्पदन्त	द्मपञ्च श	59	= 7 %
वद्धं मान जिन स्तवन	-	संस्कृत	१५२	१४१६
वद्धं मान जिन स्तवन सटीक	पं० कनककुशल गरिए	13	१५२	१४१७
वर्ड मान पुरागा	नवलदास गाह	हिन्दी	१२८	११६६
वन्देतान की जयमाल	माघनन्दि	संस्कृत	१ ५३	१४१=
वनस्पति सत्तरी सार्थ	मुनिचन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत		३ २६
व्युच्छति त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२३	230
वरांग चरित्र	पं० तेजपास	भ्रपभ्रं श	55	= 7 €
वरांग चरित्र	भट्टारक वर्द्ध मान	सस्कृत	55	= 7 9
वर्षं कुण्डली विचार	_	,,	१११	१०४३
वर्षं फलाफल चक		,	१११	१०४४
वसुधारा धारिस्ती नाम महाविद्या	नंदन	9,	६३	६२५
वसुवारा धारिगो नाम महाशास्त्र		"	१ =२	१६६५
व्रत कथा कोश	श्रुतका गर		४६	४ ६ ३
व्रतसार	_	,,	* *	१६६४
व्रतसार शावकाचार	_	11	£39	१७७६
विजय पताका मंत्र	~	"	१६५	१४३३
विजय पताका मंत्र	-	"	१६५	१५३२
वृत रत्नाकर	केदारनाथ भट्ट	"	800	630
वृत रत्नाकर सटीक	पं० केदार का पुत्र राम		१००	ERX
वृत रत्नाकर सटीक	केदारनाथ भट्ट	"	800,	ε₹,
•	-		१ ०१	€ ३७
वृत रत्नाकर टीका	समय सुन्दर उपाध्याय	n	१००	६३६
वृत रत्नाकर टीका	कवि सुल्हरण	,,	१०१	=€3
वृत्दावन काव्य	कविमाना	,,	Ęą	६२६
वृहद् कलिकुण्ड चित्र	-		દ ૬	६०४
वृहद् जातक (सटीक	वराहमिहिराचार्य	"	१११	१०४५
षृहद् जातक टीका	भट्टोत्पल	13	१११	१०४५
बृहद् चाराक्य राजनीति शास्त्र	चारावय	,,	१२३	११४०
वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक		मा कृत	२३	२२६
बृहद् प्रतिकम् श्रं		प्राकृत, संस्कृत	१५३	१४२०
बहद् प्रतिक्रमण		**	€ ¥ 3	१४२४

बृहत् स्वयंभू स्तोत्र (सटीक) समन्तभद्राचायं बृहत् स्वयंभू टीका प्रभाचन्द्राचायं बृहत् खोडण कारण पूजा वृहत्योडण कारण यन्त्र वृहद् सिद्धचक यन्त्र वानय प्रकाण भूत्र सटीक दामोदर वानय प्रकाणभिष्यस्य टीका वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपूज्य चित्र विक्रमसेन चौपई नानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् तिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमणी ग्रंक –	संस्कृत '' '' '' ''	2	फर्माक १४२३ १४२३ १ ४२४ १ <u>४</u> ३०
बृहत् स्वयंभू टीका प्रभाजन्द्राचार्यं बृहत् षोडण कारण पूजा बृहत्योडण कारण यन्त्र वृहत् सिद्धचक यन्त्र वाक्य प्रकाण भूत्र सटीक दामोदर वाक्य प्रकाणभिष्यस्य टीका वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपूज्य जित्र विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् तिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्य) विचिन्तमग्गी यांक —))))))))))))))))))))))))	१५३ १५३ १६५ १६५	१ ४२३ १ ४२४
वृहत् षोडण कारण पूजा वृहत्पोडण कारण यन्त्र वृहद् सिद्धचक यन्त्र वावय प्रकाश सूत्र सटीक वावय प्रकाशभिषस्य टीका वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपूज्य चित्र विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पन्ति कथानक भगवती विचार पट् तिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ)	1) 11 11	१५३ १६५ १६५	१ ४२४
वृह्त्पोडष कारण यन्त्र वृह्त् सिद्धचक यन्त्र वावय प्रकाश सूत्र सटीक वावय प्रकाशभिष्यस्य टीका वासपुज्य चित्र विक्रमसेन चौपई विक्रमादित्योत्पन्ति कथानक (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमणी यांक	91 17	१६५ १६५	
वृहद् सिद्धचक गन्त्र वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक वाक्य प्रकाशभिष्यस्य टीका वाद पञ्चीसी वासपुज्य चित्र विक्रमसेन चौष्दं विक्रमसेन चौष्दं विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् तिशंक (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमस्सी ग्रंक	"	१६५	8 X 3 0
वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक दामोदर वाक्य प्रकाशभिपस्य टीका — वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपूज्य चित्र — विक्रमसेन चौपई — विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमसी ग्रंक —	"		• • •
वावय प्रकाशिभिपस्य टीका — वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपूज्य चित्र — विक्रमसेन चौगई — विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमग्री संक —		9143	१५३१
वाद पच्चीसी ब्रह्मगुलाल वासपुज्य चित्र - विक्रमसेन चौपई - विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ)		१७३	१५६६
वासपूज्य चित्र — विक्रमसेन चौगई — मानसागर विक्रमसेन चौगई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट्तिशंक गजसार (जीबीसदण्डक सार्थ) विचिन्तमसी स्रंक —	1,	१७३	१५६७
विक्रमसेन चौपई — विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमग्गी ग्रंक —	हिन्दी	२३	२३१
विक्रमसेन चौपई मानसागर विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ)	-	٤ ۾	६०६
विक्रमादित्योत्पत्ति कथानक भगवती विचार पट् विशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमसी संक —	हिन्दी	६३	६२७
तिचार षट् त्रिशंक गजसार (चौबीमदण्डक सार्थ) विचिन्तमग्गी ग्रंक —	"	55	द२द
(चौबोमदण्डक सार्थ) विचिन्तमग्गी म क –	संस्कृत	80	४६४
विचिन्तमस्सी म क -	प्राकृत, हिन्दी	२ ३	२३ २
विजय पताका यन्त्र -	हिन्दी	११२	१०४६
	संस्कृत	१६५	१५३३
विदग्ध मुख मण्डन धर्मदास बाँद्वाच	ार्य ,,	६ ३,	६२८,,
		१०१	१४३
विद्वद्भुषण बालकृष्णा भट्ट	1,	६३	६३१
विद्वद्भूषरा टीका मधुसूदन भट्ट	**	€ 3	६३१
विधान व कथा संग्रह -	,,	४७	४६५
विधान व कथा संग्रह -	प्राकृत व धपभंग	ग १४३	१४२७
विधि सामान्य -	संस्कृत	११=	3888
विनती संग्रह पं० भूघरदास	हिन्दी	१५४	१४२८
विपरीत ग्रहरा प्रकरण -	संस्कृत	१ १२	१०४७
विमलनाथ स्तवन विनीत सागर	हिन्दी	१४४	१४२६
विवाह पटल भाषा पं० रूपचन्द	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५०
विवाह पटल श्रीराम मृनि	संस्कृत	११२	१ ०४६
विवाह पटल सार्थं -	संस्कृत, हिन्दी	११२	१०५१
विवेक विलास जिनदत्त सूरि	संस्कृत	₹93	१७७८
विषापहार स्तोत्र धनजय	"	१५४	१ ४३० ,८७५
विपापहार स्तोत्रादि टीका नागचन्द्र सूरि	"	१५४	1848 1848
विकापहार विलाप स्तवन वादिचन्द्र सूरि			

ग्रन्थ नीम	लेखक	माषा	पृष्ठ संस्या	प्रत्य सूची
				क्रमांक
विशेष सत्ता त्रिभंगी	नयनन्दि	प्राकृत	२३	२३३
विशेष महाकाध्य सटीक	कालिदास	सस्कृत	६४	६३२
(ऋतु संहार)				
विशेष महाकाव्य टीका	भ्रमर कीर्ति	"	६४	६३२
वेद क्रान्ति		,,	२ ३	२३५
वैताल पच्चीसी कथानक	शिवदा स	**	४७	४६६
वैद्यकसार	नयन सुख	डिन्दी	३ २	३२७
वैद्य जीवन	प० लोलिमराज कवि	र संस्कृत	३ २	३२८
वैद्य जीवन टीका	रूद्र भट्ट	*1	३ २	3 30
वैद्य मनोत्सव	पं ० नयन सुख	हिन्दी	३२	₹₹
वैद्य रत्नमाला	सि० च० नेमिचन्द्र	*11	33	३३३
वैद्य विनोद	शंकर भट्ट	स स् कृत	33	३३४
वैराग्य माला	सहल	11	EX	६३३
वैराग्य शतक	भृतंहरि	11	६४	६३४
वैराग्य शतक सटीक	_	प्राकृत, हिन्दी	६४	3 € 3
वैराग्य शतक सार्थ	_	,,	६४	६३=
शकुन रत्नावली	_	हिन्दी	१ १२	१०५३
शकुन शास्त्र	भगवद् भाषित	सस्ङ्घत	११२	१०५४
शकुनावली	<u></u>	हिन्दी	११२	१. ५५
शत श्लोक	वैद्यराज त्रिम ल्ल भट्ट	ट् संस्कृत	३ ३	3 X X
शनिश्चर कथा	जीवरादास	हिन्दी	४७	४६=
शनि, गोतम श्रोर पार्श्वनाथ स्तवन	ा संग्रह	हिन्दी, संस्कृत	१५५	१४३=
शनिश्चर स्तोत्र	हरि	हिन्दी	१५५	3589
शब्द बोध	_	संस्कृत	१७३	१ ५६=
शब्द भेद प्रकाश	महेम्बर कवि	,,	१७३	3328
श ब्द रूपाव ली	-	n	१७३,	१६००,
	**	,,	१७४	१६०४
शब्द समुच्चय	धमरचन्द	17	१७४	१६०५
शब्द साधन	***	11	१७४	१ ६०६
गब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	*1	१७४	१६०७
मत्रुजंय तीयंद्वार	नयसुन्दर	हिन्दी	ÉR	378
मान्ति चक्र मण्डल	_	संस्कृत	१ ६६	१५३४
शान्तिनाथ चरित्र	भट्टार क सक लकीर्ति	n	44	397

ग्रन्थ नाम	लेखक	माषा	पृष्ठ संस्मा	प्रन्थ सन्त्री
				क्रमांक
गान्तिनाथ पुरागा (सटीक)	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत, हिन्दी	१२८	9890
मालिभद्र महामुनि चरित्र	जिनसिंह सूरि (जिनराज)	हिन्दी	~ \$	= ३१
शिव पच्चीसी एवं ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	**	१४५	१४४१
शिव पुरागा	वेद व्यास	संस्कृत	१ २८	११७१
शिव स्तोत्र	-	37	१५५	१ ४४२
शिवार्चन चन्द्रिका	श्रीनिवास भट्ट	, ,	१ ६६	१५३५
शिशुपालवघ स टीक	-	*,	६४	६४२
मिशुपालवध सटीक	महाकवि माध	,,	६४	६४०
मिशुपालवय टीका	म्रानन्द देव	**	६४	६ ४३
भीघ्रबोय टीका	ति लक	,,	११३	७५०९
भीष्रवीच सार्थ	-	संस्कृत, हिन्दी	११३	१०६३
गोतलनाथ चित्र	_	_	e3	003
शीतलाष्टक	-	संस्कृत	१४४	१४४३
शीलरथ गाथा	-	प्राकृत	६४	६४४
शोल विनती	कुमुदचन्द्र	हिन्दी, गुज रार्त	१ ६५	६४५
णिलोपारी चितासन पद्मावती	-	संस्कृत	ĘX	६४६
तथानक				
शोलश्री चरित्र	-	**	२०२	१८५२
गोभन स्तोत्र	केशरलाल	,,	१५६	१४४४
शोभन श्रुति	पं० धनपाल	,,	२३	२३६
शोभन श्रुति टीका	क्षेमसिह	,,	२ ३	२३६
	(स)			
संगीतसार	पं० दामोदर	संस्कृत	१२१	११२६
सज्जन चित्तवल्लभ	मल्लिषेरा	"	ξ ¥,	६४७,
			२०२	१८५६
सत्ता त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१५	६६१
संध्या बन्दन	-	संस्कृत	१ ५६	१४४६
सन्धि धर्ष	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	१७४	१६१०
सन्मति जिन चरित्र	रयधू	भपभंग	54	८३२
सम्निपात कलिका लक्ष्या	षन्वन्तरि वैद्य	संस्कृत, हिन्दी	३ ३	३३७
सप्त पदार्थं सत्रावचूरि	•	संस्कृत	388	११२०

ग्रम्थ माम	नेसक	मावा	पृष्ठ संख्या	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
		I		क्रमांक
सप्त व्यसन कथा	श्राचार्य सोमकीति	20	४७	४७०
सप्त व्यसन समुज्यय	पं॰ भीमसेन	1,	६५	६५१
सप्त सूत्र		,,	१७४	१६११
समगत बोल	-	हिन्दी	ĘX	६४२
समन्तभद्र स्तोत्र	-	संस्कृ त	१५६	888E
समयसार नाटक सटीक	द्यमृतचन्द्र सूरि	,,	२४,	४२०,
			२५	२५१
समयसार नाटक भाषा	पं० बनारसीदास	हिन्दी	२५	२५७
समयसार भाषा	पं० हेमराज	,,	२४	२५६
समवशरण स्तोत्र	विष्गू शोभन	सं स्कृ त	१५६	१४४०
समवशरण स्तोत्र	धन देव	"	१५६	१४४१
सम्भवनाथ चरित्र	पं० तजपाल	ग्रपभ्रंश	55	⊏ 33
सम्यक्तव कौमुदी	अयशेख र सूरि	संस्कृत	४५	४७३
सम्यक्त्व कौमुदी	पं० खेता	1)	38	૪૭૯
सम्यक्तव कौमुदी	कवि यशःसेन	,,	38	850
सम्यक्त्व कौमुदी	जोधराज गोदीका	हिन्दी	38	४५२
सम्यक्त्व कौमुदी सार्थ	~~	सं स्कृत	38	8=8
सम्यक्त्व कौमुदी पुराण	महीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१२६	११७२
सम्यक्त्व रास	ग्रह्म जिनदास	हिन्दी	ĘĘ	६५३
सम्यक चरित्र यन्त्र	-	संस्कृत	१६६	१५३७
सम्यक दर्शन यन्त्र		. ••	१६ ६	3 ह प्र 9
सम्मेदशिखरजी पूजा	मंतदेव	हिन्दी	१५६	१ ४५३
सम्मेदशिखर महात्म्य	घर्मदास क्षुल्लक	,,	१५७	१४४५
सम्मेदशिखर विधान	हीरालाल	,,	१५७	१४५६
समाधि शतक	पूज्यपाद स्वामी	संस्कृत	२५,१५६	२६०
समास चन्न	•	,,	१७४	१६१२
समास प्रयोग वटल	पं० वररूचि	,,	१७४	११३
सरस्वती चित्र	-	<u>-</u>	e 3	६१०
सरस्वती स्तुति सार्थ		संस्कृत	१५७	१४४८
सरस्वती स्तुति	नागचन्द्र मुनि	17	१५=	१४६८
सरस्वती स्नोत्र	पं० बनारसीदास	हिन्दी	१५७	8846
सरस्वती स्तोत्र	बृहस्पति	संस्कृत	१५७	१४६०
सरस्वती स्तोत्र	श्री ब्रह्मा		१५७	१४६ २

ग्रन्थ नाम	नेसक	भाषा	पृष्ठ संस्या	प्रत्य सूची क्रमांक
सरस्वती स्तोत्र	विष्गु	**	१४८	१४६७
सर्वतीयंगाल स्तोत्र	-	*;	१५८	१४६९
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा		**	२६	२६३
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्तिकेय	प्राकृत	१६५	3308
स्वर सन्धि	पं० योगक	संस्कृत, हिन्दी	२० २	? =XX
सर्वधातु रूपावली	-	संस्कृत	१७४	१६१५
सर्वया बत्तीसी	कवि जगन पोहकरण	हिन्दी	२०२	१८४७
सहस्त्रनाम स्तोत्र	पं० ग्राज्ञाघर	संस्कृत	१५८	१४७०
सहस्त्रनाम स्तवन	जिनसेनाचार्य	21	१५८	१४७१
स्तवन पार्श्वनाथ	नयचन्त्र सूरि	91	१५८	१४७२
स्तोत्र संग्रह		"	१४=	१४ ७३
स्थूलभद्र मुनि गीत	नथमल	हिन्दी	६७	६६४
स्याद्वाद रत्नाकर	देवाचार्य	संस्कृत	२६	२६२
स्वर्णाकर्षण भैरव		,,	१५८,१६६	१४४४
स्वय्न विचार	-	हिन्दी	१ १ ४	3009
स्वप्नाध्याय	-	संस्कृत	११५	१०८०
स्वरोदय	-	"	११४	१०७४
स्त्री के सोलह लक्षण	,	संस्कृत, हिन्दी	२०२	१८५४
सागारघमामृत	पं० श्रामाधर	संस्कृत	१६६	१५०१
साठी संवत्सरी	-	,,	११५	१०८२
साधारण जिन स्तवन सटीक	जयनन्द सूरि	"	१५६	१४७६
साधारए जिन स्तवन	ू पं० कनककुशाल गिरा	,,	१६०	3089
साधु वन्दना	बनारसीदास	हिन्दी	१५८	१४७४
साधु वत्दना	पार्थ्व चन्द्र	संस्कृत	१५६	१४७६
साधु बन्दना	समय सुन्दर गणि	हिन्दी	१५६	१४७८
सामायिक पाठ	<u>-</u>	प्राकृत, संस्कृत		1850
सामायिक पाठ सटीक	-	संस्कृत, हिन्दी	१६०	१४८७
सामायिक पाठ सटीक	पाण्डे जयवन्त	"	₹	२६६
सामायिक पाठ तथा	***	प्राकृत, संस्कृत		१४६१
तीन चौबीसी नाम		हिन्दी		1-41
सामुद्रिक शास्त्र	-	संस्कृत	११५	१०५४
सामुद्रिक विचार चित्र	_	-	69	883

ग्रन्थ नाम	लेखक	माचा	पृष्ठ संस्था प्र	म्य सूची कर्माक
सारखी	-	हिन्दी	११५	9309
सार समु ण्य य	कुलभद्र	सं स्कृत	\$ E E	१८०४
सारस्वत दीपिका	भ्रनुभूतिस्वरूपाचा र्यं	1)	१७४	१६१६
सारस्वत दीपिका	मेघरत्न	11	१७४	१ ६१६
सारस्वत प्रक्रिया पाठ	परमहंस पंरित्राजक अनुभूतिस्वरूपाचार्यः	17	१७५	१६२०
सारस्वत ऋजू प्रकिया	-	संस्कृत, हिन्दी	१७७	१६४४
सारस्वत व्याकरण सटीक	ध० स्बरूपाचार्य	संस्कृत	१७न	१६४५
सारस्वत व्याकरण टीका	धर्मदेव	,,	१ ७5	१६४५
सारस्वत शब्दाधिकार	-	1)	१७=	१६४६
सिद्ध चक्र पूजा	शुभचन्द्र	J1	१६०	१४६२
सिद्ध चक्र पूजा	श्रुतसागर सूरि	11	१६०	8388
सिद्ध चक पूजा	प॰ ग्राशाघर	,,	१६०	8868
सिद्ध दण्डिका	देवेन्द्र सूरि	प्राकृत, संस्कृत		२६७
सिन्दुर प्रकरण	सोमप्रभाचार्यं	संस्कृत	₹४,	₹४१,
			Ę Ę	ፍ ሂሄ
सिन्दुर प्रकरण सार्थ	union.	11	६६	EXO
सिद्धप्रिय स्तोत्र		1,	१६०	\$88 5
सिद्धप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	**	१६०	१४६६
सिद्धप्रिय स्तोत्र टीका	सहस्त्र कीर्ति	,,	१६०	१४६७
सिद्ध सारस्वत मन्त्र गणित स्तोत्र	धनुभूति स्वरूपाच।श्रं	,,	१६१	१४ ६5
सिद्धान्त कोमुदी		"	१७८	१६५०
सिद्धान्त च न्द्रिका		•,	१७=	१६४१
सिद्धान्त चिन्द्रका मूल	उ द्भ ट	,,	१७८	१६५२
सिद्धान्स चन्द्रिका मूल	रामचन्द्राश्रम	**	१ ७=	१६५३
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राश्रमा चार्य	37	309	? \$ \$ \$
,, ,, वृत्तिका	सदानन्द	17	१७ह	1881
सिद्धान्त चन्द्रिका	रामचन्द्राचार्यं	"	१७ =	१६५६
सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	श्री कृष्ण घूर्जरि	**	3 \$ 9	1178
सिद्धान्त चन्द्रोदय	घनन्त भट्ट	,,	8 ? &	2828
सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र	शंकराचार्य	.,	१६१	8348
सिद्धान्त सार	जिनचन्द्र देव	प्राकृत	२६	24=

प्रत्य नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ संस्था	प्रम्य सूची
-				क्रमांक
मिहल सुत चतुष्पदी	समय सुन्दर	हिन्दी	38	,ReX
सिहासन बत्तीसी	सिद्धसेन)	38	४५६
सीता पच्चीसी	वृद्धिचन्द	11	६६	ÉX¤
सुनुमाल महामुनि चौपई	मान्ति हर्ष	97	5 5	८ई४
सकुमाल स्वामी चरित्र	भट्टारक सकलकीति	सस्कृत	4 5	५ ३५
सुखबोधार्थं माला	पं० देवसेन	n	२७	२७६
सुगन्घ दशमी कथा भाषा	खुभालचन्द	हिन्दी	४०	8≃€
सुगन्ध दशमी कथा	सुशील देव	भ्रमञ ्ग	४०	ጸ ६ ०
सुगन्ध दशमी कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	ν	858
सुगन्ध दशमी कथा	बहा का नसागर	**	Хo	४६२
सुगन्ध दशमी व पुष्पांजली कथा	-	संस्कृत	४०	४६३
मुदर्शन चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	1)	<i>⊏</i> €	द ३ द
सुदर्शन चरित्र	मुमुक्षुश्री विद्यानन्दि	"	द ६	3 5 2
सुदर्शन चरित्र	ग्रहा- नेमिदत्त	"	3=	5 82
सुदर्शन चरित्र	मृति नयनन्दि	भ पभ्रं श	द९	५ ४३
सुष्य दोहड़ा	`-	, ;	¥\$	3 X o
सुभद्रानो चोदालियो	कवि मानसागर	हिन्दी	२६	२७०
सुभाषित काव्य	भ० सकलकीर्ति	संस्कृत	३४	२५१
सुभाषित कोश	हरि	1)	२६	२७१
सुभाषित रत्न संदोह	श्रमितगति	4)	३ ४,	₹ X ₹,
3			ĘĘ	६६०
सुभाषित रत्नावली	भ० सकलकीर्ति	11	₹X	३५३
सुभाषितार्गा व	_	प्राकृत, संस्कृत	7	₹₹₹
सुभाषितावली	भ० सकलकीति	संस्कृत	३ ६	३६०
सुमतारी ढाल	शि ब्बूराम	हिन्दी	६६	६६१
सुरपति कुमार चतुष्पदी	पं० भावसागर गरिए	"	ج و	588
सूक्ति मुक्तावली शास्त्र	सोमप्रभाचार्य	संस्कृत	३४	३४३
सूक्ति मुक्तावली सटीक	-	1)	₹X	386
सूर्यं ग्रह धात	पं० सूर्ये	हिन्दी	११५	१०१२
सूर्योदय स्तोत्र	पं० कृष्ण ऋषि	संस्कृत	१ ६ १	१५००
सोनागीरी पच्चीसी	कविभागीरथ	हिन्दी	ĘĘ	६६२
सोली रो ढाल	_	"	६६	ę ę

प्रम्म मरम	लेसक र	माचा	पृष्ठ संस्था	प्रत्य सूची
		1		ऋमांक
संग्रह प्रन्थ	भिन्न-भिन्न कर्ता है	संस्कृत	२०२	१८५६
संदीप्त वेदान्त शास्त्र	परमहंस परिवाजका	चार्य ,,	२ ०२	१≒५६
सम्बोध पंचासिका सार्थ	_	प्राकृत, संस्कृत	१६७	१८०६
सम्बोच पंचासिका	कवि दास	,,	२७	२७३
सम्बोध सन्तरी	जयशेखर सूरि	,,	२७	२७४
सम्बोघ सत्तरी	<u>-</u>	प्राकृत, हिन्दी	20	२७५
संस्कृत मंजरी		संस्कृत	308	१६६८
संयम क्र्णुन	-	श्रपभ्रं ग, हिन्दी	२०२	१८६०
संवत्सर फल	_	संस्कृत	११६	१०१३
	(ব)			
षट् कर्मोपदेशे माला	श्रमर कीर्ति	ग्र पभ्र ंश	438	१७५०
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	भट्टारक लक्ष्मणुसेन		838	१७=२
षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	ग्र मरकी ति	ग्र पभ्रंश	२३	२३७
षट्कारक प्रक्रिया	_	संस्कृत	१७४	१६०६
षट्कोसा यन्त्र	_	,,	१६६	१५३६
ष ट् द र्शन विचार	-	31	२३	२३६
षट् दर्शन समुच्चय टीका	हरिभद्र सूरि	,,	२३	२४०
षट् द्रव्यसंग्रह टिप्पण	प्रभाचन्द्र देव	प्राकृत, सस्कृत	२४	२४ २
षट् द्रव्य विवर्ण		हिन्दी	२४	२४३
षट्पाहुड़	मुन्दकुन्दाचार्व	प्राकृत	२४	२४४
षट् पाहुड सटीक	17	श्राहृत,संस्कृत	२४	२४४
षट् पाहुड	"	"	२४	२४४
षट् पाहुड सटीक	श्रुत सागर	**	२४	२४६
षट् पंचासिका	भट्टोत्पल	संस्कृत	११३	१०६५
षट् पंचासिका सटीक	-	**	११४	१०७२
षट् पंचासिका सटीक	ब राहमिहिराचार्य	n	११४	१०७३
षट् त्रिशति गाया सार्थं	मुनिराज हाढ़सी	प्राहत, मंस्कृत	२४	३४६
षोडव कारस कथा	-	हिन्दी, लंस्कृत	५०	46 8
षोडष कारण जयमाल		ग्रपभ्रं श, संस्कृ	त १५६	\$ ४४४
बोडव कारए। पूजा	_	प्राकृत, संस्कृत		
-			२०२	१ ५५३
षोडष योग		संस्कृत	११४	

ग्रन्थ नाम	लेखक र	ाषा	पृष्ठ संस्था	₩.
				न्नमांक
	(क्ष)		
श्रवावचूर्णी	-	संस्कृत	४३४	१७८३
श्रावक चूल कथा	~	"	ሂ ፡	8 £X
श्रावक धर्म कथन		"	888	१७=४
श्रावक प्रतिक्रमग्र	_	प्राकृत, संस्कृत	१६१	१५०२
श्रावक वत भण्डा प्रकरण सार्थ	<u>-</u>	23	१६४	१७८६
श्रावकाचार	पद्मन निद	प्राकृत	४३१	१७८७
श्रावकाचार	पं ० भ्राशाक्षर	संस्कृत	१६५	१७६२
श्रावकाचार	_	प्राकृत	१६४	१७६४
श्रावकाचार	भट्टारक सकलकीति	संस्कृत	१६५	१७६५
श्रावकाचार	पूज्यपाद स्वामी	71	१६५	१७६६
श्रावकाराधन	समय सुन्दर	"	१६५	१७६=
श्री कृष्ण का चित्र	-	-	€ ७	€ 0 5
श्रीपाल कथा	पं० खेमल	संस्कृत	ሂ∘	४६६
श्रीपाल चरित्र	पं० रयधू	श्रपभ्रं श	60	3 82
श्रीपाल चरित्र	-	संस्कृत, हिन्दी	60	८४०
श्रीपाल रास	यशः विजय गरिग	हिग्दी	0 3	≂ ५१
श्रीमान कुतूहल	विजय देवी	ग्रपभ्रंश	६७	६६६
श्रुतबोघ	कालिदा स	संस् कृत	१०१	६४३
श्रुतबोध सटीक	गुजर	t)	१०१	6४३
श्रुन स्कन्ध	बहाचारी हेमचन्द्र	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१५०४
श्रुत स्कन्ध भाषाकार	पं . बिर धीचन्द	संस्कृत, हिन्दी	१६१	१४०४
श्रुतस्त्रम्य	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	२७	२७७
श्रुतरतपन विधि	~	संस्कृत	१८३	१६६६
श्रुतज्ञान कथा	-))	¥•	४६७
श्रेणिक गीनम संवाद	-	प्राकृ त	२७	२८१
श्रेणिक चरित्र	शुभवन्द्राचायं	संस्कृ त	69	द¥३
श्रेगिक चरित्र	•	***	83	= 4 4
श्रीण क महाराज चरित्र	श्र णय कुमार	हिन्दी	દ ર	८५६
शृक्षंता बद्धश्री जिन-	-	स स्कृत	१६१	१५०१
चतुर्विशंति स्तोत्र				

प्रन्थ नाम	नेखक इ	ावा -	पृष्ठ संख्या र	स्थ सूची क्रमांक
	(表)		nen miket innen sikkrimen ergenomennen	
हट प्रदीपिका	भात्माराम योगीन्द्र	संस्कृत	१६७	१५४७
हरावन्त भीवई	बहारायमल	हिन्दी	χo	338
हनुमान चरित्र	ब्रह्म जि स	संस्कृत	१३	= ५७
हनुमान टीका	प. दामोदर मिश्र	0	१२०	११२५
हनुमान कथा	ब्रह्मः रायम ल्ल	हिन्दी	५०	४६५
हनुमान चित्र	` -	_	٤ ۾	દ१ २
ह म न वर्जू यन्त्र	~	संस् कृत	१६६	िरप्रहर
हरिवं शपुराण	बहा. जिनदास	"	१ २€	११७३
ह रिवंश पुराण	मुनि यशः कीर्ति	ध्रपञ्च श	१२६,	११७६,
	-		२०३	१ = ६१
हरिश्चन्द्र चौगाई	ब्रह्म. वेणीदास	हिन्दी	५१	५००
हेमकथा	रक्षामरिए	संस्कृत, हिन्दी	५१	५०२
होरा चक		संस्कृत	१ १६	१०६५
होती कथा	छीत्तर ठोलिया	हिन्दी	५१	५०३
होली पर्वकथा	-	संस्कृत	प्र१	५०५
होली पर्व कथा सार्थ	-	,,	* 8	४०७
होती रेगुका चित्र	पं • जिनदास	**	£ ?	=
हंसराज बच्छराज चौपाई	भावहर्ष सूरि	,, _{रि} न्दी	५१	४०५
हंस वत्स कथा	_		प्रश	४०६
हंसराज वैद्यराज चौपाई	जिनोदय सूरि	श्र पंत्रंश	٤٦	द ६३
	(为)			
क्षपग्रसार	माधवचन्द्र गीरा	प्राकृत, संस्कृत	२७	२५२
क्षत्र चूड़ामिए।	वादिभसिंह सूरि	संस्कृत	प्रश	પ્રશ
क्षुत्लक कुमार	सुन्दर	हिन्दी	પ્ર	५११
क्षेम कुत्रहल	क्षेम कवि	संस्कृत	Ę	६६७
क्षेत्रपाल पूजा	शान्तिदास	39	१६१	१५०५
	(氣)			
नाताव्यक	-	संस्कृत	१६१	१५०६
त्रिपताचक		हिन्दी	११६	१०६६
त्रिभंगी	सि० च० नेमिचन्द्र	प्राकृत	२७	२=३

प्रन्य नाम	लेशक	भाषा	नृष्ठ संस्था	प्रन्य सूत्री क्रमांक
त्रिभंगी टिप्परा		प्राकृत, संस्कृत	२७	कमाक २८४
त्रिभंगी भाषा		प्राकृत, संस्कृत प्राकृत, हिन्दी	२५ २६	२ ० २८७
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	— सि० च० नेमिचन्द्र	भारतः, ।हापा भारतः	१ ५ ४	१ ६€=
त्रिलोक ।स्थति		संस्कृतः संस्कृतः	१ 5४	१६६६
त्रिलोकसार	सिद्धान्त च०, नेमिचन्द्र		15 8	\$ 600
त्रिलोकसार टीका	सहस्त्र कीर्ति	संस्कृत	१८४	१७०३
त्रिलोकसार टीका	ग्रह्मश्रुताचार्य	संस्कृत, प्राकृत		१७०४
त्रिलोकसार भाषा	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	२८%	१७०७
त्रिलोकसार भाषा	दत्तनाथ योगी	n	१८५	१७०६
त्रिलोचन चन्द्रिका	प्रगल्भ तर्क सिंह	" संस्कृत	२०३	१८६२
त्रिवसचार	जिनसेनाचार्यं	,,	038	१८११
त्रिष्ठि पविणस्यविरावली चरिः		n	€ २	E & &
त्रिषाच्छ लक्षास महापुरासा	पुष्पदन्त	भ्रपभ्रंश	१ २६	११७६
त्रिषष्ठि लक्षण महापुरासा	गुणभद्राचार्यः	संस्कृत	35\$	११६२
त्रिषष्ठि स्मृति	पं० ग्राशाधर	ांस् कृत	१२६	११७७
त्रेषठ श्लाका पुरुष चौपर्द	षं ॰ जिनमति	हिन्दी	ध्र	प्र१२
	(君)			
भान चौपड़	_	हिन्दी	€ 5	£ 8 X
ज्ञान तरंगिएी	मुमुक्षु भट्टारक ज्ञानभूष	ए संस्कृत	१६७	१ ५४=
ज्ञानः पच्चीसीं	षं० बनारसीदास	हिन्दी	२८	२८८
ज्ञान प्रकाश्चित दीवार्ण्य		संस्कृत	११६	१०६७
ज्ञान हिमची	कवि जगरूप	हिन्दी	६७	६६=
ज्ञानसूर्योदय नाटक	वादिचन्द्र	संस्कृत	१ २०	११ २६
ज्ञानाकुशं स्तोक	_	संस्कृत, हिन्द	ी १६२	१५०७
ज्ञःनाकुषां	-	संस्कृत	१६६	१५६०
ज्ञाना गुंथ	शुभचन्द्रदे व	#	१६७	१ ५५१
ज्ञानादर्ग गद्य टीका	श्रुतसागर	n	१ ६=	୧ ೩೩೩
ज्ञानार्णव तत्व प्रकरसा	~	हिन्दी, संस्कृ	त १६≒	१५५६
ज्ञानार्गाव वचनिका	पं० जयचन्द	संस्कृत	१६८	₹ ೩%=
क्रानार्शव वचनिका	शुभचन्द्राचार्य	हिन्दी	१६८	exxe
ज्ञानाग्वं वचनिका टीका	पं॰ जयचन्द खाबड़ा	n	१ ६=	8×4E

ग्रन्थकार एव ग्रन्थ

ग्रन्थकार का नाम	प्रन्थ नाम	ग्रन्थ सूची कर्माक	भाषा
ग्रकलंक	प्रायश्चित शास्त्र	१७६६	संस्कृत
	राजवातिक	२२७	17
प्रसयराम लुहाड़िया	मलय सुन्दर चरित्र	५३७	हिन्दी
ग्र िनवेश	श्रंजन निदान सटीक	२६० सं	स्कृत ग्रीर हिन्दी
प्र नन्तकोर्ति	पत्य विधान पूजा	x 5 5 8	संस्कृत
धनन्त भट्ट	तर्क संग्रह	१११४	*1
	सिद्धान्त चन्द्रोय	११२१	17
ग्रनुप कवि	मिथ्यात्व खण्डन	११२३	हिन्दी
मनुभूति स्वरूपाचार्य	सारस्वत दीपिका	१६१६	संस्कृत
311	सारस्वत प्रकिया पाठ	१६२०	,,
ग्रभयकुमार	श्रेगािक चरित्र	८ ४६	हिन्दी
ग्रमयदेव सूरि	जयतिहुण स्तोत्र	१२७७ प्र	ाकृत और हिन्दी
.,	नवतत्व वर्णन	१ ७६	"
भ्रमयबली	बाहुबली पाथड़ी	७७७	प्राकृत
ग्रभिनव गुप्ताचार्य	ईण्वर प्रत्यभिज्ञा सूत्र	११०८	संस्कृत
प्रभिनव धर्मभूषरााचार्य	न्या यदी पिका	१ ११७	11
ग्रमरकीर्ति	जिनपूजा पुरन्दर ग्रमर वि	ाधान १२८०	ग्रपभ्रं स
	विशेष महाकाव्य टीका (१		संस्कृत
	षट् कर्मोपदेश रत्नमाला		भ्रमभं स
ग्रमरच न्द	शब्द समुख्यय	१६०४	संस्कृत
ग्रमरसिंह	धमरकोश	६७७	,,
	लिग।नुशासन	७१०	"
ब्रमोघपुष्य वन्त	महिम्न स्तोत्र सटीक	१३६६, १३६७	r _a
समोध हर्व	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	२०४	IÅ
प्रमृतव न्त्र सूरि	प्रवचनसार वृत्ति	338	्र प्राकृत और संस्कृ
• •	समयसार सटीक	२५१, ५२०	u

प्रथमार का नाम	ग्रन्थ नाथ	प्रत्य सूची समांक	भाषा
अ मृतचन्द्राचार्य	पुरुषार्थं सिद्धयुपाय	१८७	संस्कृत
बमृतदत्स	पद्मावती सहस्त्रनाम	१३३१	"
बनितगति सूरि	धर्म परीक्षा	४६१, १७३०	9;
	सुभाषित रत्न संदोह	३५२, ६६०	,,
अशग कवि	बद्धं मान चरित्र	5 7	22
ग्र श्वसेन	बड़ा स्तवन	१ ३६४	हिन्दी
ग्र श्विनीकुमार	श्रश्विनी कुमार संहिता	२८६	संस्कृत
ब्रात्माराम योगीन्द्र	हट प्रदीपिका	१४४७	,,
प्रान्त	कोकसार	१ = १ ६	हिन्दी
प्रा नन्ददेव	रघुवंग टीका	६१६	संस्कृत
	शिशुपालवध टीका	६४३	7)
पं॰ माशाधर—	इष्टोपदेश टीका	₹₹	 ,⊁
	ग्रहशान्ति विधान	६६३	"
	जिनकल्याग्मालः ।	१ ७२ ८	,, ,,
	जिन यज्ञकल्प	११८२, १६७७	1)
	धर्मामृत सूक्ति	१७३३	,,
	भूपाल चतुर्विगति स्तोत्र	3 व्ह १	"
	महर्षि स्तोत्र	१३६३	"
	सहस्त्रनाम स्तोत्र	१४७०	"
	सागारधर्मामृत	१=०१	11
	सिद्धचऋपूजा	१४६४	,, ,,
	श्रावकाचार	₹७६२	"
	त्रिषष्टि स्मृति	११ ७ ७	"
उद् मट्ट	सिद्धान्त चन्त्रिका	१ ६५२	"
उदय रत्न	नेमजीका पद	१८३	हिन्द <u>ी</u>
उमास्वामी	तत्कार्थसूत्र	१ ३३	संस्कृत
एकनायमह	किरातार्जुं नीय सटीक	¥ \$ \$	n
म्हर्षि वेवीषस्य	गजसिंह कुमार चौपई	• १८१८	हिन्दी
क्रमककीरिर्व	तत्वार्थसूत्र भाषा		कृत भीर हिन्दी
पं० कनककृशलगरिए	वर्दं मान जिनस्तवन सटीक	१४१७,	संस्कृत
		१४७६	•

प्रंचकहर का नाम	प्रन्थ नाम	प्रन्थ सूची कर्माक	म/पा
कनकामर '	करकण्डु चरित्र	. ७१७	श्रपञ्ज स
कन्तिराम साह	मिथ्यात्व खण्डन नाटक	११२४	हिन्दी
कल्यास	पद्मावती छन्द	११२३	,,,
कल्यारण सरस्वती	लघुसारस्वत	१५६४	संस्कृत
कार्तिकेय	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	₹७, १७ ६६	प्राकृत
पं० कामपाल	चीबीस कथा	838	हिन्दी
कालिवास	कु मा रसम् भव	ሂ३४	संस्कृ त
	में घदूत	६००	**
	रघुवंश महाकाव्य	६१५, ६१⊏	14
	श्रुतबोध	583	**
	ऋतुसंहार	६३२	10
काहना छावड़ा	गुरास्थान कथा	७२	हिन्दी
पं० काशीनाथ	बहा प्रदीप	१०१०	संस्कृत
	लग्न चन्द्रिका	१०३२	**
किशनसिंह	किया कोश	७१, ६६०	हिन्दी
•	नागश्री चरित्र	७४४	.,
कीर्तिवाचक	एक गीत	४२४	14
कीर्तिविजय	पञ्चमी सप्ताय	% 58	11
मुन्दकुन्दाचार्य	दोहा पाहुड़	१४=	प्राकृत
	षट् पाहुड	२४४	,,
न् युवचन्द्राचार्य	कल्यरा मन्दिर स्तोत्र	१२२५	संस्कृत
	शील विनती	६४४	हिन्दी
कुलभ द्र	सार समुच्चय	१८०४	संस्कृत
हुंबर भूबानीदास	खूदीप भाषा	८१७	हिन्दी
हुपाराम -	ज्योतिषसार भाषा	७६३	•,
	लघु जातक भाषा	१०३७	#1
ं० कृष्ण ऋषि	सूर्योदय स्तोत्र	१५००	संस्कृत
ं० केदारनाथ सट्ट	वृत्त रत्नाकर मटीक	३६६	,,
केशरलाल	शोभन स्तोत्र	6888	14
केश च्या स	केशव बावनी	४३७	हिन्दी
हेशव मिश्र	तर्क परिभावा	१२१, १११४	संस्कृत

प्रथकार का नाम	प्रत्य नाम	ग्रन्थ सूची साचा
		क्रमांक
केशवाचार्य	जीव तत्व प्रदीप	११२ प्राकृत भीर संस्कृत
खुशालचन्द	सुगन्धदशमी कथा भाषा	४८६ हिन्दी
पं॰ खेला	सम्यक्त्व कौमुदी	४७६ संस्कृत
पं० खेमल	श्रीपाल कथा	४६६ ,,
यंगादास	छन्दोमंजरी	६२२ प्राकृत और संस्कृत
	पुष्पांजनी व्रतोद्यापन	५८८ हिन्दी
वजसार	चौबीस दण्डक	१०८ प्राकृत
	दण्डक सूत्र	१४२ ,,
	विचार षट्त्रिणक	२३२ प्राकृत ग्रीर हिन्दी
गोरसनाथ	योगसाधन विधि	१५४४ हिन्दी
गोविन्द स्वामी	ग्रपामार्ग स्तोत्र	११६२ संस्कृत
	पद्मावती पूजन	१३२४ "
वौतमस्थामीः	इंटोपदेश	२७ ,,
	ऋषिमण्डलस्तोत्र सार्थं	१२२३ ,,
गुर्ज र	श्रुतबोध सटीक	., e83
गुरमनन्दि	ऋषि मण्डल पूजा	१२१७ ,,
	रोटतीज कथा	४६१ ,,
पुरामद्वाचार्यं	श्रात्मानुशासन	6 .8
	जिनदत्त कथा	३८६ "
	त्रिषिट लक्षग् महापुराग्	११७६ "
गुरूरय राभूवराः	जीव प्ररूपग्	११३ प्राकृत
गुला वय न्द	एक पद	३७७ हिन्दी
गुलाल	बाद पच्चीसी	२३१ "
पं० घनस्यामः	चतुर्विशति तीर्थं कर स्तुति	१२६० संस्कृत
सण्ड कवि	प्राकृत लक्षरम् विधान	३३१ प्राकृत, संस्कृत,
		श्रपभंश इत्यादि
चण्डे श्वर सेठ	रत्न परीक्षा	१५४१ संस्कृत
चन्द्रकीरिः	तल्ह्यर्मामृत	१२२ ,,
सम्पा	राजनीतिशास्त्र	११३६ हिन्दी
वाग्यय ;	चाग्पन्यनीति	११३० सस्कृत
	वृहद् चागाक्य राजनीतिभास्त्र	११४० ,,

मंचकार का नाम	प्रत्य नाम	, प्रन्य सूची कमांक	भागा
चामुण्डराय	चारित्रसार टिप्परा	७३०	"
J	भावनासार संग्रह	२१५	11
चिन्ताम णि	रमलशास्त्र	१०२४	हिन्दी
चिरन्तन ग्राचार्य	यसक स्तोत्र	६१४	संस्कृत
	रामायराणास्त्र	११६८	91
कोर कवि	चौर पंचासिका	ጸጻε	**
छोत्तर ठोलिया	होली कथा	乂 ○ 孝	हिन्दी
जगनपोहकरण	सर्वया बत्तीसी	१न५७	17
पं० जगन्नाथ	भामिनी विलास	४६२	संस्कृत
पं० जगरूप	जिनमूर्ति उत्थापक चौपई	१=२६	हिन्दी
•	ज्ञान हीमची	६६८	**
जयकिशन	पिगल रू ग्दीप क	€२७	19
जयकीर्ति	जिन पंचकल्यासक पूजा	१२८१	सस्कृत
जयभन्द छ।वड़ा	श्रात्म मीमांसा वचनिका	¥	संस्कृत श्रौर हिन्दी
	तत्वार्थसूत्र वचनिका	3 5 9	*)
	ज्ञानार्श्व वचनिका	१५५८	"
जयदेव	गीतगोविन्द	ሂሄው	•
जयमित्र हल	वर्द्ध मान काव्य	६२४	भ पभ्र [ं] श
पं० अयरत्न	ज्वर पराजय	३००	संस्कृत
पाण्डे जयबन्त	सामायिकपाठ सटीक	२६६	संस्कृत स्रौर हिन्दी
जयशेखर सूरि	सम्यक्तव कौमुदी	४७३	संस्कृत
-	सम्बोध सत्तरी	२७४	प्राकृत और संस्कृत
पं० जयसर	कुल ध्वज चौपई	७१८	हिन्दी
जवानम्ब सूरि	जिनस्तवन सार्थ	१२८७, १४७६	संस्कृत
जसवन्तसिंह	भाषा भूषस	३ १३	हिन्दी
जिनचन्द्र सुरि	यौदोली चतुष्पदी	ሂሄፍ	n
जिनदत्त सूरि	विवेक विलास	१७७=	संस्कृत
पाण्डे जिनदास	जम्बू स्वामी कथा	X3 6	. हिन्दी
	होली रेग्युका चित्र	द६२	संस्कृत
ब्रह्म जिनदास	श्रनस्तव्रतकथा	₹ =	हिन्दी
	भाकाश पं चमीवतकथा	३७२	. ,

शंथकार का नाम	ग्रम्थ नाम	ग्रन्थ सूची क्रमांक	माचा
	बंकचूल कथा	358	٠,,
	लब्धि विधान वत कथा	४६२	"
	सम्यक्तव रास	FXF	n
	सुगन्थदशमी कथा	४६१	n
	हरिवंश पुरागः	११७३	संस्कृत
जिनदेव	मदन पराजय	X E &	,,
जिनदास धावक	नवकार रास	१४२४	हिन्दी
जिनप्रमसूरि	गौलम स्तोत्र	१२५२	संस्कृत
	चतुर्विंशति जिन स्तवन	१ २६४	>
	पंच परमेष्ठी स्तोत्र	१३६१	,,
पं० जिनमति	त्रेषठ श्लाकापुरुष चौगई	प्र१२	हिन्दी
जिनवस्लम मुरि	प्रश्नावली	3008	संस्कृत
-	पिण्डविशु ढावक ूरि	१८३७ सं	स्कृत ग्रीर प्राकृत
जिनसमुद्रसूरि	पाष्ट्रवेनाथ विनती	१८३६	श्रपश्च श
जिनसेनाचार्यं	चकथर पुराए।	११४७	स स्कृत
	सहस्त्रनाम स्तोत्र	१४७१	19
	त्रवर्णाचार	१=११	,,
जिनहर्ष सूरि	चन्दनराजमलयगिरि चौपई	₹€३	ि हिन्दी
	शालीभद्र महामुनि चरित्र	द ३ १	,,
जिनोदय सूरि	हंसराज वैद्यराज चौपई	= 	ग्र पञ्च ंश
जीवन्धर	प्रतापसार का ब्य	४८४	हिन्दी
	रत्नसार	१७७६	संस्कृत
जीवस्पवास	शनिष्चर कथा	¥85	हिन्दी
जोधराज गोदीका	प्रीतिकर मुनि चरित्र भाषा	प्रथण	"
• •	सम्यक्तव कौमुदी	४८२	27
जौहरीसाल	म्रालोचना पाठ	२४	**
पं० टोडरमल	गोम्मटसार भाषा	છછ	राजक्षानी
	मोक्षमार्गे प्रकाशक वचनिका	२२६	71
बालूराम	भढाई द्वीप पूजन भाषा	११८८	हिन्दी
मुनि ढाइती	दुण्डिया मेंस खण्ड न	१८२७ प्र	कित और संस्कृत
	ढाढसी मुनि गाथा '	१२०	73

प्रयकार काश्माम 🥕 🚈	प्रत्थ नाम	प्रन्य सूची कमांक	भाषा .
	वट् त्रिशंति गाथा	२४६	79
तर्कों स ह	त्रिलोचन चन्द्रिका	१=६२	संस्कृत
पं० ताराचन्द भावक	चतुरंशीवतोद्यापन	१२५३	11
तिलक	शी प्रबोध टीका	१०५७	! :
ुलसीदास वुलसीदास	रामाजा	६२०	हिन्दी
पं तेजपाल	वरांग चरित्र	<i>द</i> २६	ग्रपभ्रं स
•	सम्भवनाथ चरित्र	द ३३	,,
दण्डिराज देवज	जातक	४७३	संस्कृत
इत्तनाय योगी	त्रिलोकसार भाषा	१७०६	हिन्दी
पं० दामोदर	गुण रत्नमाला	२६७	संस्कृत
•	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२४	*1
	पंजहरा महाराज चरित्र	७४७	ग्रपञ्चं श
	वाक्य प्रकाश सूत्र सटीक	१५६६	संस्कृत
	मगीतसार	११२६	11
दामोदर मिश्र	हनुमान टोका	११२५	**
दास कवि	सम्बोध पंचासिका	२७३	प्राकृत <mark>श्रीर संस्कृत</mark>
वीपचन्द वा चक	लंघनपथ्य निर्णंय	३२५	संस्कृत
देवकीराम	मृहर्तेचिन्तामिए सटीक	१०१५	11
देवकुमार	माधवानल कामकन्दला चौपई	४४६	हिन्दी
वेवन ि व	श्रंक गर्भ खण्डार चक	४२	सस्कृत
	जिनगुए। सम्प्रति वतोद्यापन	१२७६	,,
	लघु स्वयभू स्तोत्र	१४०७	11
	सिद्धप्रिय स्तोत्र	१४६६	,,
देवसेन	ग्राराधनासार	२२	प्राकृत
	म्रालाप पद्धति	११०३	संस्कृत
	दर्शनसार	१४६	*,
	नयचक	११०३	संस्कृत श्रीर प्राकृत
	भाव संग्रह	२१६	प्राकृत
	सुलबोधार्थं माला	२७६	संस्कृत
देवाचार्य	स्याद्वादरस्माकर	२६२	**
वेबेग्ब्रसूरि	घ न्घस्वामित्व	२०६	प्राकृत भौर हिन्दी

प्रंचकार का नाम	प्रम्थ माम	प्रन्थ सूची फर्माफ	मावा
	सिद्ध दण्डिका	२६७ :	भाकृत भीर संस्कृत
बौलतराम	जीव चौपई	१११२	हिन्दी
	दण्डक चौपई	888	**
मनेजय	धनंजयनाममाला -	£68	संस्कृतः
	नाममाला	७०४	> 1
धनवेब	समवशरण स्तीत्र	१४५१	19
ब म्बन्तरि	योग शतक	३१८	संस्कृत ग्रौर हिन्दी
	सिन्नपातकलिका लक्षरा	330	**
दं० धनपाल	बाहुबली चरित्र	३७७	ग्रप भ ंश
	भविष्यदत्त चरित्र	७६६, १८४२	,,
	शोभन श्रुति	२३६	संस्कृत
धरनेन्द्र	चिन्तामिंग पार्श्वनाथस्तीत्र	१२७०	,,
धर्मचन्द मण्डलाचार्य	गौतमस्वामी चरित्र	७२०	17
धर्मदास गर्षि	उपदेशमाला	१७१४	ग्रपभ्रं श
धर्म देव	सारस्वत व्याकरण टीका	१६४८	संस् कृत
वं० धर्मधर	नागकुमार चरित्र	७५२	11
बर्मनन्दाषार्थ	चतु:षष्ठी महायोगिनी महास्तव	न १२६७	हिन्दी
धमंदास सुल्लक	सम्मेदशिखर महातम्य	१४५५	>>
धर्म समुद्रवाचक	रात्रि भोजन दोष विचार	१७७७	>1
बानतराव	दशलकारा पूजा	१३०४	"
	प्रतिमा बहोत्तरी	838))
नथमल	महिपाल चरित्र भाषा	४३७	"
	स्थूलभद्र मुनि गीत	६६४	»»
मन्दगुराकोस्ति	लघुस्तवन सटीक	१४०६	संस्कृत
नम्बदास	ध्रतेकार्थं मंजरी	६६६	हिन्दी
	मान मंजरी नाममाला	७०५	संस्कृत
न न्द न		भ २१, ६२४,	13-71
	नाम महाविद्या	१६६४	**
भन्यसेन	नन्द बलीमी		संस्कृत ग्रौर हिन्दी
मयचन्त्र सुरि	पावनाच स्तमन	१४७२	संस्कृत
नयनस्टि	विशेष सत्ता त्रिभंगी	211	प्र ाकृत

ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नःम	प्रथ सूची	ं मावा
		क्रमांक	
	सुदर्शन चरित्र	६४७	मपभ्रं ग
नयनसुख	वैद्य कसार	३२७	हिन्दी
•	वैद्यमनोत्सव	३३१	"
नयसुन्दर	शत्रुंजय तीर्घद्वार	388	•,
पं० नरसेन	वर्द्ध मान काव्य	द२१	घपभ्रं श
नवलदास साह	वर्द्धमान पुरास	११६६	हिन्दी
नामचन्द्र मुनि	सरस्वती स्तुति	१४६८	सस्कृत
नागचन्द्र सूरि	एकीभाव स्तोत्र सटीक	१२१२	**
	विषापहार स्तोत्रादि टीका	१४३५	**
नागाजुं न	रमेन्द्रमगल	३२२	51
नार च न्द्र	ज्योतिषसार	€50	99
नारायस	मुहूर्त चिन्तामसा	१०१६	**
नारायग्रदास	छन्दसार	६२१	हिन्दी
नीलकण्ड	नाजिक नीलकण्ठी	\$33	संस्कृत
सि०च० नेमिचन्द्राचार्य	उदय उदीरगा त्रिभगी	3 %	श्राकृत
	कर्म प्रकृति	ሂ፥	70
	गोम्मटसार	७७	,,
	चतुर्दशगुगास्थान चर्चा	۲७, ۲۲	हिन्दी
	चौबीस ठागा चौपई	१०६	स्टब्स् संस्कृत
	जिन सुप्रभात स्तीत्र	, ` १२ ८ ६	117.571
	व्या संबद्ध इच्या संबद्ध	१४७	,,,
	द्विसन्धानकाव्य -	५४९ ४४६	प्राकृत
	बन्धोदय उदीरण सत्ता विचार	२४६ २० <i>६</i>	सस्कृत
	भाव त्रिभगी सटीक		प्राकृत प्राकृत भीर संस्कृत
	व्युच्छति त्रिभंगी	, - 0 ° 7 3 0	शाक्षण आर संस्कृत प्राकृत
	वृहद् द्रव्य संग्रह सटीक	२२९	
	वैद्य रत्नमाला	232	** हिन्दी
	सत्ता त्रिभंगी	२=३, ६६१	
	त्रिलोक प्रजनित		प्रकृत
	ावलाक प्रशास्त विलोकसार	१६६=	ts
	14414411	9000	la

प्रथंकार का नाम	प्रस्य नाम	ग्रन्थ सूची	मावा
		क्रमांक	
वद्मकोर्सि	पाश्वंनाथ पुरारत	११५८	ध्रपञ्चं श
पद्मनिव	ग्रनस्तवतकथा	३६ ६	संस्कृत
	चतुस्त्रिशद भावना	60	19
	धर्म रसायगा	१६५	प्राकृत
	धर्मोपदेशामृत	१७४४	संस्कृत
	पद्मनन्दि पंचविश्रति	४२५, १७४६,	संस्कृत
		१७४४	
	श्रावकाचार	. १७८७	प्राकृत
वदानाभ कायस्य	यशोधर चरित्र	द०६	संस्कृत
पद्मत्रमसूरि	पार्श्वनाथ स्तवन सटीक	१३४३	**
	भूबन दीपक	१०१३	संस्कृत ग्रौर हिन्दी
पन्नालाल	ते रहपं थस ण्डन	880	हिन्दी
परमानन्द	निघण्टुनाम रत्नाकर	300	संस्कृत
पर्व तथर्मार्थी	द्रव्यसंग्रह सटीक	१५२	प्राकृत और संस्कृत
पहुष सहाय	पिंगलछन्द शा स्त्र	११३	ध्रपभ्रंश
पारिंगनी	लघु सिद्धान्त कीमुदी	१५६५	संस्कृत
वारवं चं द्र	साधू वन्दना	१४७६	**
पार्थ देवगरिए	पद्मावत्याष्टक सटीक	१३३२	**
बाश्वं माग	ग्रात्मानुषासम	39	"
<u> युव्यदन्तः</u>	उत्तरपुराएा	११४२	यपभ ग
	नागकुमार चरित्र	०४०	25
	यक्षोधर चरित्र	७९इ	**
	बर्द्ध मान चरित्र	द २ ४	,,
	त्रिषष्ठि सक्षण् महापुराग्।	30'98	"
पूत्रकराद	इष्टोपदेश	3,5	संस्कृत
	उपासकाचार	१७१७	91
	समाधिशतक	२६०	,,,
	श्रावकाचार	१७६६	,,,
बू रवर्षिक	बशोधर चरित्र	= १	**
पूर्णासेन	योगशतक	388	,, ,,
पृथ्वी धराचार्यं	भूवनेश्वरी स्तोत्र	\$ ~ % %	"

वांचकार का नाम	ग्रन्थ नाम	वस्य सूची कर्माक	मावा
प्रमाचनदाबार्य	ग्रात्मानुशासन सटीक	१६	,,
	उत्तरपुराण सटीक	8 68%	**
	कया प्रबन्ध	३=३	10 /
	क्रिया कलाप सटी क	१७२४	29
	तत्वार्थं रत्न प्रभाकर	१३०	•1
	द्रव्यसग्रह सटोक १५	१, १५७, २४२	प्राकृत भीर मस्कृत
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार सटीक	१७७२	सस्कृत
	वृहद् स्वयभू टीका	१४२३	11
प्राक्षूरि	ग् क ।क्षरीनाममाला	६८६	**
ककीरचन्द	ढाल क्षमानी	४४४	हिन्दी
मधुसुदन भट्ट	विद्वदभूषमा सटीक	£3 8	सस्कृत
मधुसुदन मैथिली	धन्यापदेश शतक	* \$ 3	**
मयुर कवि	मयुराष्टक	४१८	"
मिल्लवेस सूरि	नागकुमार चरित्र	६४७	17
	नागपचमी कथा	४१६	11
	भैरव पद्मावनी कल्प	१ ५२ ६	19
पं० महादेव	वाल ज्ञान	£ XX	**
	महालक्ष्मी पद्रति	606	**
	रात्रि नक्षत्र फल	१०२७	19
मुनि महानन्द	श्रवन्ति सुकुमान महामुनि व	र्गान ७१३	हिन्दी
महासेनाचार्य	प्रद्युम्न चरित्र	७६४, १८३८	संस्कृत
महिराज	बादन दोहा बुद्धि रसायन	460	श्रपम्र श भीर हिन्दी
महीचन्व दूरि	पद्मावती कथा	४२४	सस्कृत
	सम्यक्तव कीमुदी पुराए।	११७२	सस्कृत ग्रीर हिन्दी
महेरवर कवि	शब्द भेद प्रकाश	3325	संस्कृत
मार्कण्डे य	मार्कण्डेय पुरास सटीक	११६४	P9
माघ (महाकवि)	शिशुपालवध	६४२	**
माघनंदि	वन्देतान की जममाल	१ ४ १ ⊏	t+
पं० मारिष्यमंदि	प्रमेयरत्नमाला	१११=	सस्युद
माधनवन्त्रप्रस्थि	क्षपणुसार		प्राकृत भीर संस्कृत
मानतु गायार्थ	भक्तामर स्तीत्र	३३:६६	सस्कृत

प्रथकार का नाम	राग्य माम	ग्रन्थ सूची कर्माक	सामा
मानसावर	विक्रमसेन चौपई	د <i>۶</i> د	हिन्दी
	सुभद्रानी चौढालियो	२७०	,,
माना कवि	वृन्दावन काव्य	६२६	मस्कृत
मिथिलेश्वर सूरि	न्यायसूत्र	१११६	,,
मिहिरचंद्रदास जैनी	मूर्तिपूजा मण्डन	१८४६	हिन्दी
मित्र सागर	भाराधनासार	२०	,,
मुनिषंत्र सूरि	वनस्पति सत्तरी मार्थ	३२६ :	गकृत, सम्कृत
			ग्रीर हिन्दी
मेघरत्न	सारस्वत दीपिका	१ ६१६	संस्कृत
षं० मेघावी	घर्म सग्रह	७ ६७९	"
मंत्रदेव	सम्मेदशिखरजी पुजा	१४५३	हिन्दी
मृ गेन्द्र	नन्दीग्वर काव्य	५६५	सम्कृत
यशः तीतिः	चन्द्रप्रभ चरित्र	७२६	ग्रपभ्र श
	चेतन चरित्र	७३२	हिन्दी
	प्रबोधसार	१७५ ५	मस्कत
	रत्न चूडरास	६२०	हिन्दी
	हरिवशपुराग	११७६, १८६१	ग्रपभ्र श
यश:नाम	मेघकुमार ढाल	33 x	हिन्दी
यशः विजय	महावीर जिन नय विचार	२२४	प्राकृत श्रौर हिन्दी
	श्रीपालरास	≒×१	हिन्दी
यश:सेन	सम्यक्तव कौमुदी	850	मंस्कृत
पं० योगक	सन्धि भ्रयं	१६१०	सःकृत भीर हिन्दी
	स्वर सन्धि	የ ፍሂ ሂ	,,
योगीन्द्रदेव	परमात्म प्रकाश	१८४	भ्रपञ्ज श
रत्नकीति	मूलसं घ्रागरिए	४ ४ 5	स स्कृ त
	रत्नत्रय विधान कथा	४ ५३	"
मुनि रतनवन्द	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	₹३ 50	,,
स्तनिव	पत्य विधान पूजा	१३३४	**
	भद्रव श् कृ चरित्र	७७८	"
रत्न शेकर सूरि	गुण स्कान चर्चा सार्थ	Уe	"
	गुरास्थान स्वरूप	१११०	P3
रयम	ग्रात्म सम्बोधकाव्य	Ę	ग्रपभ्रं स

प्रत्यकार का नाम	प्रन्य माम	प्रत्थ सूची क्रमांक	শা ৰা
	दशसक्षरा जयमास	१२६८	,,
	धन्यकुमार चरित्र	७४८	"
	प्रद्युम्न वरित्र	७६३	**
	पार्खनाथ चरित्र	११५६	**
	सन्मति जिन चरित्र	= 3 ?	**
	श्रीपाल चरित्र	588	1)
रविदेव	नसोदयकीव्य	५६८	सस्कृत
रविसागर गरिए	चतुर्विशति जिन स्तवन	१२६३	2)
रविषेगाचार्य	पद्मपुरास	११५७	**
रक्षामिं	हेम कथा	४०२	सम्कृत भौर हिन्दी
पं० राघव	द्वि सन्धान काव्य सटीक	४६०	मस्कृत
रामऋषि मिश्र	नलोदय टीका	५६७	संस्कृत
रामकरग	नेमिराजूल सर्वया	१८३४	हिन्दी
रामचन्द्र	रामविनोद	३२३	91
रामचन्द्र चौषरी	चतुर्विशति तीर्थं करपूजा	१२६१	,,
रामचन्द्राधम	प्रकिया नौमुदी	१४८६	सम्कृत
	पुण्याश्रव कथा कोश	830	23
	सिद्धान्त चन्द्रिका १६	६५३, १६६१	"
रामवल्लभ	चन्द्रलेहा चरित्र	७२८	हिन्दी
रामखन्द्र	दम ग्रन्छेराढाल	१५७	**
	नेमजी की ढाल	१७३	*,
रुचि रंग '	इन्द्रवधुचित हुलास मारती	3399	"
रद्र मट्ट	वैद्यजीवन टीका	३३०	स <i>स्</i> कृत
पं० रूपचन्द	विवाह पटल भाषा	१०४०	संस्कृत भीर हिन्दी
पं० लघ	लघुस्त्वराज महाकाव्य सटीक	६२१	**
लक्ष्मरासेन	षट् कर्मोपदेश रत्नमाला	१७=२	21
प० लक्ष्मीदास	वद्मपुरास भाषा	१३४६	हिन्दी
लक्ष्मीनिवास	मेचदूत काव्य सटीक	६०४	संस्कृत
लक्ष्मी व ल्लम	 काल्झान	EXE	हिन्दी
सहमी हर्ष	मंगल कलश चौपई	६१३	;,
लालकन्द	लीलावती भाषा	१०४१	,,

प्रथकार का नाम	प्रन्थ नाम	ग्रम्थ सूची	मावा
		ऋगांक	
	धमंबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	**
यं॰ भासू	कुमार सम्भव सटीक	५३६	संस्कृ त
मुनि लिगवसूरि महोपाध्याय	भ्रमरकोशवृत्ति	६=२	**
पं० लोकसेन	दशलक्षरा कथा	808	,,
लोलिमराज कवि	वैद्य जीवन	३३०	**
पं० लोहर	चौबीस ठागा चौपई	१०३ प्र	कृत भौर हिन्दी
बरस	मेघदूत सटीक	६०७	संस्कृत
पं० वरदराज	तार्किकसार मंग्रह	१११५	9.7
भ० बद्धंभान	परांग चरित्र	८२७	11
वरक्वि	एकाक्षर नाममाला	६८४	>1
	समास प्रयोग पटल	१६३३	**
ब राहमिहिराचार्यं	वृहद् जातक सटीक	१०४४	"
	षट् पंचासिका सटीक	१०७३	12
बसम्तराज	पत्य विचार	१००६	1,
बसु नन्दिः	उपासकाध्ययन	१७१८	97
बाग्मट्ट	नेमि निर्वाग महाकान्य	१७३२	,,
वादिषान्त	ज्ञान सुर्योदय नाटक	११२६ प्रा	कृत भौर संस्कृत
बर्मवर्मासह	क्षत चुड़ामिए।	४१०	संस्कृत
वादिराजसूरि	एकीभाव स्तोत्र	१२०४))
	विषापहार विलाप स्तवन	१४३७	37
बामधेव	भाव संग्रह	२२१	>1
बासबसेन	यशोधर चरित्र	८१७	"
विक्रमदेव	नेमिद्त काव्य	xex)1
विजयदेवी	श्रीमान् कुतुहल	६६६	श्रपभ्रं श
विजयराज	धमंबुद्धि पापबुद्धि चौपई	४१२	हिन्दी
विजयानन्व	किया कला प	१४८०	संस्कृत
मुमुक्ष् विद्यानन्द	यशोधर चरित्र	७९४	91
	सुदर्शन चरित्र	5 38	3 0
विद्यानन्दि	मध्टसह स्त्रि	3308	1)
	द्विजपाल पूजादि विधान	१२०=	>>
विशेतसभार	विमलनाम स्तवन	१४२६	हिन्दी

ग्रमकार का नाम	प्रन्थ नाम	व्रत्य सूची क्षमांक	भाषा
बिमल	प्रश्नोत्तर रत्नमाला	४८६	संस्कृत
म० विश्वभूषस्	इन्द्रध्वज पूजन	११६८	"
विशाल कीर्ति	रूक्मणी वृत विधान कथा	१ द द ह	मराठी
बिडए। _	भालाप पद्धति	२४	मंस्कृत
-	पंचतंत्र	११३८	11
	सरस्वती स्तोत्र	१४६७	18
विष्णुगोभन	समबन्नरस स्तोत्र	१४४०	19
भीरनन्वि	ग्रा चार ार	१७१०	11
वृन्दावनदास	चौबीस तीर्थं करो की पूजा	१२७४ सं	स्कृत ग्रीर हिन्दी
- वेशिराम	जिन रस वर्गन	१२८४	हिन्दी
वेद व्यास	गरुडपुरागा	११४६	सम्कृत
	शिवपुराग् ग	११७१	**
शान्तिवास	क्षेत्रपाल पूजा	१४०५	,,
शान्ति हर्ष	सुकुमाल महामुनि चौपई	द३४	हिम्दी
शिब्बूराम	सुमतारी ढाल	६६ १	11
शिवजीलाल	दर्गनसार सटीक	१४४ मा	कृत ग्रीर संस्कृत
शिवदास	वैताल पच्चीमी कथानक	४६६	संस्कृत
शिववर्मा	कातन्त्ररूपमाला	4×6×	,,
	नन्दीश्वर पत्ति विधान	१३१२	,,
शिव सुन्दर	पार्थ्वनाथ स्तोत्र	3 = = \$	•
पं० शिक्षा	द्वि घटिक विचार	ह ह ६	9 7
भीशराज	भरत बाहुबली वर्गान	** ?	हिन्दी
शुभवन्त्र सूरि	म्रा गाधरा ष्टक	4888	अंस्कृत
शुभवन्द्राचार्य	ग्रष्टक सटीक	१६७१ সা	कृत भीर संस्कृत
	चतुर्विशति तीर्थंकर पूजा	१२६२	मं स्कृत
	पत्यविधान पूजा	१३३ ३	19
	सिद्धचक पूजा	1883	11
	श्रेगिक चरित्र	4 4 2 3	**
	ज्ञानिग्राव	१४५६	78
शंकर भट्ट	र्वेख विनोद	३३४	14
शंकराचार्य	श्रन्नपूर्णा स्तीत्र	११६०	19

व्रन्यकार का नाम	ग्रन्थ माम	ग्रन्थ सूची श्रमांक	मावा
	भारती स्तोत्र	१३८७	,,
	सिद्धान्त बिन्दु स्तोत्र	9389	79
सकलकीर्ति	ऋषभनाथ चरित्र	७१५	"
	जम्बूस्वामी चरित्र	७३३	,,
	धन्यकुमार चरित्र	७४२	77
	धर्म प्रक्तोत्तर श्रावकाचार	१६४, १७३१	17
	पद्मपुरा ण	११५५	**
	प्रश्नोत्तरपामकाचार	२०३, १७५६	11
	पुरा णसार संग्रह	११६३	**
	मल्लिनाथ चरित्र	५ ३७	,,
	मूलाचार प्रदीपिका	१७७०	**
	म शोधर चरित्र	= ११	,,
	शान्तिनाथ चरित्र	۶ ۶ ج	19
	सुकुमाल चरित्र	5 3 X	* 1
	मुदर्शन चरित्र	द३द	,,
	मुभाषित काव्य	२५१	,,
	मुभाषित रत्नावली	३४३, ३६०	,,
	श्रावक)चार	१७६४	**
सकल भूचरा	उपदेश रत्नमाला	१७१५	**
सनतकुमार	रामचन्द्र स्तवन	१४०२	**
सदानस्द	नयचऋबालावबोध	१७२	हिन्दी
सवासुन	तत्वार्थ सूत्र टीका	१ ३७	संस्कृत भौर हिन्दी
स मन्तमद	भात्ममीमांसा	¥	संस्कृत
	ग्राप्त मीमांसा	११०१	"
	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति	१२४६	"
	देवागम स्तोत्र	१३१०	,,
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	१७७१	**
	बृहद् स्वयंभू स्तीत्र	१४२३	19
समय सुन्दर उपाध्याय	बृत रत्नाकर सटीक	€ ३६	**
समय सुन्दर गरिए	साधू वन्दना	\$80c	हिन्दी
•	मजून चौपई	७१२	10 ,

प्रम्यकृत् का नाम	ग्रन्थ नीम	, ग्रम्थ सूची कर्माक	भाषा
againguistan agastiquiquiquiquistanis anno agus agus agus agus agus agasticata a abha	जिनधर्मं पद	१=२५	14
	दानशील तप संवाद	३३८	7,
	पुण्य बन्तीसी	१८६	**
	सिहल सूत चतुष्पदी	४=५	3#
	श्रावकाराधन	१७ €=	**
समय सुन्दर सूरि	न पदमयन्ती चौपई	४६६	हिन्दी
सहस	वैराग्यमाला	६३३	संस्कृत
सहस्त्रकीर्ति	सिद्धप्रिय स्तीत्र टीका	१४६७	19
•	त्रिलोकसार टीका	१७०३	41
साहल सुबलकरण	भ्रासुवतरत्न प्रदीप	१६६९	ग्रपभं श
सिद्धसेन सूरि	एक विशति स्थानक	१८१४	प्राकृत भीर हिन्दी
	सिंहासन बत्तीसी	४८६	हिन्दी
सिद्धस ्वरू प	गौतम पुरुषरी	५४२	**
सिद्धसेन दिवाकर	जिनसहस्त्रनाम स्तीत्र	१२८६	संस्कृत
सिं ढसेनाचार्य	कल्यागामन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४७	34
सिहनन्दि	ग्राराधना कथाकोण	£ХЗ	,,
•	रात्रिभोजन त्याग कथा	378	••
सुन्दर	क्षुत्लककुमार	५११	हिन्दी
सुमतिकोति सूरि	धर्म परीक्षा रास	१६३	**
सुपतिकोति	त्रिलोकसार भाषा	१७०७	,,
नु नतिसागर	ती यं जयमाल	Yok	सस्कृत
	दशस्थाए पूजा	१३०५	**
मुल्हरा	वृत्त रत्नाकर टीका	६३⊏	39
सुरेनाकीति	पंचमास चतुर्दशी वतोद्यापन	१६ =३	99
सुशीलदेव	बुगन्य दशमी कथा	8ۥ	ग पभ्र ंश
सूद	ग्रनेकार्थ ध्वनि मंत्ररी	७२	संस्कृत
	दान निर्ण्य मसक	ሂሂሩ	**
पं० सूर्वं	सूर्य पह चात	१०€२	हिन्दी
सोमकीति	प्रशुम्नचरित्र	७६=	सं म्हत

प्रत्यकार का माम	ग्रन्थ नाम	ग्रम्थ सूची	मावा		
	ह्रमांक -				
	यशीघर चरित्र	७१६	**		
	सप्त व्यसन कथा	४७०	*		
सीमदेव शर्मा	भ्रष्यात्म तरंगिस्ति	8 88	**		
सोमवेब सूरि	नोतिवा वयामृत	११३३	"		
सोमनाव	लघुस्तवन	880€	59		
सोमसेन	रामपुरासा	११६६	17		
सोमधी	निषण्टु	३०६	**		
सोमप्रभावार्य	सिन्दुर प्रकरश	३४१, ६५४	*7		
	सुक्ति मुक्तावली शास्त्र	३४३	,,		
स्थानपाल दिख	चमत्कार चिन्तामिए	१ १ ७	,,		
सांबला	जातक प्रदीप	६७६ गुजराती ग्रीर हिन्दी			
इरजीमल	चरचा शतक टीका	8 4	हिन्दी		
हारीय	प्रश्नसार	१००७	सम्कृत		
हरि	शनिश्चर स्तोत्र	3588	11		
	सुभाषित कोश	२७१))		
हरिवस	गिगतनाम माला	EE8, EX9	3 1		
	चिन्तामिंगा नाममाला	६६१	,,		
हरिदेव	मद न पराजय	५६७	धपभ्रं श		
इरिमद्र सूरि	जम्बूद्वीप सम्बह्गी	१८२४	प्राकृत		
	षट् दर्शन समुच्चय टीका	२४०	संस्कृत		
हरिराज कुंबर	माधवानल कथा	888	हिन्दी		
इंटिरान	छन्द रत्नावली	ह १ <i>द</i>	**		
म० हवंकीर्सि	कल्यास मन्दिर स्तोत्र टीका	8588	संस्कृत		
	नेषध काव्य	४८१, ७५६	**		
	पंचमी पूजा वत विधान	\$ E =8	11		
हवंकीति सूरि	छन्दशतक	, 2 ? &	धपञ्च श		
	भातु पाठ	१५⊏१	संस्कृत		
	प्रस्तार वर्गी	१२=	13		

प्रत्यकार का नामः	प्रन्थ नाम	प्रन्य सूची क्रमांक	माचा	
	लघुनाम माला	300	**	
हरिरचन्द्र कायस्थ	धर्मशर्माष्युदय	५६४	>;	
पं० हरिवेश	धर्म परीका	* \$ \$	सपभ्रंश	
हस्तिञ्चरि	ध वन्ति सुकुमा ल कथा	358	हिन्दी	
हरिहर ब्रह्म	गरुड़ोपनिषद् .	११०६	संस्कृ त	
हीराशास	सम्मेद शिक्षर विधान	१४५६	हिन्दी	
हुक् मचन्द	कल्यागा मन्दिर स्तोत्र सार्थ	१२४८	स <i>स्</i> कृत	
बहा. हेमचन्द्र	श्रुत स्कन्ध पूजन भाषा	२७७,१४०४	शकृत	
हेमचन्द्र सूरि	निषण्टु	३०६	संस्कृत	
हेमचन्द्राचार्य	ग्रनेकार्थनाम माला	६७४	it	
	नाममाला	७०४	,,	
	योग शास्त्र	१४४२	,,	
	शब्दानुशासन वृत्ति	१६०७	11	
हेमप्रम सूरि	ज्योतिष चक	<i>७७३</i>	11	
प० हेमराज	कर्मकाण्ड सटीक	४७	हिन्दी	
	नयचऋ भाषा	१७४	11	
	भक्तामर स्तोत्र भाषा	१३७६	,,	
	समयसार भाषा	२५६	,,	
हेमसिंह खण्डे लंबाल	धातु पाठ	१५६२	संस्कृत	
क्षे मकवि	क्षेम कुतुह्ल	६६७	**	
को मसिह	शोभन श्रुत टीका	२३६	>,	
त्रिमल्स मट्ट	शत श्लोक	XXE	"	
तानज न्द्र	चतुर्विंगतिजिन स्तवन	१२६४	,,	
म० ज्ञानभूषरा	तत्वज्ञान तरंगिए	१२८	n	
••	ज्ञान तरंगिएि।	१ ५४८	11	
भोकुच्स पूर्वरि	सिद्धान्त चन्द्रोदय टीका	१ १२१	**	
থীৰ ৰ	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	६७७ ३	मपभ्रं श	
ं० भीषर	भविष्यदस चरित्र	७७७	संस्कृत	

प्रम्थकार का नाम	प्रत्य माम	पत्य सूची क्रमांक	'बरमर
भौतिवास मृह	शिवारंन चन्द्रिका	१४३४	*;
श्रीपति	ज्योति वरत्न मा ला	હ છ	19
बी ह्या	सरस्वती स्तोत्र	१४६२	ı
श्रीभूवरा	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	६२२	17
भीमत्याद	नवकार कथा	४१८	*1
भीराम	बालात्रिपुरा पद्धति	१३६५	11
	विवाह पटल	१०४९	17
भी सिह	प्रसुम्न चरित्र	७६ ५	श्रपश्च ंश
भ ुतमुनि	भाव संग्रह	२१८	प्राकृत
४ ० श्रुतस् त र	तत्वत्रय प्रकाशिनी	१२७	सं स्कृत
	तत्वार्थ सूत्र टीका	१३४ संस्कृत भौ र हिन्दी	
	हादश भावना	१६०	मस्कृत
	रत्नत्रयद्वतः कथा	४५२	,,
F	इत कथा कोक	४६३	,,
श्रुतसागर सूरि	सिद्ध चक पूजा	१४६३) ,
	षट् पाहुड़ सटीक	२४६	**